MSS No. 289 Subject PHILOSOPHY

Name of MSS Kavi Prya Tika (कविप्रिय टीका)

Author Hari Kavi

Period Folios 201

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios 1, 1A, 4A-14, 80A-81, 113A-117, 162A, 163

सवैया पाऊंगा मे जिन

...सेवन [illegible] अरुनादिक जे भव मै सुख...

...मैनो रिह मनार जिते त्रिपुरारी सोगणनायक हो रमे सनगादे पद बेदि... भैरै
हरा उलम केदरणी सदा करणी बुधि अपार सुषदाता बागे स्वरी बेदो पादडे ...
निरहे ते उपजे ब्रह्मे इत्या हे दस ने जम चेडवली बलहारे जिहनादि हि वि खेव ड्रुभांति भने जु
वैनन के नर भेद निहारे सनकादिक नारद को विदके गनना दि पिबे सब भेद निवारे ३
जन को प्रमोपति के पद मे चल को वडूवंदह मारे ३ सवैया जो पद पंकज नीरह रेमल
नदीन वहे भव भारी मन के पद पंकज ने मन गंग गिरी जननार णहारी वैनन नैनन को उ
पमार विकं जनन ने अति सार निहारी नांरद नानक के पद पंकज सीस निवाइ के बंद हमारी ४
५ माधव का छंद गोविंद सिंघ क्रिपा निधि नाथ हरे विद माय सदा सुखदाई वही भव सागर
पार परे पद पंकज को जन जे सर नाई रे जन नाम सरेस भका मरहे भव मे डेल चितन कार इसे पद
पंकज वंदित हो विजदास दास के हो हूस हाई ५ नराज छंद सुनाथ मान सिंघ के पदार विंद ने
तिरें अनथ वारि विंद को सुघार विंद मै परे सुवाग हीन रूप मे वचैलम कको करे निहार रूप
आपनो गदे कुवंध को हरे ६ तथा प्रभाव हेर पो अनेक जीव जाल मे पदार विंद पादि यो सुभाग
पुंज भाल मै कुवंध को मिटायो सराम को विचार कै करो सुपादकंज को नमामि सीस धार कै सवै

२A

मतिमानहेयहजानियेसवपदकौजोधुनिनिकारियेतौग्रंथवढ्वढैदु दोहा प्रगटपंचमीकोंभयो
कविप्रियाअवतार सोरहसैअठावनाफागुनसुदिबुधवार ३ प्रगटइतिकविप्रियारूपजोअव
तारकविताकोप्रामहोनेकीसीढी ४ नृपकुलवरनामघटीअरुकविकेसवबस प्रगटकरीजि
निकविप्रियाकविताकोअवतंस ५ नृपवंसवर्नन ५ [illegible] ब्रह्मादिककेविनयतेंहरैन
सकलभुवभार सूरजवंसकरौप्रगटरामचंद्रअवतार ६ ब्रह्मादिकइतिसूरजवंसमेंश्रीरामचं
द्रजीआयेंअवतारप्रगटकर्‍यो ६ तिनकेकुलकलिकालरिपुकहिकेसवरनधीर गहिरवारवि
ख्यातजगप्रगटभयेनृपवीर ७ करननृपतितिनकेभयेधरनीधर्मप्रकास जीतिसवैजगतीकस्यो
वाराणसीनिवास ८ प्रगटकरनतीरथं भयेजगमेंजिनकेनामतिनकेअर्जुनपालनृपभयेसदा
लीग्राम ९ प्रगटइतिकरनतीर्थनामहै मूलमेंजाकेआगेंटहीलखीरहै येसानामजानियेसर्वत्र
५ गहरकुवार १ तिनकेभयेराजासाहनपाल १ सहजकरन १ तिनकेभयेकहिकेसवरिपुकाल १०
राजानेतोनिगमद्यो १ भयेतिनकेपूरनसाजनैतोनिगदोकेसुतभयेप्रद्युम्नोंपृथ्वीराज ११ राजाइतिनैं
निगवड़ेनोगदभीपाठहै ११ रामसिंहराजाभयेतिनकेसूरसमान राजचंद्र १ तिनकेभयेराजाचंद्र
प्रमान १२ राजामेदनीमल १ भयेतिनकेकेसवदास अरिमदमर्दनमेदनीकीनेधर्मप्रकास १३ रा
जाअर्जुनयो १ भयेतिनकेअर्जुनरूप श्रीनारायनकोसषाकहैंसकलभवभूप १४ महाद्रानषो

५३

रा॰
३

3

इशादयेजीतीजगदिसिचारि चारोवेदअठारहोंसनैंपुरानविचारि १४ त्रिपुषंडनतिनकेभयेराजा
श्रीमलषांन १ जहुजरैंनमसोकहूजाननसकलजहान १६ नृपप्रतापरुद्र १ सुभयेतिनकेजनुअर
नरुद्र दयादानकोकलसतरुगुननिधिसीलसमुद्र १७ नृपप्रतापरुद्रतिजनुकोअर्थमानोरनविषेक
इर्षावढै १७ नगरओडछोजिनस्योजगमैंजागतकीर्तिकलसदननिमित्रहिदईजिनिपुरानकीहति
१८ भरषडरतिनकेभयेतिनकेभारतचंद १ देसरसातलजानजिहिकें [illegible] जोदारिचंद १९ सेरसाहिअ
सलेमकेउरसालीसमसेर एकचन्द्रभेनहीनयोताकोसिरतिदिवर २० सेरसाहिइतिउरमैंसालैसी
जाकीनरवारिहै २० उपजननपायोपुत्रनहिगयोसुप्रभुपरलोक मोदरमधुकरसाहितवभूपभये
भुवलोक २१ जिनकेराजरसावसैकेसवकुसलकिसान सिंधुदिसानदिवारहूपारवजायनिसा
न २२ जिनकेराजइतिजिनकेराज्यकीरसाभूमितामैंवसैहैं किसानभीप्रवीनभीसिंधुनदीलहाउरकी
तरफहै सिंधुजोनदीताकीजातरफदिसासिंधुकीतरफसिंधुकेवारहीनदीनिसानवजायेपारभी
तिमाननगारावजायेसिंधुकेपारभीजीतेहैं जोसिंधुसमुद्रलीजियेतोपावमनुष्यकीगतिनहीं २२
तिनपरचढिआयेजुरिपुकेसवगयेतिहारिजिनपरचढिआपुनगयेआपेतिनैंसंचारि २३ सव
रसाहिअकबरअवनिजीतिलईदिसिचारिमधुकरसाहिनरेसगारतिनकेलीनैमारि २४ षान
गनैंसकलनानकोराजारावतवादि हारयोमधुकरसाहिसोंआपुनसाहिमुरादि २५ षानगानेंदुनि

त

स्यो
दैमै

सवल

३

3A

सुलतानपातिसाहतिनकेगनेगाननोलायकउमरावबादिकोअर्थफेरि २४ साधोसुवारथसाथ हीवरसारथसोनेहरायोसप्रभवैकुंठमगअलरंध्रतजिदेह २६ तिनकेदुलहरामसुतालहरेट्ठोरि लराव। रिपुषंडनकुलमंडनापूरनपुहमिप्रभाव २७ रनहरोवनसिंघ।पुनिरतनसेति।सुनिईस बांधोप्रायजलालदीवानोजाकेसीस २८ नरहरि नरसेहरोमाछो २८ इंद्रजीतारनजीपुनि सत्रुजीत।बलवीर। विरसिंहयोप्रसिद्धपुनिहरसिंहयोरनधीर २९ इंद्रजीतइतिइतनेमधुकरसा हिकेपुत्रभये २९ ३० ३१ ३२ ३३ मधुकरसाहिनरेसकेइतनेभयेकुमार रामसाहि।राजाभयेति नमेंबुद्धिअपार ३० घरवादिरजहईतहांकेसवदेसविदेस सबकोऊयहईकहैजीतोरामनरेस ३१ रामसाहिसोसुरताधर्मनएजेसान जाहिसताहतसर्वदाअकबरसोसुलतान ३२ करजोरेठा देजहांआठोदिसिकेईसतादितहांवैठकदईअकबरसेअवनीस ३३ जाकेदरसनकोगयेउघरेदेव। किवार उपजीदीपतिदीपकीदेषतएकहिवार ३४ जाकेइति वद्रीनाथजीकेदरसनकोगयेतहां मंदिरकेकिवारषुले दीपवरिउठेगा ३४ ताराजाकोराजअवराजतजगतीमाह राजारानाराव सवसेवतजाकीछाह ३५ तिनकेसुतजारहभयेजेठेसाहिसंग्राम दछिनदछिनराजसोंति नजीतोसंग्राम ३६ भरतषंडभूषनभयेतिनकेभारतसाहि। भरथुभगीरथपारथहितनमानत सवताहि ३७ सुतसोदरतपरामकेजयुपिवद्दपरिवार तदपिसवेइंद्रजीतसिरराजलाजकोभार ३८ कलपवृछसोदानदिनसागरसोगंभीरकेसवसूरोसुरसोअर्जुनसोरनधीर ३९

पानकाइ

त

विधिज्यौंसाधुतवैठितहंकेसववामञ्रवाम ७० ताहिइति
ताहिकछोवाकमलसोगाइदीनौंनरपराम कसौञघारोराजकेसासनसबसंगीत ताकौ
कछोवाकमलनामहै वामञ्रवामभलावुरा ७० बालवहकमवालसवरूपसीलगुनवृद्ध जदपिभहोञवरो।
देषतइंद्रजौंइंद्रजीतरनजीत ७१ वालइतिनववपवाला होसवहै अवरायञंतःपुरनाम प्रवी
घषटपातरिपरमप्रसिद्ध ७२ वालइतिनववपवाला होसवहै ञवरायञंतःपुरनाम प्रवी
नराय१ नवरंगराय२ विचित्रनयन ३ ताननतरंग ४ रंगराय ५ रंगमूरति ६ ७२ षटपातरि
नामरायप्रवीनप्रवीनञति नवरंगरायसुवेस ञतिविचित्रनयनोनिपुनलोचनललितसुदेस
७३ सोहतसागररागकीताननतरंगतरंग रंगरायरंगवलितगतिरंगमूरतिञंगञंग ७४ सोह
तिइति रागकेसागरकौतरंगसीताननतरंगसोहतिहै ७४ तंत्रीतंवरसारिकासुद्धसुरनसौंलीन
देवसभासीदेषियेरायप्रवीनप्रवीन ७५ तंत्रीइति रायप्रवीनकीप्रकृष्टञाछीजोवीनाहैसोदे
वसभासीसोहतिहै देवसभाकैसीहैहेममैंतंत्रनामसिद्धांतकोहै तंत्रकोंजाननवालातेत्रीवृहस्पति
हैजहां तुंवरुगंधर्वहैजहां सारिकाञ्रप्सरासोसुद्धञछेजेसुरदेवतातासौंलीनहैमिलीहै वीना
कैसीहै तंत्रीतार तुंवरतूंवाञ्रसारिकावामैंचोडीलागतिहै ञौसद्धजेसुरनिषादरिषभगांधा
रषड्जमध्यमधैवतपंचमयासौंजुक्तहै ७५ सतारायप्रवीननृतसुरनहसुरनहगेह इंद्रजीतता
सौंवंधेकेसवदासहिदेह ७६ सतारायइतिरायप्रवीनकैसीहैसतासोहैसाचीवातवोलतिहै जोञै
सोञर्थकरैं सतासतभामासारीषीरायप्रवीनहै तोञधिकउपमादोषहै हमारेकीयेकविवल्ल

वरनैंयातैंदेसविरोध ५५ अथकालविरोधप्रफुल्लितनवनीरजरजनिवासरकूसदविसाल
कोकिलसरदमयूरमधुवरषामदितमराल ५६ कालविरोध प्रफुल्लितइति रजनीराति
मैंकमलफूलेयहकालविरोधऔरसुह ५६ अथकालविरोधलोकविरोध स्याईवीरसिं
गारकेकरुनाउनाप्रमान ताराअरुमंदोदरीकहतसतीनिसमान ५७ कालविरोधलोकवि
रोधस्याईइति जाहिवारमैंवीररसउपजैहै ताहिकालमैंकरुनास्याईवरनैंतोउत्साहस्याईजा
तोरहै वीररसनहींहोयजैसैंअर्जुनकौंभारतकेसमैंआरंभमैं औशृंगारमैंकरुनागलानिवरनैं
तौवाकालमैंशृंगारजातोरहै यहप्रमानहै तारासुग्रीवकीस्त्रीवालिनैंलीनी औकेतनैरा
वनभयेहैंमंदोदरीएकहीहैताकौंसतीपतिव्रतासमानकहनौलोकविरुद्धहै ५७ अथन्या
यआगमविरोध पूजैतीनौंवरनजगकरिविप्रनिसोभेद पुनिलीजोउपवीतहम पहिली
जैसवबेद ५८ न्यायआगमविरोधपूजैइतिविप्रनिसोंभिन्नकरिकैंतीनिवर्नकोपूजैं विप्र
कौंकहापूजैतीनवर्नकौंपूजैं जगतमैंयहनीतिविरोध किंवानीतिवर्नविप्रनिकौंभेदकरि
कैंपूजैं फलानाकुलकेब्राह्मनकौंमतिपूजौ फलानाकुलकेब्राह्मनकौंपूजौ ब्राह्मनसव
पूज्यहैं यहनीतिविरोध पहलैंवेदपढै पीछैजनेऊलेय यहसास्त्रविरोधदोऊमैंभेदथोरो
ईहै सत्रुकोविस्वासकरै औसैंनीतिविरोधचाहिये सास्त्रसौंवहुतविरोधनहोयव्यवहारसौं

इहिविधिश्रौरोजानिजहुकविकुलसकलविरोध केसव
सब्बविरोधहोयसोनीतिविरोध ४८ इतिश्रीमतविविधभूषणभूषितायांकविप्रियायां
वकहेकछुकअवरूढनिकेअनुरोध ४९ इतिविधिइति विरोधतोकविकुलजानदिगोप्रसिद्धहै
दूषणवर्ननंनामतृतीयप्रभावः ३ इतिविधिइति विरोधतोकविकुलजानदिगोप्रसिद्धहै
इहांमेंरूढनिकेअनुरोधचाहसाकछुकहेहै कहूंपाठअवरोधहै रूढनिकोअवरोधहै रू
ढकीमतियातेंनहींपैठिसकै ४९ इतिहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांक
विप्रियाटीकायांतृतीयप्रभावव्याख्या ३ अथकविभेदवर्नन केसवतीनहुलोकमेंत्रवि

कविनकेराय मतिपुनितीनप्रकारकोवरनतसवसुषपाय १ केसवइति कविनकेरा
यसरदारहैंते कवितीनप्रकारके श्रोमतितीनप्रकारकी १ उत्तममध्यमअधमकविउत्त
महरिरसलीन मध्यममानतमानसनिदोषनिअधमप्रवीन २ उत्तमइति मानसमानतया
कोअर्थ जोमनहीकोमानैं जैसोमनमेंआवैतैसोवरनैंसोमध्यम किंवामनुष्यकोमानैस
नुष्यकोवरनैं जोदोषवरनैंसोअधमर यथाहैश्रतिउत्तमतेपुरुषारथजेपरमारथकेप
थसोहैकेसवदासअनुत्तमतेनरसंततस्वारथसंजुतजेहै स्वारथहूपरमारथभोगानम
धमलोगनिकेमनमोहै भारतपारथमित्तकसोपरमारथस्वारथहीनतेकोहै ३ हैअ
तिइति कोऊभगवानकोभजनकरैहै श्रोसंसारकोभीकाजकरैहै सोश्रोरनसोंउत्तम

15A

है जोभगवानकेरसहीमैंलीनहै ताकौंपेरिश्रुति उत्तँकरिकहतहैं पुरुषजोभगवानतिन
कैंश्ररणतिनकेलिये परमारथपरमश्रेष्ठ ऐसीजेभक्ति ताकेपथमैंसोभतहैं जोस्वारथ
मैंमिल्यौसोअनन्नमकहियेमध्यमजोआपनामनमैंआवैतैसोईवरननहै स्वारथभीनहीं
परमारथभीनहीं मध्यमलोगनीचलोगमध्यमभाषामैंनीचकौंभीकहतहै ताकोंकाहू
कीनिंदाकरिराजीकरतहैं सोअधमकहिवेकौंहै ताकोलछनकहतहै भारथमैंपारथ
अर्जुनतिनकेमित्रश्रीकृस्नतैंकह्योहै स्वारथभीनहींसाधैपरायाकीनिंदाहीकरैवेपुरुष॰
कौनहै नहींजानिपरैअधमाधमहै ३ अथकविरीतिवर्नन सांचीवातनिवरननहींझूठी॰
वरनैंवानि एकनिवरनैंनियमकेकविमतित्रिविधिवषानि ४ अथकविरीतिसाचीश्रुतिसां
चीवातनिकौंवरननहै औरझूठीवातवरननिवेकीवानिहै औएककौनियमकरिवरननहैं।
जहांपौनकौंवरनैंतहांत्रिविधिवरननहैहै ४ सत्यवर्ननकेसवदासप्रकासवसचंदनके॰
फलफूल कूलपछकी जोंन्हऔशुक्लपछतमतूल ४ सत्यवर्ननकेसवइति चंदनकेफू
लफलसाचहैं औप्रकासकेवसकरिप्रकासकीआपेछाकरिकैं जेतनीकृस्नपछमैंचांद
नीहै ताहीकौवरोवरिशुक्लपछमैं अंधकारहै यहसत्यहैकिंवाप्रकासवसजोचंदनकेंफू
लनहोयतौचंदनकोंप्रकासउत्पत्तिकहांसौंहोय ४ झूठवर्ननजहंजहंवरननसिंधुसवतंहत

कु॰
१६

16

हरलनिलेषसछमसरवरहूकहैंकेसवहूंसविसेषहक्तठवर्ननजद्दजहइतिसपष्टलेनकहै
भरिस्फुठितमसूजनिसियनिवनाय अंजुलिभरिपीवनकहै चंद्रचंद्रिकापायलेनइति।
तमअंधकारसूईसौंवनायआछीतरहसीयौंजाय औकविजोतियमसौंवरननदै सोआ
गैंकहैंगे ७ सवकेकहतउदाहरनवाहैग्रंथअपारकहूंकहूंतातैंकयौकविकुल चतुरवि
चार ८ तमकोउदाहरन"कंटकनअटकैनफाटतचरनचापिवातैंनजातउडिअंगनउघा
रियै"नैकहूंनभीजतमसलधारवरसतकीचतरचतरंचचित्तमैंविचारियै केसोदाससाव
कासपरमप्रकासनउसारियेयसारियेनपियपैंविसारियै चलियेजू औढिपटतमहीको
गाढोतनघातरोपिछौरासेतपाटकोउतारियै ८ तमकोउदाहरन कंटकइति सावकास
याकोअर्थ यापटकौंकोईरोकनवालानहीं जहां[illegible]तहांहै सेतपिछौराहैकाहूकीनज
रिमैंआवैगा यातैंसवीउतरावैहै औरयौसाकस्यामहै जानिपरैहै वडोजाकोप्रकासपस
रिवोहै यातैंतमकोपटओढिचलिये ८ चंद्रिकाकेउदाहरनभूषनसकलघनसारहीके
घनस्यामकुसमकलितकेसरहीछविछाईसी मोतिनकीसरसिरकंठमालहारऔररूप
जोतिजातहेरतहिराईसी चंदनचढायेंचारुसुंदरसरीरसवराषीसुभ्रसोभासववसनव
साईसी सारदासीदेषियतदेषोजायकेसोरायठाढीवहकुवरिजु[illegible]न्हाईमेंअन्हाईसी ९

कंठ
१६

16A

चांदिनीकोउदाहरन भूषनइतिमिथ्यावर्ननकेलिएं ग्रनेसारहीकेभूषन ग्रनसारहीकेवना
येफूलतासोंकलितग्रङ्गकेसग्रोमोतिनकीसरलरीसिरपै मोतिनकीसरीग्रादिग्रोरभीजेभू
षनहैं तेसवग्रंगकेरूपकीजोतिमेंहेरतवेंनिहारतवें हिराईसोहोतिहैभूषनकीजोतिनज
रिनहींग्रावै चंदनकोवसनवनायोसोफू८ ग्रोचांदिनीमेंस्नान १० ग्रथकविनियम वर्नन
चंदनमलयहीहिमगिरिहीभुजपात वरनतदेवनिचरनतेंसिरतेंमानुषगात ११ ग्रथकवि
नियमवर्नतइतिकासमीरदेसमेंभुजपत्रसोंघरछावतहै तोभीहिमालहीमेंवरनतहैं ग्रैसेंनिय
मजानिये ११ ग्रतिलज्जाजुतकुलवधूगनिकागनिनिरलज्ज कुलटनिसोंकोविदकहतग्रेग
ग्रलज्जसलज्ज १२ ग्रतिइतिसप्ट १२ वरनतनारीनरनतेंलाजचौगुनीचित्त भूषइगुनसा
हसछगुनकामग्राठगुनमित्त १३ वर्नतइतिसप्ट १३ कोकिलकोकलवोलिवोवरनतहैम
धुमास वरषाहीहरषितकहेकेकीकेसवदास १४ कोकिलइतिसप्ट १४ दनुजनिसोंदिति
सुतनिसोंग्रसुरेंकहतवषान ईससीससोंसि सुहूकीवरनतवालकवानि १५ दनुजइति दनु
कस्यपकीस्त्री तासोंउपजेसोदानव ग्रोदितिसोंउपजेसोदैत्य इहिहूकीतिथिमेंमहादेवकेमा
थामेंचंद्रमाहैताकोंवालककहतहै कहूंवहूग्रैसोपाठहै तहांहूवहुतकालकेससिकोंवालकक
हतहैं १५ सहजसिंगारतसुंदरीजदपिसिंगारग्रपार तदपिवषानतसकलकविसोरहईसिं

सि

गार १६ सहजइतिसप्त १६ सोरहसिंगार प्रथमसकलसुचि १ मंजन २ अमलवासन ३ जाव
क ४ सदेसकेसपासकोसधारिवो ५ अंगराग ६ भूषन ७ विविधमुखवास ८ राग ९ क
ज्जल १० कलितलोललोचननिहारिवौ ११ वोलनि १२ सहसनि १३ चितचातुरी १४ चलनिचा
रु १५ पलपलप्रतिपतिव्रतपारिवौ १६ केसोदाससविलासकरहुकुंवरिराधेइहिविधिसो
रहैं सिंगारिवौ १७ अथसोरहश्रृंगार प्रथमइति सकलसुचिस्नानआदि १ मंजनउवट
नो २ अमलवस्त्र ३ जावक ४ केसकीरचना ५ अंगरागकेसरिआदि ६ आभूषनअनेक
तरहके ७ मुखवासपानलवंगआदि ८ रागमिहदीऔदांतओठको रंगिवो ९ औक
ज्जल १० औचंचलनेत्रनिसौंदेषिवौ ११ वोलनिरसीली १२ औहसनि १३ औचित्रकीचतु
राई १४ औचाहचलनि १५ औपतिव्रताकेधर्मकोपालनकरनौ १६ परकीयाकौप्रेमकोप्र
तिपालनकरनौं परकीयाकोलछनवहुतग्रंथमैंहै आपनापतिसौंरतिनहीपरपतिही
सौंरतिसोपरकीया औजोपतिसौंऔउपपतिसौंसमानप्रेमहोयसोंतोसमान्या १७ कु
लटाकोपतिप्रेमवसवारवधुनकोदान जाहिदईपितमातसोकुलजाकोपतिमान १८
कुलटाइतिकुलटाकौंऔरवारवधूकौंपतिकोनियमनहींकोईनायकजोप्रेमसौंवसहो
यतौवाकौलोगकुलटाकेपतिऔरवारवधूकेपतिकहतहैं किंवाकुलटाकोकौनअसोप

17A

तिहैजोप्रेमसौंवसहोयवेतौअनेकवारफिरैं औरवारवधूकेअैसैंजानौंयाहोहावडुतपोथीमैं
नहींहै १८ महापुरुषकौंप्रगटहीवरनतवृषभसमान टीयंयभगिरिगज्जकलससागरसिंहप्र
मान १९ महापुरुषइति वडेआदमीकौंवृषभआदिकहतहैं १९ गुनिमनि वैरागहधीरज
कोसागरउजागरधवलधरिधर्मधुरधायेजू षलतरुजोरिवेकौंराजैगजराजसमअरिगजरा
जनिकौंसिंहसमगायेजू [illegible]वामनिकौंवामदेवकामिनिकौकामदेवरनजयथंभरामदेवमन
भायेजू कासीसकुलकलस[illegible]जंदूदीपदीपकुसोदासकोकलपतरुइंद्रजीतआयेजू २०
गुनिमनिइति गुनरूपजेमनिताकीवैरागरकहियेषानिहै औधीरजकोसमुद्रहै औउजाग
रसवदेसमैंप्रसिद्धहै औधवलवृषभहै धर्मकोधुरभारधरिवेकैंसर्गतैंधायेहैं धवलवृषभ
कौंकहतहैं प्रमान सोनितसरितातीरगैंरांकेगुसाईंटेटेधोरावहिचल्योजहांपावथिरता
रहै किंवाधवलउज्वलनिर्मलजोधर्मताकोधुरभारधरिवैं धनिमैवृषव वामनवत्रअ
पनेधर्मपैंनहींचलेंताकेमारिवेकौंवामदेवसिवहैं २० वृषभकंधस्तरमेचसमभुजपुजअ
दिपरमान उरसमसिलाकपाटअगनअवरिज्रियानिसमान २१ वृषभइति पुरुषकोमेचसोस
रवरनिये भुजाकौंभुजगसमसर्पसमकहियेउरछातीकपाटसमसिलासमकहिये औरअं
गनेआदिस्त्रीकेपुरुषकेसमवरनिये २१ कवित्तमेवज्यौंगंभीरवानीसुननतसषासिषीतिहु

देष

क॰ १८ इंद्र 18

षच्छुरिउरनिजवासेज्यौंजरतहै जाकेभुजदंडभूवलोककेअभयपुजदेषिउर्जनभुजंगज्यौं
डरतहै तोरिवेकैंगढतरहोतहै सिलासरूपराषिवेकैंकोंद्वारनिकिवारज्योंअरतहै भूतल
कोंइंद्रजीतराजोजगजगाकेसोदासजाकेराजराजसोकरतहै २२ इतिश्रीकविप्रियाकवि
सवस्यालंकारवर्ननंनामचतुर्थप्रभावः ४ मेचइति मेघसारीषीजोगंभीरवानीहैता
कौसुनिकैंसषाजेहैसिषीमोरसोसुषपावतहै अरिकेउरनिकोंजवासनिकीतरहजरतहै

सर्प

राजतहै यहअर्थ भुजकौंसमानदेषिकैंदुर्जनडरतहै जाकोवृछस्थलगढतरवहैगढ तो
रिवेकोंसिलासरूपहोतहैतोरिवेकोगढउरहोतहै सिलासरूपअैसोभीपाठहै आपनेगढका
दरवाजाराषिवेकोंकपाटसोअरैहै भूतलकोंइंद्रइंद्रजीतजगजगाराजै २२ इतिश्रीहरि
चरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांचतुर्थप्रभावव्याख्या ४ अथकवितालंकार
वर्नन जदपिसुजातिसुलछनीसुवरनसरससुवृत भूषनविननविराजईकवितावनि
तामित्र १ अथकवितालंकारवर्नन कवीस्वरजेवातठहरायराषीहै सोभीकविताकोभू

न

षनहैसोदिषावैहै हेमित्रभूषनविना कविता औवनितानसोहतिहै कविताकैसीहै सु
जातिहै सुंदरजातहै जातितरहहै जोअनुप्रासलेचलै ताकोकहूभंगनहीभयो औसुल
छनीसुंदरजामैंलछनाहै लछनांसोअर्थचमत्कारहोतहै षेचिकेजामैंलछनानहीकर

18A

नौंपरै किंवासुंदरीतरहजामैंरसअलंकारकेलछनलागतहैं फेरिसुवरनसुंदरजामैंरसके अनकूलवरनअछरहैं फेरिसरसशृंगारवीरआदिजामैंरसहै सुहृतसुंदरजामैंरसकेअनकूलवृतछंदहै शृंगारमैंसवैयामनोहरआदि वीरमैंउद्धतछंदभुजंगीछपैमोतीदाम आदि भूषनउपमाआदिवनितास्त्रीकैसीहै सुजातिउत्तमकुलकीहै औसुलछनीसुंदरजाकेलछनहैंसामुद्रिकमैंजेकहेहैं औसुवरनसुंदरजाकोवरनरंगहै औसुवृत सुंदरजाकेवृतवातहै कोईजाकीनिंदानहींकरतहैसवतारीफकरतहैं १ कविनकहेकवितानिकेअलंकारहैरूप एककहेंसाधारनैएकविशिष्टसुरूप २ कविनइतिस्पष्ट २ अथसामान्यालंकार वर्ननसामान्यालंकारकोचारिप्रकारप्रकास वर्नवर्णप्रभुराजश्रीभूषनकेसवदास ३ अथसामान्यालंकार सामान्यइति एकवर्नरंगसोअनेंकहैंगो औरहूसरोवर्णजाकोवर्ननकरियेसो सामाकोअर्थजातिउपमादिविशेषः सरोभू चौथोराजश्रीभूषन वहुतठौररहैसोसामान्य ३ अथवर्नालंकारस्वेतपीतकारेअरुनधूमरनीलेवर्न मिश्रितकेसवदासकहिसातभांतिसुभवर्न ४ अथअर्थवर्नालंकारस्वेतइतिमिश्रितचित्ररंगसुभकेकरनवाले स्वेतरंगअनेकविधहै यातेंसामान्य ४ अथस्वेतवर्नन कीरतिहरिहयसरदघनजोन्हजरा मंदार हरि हर हरगिरि ससि सुधा सौध घनसार ५ अथस्वेतकीरतिइति हरिहयनामइंद्रको जराबुढाई हरिवि

स्तु किंवाकपिलदेव किंवास्वेतवाराहकोई पुरानमैं हरिकौंभी स्वेतकह्योहोयगो नंदजीसौंगर्ग मुनिकेवचन शुक्लोरक्तस्तथापीतइदानींकृष्णतांगतः याकोअर्थशुक्लरूपभीहै लालरूपभीहै पीतरूपभीहै अबकृष्णभयेहैं श्रीभागवतमैंहै हरमहादेव हरगिरिकैलास सेषचन्द्र नालगायोजरचं सारकपूर ४ बल बक हीरा केवरो कोडी करका कास कुंद काचुरी कम ल हिम सिकता भसम कपास ६ बलइतिबलदेवजीकरकामेघसौंजोपत्थरपरैं आला गडाकहतहैं आकासगंगवसैंकसोंज्ञाकहतहैं काचूरीसर्पकी कमलपुंडरीक किंवाकुमुद सिकतारेत षांडहाडनिर्झरचवरचंदनहंससमरार छत्रसत्यजुगमुहधवधर्मसिंहउडमार ७ पा डइतिनिर्झरझरना मरारकमलकीजर श्रोसिंहस्वेतहै उडमारसमुद्र उडमालीको किंवा उर्मिमालीकोअपभ्रंसशब्द उडमारकहतहैं उडपनारकीमाला समुद्रहैजामैं ऐसैंजानिये ७ सेष सुकृत सुचि सतगुन संतनकेमन हास सीपि चून भोडर फटिक षटिका फेन प्रकास ८ सेषइति सुचिपवित्रवस्त्र किंवापवित्रवस्त्र किंवासुचिनामस्वेतकोहै सेष कौंसुचिस्वेतवर्नियें सुकृतपुन्यस्वेतवर्नियें षटिकाषरी किंवाषारभीस्वेतवर्णितहै ष ढिकाकोषटिकाअपभ्रंस ८ सुक्रसुदरसनसुरसरितवारनवाजिसमेत नारदपारदअमलजलरदसारदादि सब सेत ९ सुक्रइतिसुक्रग्रह श्रोश्रीसुदर्शनचक्रश्रोसुरकीसरितश्री

19A

गंगाजी औसुरकौवारनहाथीऐरावतऔसुरकौवाजी उच्चैश्रवाइनिसहितस्वेतवर्निये।
औअमलजलनिर्मलजल औसारदासरस्वती औसुरदरितऔसैंजानिये ९ कविन्नकीनैं
छत्रछितिपतिकेसोदासगनपतिदसनवसनवसुमतिकयौवारुहै विधिकीनौंआसनसरा
सनअसमसरआसनकौकीनौंपाकसासनतुषारहै हरिकरीसेजहरिप्रियाकयौनकमोती
हारकयौतिलकहराहूकसोहारहै राजादसरथसुतसुनौंराजारामचंद्ररावरोसुजससवज
गकोसिंगारहै १० कीनेइति हेश्रीरामचंद्रतमारोसुजससंसारनेजगतकोसिंगारभूषनहै।
छितिपतिराजानैंछत्रकीनैंहै सवकेऊपरराजतहैछत्रस्वेतजानिये वसुमतीपृथ्वीनैंवस
नवस्त्रकीनैंहैसमुद्ररूप सागरावरीभूमिकोनामहै असमसरकामताकोधनुषस्वेतहै पा

की

कसासनइंद्रआपनैंआसनकौंचढिवेकौंचढिवेकौंतुषारघोडाकीयोहै उच्चैश्रवा हरिकीसे।
जनागस्वेतहै हरिप्रियालक्ष्मीजीतिननैंनाकमैंपहरिवेकौंमोतीकरेहै हरनैभस्मस्वेतहै।
ताकोतिलककीयोहै हरापार्वतीतिननैंहारकीयोहै सवजगकोसिंगारहै तीनहूलोककौं
भूषितकरतहैजोकोईजसकहतहैसोआछोलागतहै १० देहदुतिहलधरकीनैंसिसिकरक
रजगाकरवानीवरविमलविचारहै मनिगनमदमानिद्विजननजनेऊजानिसंषसंषपानिपा

नि

हषदअपारहै केसोदाससविलासविलसैविलासिनीनिसषसषमदुहासउदयउदार

क॰
२०

२०

है राजादसरथसुतसुनौ राजा रामचंद्र रावरौ सुजससवजगकौ सिंगार है ११ देहदुतिइति
हलधरश्रीबलिदेवजी तिननैं आपनी देहकी दुतिकरी है निसिकर चंद्रमा नैं कर किरनकिये
हैं जगकर ब्रह्मा तिननैं विमल निर्मल चारु सुंदर बानी सरस्वती कौं करी है सुनिगनकै म
न उज्वल जानौं औ जनेऊभी उज्वल जानौं संषपानि नारायन तिनके पानिहाथ तामैं संष
विलाससहित जे विलासिनी स्त्री तासमैं मैं नायकसौं विलास करै है तासमैमैं विसेषकरिकै ल
सै है सो है है सुष सौं सुषमैं मंदहासको उदय विलासिनी कैसी है उदार है निपुन है विलासमैं
प्रवीन है हेममैं उदार नाम प्रवीनकौ औ दाताकौ औ बडेकौं ११ नारायनकी नौमनि उरअवदा
त गनि कमलाकी बीनी भनि सोभासुभसार है केसव सुरभिके ससारदासुदेस वेस नारद
के उपदेस विसद विचार है सौनकरिषीविसेषि सीर षसिषानि लेषि गंगाकी तरंग देषि वि
मल विहार है राजादसरथसुतसुनौ राजारामचंद्र रावरौ सुजससवजगकौ सिंगार है १२
नारायन इति श्रीरामचंद्रजीके सुजसकौं श्रीनारायनमनिकी नी है उरछाती ताकौं अव
दात गौरवर्न जानिये मनिको छाती कौ एकरंग मिले है यातैं इनके मतमैं नारायनस्वेत जा
निये कौस्तुभ प्रीत है कोई और मनि लीजिये कमलाकी बीना प्रसिद्ध नहीं इनके मतमैं उज्व
ल मनि कहै कि वा कमलाकी जो बीना ताके मधुर रसरसी जो भनि कहिये धुनि सहबानी सो उ

२०

सोबीना

ज्वलहै कहूंकमलाकीवानीभनिऐसोपाठहै सारदादिकहैंआदिपदसौंवचनभीलीजिये सो
नकआदिजे बहुविसेषरिषिहैं तिनकेसिरविषैंसिषाहै सोभीउज्वलताभारोजसहै १२
विलोकिसिरोरुहसेतसमेततनूरुहकेसवयोंरागुनगायो उठकिधौंआपुकीऔधिकेअंकुरसू
लकिसूप्रसमूलनसायो लिष्योकिधौंरूपकेपानीपराजयरूपकोभूपकुरूपलिषायो
जरासरपंजरजीवजरयोकिजराजरकंवरसोपहिरायो १३ अथजरावर्ननस्वेतरूप विलोकि
इति सिरोरुहमाथेकेकेससमेततनूरुहसरीरकेरोमताकौंस्वेतविलोकिकैंकेसवकविनैंया
तरहवाकोगुनकह्योहैकेसकी उत्प्रेच्छाकरतहै केसवकवि किधौंसूलहै जासौंमूलसहि
तसूषनसूभयोहै सूलजोवनकेसूषकौंवेधिकरितिकरेहैं किधौंरूपकोजोभूपहैजोवन
समयमैंश्रेष्ठरूपहै तानेंकुरूपजोकोईभूपहैतासौंरूपकेपानीसौंपराजयलिषाईहै रूप
कोभूपहास्योयहअर्थ किधौंविधातानेंजराबुढाईरूपजोहैसरपंजरकोपीजरातामैंजीव
कौंजरयोहै रोक्योहैकिधौंजरारूपजोजरकंवररूपाकोवस्त्र जरनामरूपाकोसोताकोसो
पहिरायोहै किंवाजरानेंज्वररूपजोकंबलहैसोपहिरायोहै बहुतामैंज्वरहोतहै जाकौंब
हुतदिनज्वररहैहै सोस्वेतहोयजातहै १३ अभिरामसचिक्कनस्यामसुगंधकेधामहुतेजेसुभा
यकके प्रतिकूलभयेद्रगसूलसवैकिधौंसालसिंगारकेघायकके निजभूतअभूतजराकेकि

रा

क

क॰
२१
21

धौंअवतालीजं जनुलायकके सितकेसहियेइहिवेसलसैजनुसायकअंतकनायके १८
अभिरामइति जेअनुकूलपैकेसैतेप्रतिकूलभये विरुद्धभयेजेनेत्रनिकोंआछेलागेथे
तेनेत्रनिकौंसूलभये किधौंसिंगारकोजोकोईघातकमारनहारहैताकेसालसस्त्रविसेष
है सो लमतुमारिवेकोंसस्त्रहैमननानाथमेंहै शरवमेंसरहूथकहतहैं जवाकेलायकजेअप
अवतालीहै केकोअनवयजरासें किंवाकेपादशरनार्थ जोआमिलकेआगेजायपहलैं अमल
करैसोअवतालीकहावै १८ लसेसितलोमसरीरसवै किजराजसरूपकेपानीलिषायौ सरूप
कोदेसउदासकोकीलनिकीलितकैंकिकुरूपवसायौ जरेकिधौंकसवव्याधिनिकौकिधौं
आधिकेअंकुरअंतनपायौ जरासंपजरजीवजसौकिजराजरकंवरसोपहिरायौ १९ लसेइ
तिसंदरसरूपकोदेसठिकानौजोथालाकोंउदासउहूगरूपजोकीलमेषतासोंकीलिकैंबाधिकैं
जैसेंगांवकीलिहैमत्रसोंमेषगाडैहै नाहरउहांनहींआवै कुरूपकौवसायौनष्टकीयौ कुरूप
वसायौऐसोभीपाठहै तहांजरानेकुरूपकोंवसायौहैऔरसवधिवैसेंही व्याधिनिकौजरसूल
है किधौंआधिमनकोदुषताकोअंकुरहै सोकैसाहैजाकोअंतनासरूपकोहै सोनहींपायौ
नहींजान्योहैकिंवाअंततासकोहै सोजाकोनहीपायोहै दिनदिनमेंवढहै किंवाजाकोअंतन
हींपायोहै १९ अथपीतवर्नन हरिवाहन विधिहरजटा हराहरदहरिताल चंपकदीपकवीर

र

21A

रस सरगुरमधुसरपाल १६ अथपीतवर्ननहरिदइति हरिवाहनगरुड हरामहादेवकीस्त्रीपा
र्वती कहूंदरीभीपाठहै तहांभीपार्वती मधुमहूवाजानिये मधुकपांडुर रघुवंसमैंहै याको
अर्थमहूवासोपीतकुचसरपालइंद्र याकोअर्थऐसैंभीकेतनैलोगकरतहैं सुरदेवता ओपा
लजोवरुणपालसैंजानिये ओवधानइत्यादिसोपीतहै यातैंभूमिकीतरहपालकोरंगपीतहै १६
सुरगिति भूगोरोचनांगंधकगोथनसूतचक्रवाकमनसिलसदाहापरवानरपूत १७ सुरगि
रिइति सुरगिरिसुमेर भूकहियेभूमिअंकुरपीतनिकरेहैं यातैं ओगोमूतमनसिलहरिता
लकीतरहहोतहै ओवानरकोवच्चा १७ कमलकोसकेसवसनकेसरिकनकसभाग सारोमै

कोमय

षचपलादिसब पीतरपीतपराग १८ कमलइति औहंसकेवस्त्र हेमभागकवि सारोमैंनो
१८ सवैया मंगलहीजुकरीरजनीविधियाहीतेमंगलीनामधस्योहै हंससैंदामिनिदेहसवारि
उडायदई बनजायवस्योहै रोचनकैंरचिकेतकीचंपकफूलमैंअंगसुवासभस्योहै गोरीगुरा
ईकोमेलमिलैकरहाटककैंकरहाटकस्योहै १९ मंगलइति मंगलसुभनाहीकेलियेविधाता
नेंरजनीहरदकोंबनाईहै गोरीकीगुराईकोमेलमिलायकेंविवाहादिमैंचढावतहैं मंगलीना
मधस्योहै फेरिगोरीकीगोराईकेमेलसोंदामनीकीदेहरचीहै निकसीजानिउडायदई फे
रिमेलसोंरोचनकोंरचे ओकेतकीचपकफूलनमेंअंगकोसुवासभीधस्योहै गोरीकीगोरा

हेकेमेलकोंमिलायकरि हाटकसोनाकोंओकरटकेवीचमेंहोतहैंजामेंवीजरहतहैं हाट
कमेंलेकरहाटकऐसोभीपाठहै हाटकसोंलेकेकरहाटकलोंई औरभीजेपीतवस्त्रकेस
मूहहैं ताहिकह्योहै लेयहसह्यआरंभवाचकहै जैसेंव्रस्नानसोंलेजेतनेंवर्नआयेतिनेदिये
ऐसेंजानिये १९ अथहरुस्यवर्नविधमहूतआकासअसितअर्जुनखंजनसाथ नीलकंठकोकं
ठसनिवासविसासीपाप २० अथश्यामवर्नन विधइतिविंधपर्वततमालआदि ।
असितरवारिओसापकहिये ।साथ नीलकंठमोरकिवामहादेवतिनकोकंठ सनिसनैश्च
रश्रीव्यासदेवजी विसासीविस्वासदेकरिदगाकरैसोजानियेओपातक २० गा कंअरलंगूर
अघराहुछायाहमदरोर रामचंद्रघनद्रोपदीसिंधुअम्बरतमचोर २१ गाकइति गाहुग्रह ओछा
हछाया महमदरा रोरदरिद्रता सूरदासजीकोपद सुदामाकोवर्नन रोरकोजोरतेसारचर
नीकियोगयोद्विजद्वारिकापगनायो इहांरोरदरिद्रको घनमेघ सिंधुसमुद्रकीमूर्तिजोहेसोस्या
महैऐसेंकहतहैं जलरूपस्वेतहै केतनेंकहतहैंउरमारसमुद्रकह्योहै तहांछीरसमुद्रभेद०
कीयोहै गाकसम्बोरअम्बरस्थीर २१ जामूजमुनातेलितिलघलमनसरसिजचीर भीलकरी
वननरकमसिमृगमदकज्जलनीर २२ जामूइति जामूजामुनि घलदुष्टकोमन सरसिजनी
लोत्पलओचीरचीरकहावतहै येगूकीजातिलगाईपहरतिहैकज्जलनीरकाजलकोजल म

स
स

सिपाछैंकहीहैफेरिकज्जलनीरकत्यो कज्जलनीर ऐसोकोईपरतुहै ऐसोअर्थकरिये रलयेकहै
ज्जलनीलसोवाल्जानिये २२ मधुपनिसोशृंगाररसकालीकृत्याकाल अपजसरिछकलंकक
लि लोचननतारेलाल २३ मधुपइति मंत्रादिकसोंमारनै लियेकरैसोकृत्या कोलस्वर ओलो
चनकेतारेओलालजोबहुततत्समाकरैलोभी लालचंचलकोनाम ओतत्समाकरेताकोनाम २३
मारगअगनिकिसाननरलोभक्षोभड्रषमोह विरहइसोदोगोपिकाकोकिलमहिषीलोह २४
मारगइतिअगिनिकोपथ जहांआगिलगिजायतहांकोलोपरिजातहै श्रीजसोदाजीकोस्यामरं
गहै २४ काचकीचकचकामसलवेकोकावकुरूप कलहकुंडच्छलआदिदेकोरेहंसस्वरूप
२५ काचइतिकेकीमयूर औरकुरूपजाकोबुरोरूपहोयसोजानिये २५ कवित्त वैरिनकेंवहूभा
तिदेषतिहीलागिजातिकालिमांकमलमुषसवजगजानीहै जतनअनेककरिजदपिजनम
भरिधोवतहूछूटतिनतेसववषानीहै निजदलजागेजातिपरदलहूनीहोतिअचलाचलतिय
हूअकहकहानीहै पूरनप्रतापदीपअंजनकीराजैरघराजतश्रीरामचंद्रपानिनिकृपानीहै २६
वैरिनइति राजनश्रीरामचंद्रपानिनिकृपानीहै पानिनिकोअर्थपानीजामेंरहैसोपानिनिऐ
सीकृपानीतरवारिश्रीरामचंद्रजीकीराजतिहै कहूंपानिमेंकृपानीऐसोभीपाठहै कैसीतर
वारिहै जाहितरवारिकेदेषनैहीकरिवैरिनकेजेकमलसमानमुषहैंतामैंवहुततरहसोंका।

क॰
२३
23

लिमांस्याहीलागिजातिहै औरनसौंजीतिकेंकमलसोप्रफुल्लितसुषहोयरहेहै सबपदनिकी
जोध्वनिकादियेतोग्रंथवढ़तवाहै तरवारजवकाढ़तहैंतवनिजदलमेंजोतिजागतिहै परदल
मेंसत्रुभूपनिकीरतनपेचयेपरेंहैं तवप्रतिविविसोहूनीहोतिहै अचलाभूमिलछनाकरि
अचलावासीसत्रुसोचलायमानहोतहूं भाजतहै अचलाचलेयहविरोधाभासहै कहांनीक
थासोअकहहै कहांनादीजीति फेरिकेसीहै पुरनजोप्रतापसोईहैदीपताकेअंजनकीरे
षाराजतिहैतरवारअंजनस्यामकहै २६ हंसनिकेअवतंसरचेरचकीचकरिस्वधासौंस्वधारे
मठकाचकेकूलससों गगाजूकेअगसंगजमुनातरंगवलदेवकोवदनरस्योवाहनीकेरससां
केसवकपालीकेठकालहूटकहूजैसेंअमलकमलअलिसोहैससिससैसो राजारामचंद्रजूके
त्रासवसभारेभूपभूमिछाडिभाजेफिरेंअसेंअपजससौ २७ हंसनकेइति राजारामचंद्रजीकेत्रा
सकेवससोंभारेवडेभूपभूमिछाडिभाजेफिरतहैंअसेंकोअर्थविनाकारनलराईनहीभई अ
जसकेडरसों जोरननमेंसोभाजेंगेजोवडोअपजसहोयगातासौपहिलेंभाजेंफिरतहैंअसेंह
मेंअजसलागैजैसेंहूंसनिकेअवतंसमाथेपरमारकीसीसिषाउज्वलहोतिहैसोजैसें किंवा
हंसनिकेअवतंससरदारराजहंससोजैसेंघोरेकीचसोंरचिजायरंगिजाय हंससेतकीचस्या
म मठदेवमंदिरआदिसोजैसेंस्वधाचूनांसोसवारे ओकाचकेक[illegible]लसाऊपरधरेंअसेंस्वधा

23A

है सुधासेतकाचस्याम श्रीगंगाजीकेअंगसेत श्रीजमुनांजीकेतरंगस्याम वलदेवजूकोमुष
गौर वारुनीस्याम कपालीशिवतिनकेकंठविषैकहूजाकोसादुहैऐसोकालकूटविषजैसैं के
सवकपालीकंठकूलकालकूटजैसें यहभीपाठहै तहांकूलकोअर्थनिकट कंठसेतविषस्याम
कमलपुंडरीकतामैंअलि इहांभीसेतस्यामहै ससिजैसेंससमैसोसादतहै मृगसेंसोसादतहै इहां
लछनांकरिसादकोअर्थकुहूपलागेहै ऐसैंअपजससोंहमभीकुहूपलागेंगे २७ अथअरुनादि
कवर्नन इंद्रगोपपर्यंतकुजकेसरिकुसमविसेष मदिरागजमुषविंदरवितावोतछकुलेष २८
अथलालवर्नन इंद्रगोपइति इंद्रगोपवीरवधूटी पर्यंतकोनामअगिया पटविजनाजुगानुंजी
गन पूरवमेंभगजागनां कुजमंगल केसरिजहैकुसमविसेष वारुनीस्यामकहीहै महिरातासोंक
छुभिन्नकहीहै किंवाहाथीकेमुषपरसेंजोविंदुचुरैहैसोजोमदिरा गजमदयहअर्थ कहैवेस
वजगमुषविंदुयहभीपाठहै उदै समैमैंरवितोतातोवाओतछुकनाग २८ रसनांअधरहूंगंत
पलकुकुरसिषासमान मानिकसारससीसरुकवानरवदनप्रमान २९ रसनाइति पल
मांस कुकुटरमुरगातांकीसिषा समानयसववरोवरि २९ कोकिलचकोरपिकपारावतन
धनेन बंचचरनकलहंसकेपकीकहूरीअंन ३० कोकिलइति पिकपपीहा पारावतकबूत
र इनसवकेनषआनैनलाल कहूरीपलहोतहै ताकीतरहजोहोयसोलाल ऐंनतरहकौ।

नि

चारु

भीकरहतहैं बिंबफलआदिजानिये ३० जपाकुसुमतारिमकुसुमकिंसुककंजअसोक पावक किंसु
पल्लवबीटिकारंगाहचिरसबलोक ३१ जपाइतिजपाकुसुमकोगुड़हरऔड़हुलनामहै किंसु
कपालासकोफूलऔअसोकसोफूल बीटिकापानकीबीरीलाकलोग ३१ रातोचंदनइन्द्रसलु
त्रियपथमसजीठ अहनमदावरहधिरनषगेह सधाईठ ३२ रातोइतिरक्तचंदन [illegible] औरुधिर औ
नषलालहैं ईठमित्र ३२ सवैया फूलेपलासविलासथलीवहकेसवदासहुलाससनथोरें सेषअ
सेषसुषानलकीजनुज्वालविसालचलीदिवऔरें किंसुकओसुकतुंडनकोरुचिराचेरसातलमेंवि
तचोरें चंचुनिचापिचहूंदिसिडोलतचारुचकोरअंगारनिभोरें ३३ फूलेइति उद्दीपनविभावहैसो
हुलावेहै नायकविनानहीरहिसकेगीहचिउपजायवेकेलियेसषीवचननायकासों देवहहैवथ
वोरेहुलाससोंनहिवहुतहुलाससोंफूलेहैंछोटेबडेवृक्षऔछोटीवडीउरसबफूलीहै किंवावहुत
जेतेरीविलासकरिवकीथलीठिकानाहैतहां किंवाविलासथलीमेंवहुतजेपलासकेवृक्षतेफूले
हैं ताकीउत्प्रेक्षाकरतहैं सेषकेअसेषमुषसवमुषतें अनलकीज्वालादिवआकासकीओरचली
मानों किंसु [illegible] कजेहैंतेरसातलमेंपथ्वीतलमेंचितकोंचोरतहैं देषतेउनमेंमनलगिजातहै कैसे
हैं श्रीसोभाजनकजेसुकतुंडसुकचंचुनकीजरुचिकांतितेसेराचेहैं विधातानेंरंगेहैं किंवाकिं
सुककीजाश्रीसोभासोसुकतुंडनिकीकांतिसीहै तातेंकिंसुककोंचंचुसोंचापिकेंअंगारकेभोरेंच

२५A

कोरडोलतहै किंसवकोआदिलालजानिये ३३ अथधूम्रवर्नन काककंठखर मूषिकागरहगोधा भनिभूरि करभकपोतनिआदिदै धूमधूमरी ३४ अथधूम्रवर्नन काककंठइति मूषिकामूसा गरहगोधाछपकली खरवमैंविछुवतियाकहतहै वहुतकहै करभऊंठ आधूरिधूमरीहै धूम्रहै ३४ सवैया सम्भचंद्रिकाया राघवकीचतुरंगचमूचंवसधूरिउठीजलहूथलछाई। मानोंप्रतापहुतासनधूमसुकेसवदासअकासनमाई मेटिकैंपंचप्रभूतकिधौंविधिरेनुमई नवरीतिचलाई दुःषनिवेदनकोभवभारकोंभूमिकिधौंसुरलोकसिधाई ३५ राघवइति श्रीरामचंद्रजीकीचमूसेनाकेसीहै चतुरंगहै जामैंचारिअंगहै हाथीरथघोरापयादासोच तुरंगकीउत्प्रेक्षा प्रतापसोहुतासनआगिताकोधूमहैमानोंनमाईनहींआवैहै किधौंविधाता नेपांचजेप्रभूतहै पृथ्वीजलतेजवायुआकास ताकोंमेटिकैं रेनुधूरिमईरचनाकरीयहनई तरहचलाईफेरिउत्प्रेक्षाकरतहै कवितर्ककरतहै भवसंसारकेभारकोदुषकहिवेकोंभूमि सुरलोकगईहै किंवाभवमहादेवसोंभारकेदुषकहिवेकों धूरिधूमधूम्रजानिये ३५ अथ नीलवर्नन दूर्वांसकुवलयनलिनअनिलव्योमतनवाल मरकतमनिहलधरकेनीलव र्नसेंवाल ३६ अथनीलवर्नन दूर्वइति कुवलयनीलकमल नलिनकुमदकोभेदहै मरक तमनिनीलमन्यौरासूर्यकेघोराभीनीलजानिये ३६ कंठ उद्धलहुऔरउदूँउरमैंवलकेवल

कः
२४
25

दाई केसवसूरजअंसनिमंडिसैनौजमुनांजलधारधसाई संकरसैलसिलातलमध्यकि
धौंसुककोफिरिआवलिआई नारदबुद्धिविसारदहीयकिधौंतुलसीदलमालसुहा
ई १९ कंठदुकूलइति औरलपेकहै वलदाईकोअर्थवरदाई वरकेदेनवारेजोवलदेव
जीहैंतिनकेकंठमेंदुकूलनीलजोवस्त्रसोओरउहै वामभागमैंदछिनभागमैंउरछो
तीविषैपायानरहैउरमैंहलरकैहै वलदेवजीकेअंगकीकांतिवस्त्रमैंपरीहै ताकीउ
त्मेछा श्रीजमुनाजीनेसूर्यकीकिरनसोंभूषितकरिकेआपनाजलकीधाराधसाईहै
संकरसैलकैलासतेसोश्रीवलदेवजीताकीसिलासमानवछस्थलतापैसुककीआव
लीपंगतिहै श्रीनारदजीजेबुद्धिविसारप्रवीन किंवाकाहूसोंबुद्धिविसारदसंवोधन ति
नकेहृदयमैंश्रीतुलसीजीकेदलकीमालाहैमानौ २० अथमिश्रितस्वेतकलससहूकथ
न सिंहकलसहरिसहगतिचंदविसदविधुदेष अभ्रकधातआकासपुनिकलसस्यामसित
लेष २८ अथमिश्रितस्वेतकलसशाहकथनसिंहइति हरिसहूकरिसिंहस्वेतहै ताकों
जानियें श्रीकलसचंद्रस्यामहैतिनैंजानिये विधुसहूसोंचंद्रमास्वेतऔविसदस्यामजानि
ये अभ्रकसहूकरिधातजोहैअभ्रकसोस्वेतजानिये अकाससस्याम कलससहूकोजोग
आकाससोंकीजियेकलसजोहैआकाससोजानियेऐसैंस्यामऔस्वेतजानौंकिंवाकलस

२

२४

25A

सहूकरिवैं स्याम स्वेत जो है वस्तु ताकौं जां जैसें कलपत्छ दोय चरी चारि चरी राति स्याम होय तौ भी कलपत्छ कहावै जैसें नीला घोरा घोरा भी नील होय और स्वेत होय तौ भी नीला कहावै. २८ घनकरघन मेचक मेचअरु नाग राज गजमेघ पयोरासि कहि सिंधु सों अरु छिति छीरहि लेषि २९ घनइतिकर रको नाम घनसार है घनसों कपूर लियाजे सें सताकहै सत्य भामा लीजियें हैं घं कपूर स्वेत घनमेच स्याम नागराजहाथी स्याम सेषनाग स्वेत है इहां कं म स्वेत स्याम कौ भ्रम भयौ पयोरासि नाम समुद्र कौ मूर्ति समुद्र की स्याम है जल उज्वल है । कोई कहत है इरजव समुद्र पै दृष्टिजाति है नव समुद्र स्याम दीसत है आकास की तरह जल तौ उ ज्वल है और छीर विषै वहुत छीर दूध वाची किंवा छीर समुद्र वाची सो स्वेत है ३९ राहु सिंह सिंही जभनि हरि वलभद्र अनंत अर्जुनकहिये स्वेत सों अरु पारथ वलवंत ४० राहु इति सिंही जनाम रा हुको सो स्याम औ सिंहको रंग सो स्वेत अनंत नाम हरिको सो स्याम वलभद्र जी गौर किंवा हरि नाम वलभद्र को औ अनंत भगवान पारथ स्याम है ४१ हरिगज अरु गजसमुझिये हरि गज ग जजानि कोकिल सौं कलकंठ कहि अरु कलहंस वषानि ४२ हरिगज इति हरि गज सहूकरि ह रिइंद्र तिनको गज ऐरावत जानिये सो स्वेत है फेरि हरि गज सहू को विभाग करि कहत है हरि स हूसो हरि इंद्र लियैसो स्वेत गज सहू सौं गज हाथी जानैं सो स्याम है कलकंठ नाम कोकिल को

न

घननही

हरि

को॰
२६

26

[illegible] ओ हंसको ४२ कमलनदीवरसहसैं गंगा सिंधु वषानि नीरदनिकसेदांतसैं अरज
नीरकोटूनि ४२ कमलनदीइतिकमलनदीवरसहसैं श्रीगंगाजीनाजानिये अर्थश्रीकमल
जीनदीहैसोकैसीहैवरश्रेष्टहै विस्नुपदीनामहै ओकमलनदीवरसमुद्रकोभीनामहै कमल
नारायनतिनकीनदीगंगातिनकेवरपति सरितपतिसमुद्रकोनाम निकसेदांतहोतहैता
कोनामनीरद नीको अर्थ निकसे रदको अर्थ दांत ओनीरजलताकोंजोदेइसोनीरदमेघ
जानिये दांतस्वेतमेघस्याम ४२ अथस्वेतपीतसहकथन सिवविरंचिसोंसंभुभनिरजतरज
तअरुहेम स्वर्नसरभसोंकहतहैं अष्टापदकरिनेम ४३ अथस्वेतपीतसहकथन शिवइति ।
संभुनामशिवकोकहतहैंसोस्वेत संभुब्रह्मासोपीत रजतनामरूपाकोसोस्वेत हेममेंसो
नाकोभीनामरजतसोपीत अष्टापदनामसोनाकोहैसोपीतसरभकोईजनावरसोस्वेतहै ।
श्रेसो
सरभस्वर्नसोभीपाठहै वादियेहीतोस्वेतपीतकोक्रमभंगहोतहै ४३ सोमसुवर्णकहिचंद्र
कलधौतरजतअरुहेम तारकरूपाहरुचिरपीतस्कहिकरिप्रेम ४४ सोमइतिचंद्रनामच
द्रमाकोओसोनाकोकलधौतनामरूपाकोहेमसोनाकोतारकरूपनामरूपाकोरुचिरसुंदरपी
तरको प्रेमकरिकैंतूकहि ४४ अथस्वेतआरक्तसहकथन स्वेतवरूरुचिअग्निरुचिसूर
सोमहरिहोय पुस्करतीरथसोंकहैंपंकजसोंसवलोय ४५ अथस्वेतआरक्तगुनविसिष्टता

२६

२६ᴿ

कोकघन स्वेतइति सुचिनामस्वेतवस्त्रकोग्रो अग्निग्रारक्त हरिनामसूरजकोसोग्रारक्त
सोमचंद्रसो स्वेत पुस्करनामतीर्थकोसोस्वेतपंकजलाल ४५ हंसहंसरविवर्तिफटिकअर्क
सोमचंद्रसो स्वेत पुस्करनामतीर्थकोसोस्वेतपंकजलाल ४५ हंसहंसरविवर्तिफटिकअर्क
फटिकरविमान अब्जसंघसरसिजहूवोकमलाकमलजलजान ४६ इतिश्रीकविप्रि
यायांवर्णालंकारवर्ननोनामपंचमप्रभावः ५ हंसइति हंसपछीसोस्वेतग्रोहंससूर्य
सोग्रारक्त अर्कनामफटिककोस्वेत ग्रोरवि सोग्रारक्त अब्जनामसंषकोसोस्वेत ग्रो
सरसिजसोग्रारक्त कमलनामपंकजकोग्रोजलको ४६ इतिहरिचरणदासकृतायां
कविप्रियाभरणाख्यायांकविप्रियाटीकायांपंचमप्रभावव्याख्या ५ अथवर्णवर्ननसंष
रत १ ग्रावर्त २ ग्रोकुटिल ३ त्रिकोन ४ सुवृत ५ तीछन ६ गुरु ७ कोमल ८ कठिन ९
निश्चल १० चंचल ११ १ अथवर्नवाह्यवर्नन पीछेंपंचमप्रभावमेंकहिग्राएसामान्यालं
कारकेचारिप्रकार एकवर्नालंकार जामैंवर्नकहियेरंगलीजिये अवग्रवर्न जाकीग्रा
कृतिकोग्रहनरंगकोग्रहननहीं ग्रठाईसकहैंगे संपूरनइत्यादितीनदोहामैंनामहैं सु
गमहैं संपूरनइति सुगम १ सुघद १२ कुघद १३ ग्ररुमंदगति १४ सीतल १५ तम १६ सुह
प १७ करूसुर १८ सुस्वर १९ मधुर २० अबल २१ बलिष्ट २२ कुरूप २३ २ सुघदइतिसुग
म ३ सम २४ कठ २५ मंडल २६ बरनिग्रगति २७ सदागति २८ दानि अष्टविंशविधिमैं

क

कहेवर्नेअनेवषानिसत्यइति स्वगाम ३ अथपसंपूर्नवर्नन इतनैसंपूरनसदावरहुकेस
वदास अंबुजआननआरसीसेंतनप्रेमप्रकास ४ अथपसंपूर्नइतनैइति प्रेमकोप्र
कास ४ श्रेषककविन्नहरिकरमंडनसकलदुषषंडनमकरमहिमंडलकेकहत अब
इमति परमसत्वासपुनिपीयूषनिवासपरिपूरनप्रकासकेसोदासभूअकासग
ति वरनमदनकेसोप्रोजकेसदनन्नहिसोदरसंभोदरदिनेसत्नकेमित्रअति सी
ताजूकेमुषसुषमांकीउपमांकोंसबिकोमलनकमलअमलरजनिपति ५ हरि
करइति कमलअोचंद्रमांसोंअब श्रीरामचंद्रजीकोवचनसषीसों किंवासषीव
चनसषीसों हेसषिसीताजीकेमुषकीदेसुषमांअतिसोभाताकीउपमांकोंकोम
लमलनहीअोअमलरजनिपतिचंद्रमांनही कमलकैसोहैहरिनारायनतिनकेक
रकोमंडनभूषनहै फेरिकैसोहै सकलदुषषंडन सकलसंपूर्नलोगनिकेदुषकोषं
डन करनवालोहै देषेहूंतेंआनंददेतहै मकरकलीजाकी फूलेकमलकीतोक
हांताईवडाईकरे सोभीउपमालायकनही हे अनेकार्थमेकोरकादर्स यारपियाको
अर्थ मकरनामकोरककलीकोअोआदर्सदर्पनको यावातकोंअर्थइमति संपूर्न १
जाकीवुद्धिहै वडीवुद्धिहैजाकीयहअर्थ सोकहतहैं फेरिकमलकैसोहै परमउत्क

शङ्खवासमंगधहैजाको देसमैंपीऊषनामजलकोभी पीऊषजलमैंनिवासहैजाको परिपूर्न
जाकोप्रकासहै संपूर्नफूलिस्योहै तौभीमुखकेसमाननहीं फेरिकैसोहै भूप्रकासमैंगति
हैजाकीसबठौररहैहैसबआदरकरैहै आकासगंगाकेकमलकरवपूराषतिहै श्रीभगवान
केहाथमैंहै मदनकामकेवदनसमानहै श्रीलक्ष्मीजीकोचरनटिकोभीहै यामैंकछुन्न
ननामतिजानौलक्ष्मीजीकोसोदरभाईहै जलमैंउपज्योहैयातैं आसुभोदरहै आछोजा
कोउदरकहियमध्यहै औदिनेससूर्यताकोप्रतिमित्रहै अपरजनीपतिपदरजनीपति
चंद्रमांकैसोहै हरिकरमंडन हरिसूर्जतिनकेकरनसोईहैमंडनभूषनजाको चंद्रमांसैंसूर्ज
केकिरनकोप्रकासहै यहपुरानमैंहै किंवाहरिसूर्जकेकरकोंमंडनभूषनकरतहैसोभितक
रतहै चंद्रमांमैं आयेंसूर्जकीकिरनसोभापावतिहै कविसबवर्नतहैं फेरिचंद्रकैसोहै स
कलहैकलासोरहैंग्रमताहिसहितहै लोगनिकोंसूर्जकेतापमैंभयोहैजोदुषताकोषंडन
है दूरकरनवालोहै किंवासकलमहादेवजिनमैंचंद्रमांकीकलारहतिहैतिनकोंजोहैदुष
विषसोंअग्निसोंगरमीताकोंदूरकरतहै श्रीमहिमंडलकोमुकुरदर्पनहै संपूर्नपृथ्वीकीछा
याचंद्रमांमैंपरतिहै यहपुरानप्रसिद्ध जोतिषमैंसूर्जग्रहनचंद्रमांसोंहोतहै चंद्रग्रहनभू
मिकीछायासौंहोतहै यहग्रहलाघव बुद्धिमानकहतहैं परमनामनानार्थतेपरमेस्वरको

क॰
२८

28

है नारायनकौंभीतीननेत्रहैं भुजंगेसनत्साय चाग्न्यर्कचंद्रत्रिनेत्रायुतसैनतासोनतासः प
रमनारायनतामैंसुंदरहैवासजाको पुनिपीयूषग्रसनताकोनिवासहै फेरिजाकोपरिपू
रनप्रकासहैकैसोहैप्रकासजाकीभूमिमैंआकासमैंगतिहै किंवाचंद्रकैसोहै भूमैंजलादि
कमैंप्रतिविंबकरिगतिहै जाकी वदनसदनकेसे मदनकेसमानजाकोवदनहै जदिजो।
भीलक्ष्मीजीकोसोदरभाईहै तोभीलक्ष्मीजीकोसदकहियेसभावचंचलताकहूंरहैकहू
नहीरहै इत्यादियामैंनहीहै जैसोयाकोसभावहैतैसोईहै वडेछोटेकेघरमैंएकतरहैप्रका
सकरैहै किंवाश्रीजीकेसोदरभाईहै लक्ष्मीजीजलसौंउत्पन्नभईहै औलक्ष्मीजीकोसदन
यरहै जदिजोभीऐसोहैतोभीउपमालायकनहीं जदिकोअनयसवठौरहै जदिजोभीसभो
दरहै सुंदरभाकहियेकांति प्रकासजाकेउदरमध्यमैंहै तोभीउपमालायकनहींचंद्रमा
केमध्यमैंस्यामताहैयातैं सुभोदरजोदिनेसजीताकोअतिमित्रहै आपनोतेजसूर्ययामैंरा
षतहैयातैं ४ अथमंडलवर्नन केसवमंडलसदिकांवलयावलयवषानि आलवालपरिबे
षरविमंडलमंडलजानि ६ अथमंडलवर्नन चहूंओरगोलहोयसोमंडल आवर्तकोभेदके
सवइति वलयाचूरी वलयपुरुषकेहाथमैंरहैहै कडाकहिये आलवालकियारीपरिवेष
परिधिसूर्यचंद्रमाकौंलागतहै औरविमंडलरतनांकोमंडलगोलजानौं ६ कवित्त मनि

२

२८

मयआलवालथलजजलजरविमंडलमैंजैसेंमनिमोहैकवितानिकी जैसेंसविसेषपरिवेष
मैंअसेषसोभितसुवेषसोमसीमासुषदानिकी जैसेंवंकलोचनिकलितकरकंकननिवलि
तललितदुतिमुगरप्रभानिकी केसोदासअैसेंराजेंरासमैंरसिकलालआसपासमंडलीविरा
जैगोपिकानिकी २ मनिमयइति आसपासगोपिनकीमंडलीविराजतिहैतहांरासमैंरसिकला
लअैसेंराजततहैंसोभतहैं कैसेंसोभतहै गोपीजनकेजोमंडलसोभईमनिमयआलवालकिया
री तामैंजैसेंथलजतमालकावृछजानिये सोहतहैतैसेसोभतहै फेरिरविमंडलमैं जैसेंज
लजकमलसोभतहैकविताजोहैताकीमतिकोंमोहतिहै असोहपवमोहै कविताकविकीसर
स्वतीसोनहींवरतिसकैं किंवामनिमयआलवालमैं थलजजोजलजस्थलकमलजैसेंसोह
तहै रविसमजेजैसेंआपनोमंडलमैंसोहतहै तैसेंसोहतहै सविसेषअसेषरेषजोपरिवेषतामैं
जैसेंतामैंसुवेषसोमसोभतहै याकोअर्थ सविसेषकोअर्थसदाकोनहींसरदको जोअसे
षरेषपरिवेष असेषसंपूर्नहैरेषाजामैं कोईओरषंडितनहींहोय असोजोपरिवेषमंडल
तामैंजैसेंसुवेषसछकलाकरिपूर्नसोमचंद्रमाजैसेंसोहतहैतैसेंसोभतभये सुषदानीकीसी
मास्रीकृस्न किंवाचंद्रमाकोविसेषनकिंवासरदकोजोपरिवेषतामैंअसेषरेषतामैंअसेषरेष
जोसोम असेषसंपूर्नहैरेषाकलाजाकोरेषाकलाकों [illegible] भीकहतहैंसोजैसेंसोभतहै चंद्रमा

३१

कैसोहै सवै घरहै सुंदरताको वेषस्थानहै छीरसमुद्र फेरि वंकलोचनी नायकाके करजैसें
कंकननिसोंकलितवेष्टितहोयतैसें वंकलोचनिकैसीहै प्रगटजोप्रभातेजताकीजोलालि
तसोंदरदुतिसोभातासोंवलितजुक्तहै कलितवलितकोअर्थहोजैसोअधिलागतहोतैसोकी
जियेअनेकार्थसहहै किंवाजवादिरलागेकंकनकोविसेषनकीजिये आलवालमंडल
आदिमंडलजानिये ७ अथआवर्तवर्नन एआवर्तवषानियेकेसवदाससुजान चकरीच
क्रआलातअरुआतपत्रघरसान ८ अथआवर्त १ एआवर्तइति लकरीवारिकैंफेरतहैं
सोअलात आतपत्रछत्र ८ उदाहरणसवमानैापलटनजानीजातदेषिकैंअलातजातजो
तिहोति वांति मंदलाजि केसोदासकुसलकुलालचक्रचंक्रमनचातुरीचितैकैंचारुआतुरी
चलतभाजि चंदजूकेचहूंकोदवेषपरिवेषकोसोदेषतहीरहियेनकहियेवचनसाजि धा
यछाडिआपनिधिजातिदिसिदिसिरघुनाथजूकेछत्रतरभ्रमतभ्रमीनवाजि ९ उदाहरण
सवरीति हयअोरपलटफिरिवो अलातसोंजानतउमगजोहैजोतिप्रभासोलाजिकैंमंदहो
तिहै कुसलआछोकुलालकुम्हारकेचक्रकोचंक्रमनफिरिवोताकीजोचातुरीहैचारुअ
त्रंकीगतिदेषिकेंआतुरीहरवरायकैं भाजिचलतिहै वेपरिवेषकोसोमंडलकोतरहधा
यहोरिवेकीठौरताकोंछाडिकैंदिसामैंआपनिधिसमुद्रदौरिवेकोठौरधारीयातैंभ्रमीन

२९

दिसा

29A

भ्रमनसीलअलातआदिआवर्त परिवेषकौंमंडलमैंकह्योहै इहांआवर्तमैंकह्यो ऐसोअर्थ
श्रीरामचंद्रजीकेचंद्रकेंदचंद्रतरफपरिवेषकोसोवेषदेषतरहियेदरसनीयहै ऐवचनमा
त्रि वचनवनायकेंवरोवरितहींकहिये परिवेषमंडलहै परिवेषमंडलकोलछनकियो।
चाहियेवीचतहींभ्रमतजानियरे १ अथकुटिलवर्ननअलकअलिकभ्रूकुंचिकाकिंस
कसुकमपलेषि अहिकलछपनवीजुरीकंकनभग्रविसेषि १० अथकुटिलअलकइति
अलिकललाट कुंचितामोक्ष भग्नफुटोकंकन १० वालचंद्रिकावालससिहरिनषसूक
रदंत कुदालादिकवर्नियेकपटीकुटिलअनंत ११ वालइति हरिनषनाहरकेनष कुदार
कपटीअनंतकुटिलहै जाकोअंतनहीपाइये किंवाकुटिलवस्तुअनंतहै ११ यथाभोरज॰
गीवृषभानसुताअलसीविलसीनिसिकुंजविहारी केसवपोछतिअंचलआननिपीकस॰
लीकगईमिटिकारी वंकलगेकुचवीचनषछतदेषिभईदृगदूनीलजारी मोनोवियोग
वराहदैनोजगसैलकीसंधिनिदंतगवेदारी १२ भोरजगीइति नायकनैंनेत्रचुंवनकीयाहै।
ताकेअंचलकीजोछोरकिनारातासोपीकपोछतिहै कारीकाजरकीरेषामिटिगई सषी
सवजानैंगी रातिनायकपाससोईहै एकलाजयातैंभईनषछतदेषिदूनीलज्जितभई।
इंगवेसकरकोदांतनषछतसवरकोदांतरेहा १२ अथत्रिकोनवर्नन सकटसिंघारेवज्र

कं॰
२॰
30

हलहरकेनैंननिहारि केसवदासत्रिकोनमहिपावककुंडविचारि अथत्रिकोन सकहद
ति मकरगाढ़ा महीएपी हामसैंअग्निकुंडविसेष १३ यथालोचनत्रिलोचनकेकेस
वविलोकिविधिपावककेकुंडसीत्रिकोनकीनीधरनी सोधीहैसुधारिएघुपरमधुनी
नन्दपकरिकरिपूरनदसहूदिसिकरनी ज्वालासोंजगतजरामरनसुभगमेरुजाकीजो
तिहोतलोकलोकमनहरनी थिरचरजीवहूविहोमियतजगजगहोताहोतकालनजु
गतिजातिवरनी १४ लोचनइति विधिनैंपिनाकके नेत्रदेषिकैं नेत्रकीआकृतिपावककेकुं
डसीपावककोकुंडहैमानौंऐसीत्रिकोनधरनीकीहै सोकोअर्थमानौं शिवकौंअनादि
हैताये जनवरनतहैं जहांजज्ञकरतहैंतहांएथ्वीसोधतहैं एथ्वराजानैंसोधीहै सुमेरुसो
ज्वालासोजगतमैंजरामरनाहैंकालहोतापिनाकेनेत्रआदित्रिकोन १८ अथसुवृत्तवर्नन
वृत्तवेलभनिगुच्छअहकुकुदसाधुकेअंगकुंभिकुंभकुचअंडमनिकंडुककलससुरंग १९
अथवृत्त वृत्तगोलावलचौडानहीं वृत्तवेलइति गुच्छाफूलके ककुदवृषकेकाधापर
रहतहै साधुसुंदरताकेअंग भजनओजंघा कुंभीहाथीताकोकुंभस्थल अंडब्रह्मांडकिं
वाअंडा औमनिकंदुकगेंद १९ यथापरमप्रवीनअतिकोमलहूपालतेरेउरतेंउदितनित
चितहितकारीहै केसोरायकीसौंअतिसुंदरउदारसुभसलजसुसीलविधिसुरतिसुधारी

२॰

30A

है काहूसौं नजानैं हसिबोलिन बिलाकिजानैं कंचुकी सहित साधु सुधो वेसवारी है ऐसे हू

कुचनि सकुचनि न सकति लुकि हरि हियहरन प्रकृतिकौं निवारी है १६ परमउति सबीव

चननायकासौं ऐसे तेरे कुचनिसौं मैं संकोच सौं नहीं पछि सकति हौं आगें स्पष्ट है परमप्र

वीननायका हमजो कछु वक्र वचन कहत हैं ताकौं तू समुझति है नायकायाहि देखि आसक्त

भयो है तासौं मिलायो चाहति हैं किंवा मानको अवसेष है ताहि छुड़ायो चाहति है नायकातो

हीसौं आसक्त है यह अर्थ कुचनतेरे कोमल है पाल हृदयतें उदित कंचुकी सहित कंचुकी १

चोली ताहि सहित सदा रहत है अर्थ यह सुषमंदै रहत हैं हसैं बोलैं देषैं वोंक रिकें नायका

सौं कहति हैं तकेसी है सुधी है वहुत तो मैं कुटिलता नांही फेरि तूकेसी है वेसवारी है वयसनाम

है मीमैं जोवनको है वेसवारी को अर्थ जुवती वारी वेसवारी को अर्थ जो वाल कअवस्याक १

हियेतो आगें उदार वडे कुचन हीवनैं किंवा सक्कु चहीको विसेषन चितहितकारी आदिपद

वारिये कुचगोलवरनैं १६ अथ तीछन औ गुरु वर्नन नषकटा ह्लासरउ वचन सेलादिकष

रजानि कुचनि तंव गुनलाज मति रति अति गुरु करिमानि १७ अथ तीछन औ गुरु वर्नन न

पउति दुर्वचन कहू वचन सेल वरछी आदि छुरी कटारी जानिये परतीछन आधादोहामैं

गुरु वडे गुनकौं औ लाजकौं ऐसें मति रति प्रीति १७ यथा सैं हथी हथार ऐन अमारे अनेक

ब

क· ३१

31

कामंरहहैंतेंषरेषलवचनविसेषिये चोरनवचतओटकीएहकपाटकोरभोनभोहरेहभारे
भयअवरेषिये केसोदासमंत्रगदजंतऊनप्रतिपछरछेलछलछवग्ररछकनलेषिये भे
दियतमर्मवर्मऊपरकसेईरहेंपीरचनीघायलनिघापैंनेटेषिये १८ सेंहषीइतिसेंहषीव
रछीजोहथ्यारसोएनंएतीरोकीअर्थएजोषलकेवचनसोनकहियेनहीहै किंवासेंहथी
वरछी औऔरजेहथ्यार कटारीआदिअनारेअनीवारेजाकेतीछनअग्रभागहैं
सोएनहीहै वाकोघावतोटेषिवेमेंआवतिहै किंवाकामसरहेंतेंवरेअतिअनारेअतिअ
नीवारेहैं यातेंषलदुष्टकेवचनविसेषकरिये औरसामान्यहै भोहराभूमिषोदिकरवना
वे सोभोनमेंभोहरामेंकोटिकपाटकीओटकरे मंत्रऔजंत्र औगदकहियेपाछनादेकेंओ
षधलगावे औलंत्रटोरकाएवमेंटोरकरमकहतहैं एभीषलकेवचनकेप्रतिपछसत्रुहोय।
कैंरछानहीकरेहै लाषलाषवग्रजासोंरछानहीकरिसकेहै किंवाषलकेवचनकोजोल
छनिसानाभयोहै जापैंषलकेवचनचलतहै ताकोंलाषवग्ररछकनहीतातिये जोअ
गपीडाकोंनहीसहिसकेसोमर्मताकोंभेटेहै वर्मबषतरऊपरकसोपहेरहतहै चनीव
हतपीडाइहांसेलषवचनतीछन १८ अथगुरुलाज पहिलेंतजिआरसआरसीदेषिव
रीकचसोचनसारहिले पुनियोछिगुलावतिलोंतिफलेलअंगोछेमेंआछेअंगोछे

ह

३१

ल

31A

तिकैं कहिकेसवमेटजिवादिसौंमांजिरतेपरआंजेमैंअंजनदै वहुरसौंतोदुरिदे षैांतोदेषौं
कह्योसषिलाजतैलोचनलागियेहै १९ अथगुरु पहिलेंइति चनसारकपूरचनाचसैं।
फुलेलसौंतिलौं धोरोलगायचौकनैंकरें तिलौंछेकीभाषाएववमैं तेलउंसकीये सु
गंधकीदोयजाति एकमेदकस्तूरीआदि जवादिकेसरिअतरआदितासौंमांजे हेसषि
पहिलेंमैंदेष्योआलस्यमै एकतोप्रथमदरसन औरश्रृंगारभीअस्तव्यस्ततासौंभईलाज
वहुरयोफेरिदुरिकेछपिकेदेष्योकह्योदेषौंलाजतैलोचनमैंलागियेहै जानियेहैनायक
भीदेषेहैयातैंलाज इहांलाजकोंगुरुवरनी किंवानायकनहीदेषेहै तोभीमोहिदेषतकें।
लाजलागतिहैयातैंलाजकोंगुरुकही १९ अथकोमलवर्नन पल्लवकुसुमदलमालमन
मांषनमृदुलमखतूल पातपामरीजीभपदप्रेमसुपुन्यविचार २० अथकोमल पल्लवइ
ति मृदुजानिये मृनालकमलकीजर जीभऔपदपाव प्रेमऔपुन्य २० यथामैनऐसोम
नमृदुमृदुलमृनालिकाकेसूतकेसीसुरतुनिमननिहरतिहै दासह्योकेसेवीजदोनपान
सेअहनओठकेसोदासदेषिदृगआनंदभरतिहै एरीमेरीतेरीमोहिभावतिभलाईतातेंवू
झतिहौंतोहिऔरकुनउरतिहै मांषनसीजीभमृषकंजसौंकवरतामैंकाठसीकठैठी
वातैकैसेंनिकरतिहै २१ रसिकप्रिया मैंनइति मृदुलकोमल मृनालिकाकेसूतकेस

क

वू

मानसरकंठकोधवतिसहु पातनवपल्लवसेलालवोठ मांषनसीजीभ सुषकंजसोकों
वैसातामैंकाठसीकठेरीकेठोरवात मैनमाषनमनालआदिकोमल मैंनदोहामैंनहीं
कह्योहैतोभीजानिये औरभीकोमललीजिये २१ अथकठोरवर्नन कुचकठोरअंमूल
मनिवरनिवज्रकहूंमित लहाउहीरायेविरहीजनकेचित्त २२ अथकठोर कुचइति
वज्रओहल कहूंवज्रहूमित्रऐसोभीपाठहै मनिकहैहीराकोग्रहनहोतोतोभीअति
कठोरजानिलहैंकरिकह्योहीराकीकनीसोंयोरमतिछेदीजातिहै २२ स्रवनिकेतन
स्रममनकाठकमठकीपीठि केसवस्रषचर्मअहहठसठदुर्जनडीठि २३ स्रवनकेइति ।
कमठ २३ यथाकेसोदासदीरघउसासनिकोसदागतिआषुकोअकासहै प्रकासपाप
भोगीको देहजातजातरूपहाडनिकोरूपोरूपरूपकोकुरूपविधुवासरसंजोगीको ।
वुद्धिनकोवीजरीहैनैननिकौंधाराधरछातीकोचह्यारचूनचारनिप्रयोगीके उदरकों
वाडवाअगनिगेहमाननहींजनहीहीराहीयोकाहूपुत्रसोगीको २४ केसोदासइति ।
जाननहीयाकोअर्थमानो जहांजाननहींमाननहींऐसेसहूआवेतहांउत्प्रेक्षाहै पु
त्रसोगीकोहृदयहीराहै वज्रहै हीराकोनामभीवज्रहै औसबनेवाहिरमैंहीराकठोर
दैहृदयकैसोहै उसासऊंचेवडेचलतहैं ताकोंचलायवेकोंयहसदागतिपौनहै सदा

गतिपौनकोनामहै जवपौनकोप्रकोपहोतहै तवबडे उसासचलतहैं दीरघउसासनिको
सदागति यहभीपाठहै दीरघउसासनिजहांसदागतिचलनौहै दीरघउसासउठ्योरहतहै
हृदयआयुर्वलकोआकासहै आकासजोतिषमैंलग्नकोनामहै आयुर्वललग्नहै यह
अर्थ किंवाआकहियेपारीकासकहियेदीप्तिहै प्रकासपापभोगीको याकोअर्थ पापभोगी
जोपापकोंभोगैपापिष्टताकोंजोहोतहै प्रकोअर्थवडोकासकहियेषासरोगसोहै हृदयसों
षासउठ्यो सरीरछीनभयोषासउठतहै किंवापापभोगीकोप्रकास यहपापिष्टहैपापको
भोगैहै रूपयाकोअर्थ हेमकोसमैरूपनामसंदर्थकोऔआकृतिकोऔस्वभावको देह।
जातयाकोअर्थ देहकहियेपिंडतामैंजोउपजैसोदेहजात देहजातनामअंगकोहाथपाव
इत्यादिसोजातरूपसोनांसेगोरधे इहांवाचकधर्मलुप्ताउपमा किंवादेहऔजातकहिये
जाति भाषामैंइकारकोलोपभीकरतहै हेमीमैंजातिनामअंगकोभीकह्योहै देहपिंड
औजात अंगतेजातरूपसोनांसेधे सोअवपुत्रसोगभयेहाडनिकोरूपोरूप हाडहीकोरू
पकहियेआकारहै जाकोऐसोरूपभयोहै ऐसीतरहकोभयोहै भाषामैंरूपतरहकोभी
कहतहै संदरकोभीकहतहैं फलानांरूपकोहै रूपकीलगाईहै संदरिहैऐसीबोलति
है अंतमैंकोहै ताकीअन्वयविधुसाहसोंहैवासरदिनसंजोगीविधुकोसोरूपभयो विधु

कं।
३३

33

नामहै यामैं चंद्रमांकोभी राछसकोभी राछसकोनामरात्रिचरहै दिनमैं जैसो राछसबुरो दीष
तैसोबुरोदीषैहै यहअर्थ चंद्रमांतोकाहेकोंकहिये किंवारूपकोघोपदिलैं सोअवकुरूप
भयो जाकेआगैंवासरसंजोगीदिनमैं विधुराछससोजाकेआगैंकोहैकोंनहै कोहैसहूति
रक्कारविषयाकुरूपकेआगैंवहकहाकुरूपहै यहअर्थयेफेरिलगाइये हाडनिकोरूयो हा
डकोरूपहोयगयो सरीरमैंमांसनहींदेहरूपहरूपकोकुरूपनरहतरहकोकुरूपभयो देहमा
लिनवस्त्रमलिन केसबढेवासरसंजोगीविधुराछसजाकेआगैंकोहैकछुनहीं बुद्धिकोंतो
बीजुरीकीनी बुद्धिजैसैंबीजुरीचमकिजायतैसैंचमकिजातिहै नैननिकोधाराधरमेघकी
नों आंसूआंषिसोंबरसतहै छातीकोंचरिपारकीयोहै इहांकेसहूकीअनन्वायसोंहै चरि
यारकोंनोलकरीकेबनसोंमारतहै छातीरूपजोचरियारकोंसोवनकहियेबहुतगावचोटता
कोप्रयोगीसंजोगीकीनेंहैं चरीचरीमैंछातीकूटतहै उदरपेटताकोवाडवाग्निजोसमुद्रमैं
हैताकोचरमाननतहै आठपहरपेटबरैहै किंवावडवाग्निहैजोसमुद्र इहांहृदयओदहीताकठो
र २४ अपथनिश्चलवर्नन सतीसमरभटसंतमनधर्मअधर्मनिमित्त जहांतहांएवरनियेक
लवनिश्चचित्त २५ अपथनिश्चल सतीइति धर्मकरैसोनहींजाय औअधर्मकरैसोनहींजाय।
निमित्तहोनिहार निश्चलचित्तकोअनन्यसतीसोंओसमरभटसों किंवानिश्चलचित्तकरिव

रनिये २५ यथा कायमनोवचकामनलोभनमोहनमोहैमहाभयजेता केसववालवयक्रम
वृद्धविपत्तिनहूअतिधीरजचेता हैंकलिमैंकरुनाकरुनालयकोनगनैंकृतद्वापरत्रेता एईहै
सूरजमंडलभेदनहूसतीअरुऊरधरेता २६ कायइति कहूंवहपाठहै कहूंवृद्धिपाठहै ।
विपतिकीवृद्धिमेंजाकोंकामआदिनहींमोहै इतनासमैमेंधीरजकोचेतेहैं करुनाकेवरु।
नालयसमुद्रहूआरपैभीकृपाकरतहै सूरसतीऊरधरेताजोगीनिश्चलचित्तहै २६ अथचं
चलवर्नन तरलतुरंगकुरंगगजनवारनेचलदलपात लोभिनकेमनसपरजनवालककाल
विधान २७ अथचंचलवर्नन तरलइति चलदलपीपल स्पारजनकापर कालकीक्रिया २७
कुलटाकुटिलकटाक्षमनसपनेंजोवनमीन षंजनअलिगजश्रवनश्रीदामिनिपवनप्रवीन ।
२८ कुलटाइति तरलअतितरलमंदतरलतीनिकेग्रहनहैं कुरंगओमनतरलहै लोभीकोम
नअतितरलहै यातैंजुदोग्रहनकीयो जोवनमंदतरलहै गजश्रवनहाथीकेकान देषवी
नसंबोधनहैकाहूसों २८ यथा भौंरज्योंभवतलोललोंनालतानिप्रतिषंजनसोथलमीन
मीनोजहांजलहै सपनोंऊहोनकहूंअपनैंनआपनैंएभूलियेनवेनश्रेनआककेसोफलहै
गहियेधौंकौंनगुनदेषतहौरहियेरीकहियेकछूनहूपमोहकोमहलहै चपलासोचमकति
सोहैचाहचहूंदिसिकाहूकोसनेहचलदलकोसोदलहै २९ भौंरजोइति काहूकोसनेहसोच

लदललपीपलकेदलपातसोहै जैसेंभौरलोलतानिप्रतिभवंतहै तैसेंकाहूकिंवाकाहूके
लैहलोलचंचललतानिप्रति औतसासहितजोहोय ऐसेंचाहभरेललनानायिका
निप्रतिफिरतहैं जैसेंथलमेंषंजनचंचल सपनौहूहोतकहूंआपनैंाआपनैंपे यह
प्रसिद्धहै सपनौंदेषिरहेमनगोय अपनौदेषेअनकोहोय आपनौदेषोसपनौकहूंआ
पकोसफलहोतहै एआपनैंनहीहोतहैं नायककोंसनायनायकासषीसोंकहतिहै
कहूपाठहै सपनैंऊआपनैनहोतकहूंअपनाये जोइनैअपनायलीजियेआपनेंकरिली
जियेतोसपनोमैभीएआपनेंनहींहोतहै भूलियेनवैनयाकोअर्थ इनकेऊपरभरेवचन
सौंभूलियेनहीं किंवाएनसषिएहमारेवैनभूलैमति आककोफलऊपरअछोभीतरनिक
म्मा देषिवेहीकेआछेहैं थोकोअर्थवितर्क कैंनइनमैंगुनहै जासोइनकोग्रहनकीजिये
पहिलैंसषीनेंकह्योहै इनमैंप्रीतिफरिकैरो तवयहनायकाकीउक्ति हूपइनकोमोहकोम
हलहै हूपइनकोमोहकोनिवासहै भौरऔलोभीनायककोमनऔषंजनआदिचंच
ल २५ अथसुषदवर्नन पंडितपुत्रपतिव्रताविद्यावधुनीरोग सुषहीफलअभिलाष
केसंपतिमित्रसंजोग ३॰ अथसुषद पंडितइति पुत्रपंडितहोयजोजाकीविद्याहेतों औ
सुषहीसोंफलप्राप्तिहोय जैसेंचाहैतैसीसंपतिहोय ३॰ दानमांनधनजोगजयरागवा

34A

गरहरूप सक्ति सोमसरवणपताये सुषदानिअनूप ३१ दानइति पाछैंसंपतिकहीहैधनको अनयमानसैंसक्तिसुषदहै औसोमचंद्रमा ३१ यथा पंडितपुत्रसपुत्रसुधीपतिनीपतिप्रेम परायनभारी जानैंसवैंगुनमांतैसवैजनदानविधानदयाउरधारी केसवेरोगनिहीसोंवियो गसंजोगसुभोगनिसैंांसुषकारी सोचकहेंजगमांहिलहैजसभक्तियहैचहुंवेदविचारी ३२ पंडितइति पुत्रपंडितहोय आपनीविद्यामैंप्रवरदारहोय औसपूतहोजामैंचोरीपनांकौगु ननहींहोय औसुधीसुबुद्धिहोय सरीरकेंारोगसैंावियोगहोय रोगनहींहोयय्यहअर्थ पं डितपुत्रपतिप्रताआदिसुषद ३२ अथदुषदवर्नन पापपराजयरूठहठसठतामूरषमित्र वाम ननैांगीरूपविनअसहनसीलचरित ३३ अथदुषदवर्नन पापइति वामनयोगीकोअर्थकों ईकाजमैंअधिकारीजानांकोहवालाजगातलैनोंइत्यादिवाकोंनहींदीजिये वहचोरिषायजव लेषामांगैंतवपेटचीरिवलागें कोईहोउरूपविनांनहींसोहतहै असहनसील काहूकीवात नहींसहैऐसोहैचरित्रजाको ३३ आधिव्याधिअपमानरिनपरघरभोजनवास कन्यासंत तिहहतावरषाकालप्रवास ३४ आधिइति आधिमनकोदुष ३४ कुजनकुस्वामीकुगतिह यकुपुरनिवासकुनारि परवसदारिदआदिहैंअरिदुषदानिविचारि ३५ कुजनइति जनक हियेदासमांआज्ञानहींहोय औकुचालघोडा ३५ यथा वाहनकुचालचोरचाकरचपलचित्त

क॰
३४

35

खिन्नमनिहीनसूमस्वामीउरआनिये परघरभोजननिवासवासकुपुरनिकेसोदासवरषाम
वासदुषदीनिये पापिनकेअंगसंगअंगनाअनेगावसअपजसजनतसूतचितहितसिहाबि
ये सूदतावृद्धाईव्याधिदाविदरूठाईआधिपहईनरकनरलोकनिवसानिये ३६ वाहनर
ति मनुष्यलोकमैंसातदीपकेभेदकवहुवचनहै एतजोनरकहै कुजनओस्वामीआदि
दुषदाईकहे ३६ मंदगतिवर्नन कुलतियहासविलासबुधकामक्रोधमदमाति सतिगुरु
सारसहंसगजत्रियगतिमंदवषानि ३७ अथमंदगति कुलतियहासइति कुलवधूकीहसी
मंदवरनिये बुधज्ञानवानताकोविलासलीला कामक्रोधओमदतवरतहोतहै मंदमंदछूट
तहैं कहूंहानिभीपाठहै सनैस्चरओगुरुवृहस्पति ३७ जथा कोमलविमलमनविमलासी
सषीसाथकमलाज्योंलीनैंहाथकमलसनालकैं नूपुरकीधुनिसुनिभौरैंकलहंसनिकेचौ
किवेंकिपरेचारचेटवामरालके कचनिकेभारकुचभारनिसकुचभारलचकिलचकिजात
कटिनटवालके हैरैहूरैवोलतिविलोकतिहसतिहेरैहेरैहेरैचलतिहरतिमनलालके ३८
कोमलइति सषीसोंसषीवचन नायकाकैसीहै कोमलओविमलनिर्मलजाकोमनहै पे
तिविमलासरस्वतीसारीषीहै ओसषीनाकेसाथमैंहै कमलालक्ष्मीज्योंजातरहहोय ओहाथ
केबीचसनालडांडीसहितकमललीनेहै मरालहंसताकेचेटूवावालक कुलत्रियचालआदि

३४

35A

मेर ३८ अथसीतलवर्नन मलयजदाषकलिंदसुषओरेमिश्रीमीत प्रियसंगमवन
सारससिजलजलहहहिमसीत ३९ अथसीतलवर्नन मलयइति मलयजचंदन क
लिंदतरवूज ओजोसुषदपदार्थहैसो ओरावकरकामेचसोजोपत्थरपरैसो मीतमित्र ।
किंवासंबोधन औरैप्रियसंगमयहहैयातें घनसारकपूरहिमवरफ ३९ रसिकप्रिया सी
तलसमीररातिचंद्रचंद्रिकानिवारिकेसोदासऐसैंहीतोहरिषदिरातहे फूलनिफैलाय
डारिफारिडारिघनसारचंदनकोंटारिचितचागनैंधिरातहै नीरहीनमीनज्यरफातजी
वैनीरहीपैंछीरकेछिरकैंकहाधीरजधिरातहै पाईहेतैंपीरकिधौंयाहीउपचारकरेआ
गिकैंतोडाढेंगेअगआगिहीसिरातहै ४० सीतलइति प्रकासविरहहै सीतलसमीररति ।
चंद्रिकानामसषीहैतासोंकहतिहै चंद्रकोंनिवारि चंद्रमामतिदेषनदेषु किंवावाहरिजा
यकेंचंद्रमाकोमतिदिषावे घरहीमेंवेठीहूरतेंचांदनीमतिदिषावे येउद्दीपनहैयातेंवि
रहीकोंदुषवहुतहोतहै ऐसैंयातरहसो चंद्रमाचांदिनीदिषावनकेंदुषजोहेध्यानमें ।
नायकसोंजोभयोहेमिलनतासोंजोसुषसोभीहिरातहे जातरहतहे किंवाऐसेंही चंद्रमा
चांदिनीदिषावतकेसंपूर्नहीयतो आवेनहीदुषसोहेएतनाकहतिहेताकोंतूरष याकोंअ
पैराविले नहींतोहिरातहेयहभीजातरहैगो तवमरीयहजानैंगे चोगनैंकोंकरि ए

कैतोविरहसोपीडा दूसरोध्यानमेंनायकसोंमिलनथ्योसोछूट्यो तीसरोदुषरोगग्रोरहै
वोथ्योसषीकोमूरषतातासोंदुष पाईहैतेंपीर तोहिकवढीअैसीपीडाप्रापमभईहै किंवा
यहपीडातेंपाईहैसमरूीहै यहकहादुषहै यातें सषीऊपरीनेंजान्योयातेंप्रकास समीर
लछनमेंज्योंभीनहीकह्योहैतोभीजानियोसमिरआदिपीतलजानिये ४० अथतप्रवने
नरिपुप्रतापदुर्वचननतपतप्रविरहसंताप सूरजआगिवज्रागिदुषतूसायापविलाप
४१ अथतप्ररिपुइति वज्रागिबीजुरीकीआगि तसालोभआपापआविलाप ४१ यथा
केसोदासनीदभूषप्यासउपहासत्रासदुषकोनिवासविषमुषहूगह्योपरैं वायुकोवहनेदि
नदावकोदहनवडीवाडवाअनलज्वालजालमेंरह्योपरै जीरनजनमजातजोरज्वरघो
रपरिपूरनप्रगारपरितापक्योंकह्योपरै सहिहौंतपनतापपरकोप्रतापरघुवीरकोवि
रहवीरमोपैंनसह्योपरै ४२ हनुमानजीसोंजानकीजीकोवचन केसोदासइति देवी
ररघुवीरकोविरहमोसोंनहीसह्योजाय औरकठिनकर्मसवहोयसकै कठिनक
र्मकहनहैं उपहासनिंदासहितहासी औत्रासएसवसहेजातहैं एसवदुषकेनिवास
हैं औविषकोंभीमुषसोंग्रहनहोयसकै वहभीषायोजाय यहअर्थ वायुकेवहनेमें
चलनेमेंदावकोदहनयाकोअर्थदावाग्नि किंवांयुकोआवर्तजानिये सोभीवडीजोवा

36

व

इवाग्निकीज्वालातांकोसमूहसोभीसंयौजाय समुद्रकीआगिवडवानलजीरनजननमव
ह्यावस्था तामैंउत्पन्नभयोऐसोजो जोरसहितज्वरसोघोरभयानकतासोंपरिपूरनपरिताप
दुषसोरुकुबीरकेविरहकेसमानकैसोकैसोजायनहींकैसोजायययहअर्थ किंवाजन्मतेंजा
नउपज्योजोजीर्नज्वर तपनसूर्यताकौताप परसत्रुकोप्रताप दोहामेंतमथोरकहे उदाह
रनमेंवहुतहैं दुषसोंनीदभूषइत्यादिजानिये औविषआदितम ४२ सुरूपवर्नन नल

कर

नलकूवरभिषकहरिसुतमदननिहारि दमयंतीसीतादितियसुंदररूपविचारि ४३ सु
रूपवर्नन नलइति नलकूवरकुवेरकेपुत्र हरभिषकअश्विनीकुमार हरिसुतप्रद्युमन
किंवाजयंत ४३ यथाकोहैदमयंतीइंद्रमतीरतिरातिदिनहोहिनछवीलीछिनछविजोंसिं
गारिये केसवकलजातजलजातजातवेदऐपेजातरूपवापुरोविरूपसोनिहारिये मदन
निरूपनिरूपमतानिरूपभये चंदवहुरूपअनुरूपकैविचारिये सीताजूकेरूपपरदेवता
कुरूपसेहैंरूपहीकेरूपकतौवारिवारिडारिये ४४ कोहैदमयंतीइति श्रीसीताजीकेसी

रूपहीहै

है यानरहरूपसोंरूपककरनौ एतनांकौवारिडारिये दमयंतीआदि रातिदिनछिनछि
नमैंछविजोंसिंगारिएतोभीछवीलीनहींहोहिं छिनकोछीनपहैं लघुगुरुगुरुलघुहो
तहैनिजइछाअनुसार जातवेदअग्नितासोंओपदई आगिसोंतपायो जोजातरूपसोनो

क॰
३७

37

कछुनहि किंवाजातवेदकीआपसोभीलजातिहै मदननिरूपनिरूपमतौनिरूपभये मदन
निरूपतनाकोअर्थ निरूपकोअर्थनिरूपनठहरावनो मदनकामजवनिरूपैहै निरूपन
करैहै ठहरावैहै सीताजीकीउपमालायककोईहै ऐसेंठहरावैतवनिरूपमजेसुंदरजेप
दार्थथेनिरूपमजाकीउपमानाहीमिलेहीसोभीनिरूपभयेश्रीसीताजीकेमुखकीउपमा
लायकनहीकहूंवदननिरूपऐसोभीपाठहै वदनकोनिरूपनकरतकैं कैसोहैवदनयह
ठहरावतकैं नवऔरउपमानतैंचद्रमाकौवहुतरूपहै ताकौंअनुरूपसीताजीकेमुखकेरूप
कौजोगपवैांकरिकैंविचारिये सीताजीकेरूपकेआगेंपरदेवताश्रेष्ठदेवताब्रह्मानीइंद्रानी।
आदिसोभीकुरूपहै अच्छारूपनहीहै कहूंरूपहूकेरूपकौंऐसोभीपाठहै रूपकहियेचित्रता
के रूपकौंवारिडारिये चित्रकेवलरूपहीहै किंवारूपजोकोईसुंदरिमानहैताकेरूपकौंवारि
येकहूंकोकवित्वहैजापैसोभाचोरटारैं दमयंतीआदिसुंदरकहै ४४ अथक्रूरस्वरवर्नन फी
गुरुसायउलूकअजमहिषीकोलवषानि कालककाकवकरभषरस्वानक्रूरस्वरजानि।
४५ अथक्रूरस्वर क्रूरकठोरउत्कटयहअर्थ फिलीइतिअजवकरा कोलसूवर कालका
करगावमैंनहीआवैवाहिररहतहै कहूंभेडिकाकयहभीपाठहै वकल्यारीएरवमेंहुंडारक
हतहैं करभऊंठ करभहाथीकावचाकोभीनामहै हाथीभीजानिये ४६ फिलीति यथाफिली

३७

37A

तैंरसीलीजीलीरारेहूकीरटलीलीस्यारतैसवाईभूतभावतीतैंआगरी केसोदासभेसनकीभा
मनीतैंभासैभासघरीतैंघरीसीधुनिऊठीतैंउजागरी भेदुनिकीमीट्टीमैंउंगेंदुमैंनारानारिनकीवो
कहूंतैंवांकीवानीकागनिकीकागरी सूकरीसकुचिसंकिकूकरीआसूकभई चूचूकीचरनिको
हैमोहैनागनागरी ४६ झिल्लीतिइति केसवदासकूरहरवनावनचाहेया तादिसमैकोइली
केसवदासकौंउतकटस्वरसौंउराहनौदीनो तवयहकवित्तवनायो कीलदैकवित्तवनायवेकोंप्रसं
गकूरकैंको वोधव्यवहकर्कसाली वक्ताकेसवदाससकोप इनकेप्रभावतैंनागरीपदऔरभीसर
सजीलीपदइत्यादिसौंनिंदाहीकौंपुष्टकरतहै हेनागरीहैकलहमैप्रवीनतेरीकंठधुनिसौंनाग
सापकिंवाहाथीसोभीमोहितहोतहै हमारेंऐसीमनोहरकंठकीधुनिनहीं झिल्लीझीयगुरतैंर
सीलीरसभरीहै अतिवुरीहैयहजानौं नीलीझीनहैं रातटिटिभशरवमैंटिटिकहतहैं ताकी
नोरटसहूताकौंलीलिगईहै स्यारतैंसवाईअधिक भेडिकीरसीलीवानीकोजोमेंडुमर्जोदाथी
ताकौंमीडिमसलिडारीहूरिकरीयहअर्थ नेउरकीनारिनकीऐंउमरोर वोकवडेवकरावाकी
वांनीतैंयाकीवानीवीहै वोकसौंभीनहीवेलिवेमैंआवे काककीकागरीहीकिंवाकाकनिकी
काकीधुनिसोगरीगलिगई ४६ अथकस्वरवर्नन कलरवकेकीकोकिलासूकसारोकलहं
स तंत्रीकंठनिआदिदेसभस्वरउंउभिवंस ४७ अथकस्वरवर्नन कलरवइति कलरवअव्यक्त

स्वर

ही

कें॰
३८ अंक
38

मधुरधुनिहैकेकीमयूरआदिकोईकहतहै एतनैंसमसरहै एतनांकेसरसुंदरसोभैहै आ।
छेलागतहै कलरवचा वंसवासरी ४७ यथा केकनकीकेकासुनिकाकेनमथतमनमन
मथमनोरथरथपथसोहिये कोकिलाकोकाकलीनिकलितललितवागदेषतहीअनुराग
उरअवरोहिये कोकनिकीकारिकाकहतसुकसारिकानिकेसोहासनारिकाकुमारिकाहूसो
हिये हंसमालावालतहीमानकीउतारिमालावोलैनंदलालसोंनऐसीवालाकोहिये ४८
केकिनकीद्युति सरदरितमैंमानछुडावतिहैसषी औररितुनिसोंसरदरितकोंअधिकठह
रायकेजोवरषाकालहोयतोहंसमालानांहीसंभवै औवसंतहीमैंकोकिलवरनतहैंवरषा
मैंनहीं मोरवरषामैंवरनतहैंवसंतमैंनहीं हंससमालाकेवालतहीमानकीमालापहिरीहैव
हुतमानकीयाहै ताकोंउतारो कोहियेयाकोअर्थ हैकोंहियहूसो कोंनहैएसषी केकाकैसी
है मन्मथकोजोमनोरथचाहसोहैरथताकोपथसोभतहै याहीमैंकामकोअभिलाषदो
रतुहै कोकिलाकाकलीअव्यक्तमैंहीधुनि तासोंकलितजुक्तललितसुंदरहैवाग अवरो।
हियेउपजैहैहोयतकमैंसरदकीअधिकाई सुकपढीताकीसारिकापरकीयासोंरति औ
कुमारिकामैंकामकीप्रवलताऐसैंअधिकाईकहिये ४८ अथमधुरवर्नन मधुरप्रियाधर
सोमकरमाषनदाषसमान वालकवातैंतोतरीकविकुलउक्तिप्रमान ४९ अथमधुरवर्नन

38A

मधुरइति सोमचंद्रमाताकीकिरन औकविनकीवानी नेत्रकर्नरसनांघ्रानत्वचाएतनांकोंजो
सुषदेसोमधुर ४८ मद्दवामिश्री रूपघृतअतिसिंगाररसत्रमिष्ट ऊषमहूषपियूषगनिकेसवसा
वेद्रुष ४० मद्दवाइति मद्दषमधुअंतःकरनसोंप्रीतिकरैसोमित्रमनकोंअछालगै ४० रसिक
प्रियायोषारिकषातनहासोईदाषनमांषनहूंसहूमेदिरठाई केसवऊषमहूषहुरूपतआईहों
तोपरछ्वाडिजिठाई तोवदनछदकोरसरंचकचाषिगयेकरिकेंहूढिठाई तादिनतैंउनराषीउठा
यसमेतसुधावसुधाकीमिठाई ४१ षारिकइति षारिकछुहारा मांषनसोंजोइहतापीसोमे
टी जेठाईमेंवडाईयनांछाडिकें रदनछदअधर सुधासमेतवसुधामेंजेतनीमिठाईहै दोहा
मेंथारोकहतहै उदाहरनमेंवहुतजानिलीजियें षारिकदाडिमनहींकह्योहैतोभीजानियेरसि
कप्रियाकोहै ४१ अथवलवर्नन पंगुगुंगरोगीवनिकभीतभूषजुतजानि अंधअनाथअजादिसि
सुअवलाअवलवषानि ४२ अथअवलवर्नन पंगुगुंगइति भीतडरोभूषजुत कहूंभीषभूष
जुतऐसोभीपाठहै भिक्षाकीहैभूषचाहजाकों केतनेसरीरकेअवलहैं यद्दगुंगाकोंकरिअ
वलकह्यो यामैंतोवलहै तहांकाहूसोपुकारिनसकैयातैंजानिये वकराहूरिनइत्यादि अव
लासौंअवलजातिजानिये ४२ षातनअघातसवजगतषवावतहै द्रोपदीकेसागपातषात
हीअघानेहै केसोदासनृपतिसुताकेसतभायभयेचोरतैंचतुरभुजरहूंचक्कजानेहै मांगने

कृ·
३९

39

ऊद्वारपालदासद्वतस्तनसेनौंकाठमाहिंकौंनपाठवेदनिवषानैंहैं औरहैंअनाथनिकोनाथ
कोऊनऊनाथनमतौअनाथनिकेहाथहीविकानैंहौं ४३ षाननइति भारतमैंकथाहै उर्यो
धनकेपठायेदुर्वासाजुधिष्ठिरपासआये याकथामैंभगवानसागकोलेसषायआपत्रप्त
भयेतासौंतीनौंलोकत्रप्तकीये एकराजाकीकन्यानैंसाचेमनसौंश्रीकृष्णविनाऔरकौंन
हींवरौ एकराजाकृष्णकौवेषवनायआयौ तवकन्यानैंकह्यौचारिभुजादिषावौतौवरौंभ
गवानकौध्यानकीयौतवचतुर्भुजभयौहौतौचारकपदीकन्यानैंवरी वामनरूपहायकैंम
गतभयौ फेरिवलिकेद्वारपालभये सांदीपनकेइहांपढिवेगयेतहांलकरीआनिवेगये
औरभीसेनभगवानकौरूपधरिराजाकीहजामतिकरी पांडवनिदूतकरिदुर्योधनकेइहांपठा
येहैंभारतमैंहै प्रह्लादकीरछ्याकौंकाठथंभतामैंप्रगटभयेहैं यहवातवेदकेकौंनपाठमैं कौ
नअध्यायमैंकहेहैं भगवानकाठमैंतैंप्रगटहोतहैं यहरहनीभीनहींहै द्रौपदीअवला औउ
ग्रसाकेसरापतैंभीतहै भूषकौअर्थचाहभीहैकन्याऔराजाचाहभरेहैं श्रीकृष्णविनाएस
वअनाथहैं श्रीकृष्णहीनाथहैं अथवलिष्टवर्नन पवनपवनकौपूतअरूपरमेश्वरसुरपाल
कामभीमवालीहलीवलिराजाएषुकाल ४४ अथवलिष्टवर्नन पवनइति हलीश्रीवलभ
दूजी एषुराजाभयेहैं भगवानकौअवतारजिनिएयौकौंसमकरीहै लोगनिकीरतवांधी

39A

है ४४ सिंहूवाहनगयंदगजहूसेषसतीसवनारि रामहूवेदमातापितावलीअरुरूपविचा
रि ४५ सिंहइति सतीजोसहगमनकरे आपनोपतिकौंनरकसौंकाढिये जमको
जोरनहींचलेकिंवासतीपतिव्रताजेसवनारिहैं एकपतिव्रताकौंमाडव्यऋषिनिसराप
दियोवाकेकहेंकेतनादिनसूर्यनहींऊगेकिंवासवनारि पुरुषसौंस्त्रीविषेंभोजनऔ
कामऔवलअधिकहै याअर्थकरैंअवलाअवलविचारियाअर्थसौंविरोधपरैअरु
रूकमे ४५ यथा वालिवधोवलिरावबधोकरसूलीकेंसूलकपालचलीहै कामज
सोजगकालपछ्योवंदिसेषधरेंविषहालाहलीहै सिंधुमथ्योकिलिकालीनथ्योकहि
केसवइंद्रकुचालचलीहै रामहूकीहरीरावनवामचहूंजुगएकअरुरूपवलीहै ४६ वाल
वंधोइति सूलीमहादेवतिनकेहाथमेंत्रिसूलजगतकेसंहारकरिवेकौं औकपालकौ
षपरोई रावनकेबंदमेंजगजकोकालपछ्योथो सेषनागहलाहलविषधरेंहैं किल
कोअर्थयहवातहै इंद्रकीजोकुचालगोतमकेघरयहवातजगतमेंपसरीहै इहांजोरा
वरनिसौंकर्मअधिकजोरावर ४६ अथसतरूपवर्नन केसवचारिहुवेदकौमनक्रमव
चनविचारि सांचोएकअरुरूहहरिरूठौसवसंसार ४७ अथसांचरूपवर्नन केसवइ
ति संसाररूठहै अरुरूकमेंश्रीभगवानसांचहै ४७ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगांव

के॰
भ॰
40

औ ठांवकोनामविलेहै तातनमातनपुत्रनमित्रनवित्तनअंगहूंसंगनरैहै केसब्बकाम
कोंरामविसारतऔरनिकामनकामह्विगैहै चेतिरेचेतिअजोचित अंतरअंतकओ
कअकेलाहीजैहै ४८ हाथीइति रेमूढअजेंअबभीचित्तकेअंतरवीचचेतकरि अंत
कनमताकेलोककोंअकेलाहीजायगो हाथीतेरेसाथीनहींहोहिंगे औघोरेसाथी
नहींहोंहिंगे औचेरेसाथीनहींहोहिंगे औगांवतेरेसाथीनहींहोहिंगे औठावकोतो
नामविलायजायगो पुलानीठोरफलानांकीहवेलीथी यहनामनहीरहैगो उ
हांकोईऔररहीरहैगो औरहीकोनामहोयगो एतेरेअंगहैंसोभीसंगमेंनहींरहैंगे ।
औरनिकामनिकम्माहैकामनहींआवेगो श्रीरामचंद्रजीसत्यहै औरफूठहै ४८ अ
नहींठिककोठगज्ञानैंनकुठोरताहीपैंठगावैठेलिज्ञाहीकोठगतहै याकेतोडरनि
डरडगतडगतडरिडरिकैंडरनिडगिडोगीजोंडिगतहै औसेंवसवासतैंउदासहोय
कोसोदासकेसोनभजनकहिकाहेकोंषगतहै फूठोहैरेफूठोजगरामकीदुहाई
काहूसांचकोवनायोतातैंसांचोसोलगतहै ४९ अनहींइति गुरुसिष्यकोंनीच
कर्ममैंआसक्तदेषि उपदेसकरतहै रेसिष्यतूअनहींठीककोठगहै ताहिठगिवे
कीठीकनहीं पोरीटेकरिवहुतलेनौयहठगतोंकदावतहै भगवानकोंतुलसीच

दौरू

भ॰

दासकैंत्यागिलेतहैं महादेवकैं आकधतूराचढायकें संपत्तिचाहैतो संपतिलै प्राचीन ऐसेंकहैं
गिरिराजसुताजगदेषोमहाठगभयोहै भोरकैंपायोहैकंतहमाराभूतरदियेंपनलूटिलियो
है ठगीनऐसातैंठगो ओठौरजोसंसारताकोंतू कुठारनहींजानैयासंसारसेंतू आसक्तहोय
गोतोनरकमेंजायगो किंवा औरकुठारहैतीर्थसवरहिवेकीठौरहै उहांविरक्तलोगजेहैंतिन
कीसेवाकरिज्ञानसारीषोजोदुर्लभपदार्थताकोंतूले संसारमेंठगभीवनआदिठगिवेकोंठि
कानोदेषिकेंठगातहै तोहिठिकानाकोज्ञाननहीं हमारोवचनठेलिकेंजाकोंतूठगैहैवाकीसं
पतिलेतहै ताहीसोंतूठगावतहै आगिलेजन्मवाकोघोडाबैलहोयकेंदेनोपरैगो योरोलयोगो
बहुतदेनोपरैगो किंवाठेलिकें संसारीकोंधकादेकेंतूमाहिठगो तूयामनमैंजानैहै मैंठगोंहों
पैवासोंचाहिकैंठगावैगोहै किंवावाकीबुद्धिकोंठेलिकेंधकादेकें याकेतोडरपतनाकोअर्थ याठगि
वेकीक्रियासोंयापापसोंतो निडरठगनडगातडरि एतनाकोअर्थ निडरहैतूडरिकेंएकडगातू
नहींडिगैहैनहींचलैहै यापापकरिवेमेंतूदृढहै डरिकेंडरनिडगि डेगीजैसोडिगातहै याकोअ
र्थ जहांडरआनिपरतहै तहांतूडरिकेंडरपिकैंकाहूकेडरनिसोंडिगिजातिहै आपनीस्थिति
सेंचलविचलहोतहै कांपतहै तोहिऐसोज्ञानभीनहींपापपुन्यतोपरमेश्वरकरावेहैमैंकरन
वालाकौनहौं दुर्योधनकोवचनपांडवगीतामें जानामिधर्मंनचमेप्रवृत्तिर्जानामिपापंनचमे।

कं० ७२

निवृत्तिः याकोअर्थ धर्ममैंजानैंहोंपेकविवेकीप्रवृत्तिनहीं पापजानेंहोंपेमोहिवासोंनिवृत्तिन
हीं जोभगवानकरावतहैसोकरतहो जाकोंभगवानकोज्ञानहैदूरैनहींतुलसीजियजानियहै
अपनैंसपनैंनदिकालहूतैंडरिहै डोंगीछोटीनावजैसेंडिगेहैतैसेंतूडिगिजातहै कांपतहै अ
सोवसवाससैंउदास अैसोजोतेरोवसोवासहैरहनोहै अैसीवालीहै तुमारोवसोवासकहाहै
तासोंतूउदासहोयवैं केसोदासकहतहै केसवभगवानकोंक्योंनहींभजतहै कहूतूसंसारमेंका
हूकोंघगतहै गरतहै आसक्तहोतहै यहअर्थ कहूअैसैंवसवाससैंयहभीपाठहै अैसैंयातर
हजानिकेंवसवासरहनेतेंउदासहोयकेंकाहूसाचेकोंवनायोकोईसत्यजोपदार्थहै ताकोंवाना
योहैसंसारयातैंसाचहैमानोअैसोलागतहै पक्काकारीगरजैसोंरूठामोतीजवाहरवनावैतोसा
चहैअैसोलागै ५५ अथअगतिसदागतिवर्नन अगतिसिंधुगिरिनालतरूवापीकूपवषा
नि महानदीनदपंथजगपवनसदागतिजानि ५६ अथ ज्यो अगतिसदागतिवर्नन अगति
इति पवनकोंसदागतिजानोंसदाचलतहै योसदागतिनामभीहै ५६ रसिकप्रियायां पंथ
नथकितपलमनोरथरथनिकेकेसोदासजगमगजैसैंगाएगीतमैं पवनविचारचक्रचंक्रम
नचित्तचढिभूतलअकासभ्रमैंघामजलसीतसों कौलोंराषोथिरवपुवापीकूपसरसमहरि
तिनकीनैंवहुवासरविनीतमैं ज्ञानगिरिफोरितोरिलाजतरुजाय मिलैंआपहीतैंआपगाजो

आपनिधिप्रीतमैं ६१ रसिकप्रियापंथनइति मनोरथचाहसोहैरथताकोजोपथसोएकप
लभीनहीथाकतहै सदाचलतरहतहैपथअचलचलनवालाचल कैसैंजैसैंजगतकोम
गराह तामैंजैसैंराहलोगचलतरहतहैं गीतमैंजैसैंगायेहै जैसोलोगकहतहै पौनकीत
रहचंचलजोविचाररूपचक्रवाकताहिविषैचंक्रमनकेलियेंफिरिवेकेलियंचहिकैंचित
भ्रमैंहैफिरैहै मनठिकानैंनहींरहतहै ज्ञानरूपजोगिरिपहार परपतिसौंआसक्तिकरि
वाढोवहैं ऐसोज्ञानताकोंफारिकै औलाजरूपीतरुजोवृक्षताकौंतोरिकैंमैंनायकसौंजा
यकैंमिलौं आपगानदीजैसैंआपनिधिसमुद्रसौंजायकैंमिलतिहै प्रीतमनायकसौं पथ
आदिअगतिपवनसदागतिऐसैंजानियै ६१ अथदानिवर्नन गौरिगिरीसगनेसविधिगि
रायहन्निकोईस चिंतामनिसुरसहसुगोजगमाताजगदीस ६२ अथदानवर्नन गौरीइति अ
हनकेईश्वर्य गोकामधेनु जगमाताश्रीलक्ष्मीजी ६२ रामचंद्रहरिचंदनलपरसुरामदुपहर
नै केसवदासदधीचपृथुवलिशिविभीषमकर्न ६३ रामचंद्रइति दारिद्रके दुषकेहरनवा
लेहै ६३ भोजविक्रमाजीतनृपजगदेवरनधीर दानिनिहूंकोदानिदिनइंद्रजीतवलवीर
६४ भोजइति जगदेवइंद्रजीतकोवडेरा इंद्रजीतदानिनकेदानकोदिनहै षंडनवालेहैं इं
द्रजीतकेदानकेआगेंसवकेदानषंडेजातहैं ६४ गौरीकोदान पावकफनिविषभस्ममुष

के॰
४२

42

॥
हरपवर्गमयमानिं देत जु है अपवर्ग कहु पारवतीपति जानि ८५ अथ गौरीकोदान पावकइति
जो पवर्गमय होय सो पवर्ग ही कौं देत है अपवर्ग कौं कहा सो देइ सके अपवर्ग को अर्थ मुक्ति ।
पावकइति पावक अग्नि औ फनी नाग औ विष औ मृष मैं भस्म ए तौ नै पवर्ग सहित सहू हैं
ता हिन्नु कहु हर हैं ऐसे हर कौं पार्वती अपवर्ग देति है जानि कैं यह मारे पति है इनै मो छुटैं नौ
किंवा पति प्रतिष्ठा जानि कैं इन कौं अपवर्ग दियें हमारी प्रतिष्ठा है यह जानि कैं शक्कौ निली
पूतै विष्णुः शंकरस्य पितामहः यह पुरान वचन है किंवा रति देति है रति मैं पवर्ग नहीं है इहां
पवर्ग पावक आदि जो वस्तु धारन करत हैं ता को पवर्ग लेनैं आपन नाम को पवर्ग नहीं ले
नैं नहीं तो पार्वती पति मैं भी पवर्ग है किंवा हर अपवर्ग कौं देत हैं ता मैं यह कारन पारवती
के पति है मुक्ति पार्वती देति है पार्वती के पति न होते तौ मुक्ति कहा तें देते आधा अंग मैं ।
पार्वती रहति है किंवा हर कौ पवर्गमय मानैं अपवर्ग को पार्वती देति है फेरि पार्वती को
पति जानौ पति को अर्थ पालन करनवाली पार्वती को दान निकह्यो ८९ गनेस जू को दान
बालक सनाल निज्यौ नोरि डारै सब काल कठिन कराल वे अकाल दीह दुष कौं विपति हरन
हठि पदम के पात सम पंकज ज्यौं पताल पेलि पठवै कलुष कौं दूरि कैं कलंक रंक भव सीस स-
सि सम राषत है केसौदास दास के वपुष कौं सांकरे की सांकर निसन मुष होत ही तौ दसमुष

मुषजोवैगजमुषमुषकौं ६६ गनेसकोदान रामचंद्रिकामैं वालकइति सांकराकहि
येविपन्निताकासांकरसमरह एकविपत्तिपरएकविपन्निताकेसनमुषहोतसैं जवसांम्हे
नैंआवतहैं तवदसमुषनामदिसा ताकेमुषकहियेमुषसरदारदसदिसापाल इंद्रअ
ग्नियमआदिहैंनीमैंमुषश्रेष्ठकौकह्योहै वैसवगजमुषगनेसताकेमुषदेषिरहतहैं त
मयाविपत्तिकौंदूरिकरौ किंवांसमुष एकमुषविसु चारिमुषब्रह्मापांचमुषशिव ए
सवकैसेहैं मुषहैश्रेष्ठहैसोगजमुषकेमुषकौंदेषतहैं किंवादिसानकेमुषगजमुषमुष
कौंदेषतहैं मारोराज्यकौंनकरैगो किंवागजमुषकेमुषकौंकाहूकेसंमुषसाम्हनेंहोतकेका
हूपैराज्यीहोतकैं तवदसदिसाकेजेमुष्यहैं तिनकेमुषसांकरेकीसांकरकौंजोवतहैं दसोदिसा
कौंयापुरुषकौंवकसैगोयहहमारोअधिकारकाहेकौंराषैगोहमारोअधिकारजायगो जैसैं
वालकजोमनाल नवीनजोमनालकमलकीजरताकौंजेसैंकोईतोरिडारै किंवाअलकर
लिविनाश्रमवालकजैसैंमनालतोरिडारैवोजोगनेसजीसोसवकालसवसमयमैंकठिनअो
करालभयानकअकालअसमयमैंविनाप्रलयकालजोहैदीहवडोदुषताकौंतोरिडारतहैं दू
रिकरतहैं कमलकेपत्रसमानविनाश्रमजोरावरीसोंविपत्तिकौंहरतहैं पंकजैसैंहाथीका
पावसोंनीचैंदविजायतैसैंकलुषपापकोंदवावतहैं दूरिकरतहैं गनेसकेसीसमैंचंद्रमाहै ॥

क॰
४३

कलंककलानहींहै चंद्रमांकोसोकलंक हूरिकरिकैं सीसविषैंराषतहैं औदासकोरंकभावद
रिद्रपनोहूरिकरिकैं वपुषकीधनिविधातानैंवाकेदेहमैंलिषीहैदारिद्रकीरेषताकोहूरि
करिकैंभाग्यकीरेषावनायकैंसीसपैंराषतहैं याकोअर्थवहुतआदरसौंराषतहैं रंकभाव
हूरिकरिवेमेंदान ६९ श्रीमहादेवजूकोदान कांपिउठोआपनिधिनपनदिलापचहीसीरी
होसरीरगतिभईरजनीसकी अजहूंनऊंचौचाहैअनलमलिनमुषलागिरहीलाजमनमां
नौमनवीसकी छविसौंछवीलीलछिछातीमैंछपाई हरिछूटिगईदानगतिकोरिह्नेतौ
सकी केसोदासतैंहीकालकारोईहैआयोकालसुनतश्रवनवकसीसएकईसकी ७० अथ
महादेवजूकोदान कांपिउठौइति ईसमहादेवकेएकवकसीसयहवातश्रवनसुनतकैं एतनो
भयो एकवस्तुजोहैब्रह्मांडसोकाहूकोंदेतचाहतहैं समुद्रकोपैजाकोंदेहिंगेसोहमारेमैंजो
हैरतनसोकाहूहिलेयगो तपनसूर्यनैंजानैंजाहिकाहूकोंदेहिंगेसोमारोजोहैकाजेकिरन
निसौंजललेनौफेरिवोमासामैंमेघद्वारादेनौं प्रकासकरनौंओहमारीपूजाइत्यादिकादे
कोंराषैगो जाकोब्रह्मांडहोयगोसोऔरहीसृजकरैगो किंवाहमारोकाजेआपहीकरेगो।
याफिकरसौंतपनकौंमनौंदुषकीतापचहीऔमैंरजनीसचंद्रमांआदिकौंअधिकारछूटिवे
कौदुषजानिये पुरानवचनहैअग्निकोमुषनीचौहै मलिनमुषअधिकारजप्रादिककेछूटि

वैसें धूवांतो प्रसिद्धहै लछिलक्ष्मीकमलमैंरहतिहै ताकों लेके भगवान छातीमैं छपाई जोब्र
ह्माऊ शिवनैं काहूकों दियो नांतो तीसको दि देवता दान कहा सो करेंगे किंवा एककोवकसीस ।
एक रावनकों वकसीकें रतनतवें समुद्र आदि सवनें जान्यों वडो दुष होयगो वासमें समुद्र कों
पिउठें हम वांधे जाहिंगे देवतनिकों तो दुष प्रसिद्ध ही है सूर्ज जान्यों सनें अवरहमारो पुत्र है सो वां
ध्यो जायगो पौननें जान्यों हमैं आंगन वुहारिवो परैगो चंद्रमांनें जान्यों हमारो अमृत लेयगो
किंवा राहुकों पक्षकरेगो अग्निनें जान्यों हमें रसोई करनी परेगी ऐसें जानिये ९७ विधिको दान
आसीविषराक सनि देयतनिहे पताल चरनिनर निद्यो द्विवभूनिकेतदै थिरचरजीवनिकों दी
नों वृतिकेसा दासही वेक हूं और कह्यो कोऊ कहा देतुहै सीतवाल तोयते जब आवत समय पायका हूं पे
ननाषीजाय ऐसी वांधी सेतहे अवतव जवक वजहां तहां जानियत विधिही को दीनों सव सवही को
देतहै ९८ विधिको दान आसीविषइति अववर्तमान जुगमे तवभूत जुगमैं जवकव जब
कोई कवहीं उपजेगो तवदेइगो यामैं भविष्यत जहां तहां केई ठौरमैं आसीविषसांप आ
दि पाताल मैं रहतहैं तिनकें तचर इतिजीविका दीनी तमक है दैनैंकों और कोई कहा देतहै ।
जीविका उपरांति औरदेनों कहा है सीत वाय आदिकों काल दियो है सीत पौन सीत काल मैं आ
वै ऐसो जानिये एककें आगें एक पंगति वंधि जाय सो सरासे तक हावे ९८ गिराकोदान वानीज

गमानीकीउदारतावषानीजायश्रेसीमतिकेसबउदारकौंनकीभई देवताप्रसिद्धहैंतिविरातप
हहुकहैंताकीवातकहिकाहूनकढ़लई भावीभूतवर्तमानजगतवषानतहैकेसोदासकौं
हूनवषानीनैकहूगई वनैपितचारिमुषवर्नैंपुतपंचमुषनातीवनैषटमुषतदपिनई
नई ६८ गिराकोदान वानीइति ब्रह्माकीवेटीगनेसकीसीसरस्वतीउदारवडी देवता।
आदिकहतहैंताकीवातकथागुनकहतहैं एरीकाहूनैंकोईठौरकहिनहींलीनी एरीका
हूसैंनहीकहीगईयहअर्थ देवताआदिकीकहीअवमनुष्यकहतहैं भावीजोजगतजोलो
गउजहिगो पिताब्रह्माचारिमुष ब्रह्माकेपुत्रशिवसोपांचमुष नातीकार्तिकेयसोषट
मुषयहईश्वरहै तऊउदारतानईनई दानवचनसोंहोतहै काईदेउसोसरस्वतीदेतिहै स
रस्वतीएकभगवानकीस्त्रीहैताकोवर्ननयहसोभैहै ६९ सुरजज्ञकोदान वाधकत्रिविधि
व्याधित्रिविधिअधिकअधिवेदउपवेदवधवंधनविधानहै जगपारावारपारकरतअपार
नरएकपरमपदपावतप्रमानहै पुरुषपुरानकहै पुरुषपुरानेंसवएरनपुरानरु
निनिगमनिदानहै भोगवानभागवानभगतनिभागवानकरिवेकोकेसोदासभानेभ
गवानहै ७० सुर्जकोदान वाधकइति त्रिविधिआधिआधिभौतिकऔआधिदैविकऔ
आध्यात्मिकजोआधिमनकोदुषताकेवाधकदूरिकरनवालेहैं वेदउपवेदवधवंधनवि

५

44A

धानहैयाकोअर्थ संसाररूपजोमनुष्यकोबंधनहैताकोजोवधनासताकोजोविधानकि
याहैजाकोंकिंवाकरनवालाहैवेद औउपवेदपुरानकहतहैं जगसोईहैपारावार।
समुद्रताकेपारकरनहैसंपूर्नपुरानऔनिगमवेद याकोनिदानआदिकारनहैयहरूजेनों
हेमीमैंभोगनामस्वरूपकौ औपालनकोभोगवानपालनकरनवाला किंवाअसंतरू।
वीहैभगवानहैं भगनामहैसमैं ज्ञानकोमहात्म्यकोनामजसकोनामरूपकोनामपरा
क्रमकोनामश्रीकोनामधर्मकोनाम औईश्वरताकोनाम एसवजाकोंहोय एतनोंज्ञ
क्रहै भक्तनिकोंभाग्यवानकरिवेकोंसूर्यभगवानईश्वरहै पहिलाभगवानकोअर्थ जामेंज्ञा
नमाहात्म्यपराक्रमरहैसो दूसरोभगवानईश्वरःकहूभोगमानभानुमानऐसोभीपाठहै
भानुकिरन ७ श्रीपरसरामजीकोदान जोधरनीहिरनाक्षधरीवरजज्ञवराहछिनाय
लईजू जाकेलियेंसवभारतभोभवपारथजीवनिवीजवईजू मानवदानवदेवनिकेंज्ञ
तयोवलकैंहनहाथभईजू सातसमुद्रनिमुद्रितरामसुविप्रनिवारअनेकदईजू ११
श्रीपरसरामजीकोदान जोधरनीइति वरश्रेष्ठजोजज्ञवराहअवतार किंवावर वलसों
तपोवलसोंकिंवातपस्यासें औवलसेंभवसंसारमैंजाकेलियेंसवभारतजुद्धभयो पा
रथकुंतीकेपुत्रपांडवतानैंजीवनहीजवई जीवरूपजोवीजताासोंवोईहै वहुतजीवमारि।

य

का० ४५

45

भूमिमैंवीजकौतरहद्दतारिदिये सातसमुद्रसौंसुद्धिनछेरीहै किंवासुद्रानिसानीकरीहै।
समुद्रीपप्रथी ७१ अथश्रीरामचंद्रजीकोदान पूरनपुरानअरुपुरुषपुरानपरिपूरन
वतावैनवतावैंऔरउक्तिकौं दरसनदेतजिनैंदरसनसमुझैंजोनेतिनेतिकहैवेदख्या
ऊँभेदजुक्तिकौं जानियहकेसोदासअनुदिनरामरामरटतरहतनडरतपुनरुक्तिकौं।
रूपदेयअनिमांदिगुनदेयगतिमांहिभक्तिदेयमहिमांहिनामदेयमुक्तिकौं ७२ अथ
श्रीरामचंद्रजीकोदान पूरनइति ऐश्वर्यादिगुनकरिपूरनहैं औपुरानहैअनादिहैं।
औपुरानपुरुषब्रह्मालोमससनकादिआदिपरिपूरनवतावैहैं सवठौरव्याप्तहैकहतेहैं
सर्वविष्णुमयंजगत याहीउक्तिसौंवतावैहैं औरउक्तिसौनहींवतावैं जाकौंभगवानदर
सनदेतहैं सोफेरिदरसनसास्त्रकौंनहीसमुझिवेलागे सजहातिमतिलोकेदवेचपरिनि
ष्ठिता याकोअर्थजापैभगवानअनुग्रहकरतहै सोलोकविषैंवेदविषैंआछीजोहैवु
द्धिताकौंछोडतहैं पुरानवचनहै हेमीमेंदरसननामसास्त्रकोऔधर्मकोभी जाहि
भगवानकेरूपकौंवेदनेतिनेतिकहतहैं याकोअर्थयहनहींयहनहीं चंद्रनहीसूर्यन
हीं आकासनहींपवननहीं वहकछुऔरहै भेदब्रह्मभिन्नजगतभिन्न माधमनकह
तहैं सोभेदकीजुक्तिकौंछांडिकैसंकरमतकहतहैं भ्रमसौंद्वैतभासतहै यहजानिके

४५

यहसवब्रह्महै।

ईहैतकहतहैं कोईग्रहैतकहतहैं सबश्रीरामजीहैं यहजानिकैं अनुदिनसदापुनरुक्तिका
व्यमैंदोषहै श्रीरामनाममैंनहींआवेदूनैंभीनेतिनेतिपुनरुक्तिकरीहै यातैंभगवानकेभज
नमैंदोषनहीं जाकोरूपसचित्रपटमैंलिख्योदेखैतोरूपजोहैसोदेखनवालाकोंअनिमासि
द्धिकोदेय अनिमासिद्धिसोंअनुहोयजायकाहूकोंनजरिनहींआवे गुनजोहैसोगरिमा
सिद्धिकोंदेतहै गरिमासिद्धिवालाचाहैतोऐसोभारीहोयजोपृथ्वीसोंनहींसह्योजाय
भक्तिजोसेवापूजा सोमहिमासिद्धिकोंदेतिहै महिमासिद्धिवालाजोसरीरबढावैतोब्रह्मा
ण्डमैंनसमाय सबसोंनामकीअधिकाई नामभक्तिकोंदेतिहै २२ जोसतजनावकरैकरीइन्द्र
सोंसो प्रियताकपिपुंजसोंकीनी ईसदईजदयेदससीसलंकविभीषनऐसैंहीदीनी १
दानकथारघुनाथकीकेसबकोवरनैंरसअद्भुतभीनी जोगतिऊरधरेतनिकीसतोअधि
केसकरङ्ककरलीनी २३ जोसतइति जोप्यारसतजनपकरैंइन्द्रसोंकीनों सोप्यारकपिकेस
मूहपैंकीनोंऊर्द्धरेताजोगीताकीजोगतिहैताकों २३ वलिकोदान रामचंद्रिकामैं केट
भसोंनरकासुरसोपलमैंमधुसोंमुररसोजिहिमारयौ लोकचतुर्दसरक्षिककेसवपूर
नवेदपुरानविचारयौ श्रीकमलाकुचकुंकुममंडितपंडितदेवअदेवनिहारयौ सोकरमा
गनकोंवलिपैंकरतारहुकेकरतारपसारयौ २४ वलिकोदान केटभइति हाथकैसोहै क

क॰
५६

56

मलाधेकुचकुंकुमसौंभूषितहै श्रीलक्ष्मीजीजाकीस्त्रीसोमांगिवेकौंजाकैआयो करतार
अहल्यातिताको करतार ब्रह्माकोवनावनहार १४ असमरसिंहजीरानाकोदान कारेकारेत
मकैसप्रीतमस्तधारेविधिवारिवारिद्वारेगिरिकेसोहासभाषैहै धारेधारेमदनिकपोल
फूलथूलेथूलेटालैंजलथलवलध्यानस्तनाषैहै चरावननातछननातचैनेचूचुरा
निभैरमननातभुवपतिअभिलाषैहै दुर्जनदरिद्रदलदलनअमरसिंहकेसोदासहाथीये
हथ्यारकरिराषैहै १५ अथरानाअमरसिंहजीकोदान कावेइति तमअंधकारकिंवाराहुता
केप्रीतममित्रवलध्यानस्तनाषैहै याकाअर्थ वलसौंध्यानछूटास्तसोतोनाषैहै इरकरैहै
किंवावलजामैध्यानस्तगनेसतिननैनाषैहै गनेसनेइनमैवलपत्योहै भवपतिराजा
नैंजाकोंचाहैहै दुष्जोहैदरिद्रतानाकोदलसमूहताकेदलनकोंकिंवादुर्जनकोदलआदारि
द्रकोदलहाथीयेहथ्यारकरिराषैहै जाकोंहाथीदेतहैताकोदारिद्रजातोरहतहै १५ बीरवल
कोदान पायकेपुंजपथावजकेसवसोकसंषसनैस्तषमामैं फूठकैझालरिझांझिअलो
ककैआवजजूथनजानोजनमामैं भेदकैंभेरिवडेडरकेंडफकोनिगभोकलिकेकुरमामैं जू
झतहीवरवीरवजेवहूदारिदकेदरवारदमामैं १६ इतिश्रीमतविविधभूषणभूषितायांक
विप्रियायांषष्टप्रभाव: ६ बीरवलकोदान पायकेपुंजइति सोकरूपजोसंखसोवहततनरह

५६

म

आछैंबाजतहैंसुतैं अलोककलंकआवतवाजाहैं ताकोऽनूपसमझहैसोकेतनांअमांभ
येहैंनहींजानीजातिहैं भेदकाहूसौंविरोधकरिदेंनौ ३९ इतिश्रीहरिचरनदासकृतायांक
विप्रियाभरणाख्यायांकविप्रियाटीकायांषष्टमप्रभावसमाप्तः ६ अथभूमिभूषनवर्नन
देसनगरबनबागगिरिआश्रमसरितातालरविससिसागरभूमिकेभूषनरितुसबका
ल १ अथभूमिभूषनवर्नन देसइति देसआदिरितुपर्जंतभूमिकेसबसमैंमैंभूषनहैं १
अथदेसवर्नन २ तषानिपरूपदिवसबसनसुगंधसुदेस दानमानबहुबरनियेभाषा
भूषितवेस २ अथदेसवर्नन २ नइतिनदीनगरगढयहभीकहूँपाठहै बसुधन २ कवित्त
आछेआछेअसनवसनबसुबासपसुदानसनमानजानवाहनबषानिये लोगभोगजोग
भागबागरागरूपयुतभूषननिभूषितसुभाषामुषजानिये सातोंपुरीतीरथसरितसब
गंगादिककेसोदासपूरनपुरानगुनगानिये गोपाचलऐसेगढराजारामसिंहजूसेदेस
नकीमनिमहिमध्यदेसमानिये ३ आछेइति जानपालकीआदि वाहनहाथीआदिलो
गकोंभोगकोजोगहै किंवाजोगबहुतसाधतहैं पुरीआदिकेगुनकोंसंपूर्नपुरानमैंगाइ
येहैं किंवापूर्नपुरानजाकोंपुरानआवैहैसोगावैहै गोपाचलसारीकोगढहै रामसिंहजी
सारीषाराजाजहाँहै देसनिकिमनिमहिमध्यदेसमानिये देसनहींहैं तिकोअर्थकिधौं

कं ४०

47

मनिहैमहीएथ्वीकेमध्यदेसमैं कटिहैसविषैंकांचीकोरत्नहैयहमानिये बहुतसुंदरहैयह
अर्थ किंवादेसनिकीमनिहै महीकोमध्यदेसहैजैसैंमध्यदेसकटि जैसैंसुंदरहोतिहै
तैसैंसुंदरहै ३ अथनगरवर्नन षाईकोटअटाधुजावापीकूपतडाग वारिनारिअसतीस
तीवरनहूनगरसभाग ४ नगरवर्नन षाईइति वापीबावडी बारनारिवेस्या सभाग
संवोधनकिंवाभागसहित ४ यथा चहूंभागवनमानहुंसघनघनसोभाकीसीसालाहै
समालासी सरितवर ऊंचेऊंचेअरनिपताकाअतिऊंचीजनुकौसिककीकीनीगंगाषे
लषेतरलतर आपनैंसुषनिआगैंनिंदतनरिंदऔर चरचरदेषियतदेवतासेनारिनर के
सोदासत्रासजहांकेवलअहष्टहीकोवारियेनगरऔरऔंउछेनगरपर चहूंभागबागहै
ति भागऔर मानहुंसघनतिंहुंघनमेंचढे सरितनदीवेतवेसेमानोंसोभाजोकोईसूति
धरैंहोयताकीसालासीहै किंवाहंसकीमालापंगतिसारीषीहै पताकाआकासमैंहै सो
मानौंकोसिकविस्वामित्रकीवनाईगंगाजीलेकोअर्थअकासतामैंतरलअतिचंचलषे
लतिहै विस्वामित्रनेएकगंगावनाईहैपुरानमैंकथाहै पुरवासीआपनैंसुषकोआगैंऔ
रदेसकेनरेसकौंनिंदतहैं अदृष्टकर्म ५ वनवर्नन सुरभीइ[illegible] भवनजीववहुभूतप्रेतभ
यभीर भिल्लभवनवल्लीविटपदवंवनहुधीर ६ वनवर्नन सुरभीइति इभहाथी भूतप्रेतके

व

बाग

४७

वन

डरसौंलोगभीरुकायरहोयडरैंकिंवाभयभीरुवृहन्नभय वल्लीलताविटपवृष दवदवागिएरव
मैंडाटाकहतहै ६ यथा केसोदासश्रीउछेकेआसपासतीसकोसलोंगारन्यनामवनवैरी
कोंअजीतहै विंध्यकेसोवंधुवरनवलितबाघवानरवराहवहुभिल्लकौंअभीतहै जमकीज
मातिसीकिजामवंतकेसोदलमहिषरुषदसवछोरिछनकोमीतहै अचलअनलवंतसिंधु
सोसरितनजुतसंभुकोसेजटाजूटपरमपुनीतहै ७ केसोदासइति विंध्यपहारकेवंधु ऐसे
ऊचेवारनतासोंवलितजानहै वंधुसहआथीउपमाकोंजनावैहैसेकोअर्थमानो किंवाविं
ध्यकोवंधुसोहै विंध्यमैंभीवारनबाघइत्यादिहैं जमकीजमातिजेसेमहिषकोंरुषदहैजा।
४२ मवंदकेदलमैंसभालआरीछरहतहैं हेमअनेकार्थमैंअछनामभालुकोआफटिकको।
सछकोअर्थसंदरजोअछभालुआरीछजातिविसेषहैताकोंप्रियाहै यामेंश्लेषसाफनहीं।
लागतहै अचलपहारसमुद्रमैंवहतहैं अनलआगिजामेंहै ऐसोजोसमुद्रताहिसारीषोहै
सदायामैंआगिरहतिहैं इहांभीनदीहैताकीउपमा सरितश्रीगंगाजीयुक्तमहादेवकेजटा
जूटसोपरमपुनीतहै • गिरिवर्नन श्रृंगतुंगदीरघदरीसिद्धसुंदरीधात सुरनरजुतति
रि वरनिये ओषधिनिरझरपात ८ गिरिवर्नन श्रृंगइति श्रृंगऊचोहै वडीकंदरा नि
रझरझरना यथारामचंद्रकीनैनेरेअरिकुलअकुलायमेरकेसमानआनअचलचरीनिमें।

सारोसकहूंसपिकुकोकिलाकपोतमृगकोसादासकहूंहयकरभकरीनिमैं डारेकहूंहारहू
देसानेपीरेपटछूटेंफूटेंसुगंधचरश्रवततरीनिमैं देषियतसिषरसिषरप्रतिदेवतासेसुंदर
रकुवरश्रकहूंसुंदरीनिमैं ९ रामचंद्रइति आनअचलऔरपर्वतसारोआदिआपनैपा
लेमनावरसंगमैंलेगयेहैं कलभहाथिनकेबच्चाहाथिनमैंहैं तरीपहारकीतरहटी।
सिषरशृंगप्रतिशृंगनिमैं दरीकंदरा ९ आश्रमवर्नन होमधूमजुतवर्नियेब्रह्मघो
षमुनिवास सिंहादिकमृगमोरअहिइभसुभवैरविनास १० आश्रमवर्ननु धूमर
ति ब्रह्मवेदनाकोघोषसहू सिंहादिककोंआपनैवैरनिसैसुभकल्यानरहतहै वैरना
तहै सिंहसौंइभहाथीसौंमोरसौंअहिसौं १० रामचंद्रिकायां कैसोदासमृगराजवछेहू
चूषैंवाघिनीनिचाटतसुरभिवाघवालकवदनहै सिंहनिकीसटाएँचैंकलभकरनिकरि
सिंहनिकोत्रासमनगयंदकोरदनहै फनीकेफननिपरनाचतमुदितमोरक्रोधनविरो
धजहांमदनमदनहै वानरफिरतडोरैंडोरैंअंधतापसनरिषिकोनिवासकिधौंशिवको
सदनहै ११ कैसोदासइति रिषिकोनिवासहैकिधौंशिवकोसदनधुरहै रिषिनकोवास
कैसोहै जहांमृगराजमृगसौंउपजेऐसेजेवछेहैवच्चासोवाघिनिकोंचूषेंहै पीवैहै वा
घकावालककोंसुषसुरभीचाटतिहै सिंहनिकीसटाकेसरातिनकोंकलभहाथीकेवचाक

48A

रसुंडतादिसोंथेंचैहैं हाथिनकेदांतसोंसिंहनिकोआसनहै पलकहैताहाथिनकेदांतप
रसिंहनिनैंआसनकीयोहै फनीसांपकेफनपरमोरराजीभयेनाचतहैं मदगर्वजहांना
हीं श्रीमदनकामजहांनहीं वानरजहांअंधतापसनिकेडोरैंडोरैंलियेंलियेंफिरतहैं शि
वकोसदनकैसोहै जहांमृगनवछेहैमृगनामहेममैंगजविसेषकोआपसूमात्रकोग
जकोवछाकिंवापसूकोवछा गजजोगनीकोभछवाचिनीजोगिनीताकोंचूंघतहै स
रभिवृषभमहादेवकोवाहनऔवाजसोपरस्परवालककीतरहपरस्परवदनचाटतहैं वा
लकजैसैंष्यालकरै किंवावाघवालककोवदन भवानीकोवाहनसिंहहैताकीसटाकेसर
ताकोंकलभगनेसजहांकरनिकरि हाथनिसोंभीसुंडसोंभीऐंचतहैं लोकमैंहाथीकोंभी
गनेसकहतहैं सिंहनिकोआसनगयंदकोरदनहै याकोअर्थ हेममैंजात्राकोनिहतकर
नेमेंभीआसनकीयोहै सिंहनिकोचलिवोताकेनिवृतकरिवेकोंजहांगजकोरदनहै सिं
हचलैहैतवहाथीआपदांतसोंरोकैहै ऐसैंष्यालकरतहैं सिंहनिकीजात्रारोकिवेकोंगयं
दकेदांतहैं कार्त्तिकेयकेमोरसोशिवकोभूषनसर्पताप्पैंनाचतहैंसानंदहोयकें हेमकोस
मैंमदननामधतूराकोभीहै जहांमदगर्वनहींकाहूकोरहैहै श्रीमदनधतूराहै किंवा
कामकोमदगर्वजहांनहींहै वानरजहांडोलेडोलेफिरतहैं फिरतेफिरैंहैं यहअर्थ जैसैंकह

क॰ ५९

५१

तहै फलनिनांगंगा वडोले डोले फिरे ऐसी वालनि है ओ जहां अघ तप लीन नहीं है ऐसें जानिये ११ सरिता वर्नन जलचर हय गय जल जंतर जग पंक्ति उमंग निवास स्नानदान पावन्न नदी वर्निय केस वदास १२ नदी वर्नन जलइति जलचर नक्र आदि हय दरियाई घोरा गजदरियाई हाथी १२ यथा औ उछली रतरंगिनि चेत वेवा हितै रिपु केसव का है अर्जुन वाहु प्रवाह प्रवोधित रेवा ज्यों राजनि की रज मोहै जोति जगै जमुना सी लगै जगलोचन लालित पाप विपोहै सूरसुता सुभसंगम तुंगतरंग तरंग तरंग गंगा सी सोहै १३ औ उछै इति तरंगिनी नदी चेत वे चेत वे नदी के सी है रेवा नर्मदा जैसी है अर्जुन सहस्रार्जुन तिनके वाहु हाथ करिकैं प्रवाह जाको प्रवोधित अधिक जगायो उछालो जानिये चेत वे राजा अर्जुन औ उछा को ताके वाहु ते प्रवाह प्रवोधित है सत्रु राजनि की रज रजमान वेतवे पाय कौं विपोहै है दूर करत है यातें जो कोई स्नान करत है ताके अंग मैं जोति जागत है पुन्य की कांति होति है श्रीजमुनाजी मैं ए गुन हैं तासों जमुनाजी सी लागति है श्रीजमुनाजी जगलोचन सूर्य तासों लालित है आदर करी है चेत वे जगत के लोचन करिकैं लालित है लोग वाकी सोभा आदर करि देषत है तुंगऊ चे तरंग हैं जाके ताकरिकैं तरंगिनी जो वेतवे सो श्रीगंगाजी सारिषी सोहति है सूरसुता श्रीजमुनाजी ताको संगम श्रीगंगाजी कौ भी है याकौं भी है तासौं गंगा सी सोभति है १३ वाग वर्नन ललित लता तरवर कुसु

49A

मकोकिलकलरवमोर वरनिवागअनुरागसोंभवरभवतचहुंओर १४ वागवर्नन ल-
लितइति तरवरहूछ किंवावरश्रेष्ठजामैंकुसुम कलरवककहू तर अनुरागसोंवहुतकु
सुमकेसुगंधसोंआसक्तहोयके १४ यथा सहितसुदरसनकरुनाकलितकमलासनवि
लासमधुवनमीतमानिये सोहियेअपर्नारूपमंजरीपैंनीलकंठकेसोदासप्रगटअसोक
उरआनिये रंभासोंसदंभवोलेमजुघोषाउरवसीहंसफूलेसुमनसुखवसुखदानिये दे
वकोदिवानसोप्रवीनरायजूकोवागइंद्रकेसमानतहांइंद्रजीतजानिये १४ सहितइति दे
वताकोदीवानसभाताकेसमानप्रवीनरायजूकोवागहै देवसभाकोभीजहांवर्ननहैतहां
भीवागहै जलहै देवसभाकेसीहै श्रीकृस्नकेविसेषन सुदर्सनचक्रसहित करुनादयासों
कलितजुक्त फेरिकमलालछमीतासोंसनकहियेआछेहैविलासजाकोऔसोजहांमधुव
नकोमित्र मधुवनजाकोभावतहैश्रीकृस्नताकोजहांमानियेहैपूजिहै किंवादेवसभासुदर
सनचक्रसहितहै मूर्तिमानजहांसुदरसनचक्रहै
जैसेंद्वारकामैंमूर्तिमानसुदरसनचक्रहैयों औकरुनासहितकमलासनब्रह्माताकोज
हांविलासहैविसेषकरिकैंलसैहैसोभैहै औमधुवनमीतश्रीकृस्नजहांमानियेहै फेरि
जहांअपर्नापार्वतीऔरूपमंजरीसरीषी औपद्मजल औनीलकंठसोमहादेवसेंजहांप्रग

क॰ ५०

50

रूपनिपैसिरोमनि

रूपतरुछ सोहतहै किंवाप्रगंगाजलतासो जुक्त नीलकंठमहादेवसोहतहै किंवाअप
नापार्वतीजहांसोहतिहै सोकैसीहै रूपजोकोईपदार्थहै ताकीमंजरीकुसुमहै वहुतसुं
दरीहै यहअर्थयैसहूमैंआसक्तपदकोअध्याहारहोतहै अपनाह्रूपमंजरीयैं आसक्त
नीलकंठशिवजहांहैं किंवाअपनापार्वतीतिनकेरूपयैंआकारधरसरीरधरयहअर्थमं
जरीमोटामोतीसोहततहैजहां हेमीनानार्थमैंरूपनामसौंदर्यको औआकृतिको फे
रिहेममैंमंजरीनामस्थूलमोतीकोभीहै फेरिजहांसोकउरमैंनहींउरमैंआनीयेहै फे
रिदेवसभाकैसीहै रंभाअपसरातासोंसदंभकपटसहितमंजुघोषाऔउरवसीवालतिहै
जहांहंसहंसजऔआसमनसदेवताफूलेहैंराजीहै देवताकिंवादेवसभासबसुषदानीहै देव
सुभामैंइंद्रहै प्रवीनरायकोवागकैसोहै जहांसुदरसनफूलहै कोईवाहीकोंस्थलकम
लहूतहैं ताहिसहितहैऔकहनावच्छतासोंकलितजुक्तहै औकमलजहांहै औअसनह
वृकोईहै ताकोजहांविलासहै सोविसेषकरिसोभैहै किंवाताकोतहांउपभोगहै मधु
वनमधुराकोवनताकोमीतहै मीतसहूआर्थीउपमावाचकहै तैसोहैयहअर्थ यावा
नकैंमानिये जहांअपनाअमरलताकोरूपसोहतहै हेमीमैंमंजरीतिलकवृक्षकोना
महै किंवारूपमंजरीसदासुहागनिफूलहैताकोंलोगकहतहैं सोजहांसोहतिहै तायैं

५०

50A

नीलकंठमोरप्रगटहैजहांजोसदासुहागिनिमोरकोभारनहींसहै तौनीलकंठषंजन किं
वाजाकोविजणदसमीकोंदरसनकरैहैं सोनीलकंठतिलकवृक्षपैतोसवसंभवै औअसोक
वृक्षहै ताकोंउरमैंमनमैंआनियेहैंजानियेहै रंभासोंयाकोअर्थ हेसीमैंरंभानामकेलाकोऔ
अपसराको केलाकोअर्थनहींवनैं अपसराकहिआयेहैमसैंरंभनामवांसकेदंडकों तासोंवां
सुरीलीजिये अनुनासिकनिरनुनासिकस्वरकोधर्महै गुरूलघुहोतहैलघुगुरूहोतहै दंभ
नामकपटकोहै भाषामैंगर्वपरप्रसिद्धहै पक्षीकोंभीसगर्वकहतहै मेचहूतमैंचातकसोंस
गर्वःकह्योहै वांसुरीसोंमधुरसगर्वमंजुघोषाकोकिलबोलतिहै सोलोगनिकेउरमैंमनमैं
वसीहै आछीलागीहैयहअर्थ किंवाकोईकान्हकोंदिषावतहै रंभाकेलाकेसाभनैदेषोसग
र्वमंजुघोषाबोलतिहै सोआछीलागतिहै हंसजदांपक्षीहैं सुदरीतरहमहासुमनफूलफूले
है सोसुषदसवसमैमैं सुषदाताहैं १९ तलाववर्नन ललितलहरिषगपहुपपसुसुरभिस
मीरतमाल करभकेलिपंछीप्रगटजलचरवरनहुताल १६ अथतलाववर्नन ललितउ
ति तमालवृक्षउपलक्षनहै औरभीवृक्षजानिये करभहाथीकेवच्चाजहांकेलिकरतहै १६ य
थाआपधरैमलऔरनिकेसवनिर्मलकायकरैंचहुंओरैं पंथिनिकेपरितापहरैंहठिनेत
नतूलनन्हूहहतोरैं देषहुएकसुभाववडोंवड़भागतड़ागनकोविनथोरैं ज्यावतजीवनदाति

क०
२१
51

नकेंभनिजवंधककैजगवंधनछोरैं १७ आपधरैंइति कोईकाहूसौंकहतहैचहूंओरैंजातिहूंचार
मैंपथिककेपरितापपथकेदुषकौंहरतहैं जोरावरीसौं परितापहौनितरहैको सर्वजआधिदता
दिसौंसोआधिदैविक कोईकेकहूवचनअनादररत्यादिसौंहोयसोआधिभौतिक रोगादि
कसौंहोयसोआध्यात्मिक जोलोगतनहूहहतलसरामवरावरि किंवातलाकेपुत्रवरावरि
तन्नूहहतलावकेनिकटकेतरहूषताकौंतेमततहैं लोगतेअपकारकरतहैं तलावउपकार
करैहै चोरवितमैंचोरीसंपतिमैं जलरूपवित जेतनीनदीनदमैंहैतेतनीनहीहै जीवनना
मजीवकोओजलको जीवनहारीजोहै जोइनकेजीवनजलकौंहरतहैलेतहैं तिनकौंआव
तहैं ऐसषमैंजोइनकेप्रानकौंरहेहैतिनैंजिवावतहै जिनआपनैवंधनकरिकैं जगतकेवंधन
कौंछुड़ावतहैं जोतलाववंधावैताकोकर्मवंधनछूटैमुक्तहोययहअर्थ १७ अथसमुद्रवर्नन
लगततरंगगंभीरतारतनजलजवहूजंत गंगासंगमदेवत्रियजानविसातअनंत १८ अथसमु
द्रवर्नन लंगइति जानवाहन औविमान औअनंतभगवान १८ गितिवडवानलवहिवहु
चंद्रोदयतैंजानि पन्नगदेवअदेवगृहऐसोसिंधुवषानि १९ गितिइति चंद्रोदयतैंवढिवो।
सिंधुकौ १९ यथा सेषधरैंधरनीधरनीधरकेसवजीवरचेविधिजेते चोदहलोगसमेततिन्हैं
हरिकेप्रतिरोमनिमैंचितचेते सोवततेऊसनैंइनहीमैंअनादिअनंतअगाधहैंपते अद्भुत

जितने

51A

सागरकोगनिदेषहुसागरहीमहिसागरकेते २ सेषइति सेषनागअथवैहैताधैहै धरनी पृथ्वी
कौंश्रधरनीधरपहारकौं श्रपि धातानेंजीवरचेहैंताकौंश्रौचौदहलोकसहित श्रौतिनसेष
नामसहितहरिकेमतिरामसैं एकएकरोममैंचितमैंचेतेजानैं श्रगाधश्रतलस्पर्शहैयातें श्री
भगवानकेरोमनिमैंसमुद्रहै केतनैंसमुद्रहैं २ भूतिविभूषितपीएषहुविषईससरीरकि
पापविपोहै हैकिधौंकेसवकसापकोचरदेश्रदेवनिकेमनमोहै संतहियाकिवसेंहरिसंत
तसोभश्रनंतकहाकविकोहै चंदननीरतरंगतरंगितनागरकोउकिसागरसोहै २१ केतिसम
द्रवर्नन भूतिइति समुद्रचारिभीवर्नतहैं चारिहुतर्ककरिवरनैंहैं समुद्रहैकिधौंईसमहादेव
कोसरीरहै भूतिसंपतिसों भूतिभस्मतासोंविभूषितसमुद्रभीशिवभी पीयूषश्रमृतसमुद्र
मैंहै श्रौमहादेवमैंभीहै सुधासुचंद्रमादेहमैंहैयातें विषसमुद्रमैंश्रौशिवमैं पापकोदोउ
हरिकरेहैं समुद्रमैंदेवतारहतहै श्रदेवदैत्यदानवरहतहैं श्रैसैंकसापकेउरमैंजानिये समुद्र
मैंश्रौसंतकेहृदयमैं भगवानवसतहै कोउनागरप्रवीनहै किधौंसागरहै चंदनकोनीरलाये
है तरंगजेमनकीउर्मिमनोरथसोजाकेंहै मनोरथनिसोंयुक्तहै किंवाचंदननीरयुक्तजोचंद
नवृक्षसोचंदनताकीसोतरंगलहरीताकीश्राकृतिधारिकरेहैं चंदनलगायश्रगुरीसोंचीरेहैसो
तरंगकीश्राकृतिहोतिहै चंदननीरततरंगसोंतरंगितयुक्तहै समुद्रपक्षतरसैंचंदनहै किंवाह

नीर

ति चंदन नामें है व्याकरन में पूर्वपद उत्तरपद को लोप भी होत है इनि को लोप भयो चंदन रह्यो औ
र नीर तरंग सों तरंगित जल्न है किंवा चंदन सो उज्वल जाको नीर है २१ अथ सूर्योदय वर्नन सू
र उदय तें अहनता पाय पावनता होय संध्या वेद धुनि मुनि करें पंथ लगे सब कोय २२ अथ सूर्यो
दय वर्नन सूर इति वेद धुनि मुनि करत हैं २२ कोक कोकनद सोक हत दुष कुवलय कुल टानि ।
तारा औषधि दीप ससि चुचु चारत महानि २३ कोक इति कोक चक्रवा औ कोकनद कमल ता
कों सूर्ज उगें वियोग को जो सोक दुष जात है कुवलय रात्रि विकासी कमल २३ यथा कोकनद
मोदकर मदन वदन किधौं दसमुष मुष कुवलय दुषदाई है रोध क्रम साधजन सोधक तमो गु
न कि उदित प्रबोध बुद्धि के सोदास पाई है पावन करन पद हरि पद पंकज कि जगमग मेंमन जगा
मगा हरसाई है तारापति तेज हरे तारका को [illegible] तारक कि प्रगट प्रभात करहीं की प्रभुताई है
२४ कोकनद इति यह मदन काम ताको वदन मुष है किधौं प्रगट भये हैं जो प्रभात करहू जे
तिन की प्रभुताई ईषर ता है मदन को वदन के सो है कोक जो काम सास्त्र ताको मोनद सहू सो
है मोद आनंद ताको कर्ता जाहि काम को धर्म सास्त्र वेराजी करत हैं कोक सास्त्र राजी करत हैं ।
किंवा सूर्य की प्रभुता है सो कैसी है कोकनद कमलता कों मोद आनंद कारी है दसमुष रावन ता
को मुष है किधौं सूर्य की प्रभुता है रावन को मुष के सो है कुवलय भूमि मंडलता कों दुषदाई है ।

ॐ १ दमनके प्रसंग सौ समुद्र बांध्यो गयो है ऐसें भी कहत हैं सूर्य की प्रभुता कैसी है कुवलय रात्रि विकासी कमल तिनकौं दु
षदाई है १८

52A

किंवा रात्रीनाकौं देषितकरै कुवलय समुद्र ताकौं दुषदाई है सो संकुचित होत है उदित कहिये प्रगट
भयो है सो मवाधवडी समृद्धि जामैं ऐसी बुद्धि है यह केसोदास नैं पाई है जानी है बुद्धि कैसी है असा
धजो जन दुष्ट जो लोग तिनके रोध करै रोकनेवाली है सज्जननसौं मिलि बनहीं देति है किंवा जो दिवु
द्धि के रोकनेवाले असाधुजन चोर व्यभिचारी आदि तिनकौं रोकै है फेरि तम अंधकार तिनके गुन अंधका
रनीतनकौं दूरकरै है दूर करे है हरि के पदपंकज हैं चरनकमल है किंवा सूर्य की प्रभुता है हरिके प
दपंकज कैसे हैं जाहि चरनकमल को [ornament] पयजल श्री गंगाजी हरुपसौ पवित्र करत है
सूर्य की प्रभुता कैसी है पयजलतौं को पावन करनवाली है सूर्य के उगें जल पवित्र होत है पुरा
नु वचन है जगत मैं मनजन मगट दरसाई है याको अर्थ मनुराजा भये हैं जा की संतान यह मनुष्य हैं
जिननैं मनुस्मृति करी है चारिहुं वर्नकौं धर्ममार्ग बतायो है जगत मैं मनु है किं सूर्य की प्रभुता ईहै म
नु कैसो है जगत मैं जगत के पथ की गति दिषाई है प्रभुता कैसी है जगत मैं मग पथ तिनकौं दिषाव
त है कहूं जग मैं मति ऐसी भी पाठ है सो आछो नहीं तारकाराछसी ताको तारक गति देनवारो श्री
रामचंद्र है किं सूर्य की प्रभुता है तारापति वाली वानरत को तेज को हरनवालो है मारनवालो है ।
यह अर्थ सूर्य की प्रभुता कैसी है तारापति चंद्रमा ताके तेज को हरनवालो है २४ अथ चंद्रोदय वर्नन ।
कृ कोक कोंनद विरहितम मानिनि कुलटनि दुष्य चंद्रोदयतें कुवलय [ornament] निजलधि चकोरनि सुष्य २५

भ०
५३
53

अथचंद्रोदयवर्नन कोकहति कुलटाकोंप्रकासनहीभावै २९ यथा केसोदासहैउदासकमला
करसौंकरसोषकप्रदोषतापतमोगुनतारिये अमृतअसेषकेविसेषभाववरषनकोकुन
दमोदचंदषंडनविचारिये परमपुरुषपदविमुषपरुषरुषसनमुषदविदुषनिउरधारिये
हरिहैरीहियमैंनहरिनहरिननैंनीचंद्रमानचंद्रमुषीनारदनिहारिये २९ केसोदासइति ह
रिहैरीहियमैंनहरिनहरिननैंनीचंद्रमुषीचंद्रमान नारदनिहारिये दोयनायकाचंद्रमाकों
देषिकैंउरेंकरतिहै एकपूछैहै दूसरीसोहेचंद्रमुषीयहचंद्रमाहै दूसरीकहतिहैनकोअर्थ
नहीं फेरिकहतिहैहेहरिननैंनियहस्यामतादेषैहै सोकालाहरिनतोनहीहै दूसरीकहतिहै
रीसषिनहरिनहरिननहीहैतोकहाहै हृदयमैंहरिभगवानहै जाकैंअसेनारदजीकोनिहारि
ये एहैंभगवानकीस्यामतानारदजीमैंदेषियेहै नारदजीकैसेहैं जाकोकरहाथकमलाबराग
नाताकेकरसौंउदासहै वरांगनाकोपानिग्रहननहीकरतहै हेमसैंआकरनामसमुद्रको
ओवानिको किंवाजाकोकरकमलालक्ष्मीताकेआकरसमुद्रसोंउदासहै संपतिकोंहा
थसौंनहीछुवैं किंवाजाकेकरकमलकेआकरसमुद्रतिनसोंउदासहै ताकोंभीनहीछुवैल
क्ष्मीकोनिवासजानिकैं फेरिनारदजीकैसेहैं सोषकप्रदोषताप अरुऐजोदोषपापअपराध
तासैंभयोहै जोतापदुषताकोसोषकमिटावनहारहै तमोगुनतारियेतमोगुनकेकार्जको

ातनक

53A

पय्यज्ञावतताकौंनारदजीनारैहैताडैहैदूरकरैहै किंवातमोगुनतातमोगुनपरैताकौंश्र
तिसत्रुएनारदजीहैं नारदजीकौंसप्रमैंभीदेषैतोभीतमोगुननहीरहै फेरिनारदजीकैसे
हैं असेषकहियेसपर्नजोअंतमोहसालोकाम्यादिंपाचप्रकारके ताकेजोविसेषभावक्रि
याताकौंवरषतहैदतहैं तादिक्रियाकेकरैमोक्षहोयताकौंसिषावतहैं जैसेंध्रुवकौंसि॰
षायो फेरिनारदजीकैसेहैं कोककामसास्त्रताकोनदसहूतासौंउपजैजोमोदआनंदता
कोचंडकहियेउग्रषंडनकोअर्थषंडनकरनवालोनासकरनवालोहै यहविचारियेहै कुवे
रकेपुत्रनलगाग्रनमदितमत्तहोयविहारकरैथेतिनैंसरापदियो फेरिकैसेहैं परमपुरुष॰
जोभगवानतिनकेजेपदचरनतिनसोंजोविमुषलोगहैं तिनसौंपरुषकठोरहैतोरजाकी॰
हृषीनजरिताहिदेषतिहै श्रीभगवानसौंसंमुषजेविद्वषपंडितहैतिनकौंसुषदहैं तिनैंउर
मैंधारैहै किंवाभगवानसौंजोसंमुषधारैहैसोईविद्वषहै औरअज्ञानहैं यहवातजानि
कैंउनविषेउरकौंमनकौंधारैहैऐसेंजानिये अथचंद्रपदचंद्रमाकैसोहै कमलकेआक
रसमूहतिनसौंजाकेकरकिरनउदासहै कमलनिकौंनहींप्रकासैहै प्रदोषकहियेसंध्या
ताहिविषैंसूर्जकोजोहैतापताकोसोषकदूरकरनवालोहै किंवासंध्याकोजोतापको
सोषकहै फेरितमजोअंधकारताकेजेगुनलोकनिकेनेत्रनिकौंअंधकरैतताकौंतारि

कं·
२४

54

येहैतारियेहै संपूर्नअमततानैंकौंविसेषभावसौंविसेषचाहसौंवरषतहैं औरऔषधीऔ
लोकतानैंकौंदिनकोतापमिटेयहविसेषभाव अमतकेयाकीठोर अमतकौंऐसोजानिये
स्रवमैंदोषनहीं अर्थसौंविभक्तिफिरिजातिहै कोकनदआरक्तकमलताकोजोमोदता
कौंचंडतीवुजैसैंहोयवाकोंनसायोजाय ऐसैंषंडनकरनवालाविचारियेहै परमपुरुष
आद्योजोआपनैंपुरुषपतिताकोजोपदस्थानगरहकिंवासज्ञाकिंवासंकेतनासौंजोविसु
षहैमानिनीहैताहिविषैंपहषहै रूषीहैक्रारहैहषतोरजाकी नायकसौंमनमुषविरु
षिनकौं समुझवारलगाइनिकौंमुषदहैताहिउरधारियेहै किंवानायकसौंजोसंमु
षहैसमुझवारहै औरनायककौंउरमैंधारैहै चंद्रोदयमैंमाननहींरहेगोयातें चंद्रमामैं
नारदकोआरोपकीयो २६ वसंतवर्नन वरनिवसंतसपुष्पअलिविरहिविदारनवीर
कोकिलकलरवकलितवनकोमलसुरभिसमीर २७ अथवसंतवर्नन वरनिइति वि
रहकोविदारिवेकौंवीरहैसमर्थहै किंवाविरहीकेविदारिवेकौंजाकेवीरसुभटपुष्प
अलिकोकिलआदि कोकिलकोकलरवअव्यक्तमधुरध्वनिसौंकलितजुक्तकिंवाकोकि
लऔकलरवकपोततासौंजुक्तवनहै २७ यथा सीतलसमीरसुभंगगाकेतरंगजुतअं
वरविहीनवपुवासुकिलसंतहै सेवतमधुपगानआननमुषपरिभूतबोलसुनिहोतसुषी

याकेहीयेमैंहरकथाश्री
नामजीनहींहैहरन्नहैं
यातेचद्रमाहैनानदन
ही

हितजानतहै

२५

54A

संतहैंश्रोअसंतहैं अमलअटलहरूपमंजरीरूपहरनरंजितअसोकहुषदेषतनसंतहैं जाकेराज
दिसिदिसिफूलेहैं सुमनसवुशिवकोसमाजकिधोंकेसववसंतहै २८ सीतलइति सिवकोस
माजहैकिधोंवसंतहै शिवकोसमाजकैसोहै शिवकेमाथेपैंगंगाजीहै सुभकहियेश्राछो
श्रीगंगाजीकेतरंगतासोंनन्हजहांसीतलसमीरहैपवनहै समाजकहैंगनसहितशिवली
जियेश्रंवरवसनताकरिविहीनशिव श्रोवपुसरीरजाकोवासुकिनागसोसोहतहै किंवावपु
विषैंवासुकिसोहतहै मधुनामहेममेंछीरकोंश्रोजलकोछीरपानकरिरहैहै किंवाजलपान
करिरहैहै श्रेसेजेतपसीताकेगनसमूहशिवकोंसेवतहैं श्रोमधुपदेवताविसेषकोंभीकोईक
हतहै ताकेगनसेवतहैं किंवामधुवसंत सोजिनशिवकेपरानपावनकोंसेवतहैं श्रेगजमुषग
नेस श्रोपरभतकार्तिकेयजाहिशिवकोंसेवतहैं जिनसिवकेवचनसुनि सतसुरेरावनवाना
सुरश्रादिसुषीहोतहैं अमलनिर्मलहै फेरिश्रटलकहियेश्रपर्नापार्वतीशिवकेलियेतपस्या
करीथी तवलासवरषताईसूषेपानषायरहीथीपीछेपानकोभीत्यागकीयोतासोंश्रपर्नाना
मभयो श्रोरूपमंजरीकोईसषी किंवाश्रपर्नाजोहैरूपमंजरीताकेपदकीरजसोंरंजितरंगे श्र
सोकवीतसोकगयोहैसोकजिनको श्रेसेसंतश्रसंतहैं जाहिश्रपर्नाकोंदेषें किंवासषीकोंदेषें
दुषनासकोंप्राप्तहोतहैं जाहिशिवके किंवासमाजकेराजमेंदिसादिसामेंसुमनदेवताफूले

श्रसंतश्रसुर

क. २२

हैं ताजीहै बसंतकेसोहै हेमकेरूसमैंसीतलनामचंदनकोभीहै सीतलचंदनताकोजोपवनसोसु
भस्नाकोजोश्रीगंगाजीकोतरंगललहरी तासोंसनोहै फेरिवसंतमैंअंबरआकासनिर्मलहोतहै ।
औविहीनवपुकामश्रीवासुकिफूलकोहारसोजहांसोभापावतहै फेरिवसंतकेसोहै हा
थीवहुधावसंतमैंमत्तहोतहैं मधुपभ्रमरताकेगनगजमुषकोंसेवतहैं गजमुषकोईआवकों
भीकहतहैं परिभृतकोकिलताकेवोलसुनिसंतअसंतभलेवुरेसवहीसुषीहोतहैं अमलनि
मल अदलअमलताजाहिवसंतमैंहै औरूपकीमंजरीसारीषीजेनायिकातिनकेपावकीरज
सोंरंजितमहाअसोकवृछहै स्त्रीजवपावसोंमारैतवअसोकफूलेहै जाहिवसंतदेषिदुषनसेंदू
भाजैहै फेरिवसंतकेराजमैंकहियेप्रकासमैंदिसादिसामैंकहियेसुमनफूलफूलतहै २८ ग्री
षवर्नन तातेतरलसमीरसुषसूषेसरितानाल जीवअवलजलथलविकलग्रीषमसफलरसा
ल २९ अथग्रीषमवर्नन तातेइति तातेगरमतरलचंचलसमीरपौनतासोंसुषसूषेहै औसरि
ताओनलावसूषेहैं जीवअवलहोयरहेहैं औथोरेजलविषै औथलविषै विकलहोयरहेहैं
रसालआवग्रीषममैफलसहितहैं॥२९॥चंडकरकलितवलितवरसदागतिकंदमूलफूलफल
दलनिकोनासहै कीचवीचवचैमीनव्यालविलूकोलकुलडुरददहीनदिनछतकोविलासहै ।
थिरचरजीवनहरनवनवनपतिकेसोदासमगसिरअवतनिवासहै धामवनवलपनुषसोम

२

55A

तितिणितिसरु सबरसमूह है किधौं ग्रीषम प्रकास है ३ चंडइति सबर भील को समूह है ।
किधौं ग्रीषम जेठ असाढ ताको प्रकास है सबर कैसे हैं चंड हैं अति कोप भरे फेरि करकलि
तया को अर्थ कलित अर्थ लियो है वन में करआगत जानैं वलित को अर्थ रोकी है वर को अ
र्थ वल सों वन में रोकी है सदागति जानैं मारुत में लोग चलि नहीं सकत हैं कोई ऐसे भी क
हत हैं हेमसैं चंड नाम जमदूत को भी है चंड हैं मानौं जमदूत है फेरि हाथ में कलित ग्रहन कीयो
है सदागति वान जानैं फेरि वल सों वलित चलत है फेरि कंद मूल टोऊ सहू को ग्रहत हैं तासों कं
द नाम सु षटाई वल्ल मधु आदि जानिये इन सब को विनास करै है फेरि कैसे हैं काकु स्वर सों स
वैन जानिये जासों की चके बीच में मीन वां चैहै नहीं वांचै है पट अर्थ व्यालसा पविल में वाचत हैं न
हीं वांचै है मिले तो मारि डारत हैं कोल सूकर कुल कुल को अर्थ सब ग्रो डुरद हाथी एदरी कंद
रा में वांचत हैं नहीं वांचत हैं रात के लिये मारे जात हैं दिन नाम भाषा में विपत्ति को भी है फला
नां सैं दिन पहौचा कहनावति है दिनकृत विपत्ति के करनै को जाकौं विलास है क्रीडा है फेरि
कैसे है थिर नै षडे हैं ओ वर जे चलत हैं ऐसे जे जीव ताके हरन वाले हैं मारन वाले हैं हेमअ
नेकार्थ में वन नाम जल को औ वन को घर कौं भी है केसोदास कहत है वन वनप्रति वरव
र मैं मृग के काटे सिरता मैं सौंह थिर को अनुत है पर तो है ऐसो जाको गोचर हिवे को निवास

क
५६
66

हैकिंवानिकुंजकुंजतिनकोंवासवरु पावनवल धनुषयाकोअर्थधनुषकेवलसौंजोहसैं
धावतहैं औरनकौंमारिकैंलूटिवेकौं फेरिसोभतितिपानिसरतिनकेपानिमैंहाथमैं
रसवानसोभैहै अवग्रीषमप्रकासपक्ष ग्रीषमकैसोहै हेममैंचंडनामतीव्रकोभीहै च
इतीव्रजेकरकिरनसूरजकेग्रीषमतासौंकलितजुक्तहै वलितवा सदागति वरकहिये
वलतासौंजुक्तजोसदागतिपवनववूला एरवमैंववंडेराकहतहैं तासौंजुक्तहै कंदज
मीकंदआदि मूलनामहेममैंनिकुंजकोआहरितनकोभीइनसवकोजहांविनासहै।
कीचवीचइत्यादिमैंकाकुसरनहींएतनोभेदजानियेकीचकेवीचमैंमीनवाचतहैं ऐसें
जानियै दिनकृतसूर्यताकोजहांविलासहै विसेषकरिकैलसैहै यहअर्थ धिरजुतत
लावगहवताकोजीवनजलताकोहरैहैसुषावैहै चरनदीनमनुष्यपसुआदिकेजीवनज
लकौंहरैहै नदीनदनैंसुषावैहै मानुषकेसुषसुषावतहै वनवनप्रति वननिमैंआवर
निमैं आमरवासिरनछत्रअवतयाकोअर्थ अवैवरिसैनकोअर्थनहीं मगसिरतपैहै।
वरसैनहीं ताहिमगसिरकोनिवासग्रीषममैंहै धनुषनामगैंडासौंवलसौंधावतहैंज
लकीओर सोभतनिपानिसर उहांसोभतिपढिये इहांसोभतपढियेग्रीषममैंदोषनहीं
तासौंनिपानिजलविनांजोसरतलावसोसोभतनहैग्रीषममैं २॰ वर्षावर्नन वरषाव

२
५६

५८

रनहंहंसवककदाहरुचातकमोर केतकांकंजवारंवनलसैदामिनिद्युनघोर ३१ अथचवरषाति
नुवरनन वरषाइति वरषावरनहुंहंसवक ऐसोपाठहै तहांहसकलहंसयादेसकेजानि
ये कहूंवरषाहूंसप्रयानवकऐसोपाठहै सौदामिनीवीजुरी ३१ भौंहैंसुरचापचारुप्रमुदि
तपयोधरभूषनजराये जोतितडितरलाईहै दूरकरीसुषमुषसुषमासकीकीनेनअमल
कमलदलदलितनिकाईहै केसोदासप्रवलकरेनुकागमनहरमुकतसुहंसकसवदसुष
दाईहै अंवरवलितमतिमोहैनीलकंठजूकीकालिकाकिवरषाहरषिहियआईहै ३२ भौंहैं
सुरचापइति कालिकाकिवरषाहरषिहियेआईहै हेममैंकालिकाजोगिनीकोभेदहै औमे
घमालाकोनामऔनयेमेघकोनाम औपार्वतीकोभीनामहै कालिकापार्वतीध्यानसमय
मेंहृदयमैंभक्तकेहरषिकैप्रसन्नहोयकैंआईहै किंवावरिषातिन्हसोमनमेंराजीहोयकेआईहै
कालिकाकैसीहै भौंहैंताकीसुरलीजियेकामताकोचापधनुषसमानचारुसुंदरिहै प्रमु
दितकीभाषाप्रमुदितहै आछीतरहचोलीसोंप्रमुदितकियेहैं मुंदेहैं पयोधरकुचजाके औ
वर्षामेंजवतांईहूसरोअर्थलगेतवतांईएकअर्थनहीलगाइये प्रमुदितकोअर्थसानंदलीजियेतो
एकअर्थदोनोंठौरलागै भूषनजरायजोतितडितरलाईहै ऐसोपाठ जराऊकेजेभूषनता
कीजोजोतिताकीतडितवीजुरीकीतरहतरलाईचंचलताहै किंवातडितरलाईहै तडितपद

कें. १२

57

जुदोतरलपदजुदोईपदजुदोहै पदजुदो चारिपदहैतरलाईमैंतडितकोजकारमिल्योहै य
हहै पहिलेअर्थमैंइपदहैकहतहै उहहैयाकेअर्थमैंउहैकहतहैं तरलनामहारकेवीचमैंम
निकिंवा चौकीरहतिहै ताकोनामहैतकांतकेलियेंतरलकोतरलाकीयो जराऊकेभू
षनकीजोतिहै इहैयहजोतरलहैहार मध्यकोमनिसोतडितवीजुरीसोहै कहूंतडित
रलाईहै एकैंनकारपढ्योहैतहांऐसोअर्थकरिये जराऊकेभूषनकीजोतिमैंतडितकीजो
तिरलाईहै मिलाईहै ऐसीचमकहै फेरिकालिकाकैसीहै भूषनसोंविनाअरु भूषकैं
शृंगारेविनासहजनकीसोभासोंभूषकतिकैंदूरकरीहै ससिकीजोभूषमासोभाजु
नें फेरिनैनकरिअमलजोकमलताकेदलकीजोतिकाईसोंदर्जेताकोंदलितकियेहैं
केसोदासकहतहै प्रवलहै मानैंस्तंभनिस्तंभकोंमारैहै करेनुकाजोहथिनीताकोजो
गमनताकोंमानैंहहेयो हस्तिनीकीसीचालचलतिहै मत्तामत्तगेहमकविद्विपाहं
सकः पाटकटकः इत्यमरः पावकेभूषनकोनामहै ताकोसवदभूषदायकहै फेरिकै
सीहै अंवरवसनतासोंवलितजुक्तहै ऐसोनीलकंठमहादेवताकीमतिकोंमोहतिहै वरषा
कैसीहै सुरचापइंद्रधनुषसोचाहसुंदरहै भौंहेंहैयाकोअर्थ भूमिकीडोरअरुपलटैहै
फेरिप्रमुदितराजीभयेहैं पयोधरमेघसोंभूषनजेहव्रजहा भूषसीताकोंषनिमैंउप

57A

जेहैं उद्भिजनामवृक्षकोहै भूमिफोरिकैंनिकसतहैं घनिनामघाउकोसोइकारवहैतासु
घनकीवैरनहोवेनै फेरिरावसहसहितश्रौजोतिसहितजोतडितवीजुरीताकोजहांतर
लाईवंचलताहै तडितरलाईयापाठकोयहअर्थहै तडितरलाईयापाठमैंरलिवोमि
लिवेविषैहै वरषामैंतडितकोरलाईहै मतिकेमघकौंवहीसौंद्रूतिकरीहै चंद्रमांको
छपायोहै तैश्रैसोनामनदीकोहै तामैंतकहियेनदीहै श्रमलनिर्मलकमलनाम
जलजहां वरषामैंनदीकोजलनहीरहैहै दलफौजताकीजोतिकाईसोभाताकौंदलित
कियोहै वरषामैंफोजसंवाहोतिहै प्रवलुकपटजेटो श्रौरेनुकागतनहर कनामजे
लको प्रवलजोकजलतासौंरेनुकाधूरिताकोजोगमनउडिवोताकोंहरैहै सकुतखहंस
कयाकोअर्थ सकुतकहिएछोटोहंसककहिएहंसनैंजाहिवरषाको जाहिवरषाकोमे
वेदादुरश्रादिकोसवदसुषदाईहै किंवासकुतावहुतजोयादेसकेहंसकताकोसवदजहां
सुषदाईहै फेरिअंवरश्राकासकोजानैंवेष्टनकीयोहै मघसौंघोरिलियोहै नीलकंठ
मोरताकोमतिकोंमोहैहै ३२ श्रथसरदरितुवर्नन श्रमलश्रकासप्रकाससमसिजुति
तकमलकुलकास पंथीपितरप्रयानरूपसरदसुकेसवदास ३३ श्रथसरदरितुव
र्नन श्रमलइति सरत्कालकेकमल कमलजलकोभीनामहै सोसुकुलसव किं

श्रौचलवेविवे

सयमा

वाहेममैंकुलनामदेसकोभीहै देसप्रसन्न ३३ विज्ञानगीता सोभाकोसदनससिवद
नमदनकरवंदैंनरदेवकुवलदाईहै पावनपदउदारलसतिहैहंसमालदीपतिजलज
हाररिसिदिसिधाईहै तिलकचिलकचारुलोचनकमलरुचिचन्द्ररैनभूषजरागनिय
भाईहै अमलअंबरलीननीलपीनपयोधरकेसोदाससमारहाकिसरदसुहाईहै ३४
सोभाकोइति केसोदासकहतहै सारदासरस्वतीहै किधोंसरदरितुहै सरस्वतीके
सोहै सोभाकोसदनघरहै फेरिससिसोजाकोवदनहै देसमैंमदनामहर्षकोभीहै
मदनकोअनेकतरहकेहर्षनकोकरैहै किंवासोभाकोसदनजोससितैसोहैवदनता
कोमदगर्वनहीकरतिहैहमारोअसोनपहै फेरिनरमनुष्यअोदेवताजाकोप्रनामक
रतहै फेरिकुवलयभूमिमंडलताकोंवलदाईहैवरदाईहै येफलकारएकहैफेरिजा।
केपदपावनपवित्रहैं अोउदारसबकामकेदाताहै हंसपावकोभूषनअोमालाजाकों
सोभतिहै फेरिजलजमोतीनाकोहारताकीदीपतिदिसादिसामैंफैलीहै फेरिजा
केतिलकमैंचिलकहैचारुमनोहरहै लोचनकमलकीरुचिकांतिजाकी किंवाचा
रुजाकेलोचनहैं अोस्वेतकमलपुंडरीकताकीजाकोंरुचिहैचारुहै किंवाकमलअा
सनहैयातैंस्वेतकमलमैंरुचिकांतिफैलीहैजाकी फेरिचन्द्ररनामदेसमैंचारकारको

58A

है जोप्रियवचनकौंकरैंऔकहै ऐसोजोभक्तऔचतुरमनुष ब्रह्मा उनकीपुत्रीहैया
तैंऔजगजीवनभगवानतिनकेमनमैंरहाईहै किंवाजगतकेजीवनिकौंजानिये ए
कसरस्वतीभगवानकीभीस्त्रीहै एकाभार्याप्रकृतिम [illegible] रवराचंचलाचहितीयाइला
हि फेरिअमलरुद्दजोअंबरवस्त्रतामैंलीनहै छपेहैं नीलस्यामताजुक्तपीनउर
पयोधरकुचजाके कुचकेअग्रभागनीलहैं अमलअंबरषीनलीनपीनपयोधरऐ
सोभीकहूंपाठहै तहांऐसोअर्थजानिये अमलजोअंबरवस्त्रसोषीनहैमिहीनहैता
मैंलीनभयेहैं छपेहैं स्यामताजुक्तपीनपयोधर सरदवित्तकेसेहै सोभाकोसदन
जोहै ससितैसोहै वदनजाकोऐसोजोमदनकामताकीकरनवाली उपजावनवालीहै
सरदउदीपनहै नरदेवराजाजाकौंवदैहैं तारीफकरैहैं प्रयानकेलियैं चाहतहैंय
हअर्थ कुवलयसरदकेकमलकिंवाकुमुदताकौंवलदेतिहै जोरूपकरावतिहै फला
वतिहै पावनपवित्रजोपदस्थान श्रीगंगाजीआदिउदारवडेपवित्रतहांसोभैहै हंस
कीमालासमूहजामैं जलजकमलकिंवाचंद्रमाऔहारषेत ताकीपतिदिसादिसामें
फैलीहै फेरितिलकचमकचाहहै लोचनकौंकमलजलकिंवाकलहचैहै जलकीसो
भाकमलकीसोभाआछीलागतिहै जगमैंचतुरप्रवीनजेलोगहै तिनकौंनिर्मलभाई

३ दी

म

रघुनाकीचिल
कष २

को॰ २९

सो

जो है चारौंदिसा ताके रूष ओर ताकरि कैं रितु भाई है सुहाई है किंवा दरवं पुनश्रस्या
कौ उपमा वाचक है हम भाषाभूषन की टीका करी है तामैं लिष्यो है जीव कौं भाई है।
जीवसमान लागत है फेरि अमल अंबर आकास है फेरि नीलु है सामद है तामैं ली
न भये हैं छपि गये है विलाय गये हैं पीन पुष्ट पयोधर मेघ जा हिमसरद मैं ३४ अथ
हेमंतवर्नन तेलतूल तामोलु त्रिय तापतपनरतिवंत दीह रयनि लघु द्यौंस सुनि।
सीत सहित हेमंत ३५ अथ हेमंत मगहन पोष तेल इति तूल रुई ताप आगि कौ त
पन सूर्य इनि सौं सब रतिवंत होत है मीति करत है ३५ यथ अमल कमल दल लोच
न ललित गति जारत समीर सीत भीर टीह उषकी चंद्रकन षायो जाय चंदन नलाया
जाय चंदन चितयो जाय प्रकृति वपुष की चरकी चरति जाति चरनो चुरी हूवरी छिन छि
न छीन छवि रवि मुष सुष की सीकरतु षार षेद सोहत हेमंतति तकि धौं के सोदा सवि
प मीत मवि मुषकी ३६ अमल इति यह हेमंत रितु है किधौं प्रीतम सौं विमुष होती तिय
नायुका है हेमंत रितु कैसी है अमल जो कमल ता कौं ओ दल कहिये बहुन के पात ता
कौं सीत जो समीर सो जारै ओल का रेफ भाषा मैं एक है ओलो चन कहिये रोचन हेममैं
रैं चना नाम सुंदरी स्त्री को है ताकी जो ललित गति गमन ता कौं जारति है हूर करति है

है

59A

सीतलभूमिमैंग्राछीतरहपावधरयोनहींजाय कमलग्रादिकोंदीहकहियेवडोडुषतांकी
भीरसहायसहितसमीरहै फेरिजाहिसीतमैंचंद्रककपूरग्रादिवपुषसरीरकीप्रकृतिस्व
भावभयो फेरिचटकलसतांकीचटनांरचनासोचरीचरीमैंचटतीजातिहै हाथमैंठहिला
गतहै यातेंसीतकालमैंकुंभारचटयोरावनावतहै छिनछिनमैंरविमुषकीजोछविसोस
बहीसोंग्रनायासछीनकरी फेसिसीकरजलकनाउसतासोंतुषारवरफसमानखेदक
हियेग्रग्निहैजामैं तेजहीनग्रागिहैजामैं ग्रग्निकोनामखेदकोईकोसमैंहोयतौकेकोईदैकी
भाषाहैग्रैसोग्रर्थ लोगकरतहैं किंवासोसहकीग्रन्वयहैमतसोसोहैमतरितुहैकोनसीक
रतुषारसोंखेदकीहतिनासहैजामैं ग्रथविरहिनीपक्ष ग्रमलकमलदलसोलोचनहैंजाके
ग्रोलुलितहैगतिजाकीजाकोंसीतसमीरपोनजारनहै जाकोंदीहवडेदुषकीभीरसमरहिहै
विरहिनीकोंभीवहकग्रादिउद्दीपनभावतेंदुषदाईहैं विरहिनीकीसषीसोंज्रवसोविरह।
भयोतवसोंयातेंवपुसरीरविषेंग्रैसीप्रकृतिकरीहै ग्रैसोसभावकियोहै यासोंचटननहीं
लायोजातहै ग्रैसेंजानियेफेरिचटसरीरताकीचटनांचेष्टाक्रियासोचरीमैंचटतिजातिहै
भोजनपानसयनइत्यादियेहैहै छनछनमैंयाकीछविछीनहोतिहै रविमुषसमुषकीयाको
ग्रर्थकीकोग्रर्थकियोंसुषदजोवस्तुपी ग्राछोवस्त्रभूषनसुगंधसोयाकोंरविमुषहै इ

स

सषीकहतहै

घरी

क०
६०

60

नकीओरदेष्योनहीजातहै जैसैंरविकेमुषकीओरनहीदेष्योजातहै ऑषिचुरतिहै किंवाजो
कविनरहयाकीमुषकीषोमुषदाईषोसोरविमुषभईगारमभईदेषीनहीजातिहै कव
हीसीकरैहै सीत्कारकरिकैतुषारवरफहोतिहै तुषारसेठंढेअंगहोतहै औकवहीसेट
पसीनाहोयआवतिहैसोहूतहै ऐसेहैयहअर्थ किंवातुषारसेदसोयाकीदुतिहैमसुहै
ठहोपरेगारमहोयपहमसुदसाहै ३६ अथसिसिरवर्नन सिसिरसरसमनवरनियेकेस
वराजारंक नाचतगावतरैनदिनषेलतहसतनिसंक ३७ अथसिसिरवर्नन माघुऔर
फागुनसिसिरजानिये सिसिरइति सिसिरमैराजाकिंवारंकतिनसवकेमनसरसअन
रागजहवरनिये सवहीनाचतहैगावतहैंहसतहैंक्रीडाकरतहैंसंकछाडिकें ३८ सरसअ
समसरसरसिजलोचनिविलोकिलोकलीकलाजलोपिवेकोआगरी ललितलतासवा
हजानिजनवालविटपउरनिलगैउमगिउजागरी पल्लवअधरमधुमधुपनिपीवतहीरचि
तहचिरचिकहतमुषसागरी इहिविधिमदागतिवसनगलितवासिसिरकीसोभाकि
धोवारनारिनागरी ३८ इतिश्रीकविप्रियायांभूमिभूषनवर्ननोनामसप्तप्रभावः ७ स
रसइति ऐसीसिसिररितुकीसोभाहै किंवावारनारिवेस्यासोनागरिप्रवीन सिसिरकैसी
है जातिकरिठिकानाकरिसरसजेअधिकजेलोकहैंसोसव असमजोवरोवरिकोनांही

ध्यान

६०

ताके संनिवेस वरि के होत हैं होरी षेलन में कहा करि कैं सरसिजविलोचनि जे नायका ता
कों विलोकि कैं देषि कैं सरसिजविलोचनि कैसी है लोक लीक लोक की जो मरजादा ओ ला
ज या के मरदिवे कों आगरि नि कोई काहू सों कहत है या बात कों जानि जाहि रितु में ललित जे
लता ता के जे सुबाहु पसरि चले हैं सो जनु न पुरानें हू ओ बाल विरह उछ ताके उरनि सों अ
गनि सों लागति है उमग सों उछाह सों उजागरी जाहि रहै ऐसी रितु है पल्लव पत्र ता को म
धुमाधुर्य मधुपता कों अधर कहिउ परही भाषा में अधर ऊपर कों भी कहत हैं यह वस्तु अ
धर रहीर रहीनी चैन दीवरी हीर वत या कों अर्थ फेरि जाहि रितु सों ही कहिये हृदय सोर च
तु है रंगणा जात है राजी होत है यह अर्थ ह चिर मनोहर जहां पिक कोकिल कोहत सह है फेरि
सुष को सागर ही है इहि विधि या तरह की सिसिर रितु है फेरि सदागति पौन ता के वसन क
हिये वस करि कैं गलित कहिये फैली है वास सुगंध जाहि रितु में वारनारि कैसी है सर
स अथिक जामें असम सर काम है कोई काहू सों कहत है ए जो सरसिजविलोचनि कमल
लोचनि वस्या ता कों तू विलोकि देषि लोक की लीक मरजादा रूप जो लाज ता कों लोपिवे
कों कैसी आगरि है फेरि कैसी है ललित लता सी जा की बाहु है यह जानों जनु नहू ओ ग्वा
ल ओ बालक ओ विरह गंडा के सो ऊ होय ता के उर छाती सों लागति है उजागरी जाहि रहै फे

क॰ ६२

61

तियसुवसोजोअधरनाकोजोमधुताकोमधु पजेहैंमें पताकेपीवतहीरचतिराजी
होतिहै औहविरमनोहरपिकसारीषाहूतकेकंठधुनिहै औसूषकोसागरहै फेरिइ
हिविधिसदागतिसहायाकीयातरहकीगतिहैसोहै फेरिवाससुगंधजाकेजाकेवसन
वस्त्रगलितहै छूटेहै छातीपरकपरानांहीगयोहै निलज्जहै किंवायातरहकौदसा
मैंयाकौवसनरहैनौहै औगलितजाकेवस्त्रहैं सिसिरकौंनायकारूपवरनै तौसर
सिजजाकेविलोचनहैं सिसिरमैंसरसिजनहींरहै ३८ इतिहरिचरणदासकृतकवि
प्रियाभरणव्याख्यायांकविप्रियाटीकायांसप्तमप्रभावव्याख्या ७ अथराज्यश्रीभूषनवर्न
न राजारानीराजसुतप्रोहितदलपतिदूत मंत्रीमंत्रप्रयानगयषटपसंग्रामप्रभूत १ अ
थराज्यश्रीभूषनवर्नन राजाइति दलपतिसेनापति·जयहाथी १ आषेटजलकेलि
पुनिविरहस्वयंवरजानि भूषितसुरतादिकनिकेशवराज्यश्रीहिवषानि २ आषेटकइति
आषेटकसिकार २ अथराजावर्नन· प्रजाप्रतिज्ञापुन्यपनपरमप्रतापप्रसिद्धि ।
सासननासनसत्रुकेवलविवेककौवृद्धि ३ राजावर्तन प्रजाइति प्रजाजुतवर्निये
प्रतिज्ञामैंदृढवर्निये पुन्यकोपननियमवर्निये सत्रुकेसासनआज्ञाकौंदूरकरै ३ दं
डअनुग्रहधीरतासत्यसूरतादान कोसदेसजुतवरनियेउपमक्षमानिधान ४ दंड

इतिउदात्तयुक्त ४ यथा नगरनगरप्रतिचनहींतोगाजेचोरिईतिकीनभीतिभीतिअध
नअधीरकी अरिनगरीतिप्रतिकरनअगम्यागौनभावैंव्यभिचारीजहांचोरीपरधी
रकीसासनकोनासनकरतएकगंधासनकेसोदासदुर्गनहींदुर्गतिसरीरकी दिसिदि
सिजीतिपैंअजीतिहिजदीननिसैंअैसीरीतिराजनीतिराजैरघुवीरकी ५ नगरइति।
यातरहकीरीतिसोंरघुवीरकीनीतिराजतिहै श्रीरामचंद्रजीकेनगरप्रतिएकचनमे
चैतोचोरभयकारीगाजेहै सत्रुनहींगाजिसके ईतिअतिवृष्टिअनावृष्टिआदितांकी
भीतिभयनहीं श्रीरामचंद्रजीकोएकभोभीतियहरहतिहै कोईअधनननहींहोयजाय।
कोईधीरनहोय धैर्यछोडिनीचकर्मकोंनहींकरै फेरिअगम्यागमनदोषहै सोसत्रुकी
नगरीप्रतिकरतहैं जातिराजाकीनगरीपरकोईगनाचहिनहींगयोयातेअगम्यातापरव
हिगयो जोपरस्त्रीपासजायसोव्यभिचारीकहावे श्रीराजीकेराज्यमेंनिर्वेदग्लानिसंकास
दआदितेतीसभावसोईतोव्यभिचारीहै पुरुषव्यभिचारीनहीं व्यभिचारीभावदमारो
कीयासभाप्रकासतामैंस्पष्टहैसासनआज्ञा हमारेकहेविनाकोईकछुलेनहींजाय।
ताकोनासनगंधवाहपौनकरतहैविनाआज्ञागंधलेजातहै दुर्गकोटतामैंजानौ उदा
दुर्गतिदेषियेहै दुर्गतिकोअर्थदुषकरिजानौ दुर्गतिनामनरककोसोकाईकोंनहीं दि

जनिसौं दीनतिसौ जीतिनहींहै राजपत्नीवर्नन सुंदरिसुघद पतिव्रता सुचिरुचिसील
समान इहिविधिरानीवर्नियेसलज्जसुबुद्धिनिधान ६ अथरानीवर्नन सुंदरिइति
सुविसृंगारताभैं जाकीरुचिहोय किंवा सुचिपवित्ररहै औरुचिजामैं कांतिहोय किं
वापवित्रताभैं रुचिचाहहोय मानकहियेउंचोमनताहिसहितहोय किंवासीलसमाया
कोअर्थ जाकेसीलकीसमावरोवरिनकोअर्थऔरहीनहीं ६ यथा मातानिमियाषत
पिताज्यौप्रतिपालकरै प्रभुजिसासनकरतहै तिहियसौं भैयाज्यौंसहायकरैदेतिहै सषाज्यौं
सुषगुहज्यौसिषावैसीषहै तजोतिजियसौं दासीज्यौंरहलकरैदेवीज्यौप्रसन्नहै सुधारैप
रलोकलोकनातौंनाहीं ॥७॥ वियसौं ज्याकेहै अथानमइच्छितिकेज्ञानिककछुहै औरनिसौं
नेहकरैं छांडिअैसीतियसौं ७ मातानिमिइति हरैहियसौंमनदेकसिदेषिकै हेतजोति
जियसौंजीवमात्रसौंहेतप्रीतिजोरिकैउनजीवनकौंपोषै जैसैंउनजीवनकीमातापोषै
जैसैंउनकेपिताउनजीवनकौंप्रतिपालकरै तैसैंउनजीवनिकौंप्रतिपालरानीकर
तिहै ऐसैं अर्थनहींकरिये आपनैंपतिकौंमाताकीतरहपोषतिहै पिताकीतरहप्र
तिपालकरतिहै फेरिदासीइत्यादिदोयजनकपतिसौंलगाइये पतिकीरहलदासीकी
तरहकरतिहै पतिकीसेवासौंआपनौपरलोकसुधारैहै नातौंनांहीकाहूवियसौं

म

याकोअर्थ विपकहियेहूसरासौंनातौसंवंधनहींराषै एकपतिहीमैंअनुरक्तरहतिहै
छितिभृमिताकेमदसौंहमराजाहैंअैसौजाकौंगर्वहै सोअज्ञानसौंछाकेहैं कैसेहैंछ
निकहैं चेरीमैंओरतरहैं चेरीमैंओरतरहैं फेरिछुद्रहैं निकृष्टहैं किंवानिर्दयहैं याके
सीलकीवेरावरिओरनहिंओरनृपदइत्यादिकाहिये ७ पुन कामकेहैं आपनैंहीकामर
तिकामसाथरतिनरतीकोनरीकैसैंगुरआनिए अधिकअसाधुइंद्रइंद्रानीअनेकइंद्रभो
गवनिकेसोदासवेदनिवषानिए विधिहूअविधिकीनीसाविद्रीहूत्रापदीनीअैसेसवपुरु
षओंअनुवर्तिअनुमानिए राजारामचंद्रजूसेराजतनअनुकूलसीतासीनपतिव्रतानारी
उरआनिये ८ पुरि कामकेइति श्रीराजारामचंद्रजीसारीषाओरअनुकूलनायकनहीं
श्रीसीताजीसारीषीपतिव्रतानारीजगतमैंओरनहींजानियेकामओरतिआपनैंईकामके
मनलकेहैं कामअनेकअपसरासौंरतिकरतिहैं यातैंरतिसौंदृढप्रीतिनहींहै जवकामकौं
महादेवनैंवरायातवकामकेसाथरतिकामकीस्त्रीसोरतीभीघ्यारीभीनहींजरी अर्थय
हसहगमनकरिवेकौसाहसभीनहींकीयो जोएसीप्रीतिदोऊमैंहोतीतोजरतीताकौंव
रावतिकरिवेकौंमनमैंकेसैंआनिये इंद्रअसाधुहै अपसरनिसौंभोगकरैहैओगोतममुनि
कीस्त्रीपासगयोयातैंअधिकअसाधु इंद्रानीतोएकहीरहतिहै इंद्रअनेकहोतहै विधिव्र।

क॰
६३

63

त्यानैंअविधिअनचितकीयो सरस्वतीकन्याताकेपीछेंदोरे नवसावित्रीनैंसरापदीना त
मारीप्रतिमाअरुमारीपूजाकहूंनहींहोयगी ८ अथराजकुमारवर्ननं विद्याविविधिवि
नोदज्ञतसीलसहितआचार सुंदरसुरउदारविभुवर्निपराजकुमार ९ राजकुमारवर्न
न विद्याइति विभुनामप्रभुकोभीहै लोगनिकेस्वामीविसेषकरिकैं सोभैहैं ९ दानिन
केसीलपरदानकेप्रहारीदिनदानवारिज्योंदिनानदेषियेसुभायके दीपदीपहूकेअवनी
पनिकेअवनीपरघुसमकेसोदाससुदासउजगायके आनंदकेकंदसुरपालकके बालक
सेपरदारप्रियसाधुमनवचकायकेदेहधर्मधारीपैंविदेहराजजूसेराजराजतकुमारऐसे
दसरथरायके १० दाननिकेइति दानीकरनादिकोसोसीलउतमसुभाव आपरायाकों।
जोदानलच्छनाकरिदानकोजसताकेप्रहारीहरकरनवाले इनकादानकेआगेंऔरके।
दानछपिजातहैं दानवारिसोभगवानसोजैसेंदीननिकोंसुषदेतहैं तैसेंएभीदीननिकों
सुषदेतहै दीनकोंदानवारिसोहै हेमसैंनिदाननामआदिकारनकोभीहैआअंतकोभी
है सुंदरजोभावक्रियादेवपूजनआदिताकोनिदानअंतहैसीमाहै इनकीसीक्रियाऔर
कीनहीं ऐसेजोरघुराजाभयेहैं तिनकेसमानहैं सुरपालकइंद्रताकोवालकजयंतसो
है परदारपरस्त्रीताकौंयहप्रियलागेहै यहसाधुहै परस्त्रीकौंनहींचाहतहैं किंवापरस्त्रे

इ पीकों

६३

63A

इजो स्त्री विवाहिता ताके प्रियहै विदेहसो जाकौं आपनी देहकौं ज्ञान नहीं अर्थ यह ज्ञा
नी ताहि ज्ञानिनिके राजा सरदार ऐसो जो राजा जनक किंवा विदेह राजकुमारी सो॥
राजा जनक ही यारजाकी उपमाकौं नहीं सो कैसो देहको धर्म स्वभावताकौं धरैहै वि
चारसो इनकै देह नहीं है किंवा देहधारी धर्महै धर्मसो सरीरकौं धरैहैं १० अथ पुरोहित
वर्नन प्रोहितन्पहित वेदवित सत्य सील सुचि अग उपकारी वत्सल परि जजीतो जगत अ
नंग ११ पुरोहितवर्नन प्रोहित इति वेदवित वेदकौं जानै सत्यवादी होय सीलवान होय
किंवा सत्य कहिवेको जाको सील स्वभाव होय चित्त कोमल हृदय होय जगतकौं जीतै जग
तके बंधनसों बंध्यो नहीं होय अरु कामकौं जीतै ११ कीने पुरुहूत मीत लोक लोक गायेगीत
पाये जन्म अभूत एत अरि उर त्रास है जीते जग अजीत भूपदेस देस बहुरूप और कौन केसोदास
बलको विलास है तो त्याहरको धनु घन पगनगो विसुषदेखो त्वबधूको मुखसुषमाको
वासहै है गये प्रसन्न राम वादौ धन धर्म धाम केवल वसिष्ठके प्रसादको प्रकास है १२ की
नै इति दसरथजीकौं एतनी वात भई अरु श्री रामजी एतनौं कीयौ सो केवल वसिष्ठजीके
प्रसाद प्रसन्नताताको प्रकास है फल है लुब्धनां सौं जानिये पुरुहूत इंद्र नैं जासो मैत्री कीनी
अभूत ऐसे पुत्र अवतार ईकाहूकै भये नहीं जासौं अरिके उरमैं त्रास रहत है बहुरूप अनेक

क॰
६४

64

तरहके औरकों औसोवलमोरकिंवासेनाताकोविलासनहींहै सुखमांसोभारामपरस
रामप्रसंनहोयकैंगावे १२ अथदलपतिवर्नन स्वामिभक्तश्रमजितसुधीसेनापतिसु
अभीत अनालसीजनप्रियजसीसुभसंग्रामअजीत १३ अथदलपतिवर्नन स्वामि
भक्तइति श्रमकोंसहैसंग्रामलराईताकोंसुखमानिलेय कहूंसुभसंग्रामयहभीपाठ
है संग्राममेंमुखप्रधानहोय औकोईसोंजीत्योनहींजाय १३ यथा छाडिदियोअति
आरसपारसकेसवस्वारथसाथसमूरो साहससिंधुप्रसिद्धसदाजलहूथलहूवल
विक्रमपूरो सोहियेएकअनेकनिमाहिअनेकनएकविनासनहूरौ राजतहैंहितिहिराज
कोराजसुजाकीचमूमैंचमूपतिसूरो १४ छाडिदियोइति अतिआलसजातें जेपु
रुषथेताकोपारससमीपछाडिदियो आलसवालेकोसंगमनहींकरै हेममैंपार्श्वना
मनिकटकोभीहै आपनेंस्वारथकेसंगहीसमूरस्वारथकोमूरनहींराख्यो एकस्वामि
धर्ममैंरतहै काहूसोंकछूलेकेंस्वामिंरकोकोईकामनहींबिगाह्यो अनेकभटएक
सेनापतिविनासनमैंहूरो आछोनहींलगे १४ अथदूतवर्नन तेजवंतहैनिजराजको
अरिउरउपजैछोभ इंगितज्ञानैंसमयगुनवरनहुदूतअलोभ १५ अथदूतवर्नन।
तेजवंतहैइति अरिकेउरमैंकंपावाहै परायाकेइंगितचेष्टमरजीताकोंजानैं १५ यथा

स्वारथरहितहितसहितविहितमतिकामक्रोधलोभमोहछोभमदहीनैंहैं मीनहूज्यमी
नपहिचानिवेकौंदेसकालवुद्धिवलज्ञानिवेकौंपरमप्रवीनेहैं आपनीउकतिअतिऊप
रीहैऔरतिनकीडुरीडुरीमतिलैलैवसकीनेहैं केसोदासदेसदेसआदिदलरामदेवराज
निकौंदेषिवेकौंहूतदृगकीनैहै १६ स्वारथइति विहितमतिजोगप्रजाकीवुद्धिहैकिंवाहि
तसहितवुद्धिकोईस्वामीकेकार्जमैंविहितकोअर्थकरीहै आपनीउकतिऊपरीऊपरकी
वनाईवातपरायाकेहितहोइकैकैसीहै आपनीउकतिडुरीहैछपीहै अर्थजामैंगमहैता
करिकैं औरनकीडुरीडुरीछपीछपीवुद्धिलेलेकैंसवकौंवसकीनैंहैं किंवाआपनीउक
तिऊपरराषिकैं फेरिडुरिडुरिछपिछपिकैं औरनकीछपीमतिलेकैंपरायाकौंवसकी
नैंहैं मतिकोअर्थसत्रुकोमनस्ववाततवीर औरनकीडुरीडुरीमतिलेलेसवैवसकीनेहैं
यहपाठवहुतपोथिनमैंहैसोआछोइतकौनेत्रकीनैंहैं १६ अथमंत्रीवर्नन राजनीतर
तराजरतसुचिसर्वज्ञकुलीन छमीसूरजससीलपुतमंत्रीमंत्रप्रवीन १७ अथमंत्रीव
र्नन राजनीतिइति सुचिसुद्धहोय मनमैंपापवुद्धिनहीहोय १७ केसवकेसैंहूंवारिधि
वांधिकहाभयोरीछनिसोंछितिछाई सूरजकोसुतवालिकोवालककोनलनीलकहो
हमठाई कोहनुमंतकितोकवलीजमहूपरजोरलईनहिजाई भूषनभूषनदूषनदूषन

क॰
६४

64b

लंक विभीषन के मत पाई १८ केसवइति वारिधिकों कोईतरह वांध्यौ तौ ता कह्यौ भयौ कछु
नहीं छितिभूमि ताकौं रीछनि सौं छायदीनी संपूर्न धरनी रीछही रीछ किये तौ कहा भयौ
सूरज कौ सुत सुग्रीव औ वालि कौ वालक अंगद तासौं कहा होय सकै नल नील भी कहा
कहौ हम ठाई याकौ अर्थ आपनी वनाई वात कही जो लंका जमहूपै जम सौं भी जोर सौं ली
नी नहीं जाय सो लंका विभीषन के मत सौं पाई कैसे है विभीषन भूषन की जो वात आछी सो
वात ताकौं भूषन करै है समर्थन करै है यह आछी कही दूषन की जो वात है ताकौं दूषन करै
है खंडन करै है यह वात करै विगार होयगो ऐसो जो मंत्री विभीषन ता के मत सौं सर्वहू सौं
लंका पाई श्रीरामचंद्रजी नैं किंवा कौन नैं लंका पाई ताको नाम नहीं निकस्यौ तब ऐसें ल
गाइये दूषन राक्षस ता के दूषन श्रीरामचंद्रजी लंका विभीषन के मत पाई कैसे है श्रीराम
चंद्रजी भूषन गहनौ ता के भूषन है और गहनौ सौं सोभा पावत हैं गहनौ श्रीरामचंद्रजी
सौं सोभा पावत है ऐसो सुंदर है १८ जहं जरैं दुरजोधन सौं कहि कौन करी जमलोक वसी
सौ कर्न कृपा द्विज द्रोन सौं वैर कै कालव चै वरकी जे प्रतीसौ भीम कहा वपुरो अरु अर्जुन
नारि निरपावत ही वलरी सौ केसव केवल केसव के मत भूतल भार उपार्यो जी सौ १९
फेरि जहंइति कौंन नैं जमलोक मैं वसी सौ वसी वास न पायौ कृपाचार्य काल जो है सो व

६४ ७०

कैताकरिअनुग्रहकरनौं काहूसौंविग्रहअरुकरनौकाहूकोनिग्रहकरनौंपकरिलैनौं ।
काहूजोरावरसौंसंधिमैत्रीकरनी औरतिनीबुद्धिकहीहै सोसवजानैं देवनिऔदेवत
निकौंऔजिसतरहविमाननिसौंरछ्याहोतिहै जवअसुरसौंभयहोतिहै तवजैसैंविमा
नपैचढिकैंचलेजातहैं दुषनहींहोय वैसीकोअर्थवाहीतरहमंत्रीकोजोमतिहै सोदिव्य
विचारउत्तमविचारउत्तमविचारकरिकैं दिनुकहियेविपतितिनसौंराषतिहैं किंवावि
मानजामहैमैंसातषंडकौंघरहोयताकौंभीकहतहैं सातषंडकोघरस्वच्छहोतहै औ
उचौहोतहै इहांवैठिसवदेषतहैं देवनामराजाकोभी देवनामवेस्पकोभी वंडोसाहू
कारताकौंजैसेंस्वच्छसौंसातषंडकोघरराषेंऐसैंजानिये २१ अथप्रयान चवरपतो
काछत्रछविदुंदुभिद्युतिवहूजान जलथलमयपभ्रकंपरजरंजितवर्निप्रयान २२ अथप्र
यानवर्नन चंवरइति जानपालकीरथआदिजलसुषिथलमयहोय २२ यथाराघव
कीचतुरंगचमूरूपकोगनैकेसवराजसमाजनि सूरतुरंगनिकेउरकैंपगतुंगपताक
निकेपटसाजनि हूटिपरैंतिनकेमुकुताधरनीउपमावरनीकविराजनि विंदुमनौंमु
षफेननिकेकिधौंराजसिरीश्रवैमंगललाजनि २३ राघवकीइति सेनाकेचारिअंगहैं
गजरथघोरापादाचतुरंगजोचमूसेनाताकेचपसमूहमैंराजनिकेसमाजनिकौंको

जो

65A

रजो सावरी कियें वचि सकैं हैं यह प्रतीति कीजिये काकस्वर नहीं कीजिये है यह अर्थ द्रौपदी के
वस्त्र हरत वलरी सो वल पाली हूवौ लहीन देषिवे मैं आये यह अर्थ के सो कवि कहत है के स
व के मत सौं १९ अथ मंत्रीमति वर्नन पंच अंग गुन संग षट विद्या जुत दस चारि आगम
संगम निगम मति ऐसे मंत्र विचारि २० मंत्रीमति वर्नन पंचांग को अर्थ तिथि वार नक्षत्र
योग करन याको ज्ञान होय अर्थ यह जोतिष सास्त्र मैं प्रवीन होय किंवा पंचांग सहाय साध
न उपाय देस काल याको ज्ञान होय औ षट गुन सौं जाको संबंध होय षट गुन कौं जानैं यह अ
र्थ है मीकी टीका मैं संधि १ विग्रह २ ज्ञान ३ आसन ४ द्वैधीभाव ५ संश्रय ६ के तिसौ यें थे
ये इत्यादि भी षट्गुन कहत हैं औ दस चारि को अर्थ चौदह विद्या जुक्त होय आगम सास्त्र किं
वा त्रिकाल को ज्ञान होय ताको जाको संग परिचय होय निगम वेद को ज्ञान होय ऐसी मंत्री की
बुद्धि होय ता सौं मंत्र कौं विचारो २० यथा के सव मादक क्रोध विरोध जीम वस्वार थ वुद्धि अनैसी
भेद अभेद अनुग्रह विग्रह निग्रह संधि कही विधि जैसी वैरिन कौं विपदा प्रभु कौं प्रभुता करै के
त्रिनि कीम निगैसी राष तिराज निदेव निजौं दिन दिव्य विचार विमान निवेसी २१ केसव इ
ति मंत्री की वुद्धि नें मादिक मदिरा भोग औ क्रोध आदि जे औरैं नैसी वात निं हाजो गय वात
ताकौं तजी है काहू सौं काहू सौं भेद पारि देनौ वाकी मैत्री हूति करि देनी काहू सौं अभेद करिए

त

अ

नगनिसमैं अनेकराजासाथहैं तेराऊंचीजेपताकाताकेपटसाजसौंकिधौंराजश्रीराज्ञ
लछमीजोहै सोआवैहैऊरैहै मंगलकेलियेलाजनिकों अंजोजवआसालिताकोनाममज्ञ
लेहै एरवमैंलावाकहतहैं राजापैप्रयानसमैसीसवलाजाडारैंहै मंगलहै २३ रामचं
द्रिकायां नादपूरिधूरिपूरितूरिवनचूरिगिरिसोषिसोषिजलभूरिभूरिथलगाथकी ।
केसोदासआसपासठौरठौरराषिजनतिनकीसंपतिसवआपनैंहीसाथकी उन्नतनवाए
नतउन्नतवनाएभूपसत्रुनिकोजीविकासोमित्रनिकेहाथकी मुद्रितसमुद्रसातमुद्रानि
जमुद्रितकैंआईदिसिदिसिजीतिसेनारघुनाथकी २४ नादइति दिसादिसाकोंजीतिकैं
श्रीरघुनाथजीकीसेनांआईनादसहदुंदुभीकेभूस्विहूतजलसोषिकैं वहुतठौरमैंजलकी
ठौरथलकीगाथकरी लोककहतहैंयहथलहै सत्रुराजनिकीठौरठौर सत्रुराजनिकीठौर
ठौरमैंआपनेलोगराषिथानाराषितिनसत्रुनिकीसंपतिसौंमुद्रितवेष्टितजोभूमिताकोंआ
पनीमुद्रामहुरतासौंमुद्रितचिह्नितकरिकैंआपनैंासिक्काचलायकैंआए २४ हयवर्नन

सातसमुद्रनि

तरलतताईतेजगतिमुषसुषपललघुदिनदेषि देससवैससलछनैंवर्नहुवाजिविसेषि ।
२५ हयवर्नन तरलइति तरलचंचलहोंहितातेहोंहि चावुकनहीसहिसकैंतेजगति
अवैअौरोहालचलैं मुषसौंसुषदेतहैं मुहजोरनहीहोंहि लघुदिनथोरेदिनकेहोंहि

कं
९९

66

देसकहियेअरवइराकइमादिताकरिकैभीवेसहैंहांहिवेसरुदेस ऐसोभीपाठहै तहांरुदे
ससंदरनाकोदेसअरवआदि २९ यथावामनहि उपदज्ञनांष्योनभनाहिकहानाषैंपद
चारिथिरहोतइहिहेतहै छेकीछितिछीरनिधिछाडिधापछत्रतरकुंडलीकरतलोल
चितमोललेतहैं मनकैसेमीतवीरवाहनसमीरकैसेनैननिम्मोंनैनीमैनेनहकेनिकेत
हैं गुनगनवलितललितगतिकेसाटासऐसेवाजिरामचंद्रदीननिकोंदेतहै २६ वा
मनइतिऐसेयातरहकेवाजीचारश्रीरामचंद्रजीदीननिकोंदेतहैं केसेहै वामनहीउ
पदज्ञनांष्योनभ एकतोवामनछोटापैरिदोयपावके हमवडेहैंऔरचारिपावकेहैं ।
हरिनामयुनकोभीहै हमारोभीहै हमवडेहैं सोवामनजाहिनभआकासकोनाष्योला
ष्यातकोहमचारिपावसोंकहानांषैं कहानांषैं याहेतसोंथिरहोतहैं छितिभूमिसातो
छीरनिधिजलनिधिसोंछेकीहै यातैंथापदैरिवेकीठार जेतनीहरिचारदोराबनोहायता
कोनामथाप धापदिसायचारादौरावतहैं यातैंछत्रकेनीचैंकुंडलाकारलोलचंचलभ्र
मतहैं औरदेषनवालाकेचित्तकोंमोललेतहैं लछनलछनांसोवसकरतहैंऐसेंजानिये
मनकेमित्रसेहैंजैसीगतिमनचाहतहैंतैसीचलतहैं धीराचलायाचाहैजलदहोहिजलद
कीयाचाहै एधीरेहोहि सोनहीहेममैंवीरनामभटकोभीहै श्रेष्ठकोभीहै वीरहैंऔरअस

घेरीहै

66A

नसौंश्रेष्ठहै औसमीरयौंनताकेवाहनसेघोडनिसेहैं वाहननाम घोडाकौंकिंवाताकोवा
हनकोउहोउतैसेहैं औनैननिजोयाकोअर्थनैननेत्रताकोसोजोवेगहैजाकौं चारिला
षकोसपरसत्रर्थ आठलाषकोसपरचंद्रमाताऐंजातनेत्रनिकौंवारनहीलागैं औषिन
जनिकौंभीकहतहैं तीरलगौतरवारलगौजलगौमतिकाहूसौंकाहूकीआंषै औषिसो
ईनैंन आषिकोअर्थ नजरिकोईकहतहै नैननिसैंजाकोजीववसतहैसोआछोनहीं ।
नैनीलावसस्यदरतासौंदेषनवालाकेनैननिविषयुकनेहताकेनिकेतघरहैं किंवादेष
न वालाकेनैनकेआनेदकेनिकेतहैं नैनवसिजातहैं औवसिजातहैं गुननिसौंवलितज
नुहैं हेममैंगतिनामज्ञानको औजाताकोनाम औसामदामउपायकोनामदसाकहियेअ
वस्याताकोनामऔपथकोनाम चालकोनामतोप्रसिद्धहीहै ललितहैगतिचालजाकी किं
वाललितहैअवस्याजाकीतरनहै किंवापथकोचलनौंआछोनहीलागतहै ललितम
नोहरहोतहैपथजासौंऐसोघोरापरचढ्यौचलिये २६ गजवर्ननं मत्तमहावतहाथ
मैंमंदचलनिचलकर्न मुक्तामयउभकुंभसुभसुंदरसूरसुवर्न २७ अथहाथीवर्नन म
त्तइति मत्तहैतोभीमहावतकेवसमैंहैं ऐसेहाथीघोरेहोतहैं मुक्तामउभकुंभहाथीहैं जा
केकुंभमुक्तायुतहैं किंवामुक्तामयउभकुंभसोभमरैऔसूरहैं तोवषानाचहैरेफेरिऔरजी

का॰
६०

67

बनिसौं डरैनहीं सुंदरआछोस्यामवर्नहै रंगजै २७ यथा जलकेपगारनिजदलकेसिंगार
परदलकेबिगारकरवरपुरपारैंगोरि दारैंगरजैसेघनभरज्योमिरतरनदेतदेषिआसिषा
गनेसजूकेभारैंगोरि विंधिकेसेवंधवकलिंदनंदसेअमंदवंदनकीसुंडिभरैंचंदनकी॰
चारुचोरि सूरकेउदोतउदैगिरिसेउदितऐसेअतिगजराजराजैराजारामचंद्रपौरि २८
जलकेइति ऐसेऊंचेहैंकेतेनौंजलऊंचोहोयगहरोहोयताकोपगारकरनवालेहैं नाव
नहींचाहिगपावनिसौंउतरिजातहैं परसत्रुकेपुरमैंसोरसोरकौंमचावैं सोरनामदारि॰
द्रकोभीहैदारिद्रकरैं गढकौंढाहतहैं फेरिकैसेंहैं घनमेघजैसेतैसेहैं गोरीपार्वतीसो
आसिषाआपनेंनिमाल्यकिंवाआसीर्वाददेतिहै गनेसजूकेभ्रमसौं किंवाविंध्याचलके
वंधवभाईसेहै वंधुसहृआर्थीउपमावाचकहै विंधसेहै कलिंदपर्वतकेपुत्रसेहैं पढार
स्यामहै औऊंचोहैयातें अमंदजलददैं वंदनरोरीताकीरचनासौंसुंडभरेहैं वंदनसौंसुं
डभरैयैंभीपाठ सूरससूर्जताकेउदोतप्रकाससौंउदयाचलसेसोहतहैं किंवासूरभटजा
पैंचढेहैं लछनकेदोहामैंसूरकह्योहै पौरिद्वारपरकौचरताकेआगैं २८ अथसंग्राम
वर्नन सेनासुनसन्नाहरजसाहससस्त्रप्रहार अंगभंगसंग्रहभरगंधकवंधअपार २९
अथसंग्रामवर्नन सेनासुन सुनसहू सन्नाहकवच साहसभयछाडिजोरकरनौं भ

ह

६७

67A

रनो होकेसंचरत भीर अंधरजसैांजहांअंधकार कबंधमस्तकहीन २९ केसवबरनहुन
हुमैंजोगिनिजनजुतरुद्र भूमिभयानकरुधिरमदसरवरसरितसमुद्र ३० केसवइति।
जनयापनैदासमथपमगनसहितमहादेव भूमिभयकारीरुधिरजुक्त ३० सोनितसलिल
नरवानरसलिलचरगिरिहनिवंतविषविभीषनडाहोहै चवरपताकावडीवाडवाअन
लसमरोगरिपुजामवंतकेसवविचाराहोहै वाजिसुरवाजिसुरगजसेअनेकगज भरत
सवंधुइंदुअमसतनिहाहोहै सोहतसहितसेषरामचंद्रकुसलवजीतिकैंसमरसिंधुसांचैं
हुसुधाहोहै ३१ सोनितइति कुसलवजीतिकैंसमरजुहुताकोंसांचसमुद्रकीयोहै समु
द्रसोंरूपककरतहैं विभीषनरूपजहांविषडाहोहैविषस्यामविभीषनस्याम चवरअेावडी
पताकासोवाडवानलसमानहै रोगरिपुधन्वंतरिसोजामवंतसमानहै जामवंतहरके
हैंजरहकोंमिटायोचाहतहैं यातैंधन्वंतरि अैसैंजोसमतामिलाइएतोसवकोहेतुसाफन
हीनिकरे भरतसवंधु वंधुसत्रुघ्नसहित भरतहैंइंदुसों अैासत्रुघ्नअमृतजहांदेषोहै।
सेषनागकोअवतारश्रीलछमनजीताहिसहितश्रीरामचंद्रजीनारायनहैंजहां ३१ अथआ
षेटकवरनन जरराववहिरीवाजवहुचीतेस्वानसिचान सहरवहुलिंयाभिल्लजुतनीलनि
चोलविधान ३२ अथआषेर आषेटसिकार जररावइति वाजमादीहैताकोनरजोरा व

र

के०
६८

68

हरीकोनरवहरीवद्याकहावतहै सिचानसिकरा सहरायारसीमैंवनकोनामहै छंदके
लियेंहसवकियो कोईसहरासाहगोसकोंकहतहै वहलियाकरोल ओभीलनीलवस्त्र
कोपहिरन नीलकपरासोहरिन वहुतभाजततनहो ३२ वानरवाघ्रवराहमृगसीनादि
कवनजंत्र वधवंधनवेधनवरतिमृगयाषेदअनंत ३३ वानरइति मृगयासिकार
तामैंषेदयहपाठहैतहांश्रमजानिये षेलअनंतयहपाठआछो ३३ तीतरकपोतपि
ककेकीकोकपारावतकुररकुलंगकलहंसगहिलाएहैं केसवसरभसाहसीहगोससे
ससातिनकरनिपाससससासूकरगहाएहैं मकरनिकरवेधिवाधिगजराजमृग सुंदरी
दरीनिभीलभामिनीनिभाएहै रीकिरीकिगुंजनिकेहारपहिरायेदेषोकामश्रमस
मकेकुमारदोऊआयेहैं ३४ तीतरइति कपोतपारावतकलरवएककबूतरकेनामहैं त
हांहारिलकिंवापंडुलीजिये सरभजंत्रविसेष सीहगोससाहगोसताकीरासकीग
निहै ओहककरनकेपाससससासमक ओसूअरताकोंपकराएहै मकरग्राह दरीकं
दरामैंसुंदरीजेभीलकीभामिनिहैंस्त्रीहै किंवामृगहरीनिमैंछपेहैं वेभीलभामिनि
कोंपकराएहैं मकरग्राह दरीकंदरामैंसुंदरीजेभीलकीभामिनिहैंस्त्रीहै किंवामृग
दरीनिमैंछपेहैं वेभीलभामिनिकोंभायेहैं यातेरीकी श्रीरामजीकेकुंवरकुसलव ३४

६८

मा

षलनिके षैल भैल मन न मध्य मन अैल सैल जाकैं सैल गैल गैल प्रति रोकै है सेनानी के सट
पट चंद्र वित चट पट आति आति अट पट अंतक के आक है इंद्र जू कें अक पक धाता जू कें थक
पत संभु जू कें सक पक के सोदा सको कहै जब जब मग याको रामके कुमार चहें तब तब को
(लोक) लाहल होत लोक है ३४ षलनिके इति जब जब मग या सिकार कौं कुसल बजा तहैं यातैं
लोक लोक में कोलाहल सब्द होत है षैल भैल हडबडा कोई भाजै है कोई छिपै है अैल नाम
सोर को है मन में परमेस्वर नें पुकारत है मकरवाहन काम को है सो न मा हौ जाय सैल
जा पार्वती तिन को सैल पहार हिमवान ताकों राहु राह प्रति रोकें है सेनानी कार्त्तिकेय ति
न को वाहन मयूर सो यातैं सट पट आदि क्रिया विसेष भय जनता वनहार है चंद्रमा को ह
तिन वाहन है यातैं चित्त मैं चट पट व्याकुलता अंतक जम ताके आक त्रार मैं वहुत अट पट भ
ई जो हमारो वाहन महिष सो जो मा हौ जायगो तो हम सौं पि रैान जायगो संसार के काम छू
टैगो राजवाहन इंद्र को है यातैं इंद्र जू कें अकबक राजा कैं हाथी अकबक करत हैं मा हौ जान (अवध्य हैं तो भी)
जाय पुकरि तले जाहि जो हमरो वाहन मारैंगे के पकरि लें जांहिंगे तो हम भी उनकों वि
गार करैंगे मेहनत ही वर सावैंगे इत्यादि अैसें अकबक करत हैं धाता ब्रह्मा तिनको वाह
न हंस है यातैं संभु जू कों सकबक कों न कहि सकै उनको वाहन वृषभ ताकों कोई मारैन

क॰
६९

69

नहीं कहूंपाठहै इंद्रजूकैंश्रकवकसंभुजूकैंसकवक तहांदेवीकोवाहनसिंह कार्तिकेय१
कोवाहनमयूरसोनमाहोजायर्यातें धाताकौंचकवककोकोंनकहिसकै आपनोवाहन
कीफिकर श्रीपार्वतीपुत्रवधू सरस्वतीवेटीकार्तिकेयपोत्रइनसवकोवाहनकीफिक
र ३४ अथजलकेलिवर्नन सरसरोजसुभसोभतनिहियसोंपियमनकेलि गहिवो
गतभूषननकौंजलचरनसोंजलकेलि ३५ जलकेलि सरसरोजइति सरसरोवर।
सरोजकमलहोय हृदयसोंमनसोंपियकेमनकौंकेलिहूगहतिहै इनकेमनसानुरा
गहैतासोंपियकोमनवंधतहै गातछूटेहैंभूषनताकौंपकरिलेतिहै ३६ यथा एक
दमयंतीश्रैसीहरैंहंसिहंसवंसएकहंसनीसीविसहारहियेरोहियें भूषनगिरतएकले
तिवूडिवीचिवीचिमीनगतिलीनउपमानरोहियें एकहरिकंठलागिलागिवूडिवूडि
जातिहंगादेवताविमोहियें केसोदासश्रासपासभवतभवरजलकेलिमेंजलजमुषीज
लजसीसोहियें ३७ एकइति जलकेलिमैंजलजमुषीजलजसीसोभतिहैं एकदम
यंतीश्रैसीसुंदरिहैं हंसिकैंख्यालकरिहरैंहैंपकरैंहैं हंसकेवंसवालकनिकों दमयंती
भीहंसकौंपकरिवेचलीहैयातेंसमता किंवाहासमैंहंसकेवंसकीउज्वलतातोकौं
हरैंहै एकहंसिनीसीहै विसमनालकोहारहृदयमैंरोहैहै सोभैहै किंवाहंसनाम

हीन६

नलदेवितासीप

६९

69A

हेममैंभगवानकोभीहै ताकीस्त्रीलछमीजीमारीषीहैकमलसोंप्रीतिहै यातेंमनालको
हारसोहैहैसोभैहैयातें वीचीलहरिताकेवीचमैंयाकीचंचलताकेआगेंमीनकीजोगतिहै
सोलाजसोंछपिजातिहै यातेंमीनकीउपमांसोहीनहै यातेंनहींटोहिएनहीषाजिए।
दृगदेवतानेत्रकीअधिष्टात्रीदेवता नेत्रमैंजोदेवतारहतिहै सोविमोहितहोतिहै जाके
चहूंओरभौंरफिरतहैं ३७ अथविरहवर्नन स्वाससनिसाचिंतावहैरुदनपरेषेंवात का
हेमीरेहोतकृसतातेसीरेगात ३८ अथविरहवर्नन रसिकप्रियामैंचारितरहकेविरह
कहिआएहैं मानविरह १ प्रवासविरह२करुनाविरह३पूर्वानुरागविरह४ यातेंचारिक
वित्वकरिउदाहरनदेतहैं स्वासइति स्वासवहैनिसारातिजाकोंवडीहोय औचिंतावहै किं
वानिसालामैंचिंतावहैरोदनकरै जाकेवचनकोंसषीसवपरेषैहैं कछुवोलतिहैकिन
हीं ३८ भूषप्याससुधिवुधिहटैसुषनिंद्राइतिअंग रूषहोतहैसुषदसवकेसवविरह
प्रसंग ३९ भूषप्यासइति सातसुषविरहमैंजातरहतहै भूषप्यासएकगनैंतोसुष
जदानिंद्रानदी भूषजुदीगनैं प्याससजुदीगनैंतोसषीकीनिंद्राऐसैंजानिये ३९ रसिक
प्रिया वारवारवरनीमैंसारसमरससुषीप्यारसीलेदेषिसुषपारसमैवोतिहै सोभाके
निहोरेतौनिहारतिननैकहूंतुहारीहैं निहोरिसवकहाकाहूषोतिहै सुषकानिहोरोजोन

क॰
७॰
70

मांन्योसोभलीकरीवकेसोरायकीसोंतोहिजोतूमानमोरिहै नाहकेनिहोरैकिनमानैंहों
निहोरनिहोंनेहूकेनिहोरैफिरिमोहिजुनिहोरिहै ४ वारइति नायककोमानहै नाय
कासषीसोंकहतिहैतूनायककोंमनायहै तहांसषीवचननायकासों सारसकमलता
सोंसरसहैवेसन्मुषतेरो अवहीतोप्रफुल्लितहैफेरियानायककेगएपीछेंवाकोजोर
सअनुरागताहीविषेंमुषकोंवारैगी याहीकोध्यानकरैगीयाहीकीगुनकथाकहैगी ।
याकेरसमैंमुषमग्नरहैगो यातैंमैंवारवारअनेकवारवरजी किंवारलएकहैहेवारवा
लअज्ञानि वारकोअर्थकोपकोंरोकेनाहीतोयारसमैंकोपहैपजोरसविषतामैंमुषकों
वोरिहै मुषमलिनहोयगोविषकेजोगतैहेममैंविषकोभीनामरसहै किंवामानरूप
जोरसतामैंजानिये मैंतेरोनिहोरोकरतिहोंयहयामैंतेरीसोभाहै तामैंतोतूनेंकुथारीभी
नहींनिहारतिहैसवसषीनिहोरिकैंहारीताहिकहाकाहूदेवताकीषोरिविछेपरहै सुष
कोजोनिहोरो सुषकेलियेंजोनिहोरोतूनायकसोंविलासकरिताकोंजोनमान्योंसो
भलीकरी लछनलछनोंविपरीतादिअर्थमैंहोतिहैतासोंचुरीकरीऐसोजानिये ना
यकाकीनायकमैंउत्कंठादेषिवक्रविधिकहतिहै केसोरायकीतोहिसौंहहै अवतूमन
कौंमतिमोरै मानहीमैंमनराषो मांनकरतमैंकैसोनाहतेरोनिहोराकरतहै किनको

७०

70A

गर्व कैंा न्हीं मानति है किंवा नाहू के लियें नायक कैां बुलाव ऐं मिलि यह कैंा न मान
ति है मैं तो हि निहारति हैं। नेह के निहोरें जब तो हि नायक को नेह प्रबल होयगो निहो
रैंगो निहुराँवैगो नीचा करैंगो तब मोहीं कों निहोरैगी हम सों बिज्ञानि करैगो मो हि म
नायदेहु यह मान बिरह ॥ ७ ॥ पुनर सिकप्रिया हरितहरित हार दे रतद्रियो हिय तन हो
गी हैं। हरिन नैन हरिन कहूं लहैं। बनमाली ब्रजपर बरसत बनमाली घन ॥ ९ ॥ माली है रउप
के सक कैसैं सहौं हृदय कमल नैन देषिकैं कमल नैन हो ऊंगी कमल नैन औरि हैं। कहो क
हौं आप बने घन स्याम घन हीं सो होत घनस्याम निके द्यो स घनस्याम बिनु कौं रहैा ॥ ७२ पे
ति रसिकप्रिया हरित हरति को ऊं वहि रंगा सखी सों किंवा परोसिनि सों नाइका बुचन हार
ता म षेत कों सो हरित हरित हैं उद्दीपन विभाव हैं ताकों हेरत देषत संहृदय मन सो हि रात
हैं गमन हैं अचेतता होति है हैरत हर रत हिय ऐसो भी पाठ है षा जिकें हारी किंवा दुषसों
हारी बन को माला पंक्ति है ताकों ऐसो जो ब्रज ताप र बरषत बनमाली घन जल ताकी
माला समूह है ता मैं ऐसो मेघ बरसत हैं बनमाली श्रीकृष्ण सो हूर है हृदय कमल नैन
हमारो जो हृदय को कमल है सोइ नैन हैं तासों कमल नैन श्रीकृष्ण चंद्र कों देषिकैं ध्यान में
देषिकैं यह अर्थ हो ऊंगी कमल नैन कमल जल तासों न्यक्त है नैन जाकों ऐसी मैं हो ऊंगी

हे बी

क॰
७२

71

हमारी अंखियनिमें आंसू भरो रहै है तो कौंन तरह कहत हैं अपने नैन स्याम अम्बुज सों हैं
नैन बहुत जामें ऐसो फेरि नैन सनैन निविड हैं स्याम हैं नैन ही सो होत याको अर्थ नैन
लो है कौल कहूं नाकरि ताको पहार समान होत हैं ऐसे स्याम नैन के दिन वर्षा काल तामें नै
न स्याम श्रीकृस्न चंद्र विना कैसो करि रहो इहां मूर्छा रोदन इत्यादिक विकलता विरह ७२
भूलि गयो रास वसें रस रास मिटें भव के भ्रम रेन विभातों ॥ कोउ अपने पर को पहिचानत जा
नत तोहि नै सीतलतातों ॥ नीक हिमें व्रषभान लली कों भई ब्रजन जाकी कही परै वातों ॥ ए
क हि वेर न जानिए के सब काहू तें छूटि गए सुषसातों ॥ ७२ भूलि गयो इति एक ही बेर सा
तों सुष छूटि गए नहीं जानत हैं काहे तें भूष प्यास इत्यादि दोहा में कहे हैं सब सों रस और रा
स भूल्यो संसार तें ज्ञान करै मिथ्या है लोग व्यवहार इसा में संसार को साच मानै है सो भ्रम
है ऐसी कोई मोह दसा भई जो संसार को ज्ञान भूल्यो राति दिन की षवरि नांही या दिन द
सा की वात न कहि कदि जात है रस और रास भूले या तें सुधि भूली भव को भ्रम या तें वुद्धि गै
ई राति दिन को ज्ञान नहीं या तें निद्रा आपने लोगन कों और पराया लोगन कों नहि पहिचा
नै या तें नेत्र ज्योति चरी या तें अंग हू तिछीन भई जानिए नेत्र भी तो अंग है सीतलता तो
नहीं जानों या तें भूष प्यास गरम षिआवो के सीतल षिआवो ऐसें काहि लीजिए निद्रा

७२

आदि आगि लेक बिनु मैं किंवा रुष मैं साना रूष याही मैं जात रह्यौ इहां प्रवास विरह जा।
निए ४२ मेह के हीसि पे आस उसास निसा घनि सास विसास सनि वा दीहा स गयौ उडि है
सनि जैसैं चपला समनी दग ई गतिका दी ॥ चात्रक जैसें पिव पी वर है चही ताप तरंगनि जैसें
तनगाटी के सव वाकी दसा हनि है आवक आगि विना अंग अंग आगनि डाढी ॥ ४३ मेह के इति।
पूर्वानुराग मैं सषी [२०] नायक सैं विरह निवेदन करति है हे के सव वद नायका आगि
विना अंग अंग मैं वरी है मेह वरि से है तो मैं कौं न है वरि सा ऐसे मेह सा दि सि षास सम ताक
रिकैं आंस उसासनि के साथ वरिसे हैं निसारा तिसो वा कों वा दी है वडी भई है कैसी है विस
वासि नि विस्वास जाती है वर्षा मैं जैसे हंस पछी उडि जात है तैसें हास उडे गनिका हि गति
लोकैं ताप की तरंगिनी नदी ४३ अथ स्वयंवर वर्ननं सची स्वयंवर रहि ऐ मंडल मंच वना
व रूप पराक्रम वंस गुन वर्निए राजा राव ४४ अथ स्वयंवर वर्ननं सची इति सची स्वयंवर की
रक्षा करन वाली है यह पुरान प्रसिद्ध है औ वंस के गुन वर्निए है ४४ मंडली मंचन कीन्ह
प मंडल मंडित देषिए देव सभा सी दंतनि की दुति देह की दीपति भूषन जोति समेत अभा
सी फूलनि की छवि विश्वंभर की छवि विचित्रन की छवि तारा छन भासी सोहति हैं अति सी यस्व
यंवर आनन चंद प्रवेष प्रभासी ॥ ४५ मंडली इति श्री सीता जी सो स्वयंवर मैं अति सोहति

कं ७२

72

हैं धनुषकों श्रीरामचंद्रजीने तोर्‍यो है ता सों भयो जो आनंद ता सों आपति सोभति है श्रीसी
ताजी को मुष सुंदर चंद्रमा है और परिवेष नृपनि के जो आनन चंद्र सो मानों परिवे
षप्रभा है परिवेषप्रभा है चंद्रमा ही को मंडल वन्यो है श्रीरामजी धनुष तोर्‍यो ता सों
कांतिहीन है यातें परिवेष की समता एक तो चंद्र और हेरा है ता सों साम्य औ परिवेषमें
जेतनी कांति है तेतनी कांति है ते तनी रहि गई है ४५ सुरतवर्ननं सुरत सात्विकी
भाव भनित हनित मंजीर हाव भाव वहिरंत रति अलज्ज सलज्ज सरीर ४६ सुरतवर्न
न सुरत इति काम सौं जक्त जो चित्त सो सत्व ता सौं उपजै जो स्त्री पुरुष कों भ्रूव क्रिया ताको

मन

नाम सुरत मनित नाम रति में सब्द मंजीर चरन भूषन सो हनित नद है वाजे है हाव किलकिं
चित आदि भाव स्वेद रोमांच आदि वहिरति अंतररति रसिकप्रिया में कह्यौ है आलिंगन चुं
बन आदि वहिरति सात्विक निर्जेक आदि सात अंतररति ४६ केसोदास प्रथम ही
उपजति भय भीर रोमरुचि स्वेद देह कंपन गहत है प्रानप्रिय वाजी कत नवारन पदाति
क्रम विविध सवद दुंदान निलहत है कलित कपानक रसकति समान त्रान सजि स
जि कर जप्रहारन सहत है भूषन सुदेस हार टूषन सकल होत सषिन सुरत रीति सम
रकहत है ४७ इति श्री केसवदास विरचितायां कविप्रियायामष्टमः प्रभावः ८ इति

७२

कविप्रियापूर्वार्द्धम केसोदासइतिवचनमैंनायकनायिकाहैंवाहिरसखीपूछतिहैंहे
सखीतूकहतिहैसोरतरीतिहैनाइकाचतुराईसोछिपावतिहै हेसखिसमरहैछेका
पह्नुतिसमरकेसोहैंकेसोदासकहतहैप्रथमहीलराईकेतयारीकेसमयभीहजे
कायरहैतिनकोंभयउपजैहैऔसूरनिकोंरोसक्रोधकीरुचिकांतिउपजतिहैऔसे
दउपजैहैऔसूरकीदेहकंपाकोंगहतनहीदेहकांपतिनहीयहअर्थप्रानप्रियवा
नीकहतुप्रियजोहैप्रानताकीजहांहतकरीहैवाजीजीवकोवाजीलगीहैजेतमजीतोगे
तोहमारोजीवलेहुगेहमजीतेगेतोतुमारोजीवलेहिगेयहवारनहाथीऔपदातिप्यादा
ताकोक्रमकहिएचलिवोहैजहां किंवाजहंमैंप्रानसारीषाप्रियजोहैवोसाताकोकिया
हैंवारनकेलिएशत्रुनिकेराकिवेकेलिएपदातिक्रमपावकोचलावनोजहांसषडुभी
आदिकेविविधअनेकलरहुकेसहेहैंहमअबवीराउठायकामआवैंगेआपनेभूषनऔ
पासजोहैद्रव्यसोद्विजनिकोंदेतहैं किंवाद्विजपछीसोजहांमांसकेदानकोंपावतहैं
सूरआपनीआंतरीतोतिनपछिनिकोंदेतहैकलितकृपानकरसकतिसमानकरहा
थकृपानतरवारसोंजुक्तहैऐसेंसत्रुनिकीओरसकतिवरछीसोकैसीहै संदरजोमान
गहुरताकोज्ञानरछाकरनवालीताकोंसजिसजिचलायवेकीतयारीकरिकरितासो

क॰
७२

73

सत्रुके हाथमैं उपज्यो है जो प्रहार मारनें ताकौं नहीं सहत हैं बरछीवाला यें सत्रु तरवार
नहीं चलाय सकत हैं जुद्धविषें स्वेद सु आछे जे भूषन हैं तिहार भए पै पराजय भए ऐसें सब
दूषन होत हैं लोग हसत हैं फला जो अपसरा वरिवेके लिए वरको सो सृंगार करायो।
थ्यो सो भाज्यो जात है भूषन हियमैं होत न आवै तो ऐसो अरथ किए पुनरुक्ति दोषन नहीं
कोई कहत हैं भूषनसु औ हार जहां दूषन होत है सरदार जानै किंवा भूषनके लोभतें
लोग चाहि कै मारत है अथ स्वरूपे परकीयाको रत है प्रथम ही पहिलें नायक
कौ भय उपजति है हम याको वरग्रहन करें तो यह वुरो मानें किंवा यह सोर करें किंवा को
ई देखि लेइ इत्यादिनायिका तो सदा भीरु सुभाव ही है ऐसे क्रोधता की रुचि कीति वनावति
है भीत रसो सुनहीं देह विषें स्वेद औ कंपा सात्विक ताकौं गहत हैं वाजी हैं तवाजी करन लं
मेन औ वृपनिकरि वीर्य पातन नहीं होनें पावै सो जहां प्रानको प्रिय है आछोला गत है
औ वारन है नाइका को सुभाव है रोकति है औ पदाति क्रम है जहां पाव चलत है औ भू
षननि के औ नाइका के कंठ के जहां मनि तअनेक तरह के सह है द्विजना सदा तको है
औ हेम में दान खंडन को भी है दांतसों जहां अधर जो है सो खंडन को पावत है जहां कर की
सक्ति सामर्थ्य कृपान दया जकन नहीं है निर्दय सो कुचपीडन करत है नाइका को जो मान

क

७२

73A

आदरताकौंज्ञानरहाकरतहैंवहुतवाकोमानराषतहैं नाइकासजिकहिपसरीरकीसुंद

रताताकौंसजिकैंवनायकेंकरजनामनषताकेप्रहारछतताकौंसहतिहैंजासमेंनषल

गावतहैंतासमैंनषकीअैसीसजिवनावतिहैंसोप्रियलागतिहैं भूषनअछेजेवाजतिहैं

सोदूषनहौंहैंपरकीयाहैंयातैंआहारसैंनायककेहृदयमैंमिलनेविषैंअंतरायहोतहैं

यातैंसवदूषनहोतहैं ४० इतिश्रीहरिचरनदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांक

विप्रियाटीकायामष्टमःप्रभावःयात्रा ८ अथविशिष्टालंकार जातिस्वभावविभाव

नाहेतविरोधविशेषउत्प्रेक्षा ९ आक्षेप १० क्रमगननाआसिषलेष १ प्रियसूक्ष्मलेषस

भेदहैंनियमविरोधीमानसूछमलेसनिदर्शनाऊर्जरसरवतजानरहसअर्थांतरन्यास

हैंभेदसहितव्यतिरेकपेतिअपहूति ११ जुक्तिहैंवक्रोक्तिसविवेकउ अन्योकतिअधिक

गनहैंसविसेषोकतिभाविकिरिसहोक्तिकौंकहतहैक्रमहीसौंअभिलाषि ४ व्याजस्तु

तिनिंदाकहैं व्याजनिंदस्तुतिवंतअमितपर्यायोक्तिपुनिजुक्ति १२ सनैंसवसंत

४ समाहितसुसिद्धनिअप्रसिद्धविपरीतरूपकदीपकभेदपुनिकहिप्रहेलिकामी

त६ अलंकारपरहतकहौ १३ उपमा १४ जमक १५ सुचित्र १६ भाषाइतनेभूषननिभू

षितकीजेमित्र १ अथविशिष्टालंकारविसेषअलंकारसामान्यालंकारतेकहेंअलंका

कं
७४
74

रनामइनुकेलछन उदाहरन अंगीकहैगे जाति स्वभाव इत्यादि सातदोहा नवम प्रभावमैं
जाति अलंकार रूपवर्ननकीजिए सो जातगुन क्रियावर्ननकीजिए सो स्वभाव एतना
भेद औ विभावना औ हेतु औ विरोध औ विशेष औ उत्प्रेक्षा दसम प्रभावमें भेदसहि
त आक्षेपालंकार एकादस प्रभावमैं क्रम औ गनना औ आसिष औ भेदसहित श्लेष
औ नियम औ विरोधी औ सूक्ष्म औ लेस औ निदर्शना औ ऊर्ज औ रसवत फेरि नवरस
फेरि अर्थांतरन्यास भेदसहित भेदसहित फेरि व्यतिरेक औ अपन्हुति आ द्वादसा प्रभा
वमें उक्ति औ वक्रोक्ति औ अन्योक्ति औ व्यधिकरन औ विशेषोक्ति औ सहोक्ति औ व्या
जस्तुति निंदा फेरि अमितालंकार औ पर्यायोक्ति तेरहें प्रभावमें समाहित औ सुसिद्धि
औ विपरीत औ रूपक सभेद औ दीपक सभेद औ प्रहेलिका औ परिवृत चौदहें प्रभावमें
उपमा के भेद औ पंद्रहें प्रभावमैं नषसिष कहि जमक कहे हैं सोरहें में चित्र कहे हैं ७
अथ जाति स्वभाव लछन जाको जैसो रूप गुन कहिए तैंही साजना सों जाति स्वभाव स
व कहि वरनत कविराज ८ अथ जाति के औ स्वभाव के लछन जाको इति जाको जैसो
रूप होय है ममें रूप नाम आकृति को औ सुंदरता को सो जहां कहिए सो जाति अलंकार
औ जाको जैसो गुन औ क्रिया सो जहां वरनिए सो स्वभाव साज भूषन वस्त्र आदि साज

औयुक्ति

७४

74A

सहित हूप वर्निए औ गुन वर्निए कुवलयानंद मैं जाति अलंकार स्वभावोक्ति सों जुदो नहीं
है भाषाभूषन की टीका करी है तामैं स्पष्ट है ८ पीरी पीरी पाट की पिछोरी कटि के सो दा
स पीरी पीरी पागैं पगा पीरी ऐंठ्य पन हिंग्रा बडे बडे मोतिनि की माला बडे बडे नैन नाही ना
ही भ्रकुटी कुटिल वचन हिंग्रा बोल निहसनि मदु चलनि चितौनि चाह देषत ही वनैं पैन
कहत वन हिंग्रां सरजू के तीर तीर षेलैं चाहो रघुवीर हाथ है हैं तीर राती राती एधु नहिंग्रां
९ पीरी इति बडे नैन छोटी भ्रकुटी यह अर्थ अछ्यो नहीं यातैं भ्रकुटी कुटिल है औ नाही ना।
ही वधनहियां ग्रैसें अन्वय करि ए छोटे ताहर केन षै हैं पीरी पीरी इत्यादि साज है बडे बडे नैन
इत्यादि ग्राकृति स्वभाव एक अलंकार है तो कुवलयानंद सों भी मिले गुनवाची सब्द हैं क्रिया।
वाची सब्द हैं द्रव्यवाची सब्द हैं इन सब तें जाति रहित है जाति स्वभाव एक है उदाहरन दो यह
अव भाषा वाले के अनुकूल अर्थ करत हैं ९ अथ स्वभाव गों गात पातरी नलोचन समा
तन्मष उरउरजातन की बातन अवरोहिए हसति कहित बातन फूल से झरत जात न औ ठ अव
दात राती रेषम निमोहिए स्यामल कपूर धूरि की ओं हैं नी आर्दै उडि धूरि ग्रैसी लागी के
सो उपमान रोहिए कामही की तुलही सी काके कुल उलही सु लहलही ललित लता सी
लोल सो हिए १० अथ स्वभावोक्ति गोरे गात इति नलोचन समान मुष लछना सों बडे

है जात

२

क. ७५

75

नेत्र जानिए उरविषैं इरजा नकुचता की वात वनैना न यह है पूरे न ही उपजे है अवरी है है सो
मै है औ ठ अवदात गोरे तामें रतीलाल रेष ऊपर पान की किंवा स्वतः सिद्ध सो मन कौं मो
हति है कपूरपूर वहू विसेष है नेत्रमें जैसें उडि कै पूरि लागि औसै वाकी छवि लागी जाकी
उपमान तो हि एषो जिए दुर्लभ है यह अर्थ गोरे गात गोराई गुन के तो जाति अलंकार है
किंवा स्वभाव अलंकार है दोय अलंकार भाषावाले कहत हैं सो नाससमुझै औ रिग्र थनि
सों विरोध औ उदाहरन साफ नहीं १ विभावना कारनको बिनु कारन दि उदो होत जि
हि ठौर ता सों कहत विभावना के सो कवि सिरमौर ॥ अथ विभावना कारज इति कार
न स्व वर्नकार जगहना कारन विना जहां कार्ज उदय होय उपजै जानिए ॥ हरन कपूर ।
पान षाए कै सो मुषवास अधर अरुन रुचि सुधा सों सुधारे हैं चित्रित कपोल लोल लो
चन मुकर मैं न अमल झलक झलकनि मोहि मारे हैं भृकुटी कुटिल जैसी तैसी न किए हू
होहि आंजी औसी आंषैं केसोराय हेरि हारे हैं काहे कौं सिंगार निहं मेरी आली तेरे अंग सह
हज सिंगार रही सिंगारे है हरन इति कपूर सों पूर्न औसे जे पान ता के षाए जैसी मुषवास
सुगंध होय तैसी मुषवास है अरुन रुचि जो अधर है सो सुधा सों सुधारे है कपोलनि की
जे झलकनि है ता ते अमल झलक वारे जे पदार्थ है ताको मोहित करिआपना विषें आसक्त

के बिगार

75A

करिजीतेहैं यहश्रर्थजैसीतेरी भ्रकुटी कुटिल है तैसी फेरि विधाता बनायो चाहैं तो
भी नहोय सकैं श्रंजनबिनाश्रांजीसीतेरी श्रांषैं हैं कपूरपानश्रंजनकारनसोनहीं
हैं मुषवासश्रधरलालीनैनकजरारेकार्जभएसिंगारनहीं श्रोसिंगारे श्रोरभीजा
निलीजिए १२ कारनकौनहूं श्रानतैंकारजहोयजुसिद्धि जानौं यहै विभावनाकार
नबाडिप्रसिद्ध १३ कारनइति फेरिभेदकहतिहैं श्रोरकारनतैं जहां श्रोरकार्जसि
द्धिहोय १३ नैकहूं काहूनवाईनवानीनवाए बिनाहीसुवक्रभईहैं लोचनश्रीविफुका
एविनाविफुकीसीरंगोविनुरागमईहैं केसवकोनकीटीनीकहोयहचंदमुषीगतिमं
दलईहै छोलीनहूंहीगईकटिछीनसुजोवनकीयहजुक्तिनईहैं १४ नैकहूंइति ।
सषीकीउक्तिनाइकासौंवासषीसौंनैकुथोरीभीनाइकाकीवानीवचनसोकाहूंनैन
वाईनहीं सोनवाएबिनावक्रटेढीभई जोवक्तनवाइएहैसोटेढीहोतिहैं इहांप्रसि
द्धकारननवावनोसोनहींहै श्रोरिकारनकोनकहैं जोवनतासौंनवावनोकार्यसिद्ध
भयो सर्वत्रकारनांतरजोवनजानिएलोचनकीश्रीसोभाविफु किवेमेंविफुकाइवो
कारनप्रसिद्धहैसोनहीं रंगिबोलाललहोनेकोकारनहैसोनहीं हैं देनोप्राप्तिहोनेको
कारनहैसोकिनहूंदीनीनहींहैं छोलीनहींहैं कुटिलश्रोछीनहूंहीगईहोयगई १४

क॰
७६

76

हेतुलछनं हेतुहोतहैं भांतिहैवरनतसबकविरावकेसबदासप्रकासकैस्वरनिसभावअ
भाव १४ अथहेतु हेतुइनिदोइभांतिहै तुहोतिहैं एकसभावहेतुकाहूसोंमिलैहोय औ
रनिकेजोरतैंप्रबलहोय इससोअभावहेतु निबलहोय औसभावअभावमिलाएतैंस
सोभीजानिएअभावअसमर्थहोय १४ अथसभावहेतुकेसबचंदनचदयनेअरविंद
निकेमकरंदसनीरो मालतीवेलिगुलावरुकेतकीकेतकचंपककोवनपीरो रंभनि
केपरिरंभनसंभ्रमगर्भचनोघनसारकोजीरैसीतलमंदसुगंधसमीरहहैयोइनिसों
मिलिधीरजधीरो १५ अथसभावहेतु केसबइति औसोजोसमीरपौनतातैंइनिचंदना
दिसोंमिलिकैं धीरजोहैजाकोंधैर्यहै ताकैंभीधीरजकों हेदसमहअरविंदनिकेकम
लनिकेसरीरमैंजोमकरंदफूलनिरसतासोंमिलिकें केतकीकेतककिनताएकसो
को
मिलिकैं रंभाकेकेलाताकोजोपरिरंभनमिलापताकोसंभ्रमआदरकियोहै तासोपोन
केगर्भमैंभीनरचनसारकपूरताकोजीराकनिकाहैंकेलामैंसोकपूरउड़ायआवतहै
कोईजीरासीतलताकोंकहतहैं पोनइनसबसोंमिलेधैर्यहरिवेकैंसमर्थभयोहै १६ अ
थअभावहेतु जामोनमैंमदजोवनकोउनतैलोकवकामकोकामरायोई छोड्योनचा
हतजीवकलेवरजोरकलेवरछाड़िदयोई आवतिजातिजरादिनलीलतिरूपजरास

76A

नि २

तै

ग्वलीलिलपाई केसवरामरसौनरसौ ग्रनसाधैहीसाधनसाधुभयोाई १७ ग्रथग्रभावहेतु जो
ध्यानमैंइति मेरामकौंरसौरहौकिनरहौ साधनश्रवनमननंग्रासनप्रानायामइत्यादिकेग्रनसा
धेंहीसाधेंविनाहीमेंसाधुभयो साधुनिकौंविषयवासनाछूटिजातिहैं सोहमैंजगहूढतासौं
छूटिगईहैंकहूंसाधुकीठौरसिद्धभीपाठहैंश्रवनादिकतौप्रवलकारनहैंवहावस्याग्रसमर्थहो
नेकौकारनहैंजोसाधननहोतौपहिलीविभावनाहोतीजोसाधनांतरहोतौतौदूसरीविभा
वनाहोतीजरानिवलासाधनहैं यातैंग्रभावहेतु १७ ग्रथसभावग्रभावहेतु जादिनतैंवृषभा
नललीहिग्रलीमिलिपमुरलीधरतैंही साधनसाधिग्रगाधिसवैबुधिसाधिजेदूतग्रभूतनिमें
होताहिनतैंदिनमानदुहूनिकौंकेसवग्रावतवातकहैंहीपीछैंप्रकासप्रकासैंससीवढिप्रेमसमु
द्ररहैंपहिलेंही १८ ग्रथसभावग्रभाव जादिनइति सखीवचनसखीसौं मुरलीधरसौंतैंहीमिला
एजोवुद्धिग्रद्भुतदूतनिमेंपीताकौंविचारिकैं तादिनतैंजादिनमिलाएतादिनतैंदिनमानदिन
दिनविषै मानकहिएमनकौवढिवौताकीवातकहैंहीवनिग्रावतिहैं चंद्रमाग्राकासकौपी
छैंप्रकासमैंसूर्यंयहचंद्रमाकेउदयभएविनांहीरातिभएविनांही नायकनायकाकेप्रेमस
मुद्रपहिलेंवढिरहतिहैं मिलिकेकौसदाग्रांतररहतहैं कवरातिहोयकवमिलैंचंद्रमाकेउ
दयमेंग्रभिसारग्राछौहोयचंद्रमाकीजोतिमेंनाइकाकेग्रंगकीजोतिमिलिजायकोईदेषेन

७८

77

हीं अंधेरी मैं नायिका के अंग की जोति वढि जाय तहां जतन नसों ढ्पाव न होय आय साधन
साधि कै मिलायो सखी ▭ नैं सो तो प्रवल हेत है चंद्रमा प्रेम समुद्र वढाइवे को कारन है ता
को उदय भयो नहीं चंद्रमा उगि गयो यह सुनि कै प्रेम समुद्र वढेगो सखी सुभाव है त है चंद्रमा
अभाव है त है निर्वल है त है सो अभिसारिका ▭ होय कैं भी जाय सकै है सखी विना तो कुल
वधू न ही मिलि सकै १८ विरोधाभास लक्षनं वर्नत लगै विरोध सो अर्थ सवै अविरोध ।
प्रगट विरोधाभास यह समुझत सवै सुवोध १९ विरोधाभास वर्नन इति विरोध सो भासैं
विरोध नहीं रहै १९ परम पुरुष कुपुरुष संग सोभित नदिन दान सील मैं कुदान ही सौं रति
हैं सूरजकुल कलस राहकौं रहत सुष साधु कहैं साधु परदार प्रिय अति हैं अकर कहावत ध
नुष धरैं देषियत परम कृपाल पैं कृपान करयति है वि॰ मान लोचन है हीन वाम लोचन नति
के सो राय राजाराम अद्भुत गनि है २० परम पुरुष इति राजाराम अद्भुत गनि है आप तो
परम पुरुष है कुपुरुष कुत्सित पुरुष को संग अनुचित अविरोध कुए घीं के पुरुष संग मैं
हैं पढै कुए घीं को दान ताही सौं रत है सूर्ज वंस है राहकौं रहत सुष राहु देस कौं दुष चाहि
ए सो राह कों पथ कों सुष रहत है चोर वटपार न होन ही साधु लोग साधु कहत है अरु पर
दार प्रिय है तहां पर उत्कृष्ट दारा श्री जनकजा अकर कौं अर्थ काहू कौं कर दंड न देत है अकर

प्रवल हेत है १

प

॰प्रकृयहै

७८

77A

कोअर्थयनाहीहैहाथजाकौं सोकेसिधनुषकौंराषतहै कृपानकरतरवारहाथमेंहै किंवाकृ
पाकेनहीकरनवालेहै येपरमकृपालहै औपतिहै पालकहै हाथनेत्रविद्यमानहैविद्यमा
नकीधनिहूरसोंनेत्रदेषिवेमेंआवैहैंवडेनेत्रहैंसुंदरनेत्रहैंसुंदरनेत्रवामिहीनहै एकही।
नाकोंस्त्रीहैवहुतजाकौंवामलोचनानहीहैं इहांविरोधभासेहै विचारेंविरोधनहीहै २०
केसवदासविरोधमयरचियतवचनविचारि तासोंकहतविरोधसवककिवुलसुवुधिसु
धारि २१ केसवइतिवहुतविरोध २१ आपसितासितरूपचितेचितस्यामसरीररंगेरंगरातें
केसवकाननहीनसुनेसुकहैरसकीरसनाविनवातें नैनकिधौंकोउअंतरजामीरीजान
तिहांनिरवारूतितातेंइरलोदोरतिहै विनपायनिहूरदुरीदरसैंमतिजातें २२ आपइतिस
षीसोंसषीनेत्रकीवातकहतिहै आपसितसेतअसितस्यामरूपहैंतु चितेदेषस्यामअोकृस
केचित्तकौं औस्यामजोहै सरीरताकौंरातेरंगलाललरंगसोंरंगतहैं किंवाआपसितरूपहैं।
औकज्जलसोंस्यामरंगभएहैं औकारेनेत्रवनेनहीहैं चितेकेदेषिकेचित्तकौंरातेरंगसोंरंग
तिहैं एकरंगतैंऔरिरंगप्रगटहोतहैं विषमालंकारहोय सोइहांनहीहै दोयरंगतैंएक
रंगउपजतहैं रसनाजिह्वाविनारसकीवातकहतहैं काननसनादेषिवेमेंनहीआवैहैं।
वहीकानहैंतासोंसुननतहैं रसनावहीहैजासोंवोलतहैं ऐसोंअर्थकरिविभावनासोंवचा

सिता

इए री सषीनें नकों को उ अंतरजामी आपने जीव में जान तहैं नाही हेतनें तो सौं रूसति हौं त
कहि हैं कि नाहीनें त्र वहि हरि है आं अंतरजामी हैं यातें बहुत विरोध निकरे २२ सोभत स
वासहास सुधा सी सुधा सो विधि विष को निवास जैसो तें सो मोहकारी है केसोदास पा
वनपरमहंस गति तेरी वरही युहरन प्रकृति को नेपारी है वारिक विलोकि वरवीर सेव
लीनि कहूं करतवर ही वस ऐसी वेसवारी है एरी मेरी सषी तेरी कैसें कै प्रतीति कीजें कि
सनानुसारी है गाकरनानुसारी है २३ सोभत इति हे दरहैं वास सुगंध जामें ऐसो हास
विष को निवास सो मोहकारी है सुधा सी मानो विधाता नें बनायो है इहां गम्यात्मका भा
सै है विष को निवास जो पदार्थ ते सो है इहां उपमा जो सुधा सी बनायो होय सो विष को नि
वास यह विरोध जो अलंकार को उदाहरन देहि सो ई अलंकार निकरे भाषाभूषन की तर
ह सो इन के ग्रंथ में नहीं सर्व जानौं संकर संसृष्टि होयगी परमहंस तपस्वी ता की गति
क्रिया है सो परायाके मन को हरें यह विरोध बलवीर बलवलभद्र ता को वीर भाई श्री
कृस्न ता कौ एकबार देषे सो वस करति है वारी वेस है जोवन पूरो नहीं विरोध स्याम रंग
कौ अनुसरन करे है ग्रहन करत है कान ताई गए हैं श्री कृस्न सो कर्न सो विरोध जो कृस्ना
नुसारी होय कर्न के पीछे लाग्यो नहीं फिरे २३ विसेषलछन साधन कारन विकल जह

होयसाधकीसिद्धिकेसवदासवषानियेसोविशेषपरसिद्धि २४ यसुविशेषसाधु
नइतिइहांसाधनकोअर्थसाधक जोकाजकोसिद्धिकरैसोयाकरनरीतिमेंसाधनभी
कहावैंऔसाधकभीकहावैंसाधुकजोहैसोकारनकहिएहैतताकरिकेविकलहोय
हीनहोय औसाधकहिएकाजताकीजहांसिद्धिहोय जैसैकुंभारहैवाकोंचाकनहीं
हैयहांवनावैहै २५ सापकोकंकनमालकमालजरानिकीजूटिरहीजटिऔतेषालपु
रानीपुरानोइवेलसुऔरकीऔरकहैविषमाते पारवतीपतिसंपतिदेषिकहैं यहकेस
वसंभ्रमताते औपुनमांगनभीषभिषारिनिदेतदईमदमांगीकहांते २५ सापकोइति ।
आंतरीभसनिमरतैलगिरहीहै इहांकाजकोसाधकमहादेवहैकाजहैदानताकोसिद्धिक
रिवेमेहेतुकोनहैं भूमिभंडारगजअस्वइत्यादिताकरिसिवहीनहैसापकेकंकनआदि
सोमदहसोमांगीजोवस्तुताकोदानकीसिद्धिनहींहोतिहै २४ तमोगुनऔपतनआपि
तविहूपनैनलोकनिविलोपकरैकोपकेनिकेतहै नषचिषधरै विषधरध
रैमुंडमालभूषितविभूतिभूतप्रेतनिसमेतहै पातकपिताकेजुतपातकीहीकोतिलक
भावैगीतकामहीकोकामिनिकेहेतहैं जोगिनिकीसिद्धिसवजगकीसकलसिद्धिकेसो
दासदासिनिज्योंदासनिकोंदेतहैं ३६ तमोगुनइति तमोगुनकोआपचावचकाताप्तोंऔ

क॰
७५
79

पिनहैतनजाकौतमोगुनकौआपदियौहै औपनीलोहारनिकौहोतिहै लोहकीमैलि हू
रकरिसहरूपकाहुतहै विरूपनैन तीननेत्र सूर्य चंद्र अग्निएहीनेत्रहैं औलोकके विला
पनासकरतहै तमोगुनकौकार्यकोपनाकोधरहै सुषकेठतामैं विषकौधरतहैं औ
विषधरसर्पकौधरेहै किंवा जोमुषविषै विषकौराषतहै औसो जोसर्पुलाकौधरतहै मुं
डमालसौं औ विभूतिसौंभूषितहै पितावनमातिनकौ एसाथोकाटेगोतासौभयाजोपाप
तासौंमन्नहै गौतमकी औवृहस्पतिकी स्त्रीपासगयेजोचंद्रमा सोपातकीहै सो लिलार
मैंतिलककी ठौररहतिहै यातेपातकीकौतिलक जोकोईकामदाह औकामनीरतिताकौ
विलापकोगीतगावतहै तासौंहेतकरतहै किंवाकामदाहकी कथाकहतिहै औकामनीपा
र्वतीसौंहेतहै जोकोईकामकौवरावैसोफेरिकामिनीसौंहेतकरेकामहोय तवकामनी
सौंहेतसंभवै जोगिनिकीसिद्धिनिकौ औसैंदासनिकौं निज सेवकनिकौ वकसतहैं जैसे
दासीवांदीसीकौंकाहूकौदीजिए जोसिद्धिदायकहोयसोसत्वगुनप्रधान चाहिए औ
वाकौसमदृष्टिचाहिए औलोकपरदयाकरिरछ्याकरै औसांतसुभावहोयकाहूपै
कोपनकरै औताकौसम्मुषनिकौसंगहोय औकामकौगीतिनहीसहोय औका
मिनिसौप्रीतनहीराषतोहोय यहसमादि हेतु विकलसिवहै औसिद्धिदानकार्यताकीसि

७५

79A

हिभई २६ वाजीनहींगजराजनहींरथपत्तिनहीबलगातविहीनोंकेसवदासकठोरनती
छनभ्रूलिहद्दापटद्धारनलीनों जोगनजाननिमंत्रनजापनतंत्रनपाठपढोगनपरवी
नोरछकलोकनिकेरुगवारिनिएकविलोकनिहींबसकीनो २७ वाजीइति पत्तिप्यादा
भीहीनकोंनहींहेंओहीनिकेगातबलहीनहेंअवलोकदावतिहें कामीतावसहोतहीं।
हेंयहकामीनहींहेंलोकनिकोसरदारहेंताकोंवसकिएवेगवारिहेंएकविलोकनिहीएक
गुनइनकोविलोकिवेकोहेंसाधक वेगवारिहें वाजीइत्यादि जोगइत्यादिहेतताकरिवे
हीनहें २७ रसिकप्रियायां व्रजकीकुमारिकावेलीनेंस्वकसारिकापढावेकोककका
रिकानिकेसा[X]व[०/०]सवेनिवादिगारीगारीभोरीभोरीथोरीथोरीवेसफिरिदेवतासी।
दोरीओरहूचोरीचोरीचाहिविनगुनतेरीओनिभ्रकुटीकमानतानिकुटिलकटाछिवा।
नयहअचिरजआदि एतेमानहीठईमेरेकोअडीठमनपीठदेदेमारतीपेचूकतीनकोऊ
ताहि २८ ब्रजकीइति नायककेपत्तकीसषीसषीसोंकहतिहें कुमारिकाविनाब्याही।
निवादिकेएरोपढावतिहेंकछूकसरिनहीराषतिहेंदेवतासीहेंनायकनेंनहीदेषीवह
देषिआईहें जेसेंदेवतादेषेदेवतानेंकोईदेषेनहीं विनगुनकीकमानभोंहेंहें तेरीआ
नितेरीसपथकरतिहों रेदोवानलागतनहींसाकुटिलजेकटाछतेवानहेंएतेमान।

दोरी
८

क॰
र॰
80

कीन्हैं थोरेदिनकीहै तोभीढीठहै मेरोईठइष्टहै श्रीकलसताकौंऐसीकमानऐसेबानदेफे
तिफिरिकेंमारतिहै चूकतनाहीहै विभावनामेंकछुकारननहींरहै इहांतोकारनदे
पैंअंगहीनरहैयहभेद २८ वाचिनआवैलिषिकछुदेवतज्यादनराम अर्थस्वनारीवेद
ईकौविज्ञाननपतिराम २९ वाचिइतिमतिरामकोईवेढ्योहै उनसोंकेसोटासवेराजीहैके
तनीएकपोथीमेंमतिरामकेदोहाआवतिहैंजाकोंकछुलिषिनहींआवैऔवाचिनहींआ
वैजाकौंअक्षरसोंपरिचेनहींवामज्ञामकौंनहींदेषतहैं लछनासोंगरमसरदकौंनहीं
देषतहैं अर्थस्वनारीनारीज्ञानकेभेकनिकेजैसाअर्थहै तातरहसोनारीकौंनहींदेषत
हैं एतनाकारनविनविकलहैं औवेटईकौकरिजानतहैं २९ अथउत्प्रेक्षाकेसवऔ
रहिवस्तुमेंऔरेकीजैतर्क उत्प्रेक्षातासोंकहै जिनकेबुधिसपर्क ३० अथउत्प्रेक्षाके
सवइतिऔरिवस्तुमेंऔरिवस्तुकोडोलकीजिएजाकोबुद्धिसोंसंपर्कजोगहै ३० हरको
धन्वषतोहोलंकानातोरीरावनकोवसतेहुतोनारेजैसेहेटहुवंसवानहैसत्रुनिकेसेलिस
लफूलतूलसहेरमस्तुनिकेसारायकीसौहियोहहरानहै कामसरहेततिछनारेतरुनी
निहूंकेलागिलागिउचटिपरतऐसेगातहैमेरेजानजानकौंतूमानतिहैजानकछुदेष
तनहींतेरेनैनमेंनसेह्वैजातहैं ३१ हरिकोइतिवाहौवासकिंवापुरानोवासताकोपोन१

81A

तोरैं किंवा वृसनामदेममें पीठके हाडकोभी है जैसें वृद्धके वृसकों वातरोगतोरैं मरोरहैं
फेरि उठैं नहीं सलवरन्नी सूलत्रिसूल श्रीरामचंद्रजी अनुकूल हैं तरुनीनिके नेत्रतारा ला
गि रउचरि उछरि परत हैं मेरे जान यह सह उत्पेक्षा मंजन हैं मैं यह संभावना करत हैं। आनके
अर्थ विस्तीरता नाक कुजानन हि हैं हे जानकी तूं तेरे नैनके देषतकें मैंन मोसतै सो कोमल होत
हैं तामें कारन अनुकूलता हैं सीताजीको अंत्यतरूप कारन हैं सो ना की संभावना करी हैं।
३१ रामचंद्रिकायां अकलंक सकलंक पयोधिहूकी पंक न रूप अंजनन रंजित रजनि निजना
रीकों ताहि नैं झलक झलकति तम घानकी न छिति छाइ छाई छल नाहीं रूपकारी कौ कैस
व हूपानि धांन देषि एवि राजमान मानि एप्रमान रामवै नवनचारी कों लागतिहैं नायकंठ
नागा दिगपाल निके मेरे जान सो ईहृत की रति निहारी कौ २२ इतिश्री कविप्रियायां विशि
षालंकारवर्ननंनामनवमप्रभावः ९ रामचंद्रिकायां कोई कविको वचन ससांक चंद्रमा मे
पयोधि समुद्र की पंक को अंक निसानी नहीं है स्यामता यह चंद्रमाकी स्त्री जो रजनी राति
ताके अंजन सो भी नहीं रंग्यो है छिति भूमिकी छाया भी नहीं है रूपकारी जो चंद्रमा अनेक
नक्षत्रनि में रूप करत है ताकों यह कपट भी नहीं है छल की होरु छिद्र भी पाठ है किंवा कारी
छामता को छल करि रवेक दिप अकास दीसत है सो भी नहीं है नाग दिग्गज दिकपाल इं

क॰
८२

८२

हारतिनके कंठमैंलागतिहै तुमारीकीर्तिसोईतुमारीकीरतिकीकृतरचनाहै चंद्रमाकोंसोच भयोहैतुमारीग्रैसीकीर्तिनहीताकेदुषतेस्यामताभईहैचंद्रमाकीस्यामतामेंकीर्तिकोंकर लिकीसंभावनाजोजातिकोंस्वभावकौहोयगा तेतासानग्रलंकारकहे एकगुनेतोहोग्रलं कारनवमप्रभावमेंकहैं ३२ इतिहरिचरनदासकृतायांकविप्रियाभरनाख्यायांकविप्रिया टीकायांनवमःप्रभावव्याख्या ९ ग्राक्षेपालंकारकारनकेग्रारंभहीजहांकीजतप्रतिषे ध ग्राक्षेपकतासाकहतवहूविधिवरनिसमेध १ ग्राक्षेपालंकारकारजइति प्रतिषेधव रजिवोसमेधसबुद्धि १ तीनहूकालवषानिएभयोजभावीहोतकविकुलकोतकहत प्रतिषेधउदोत २ तीनिहूइतिभयोसोभूतभावीजोहोयगो होतसोवर्तमानकहतप्रतिक हतकैं २ वरज्योहोहरत्रिपुरहरवारिककरिभ्रूभंग सुनेनामदनमोहतिमदनहूहीनयोग्र नग ३ वरज्योइतिरतिसोकोईकोवचनहैंमेंवरज्योथोतुहरमहादेवयासमतिजाहित्रिपुरदे त्यनिकेमारनवालोसोमहादेवनैंएकवारभौंहचढाईकोहेमदनमोहनिरतितुमसुनोंम दनकामग्रनंगभयोग्रगहीनभयोवरिगयोमहादेवकोंग्रारंभकियोतवहीनिषेधकियो इहाभूतवातहै ३ तातैंगोरिनकीजिएकोंनहुविधिभ्रूभंग कोजानैहैजायकहांग्रानना थकेग्रंग ४ तातैंइतिसोईसषीपार्वतीकोंसकोपदेषकेंकहतिहैं प्रनयमानहैंक्रीडाक

है यह

८१

82A

लहमैंजोउपजैसोप्रनयमान भ्रूभंगाकरनैंआछोनंही प्राननाथसिवताकेअंगकहांहोयगो
भ्रूभंगआरंभकरतप्रतिषेधकरतिहैंकहांहोयगोयहभावी ४ कोविदकपटनकारसरलग
तनतननहिउछाह प्रतिपलतलननेहकोयहिरेनाहसनाह ५ कोविदइति सखीनायकसों
कहतिहैंनायकानाहींनांहीकरतिहैं तहांनायिककोप्रेमदेषिवेकोंकहतिहैंहेकोविदप्रवीनन
कारकोकपटधरेयहसरवानहैं तहांनायकवचननाहजेनायकहैं रसिकहैं सोयाकेलागेंउ
छाहकौंनहींतनतहैं प्रतिपलपलकपलकप्रतिनवीननेहकोसन्नाहबषतरजिरहपहिरेहैं।
जेनंनाहींकोकहनोंआछोलागतहैं नायकनायिकासोंप्रीतिकरिवेलग्योहैंतवसषीप्रतिषेधक
रैहैवर्तमान ५ आक्षेपनामप्रेमअधीरजंनिसंसयमरन प्रकासआसिषधरमउपायकहिसिक्षा
केसवदास ६ आक्षेपनामप्रेमअधीरजइति नवनामकहेंग ६ प्रेमाक्षेपलक्षनंप्रेमवषानतहीं
जहांउपजतकारजबाधकहतप्रेमआक्षेपयहतामेंकेसवसाधु ७ अथप्रेमाक्षेपप्रेमइतिप्रेमआ
पनेंाकहतकोकोईकार्नकोबाधहोय ७ जोंज्योंवहवरजेमैंप्राननाथमेरेप्रानअंगरान लगाइ
एकआगेंउघैहवो तोमोहसिहसिअतिसिरपरउरपरकीवोकियोआषिनिकेऊपरविलायवो ए
कोपलइतउतसाथतेंनजानहीतेंलीनेंरहेहाथहीकहांलोंगुनगाइवो तुमतोकहतितिनैंछांडि
केचलनअबहाइतपकैसेंतुमसंआगेंउठिधाइवो ८ जोंज्योंइति मोहीसोंतुमपतनोप्यारकर

धीरज

पा

83

तहोसोमेरोप्रानतुमआपनेअंगसौंलगावतहोयहप्यारआगेंदुखपाइवेकोकारनताहिप्रा
नकोंतुमछाडिकैंवचनकोंकहततहोंतुमैंएमानकेसीहूतरहसोंनहीछाडततहेंतुमसोंआगें
उठिकैंदुनैदोरिवाहेरहोयाअर्थमेंमरनाछेपकैसोनहोयइहांआपनोप्रेमकोकहतमरनह
पकार्थकोबाधभयोयातेंप्रेमाछेप मरनाछेपतोमरनकोंकहतेमनादिहपकार्जकोवा
धहोततहैदोऊलछनासोंवहूतवीचजोकोईलछनकोअर्थनहीविचारततहैंसोअैसोअर्थक
रतहेंकोईपरदेसीनायकहेतासोंनायिकाकीआसक्तिहैतुमैंआगेंउठिधायवोहेपरदेस
कोंचलनोहेंतासोंतुमकहततहो तिनप्रानकोंछाडिकैंचलनेकों ८ अधीरजआछेपप्रेम
भंगवचसुनतजहांउपजतसात्विकभाव कहतअधीरजकोंसुकवियहआछेपसुभाव
९ अथअधैर्याछेप प्रेमइति प्रेमकेभंगकेवचनसुनतकोंजहांसात्विकभावतेंभस्वे
दरोमांचइत्यादिआठजहांउपजैंप्रेमभंगभययहभीपाठहेप्रेमकेभंगकेवचनसुनतकें
भयसोंजहांअैसेंलगाइए ९ केसवप्रानवडेहीविदाकहंआएप्रियापूहनेहनूहेरीआको
महावनहेंजोंकहोंहसिबोलहेअैसेंवनायकहेरीकोप्रतिउत्तरदेइसषीसुनिलालविलो
चनयोंउमहेरीसोंहेककेहरिहारिरहेदिनवीसकलोंअंसुवानरहेरी ९ केसवइतिस
षीसोंसषीकहतिहेनेहसोंनहेंवधेतवेसाकोपरगयाहैंगोकुलसोंककुदूरआगेंमहाव

नहैंमहावनजायक्याबोंएकतोयहदूसरोवोलजोहसिकैंकहोवोलवाकोयोंतुमहेंग्रासू
सोंउमरेंप्रेमसभंगकोवचनमहावनजायकेंग्रावोंग्रासूसात्विक १० ग्रथधैर्याक्षेपकार
नकोंकरोग्रैसोवचनकोंकहिएवाहिकाजेकोनिवारिवोग्रर्थमैंनिकरैं ११ चलतरहिन
वहुतविनीतभएसकुचतकंतचितचलतचलाएहीजातहैंनेकहोकहानांहिनैमिलत
ग्रानिमानियहच्छाडोमोहवढतवढायेंहीमेरीमोंदूतमहिंहरिरहिहोसषवहिंसषमोहू
हैंतिहारीसोंहरहोसषयाएहीचलैंहीवनतजोंतोचलिएचतुरपीपसोवतहीजेएच्छाडि
जागोंगीहूंग्राएहीं १२ चलनइतिकानकौंसकुचतहौचलाएसोंचित्तचलतहैं नाहिनेमि
लतहीहैंचतुरपियतुमहमारीवातकोंसमझतुहोग्रैसोपरदेसवनैतोकरोनहीग्रैसोपर
देसवनैगोनकरैगोविधितोवनहैंनिषेधच्छयोहै १२ संसयाक्षेप उपजाएसंदेहकछुउप
जतकानविरोध यहसंसयग्राक्षेपकहिवरनतजिनैंप्रवोध १३ संसयाक्षेपउपजाएइति
संदेहउपजाएसोंकछुग्रकारनवाध्योजाय १३ गुननिवलितकलसुरनिकलितगायलिलि
तगीतश्रवनरचायहैं चित्रितहोचित्रनिमेंपरमविचित्रतुमचित्रिनीज्योंदेषिदेषिनैननिन
वायहैंकामकेविरोधीमतसोधिसोधिसाधिसषिवाधिवाधिग्राधिनकेवासरगवायहैंके
सोरायकीसोंमोहियहहीकठिनवाकीरिसमैरसिककलालयानकोंवनायहैं १४ गुनइति

मिलत

ललत

तुमारे गुनसैं वलित जु कलश्रव्य कै मनोहर स्वरसें जु श्रीललिताजी सखीमें तुमें चि
त्रित करे गीचित्रिनी की तरह यह नायका देखि कें नैनन कौं न वा वेगी जेसें साछात तुमें देखि
कें लज्जा सो नेत्रकौं नीचो करति है ऐसी तुमारी है तें मिलावो जो चित्र देखि लाज होय प्रमा
न चित्र है सें हरि मित्र हि देखत यां सकुचीज नुवां होगही है यह तो पद्मिनी है चित्रनी कौं नाय
क के चित्र सें वहुत आसक्ति है यातें चित्रनी मैं कह्यो सखी जो यह हमारी है वनायवनायकें
तुम अंधकारको साधन करूं गी कहूं काम के विरोधी मंत्र यह पाठ है मंत्र सिव कौ लीजिए कहूं
मत पाठ है मत त्यानिनि कौ लीजिए हे रसिकलाल वाकी रसना जो भला कौं रस में यह भी पाठ
है वाकौं पान रस में कोन षि आवेगो यह संसय उपजायो सो परदेसगमनरूप कार्य कौ विरो
धी है १४ मरनाछेप मरन निवारन करत जहां काज निवारन होत ज्ञान हू मरनाछेप क
विजैं जिय वुद्धि उदोत १४ मरनाछेप ऊपर सें ल्याय कें वात राखिए सो आछेप मरन नि
वारन इति का जैसो कौ न्याय १४ नीके कें विचार देहौं द्वार द्वार दरवार के सो दास आस पास ह
र जन आवैगो छिन में छपाय लेहौं ऊपर अरानि आज आगन घटाय ले हौं जैसें मोहि भावे
गो त्यारे त्यारे नारदानि मूंदि हौं झरोख जाल पाय है न पैडो पौंन आवन न या वैगो माधव ति
हारें पीछें मो पहि मरन मूठ आवन कहत राधौ कौं नियैरें आवैगो १६ नीके के इति दर

84A

कहिए छोरा वारदर वाजाषिरकी जानिए नारदाना पानी जानेकी राह यौं न जहां पै ग्रान
पावैगो पायहै न पानी यो न आवन न पावैगो यह भी पाठ हैं जलमांहि नहीं पावैगो यौं न
आइवे नहीं पावैगो इहां मरनको निवारन करत गमनको निवारभयो १६ आसिषाछेप
आसिषपियवैं पंथको दीजे दुष्ष दुराय आसिष सौं को आछेप यह कहत सकल कविराय।
१७ आसिषाआछेप आसिषदेतिआपनेदुषकौं छपायवैं १७ मंत्री मित्र पुत्र जनके सव
कलत्रगन सोदर सज्जन जनभट सुष साजसौ एतो सव होत जात जो यै है कुसलगात अ
वही चलो कै प्रातसगुन समाज सौं कीनों जो पयानवाधक्षमिए मो अपराध रहिए न पल
आध वधिए तलाज सौं होंन कहौं कहत निगमसव अवतेरा जनि परम हित आपने हीं
काजसौं मंत्री इति मंत्री औ मित्र औ पुत्र औ जनदास औ कलत्र स्त्री ताकेगन समूह औ सो
दर भाई औ सज्जन लोग उमते लोग किंवा सज्जन आछे भट जोधा एसव सुष के जो साज सं
जाम रे सदौलत नाही सौं लगे यह है पुत्र कलत्र सोदर एके रिकैं कै करिहो हिंगो फेरिकैं क
रिजाहिंगे एहे दहसौं लगें है संपति सौं लगो नहीं तहां औ सैं लगाइए मित्र आता के पुत्र औ
कलत्रगनके सोदर वहुत सगुननि सौं मै पहिलैं कह्यो पयान प्रस्थानो मतिकरो।
यह अपराध कौं आसिषदेति हैं आपने काजसौं परमहित चाहिए नहीं तो राज्यको वंदोव

व

लजातोरहै यामैंनायकाको उपछयोहै प्रियाकेकाजमोहितनहींयहजानिए १८ ध
र्माछेप राषतअपनेधर्मकोंजहांकारजरहिजाय धर्माछेपसदाइहैवरननसवसुषपा
य १९ धर्माछेप राषतइति काजलजातोरहै १९ जोहोंकहूंरहिएतोप्रभुताप्रगटहो
तिचलनकहूंतोहितहानिनाहिंसहनोंभावेसुकरहुतोउदासभावप्राननाथसाथले
चलहूकैसेंलोककलाजवहूनो केसोरायकीसोंतमसजनहूछवीलेलालचलेहीवनत
नोमैनाहीराजरहनौंतेसीएसिषावोसीषतमहीसुजानपियतमहिंचलतमोहिजैसो
कछकहनो २० जोहोइति चलिवेकोंकहोंतोहितहानिकोसहनोपरै फेरिलोककला
जकोकैसेंवहनोनिवाहनोहोयइहांराजपतिनकोंकहतहैं इहांआपनोधर्मनाइकाराष
तिहैं नायककोगमनकाजछूटतहै २० उपायाछेपकोंनहूएकउपायकरिरोकयेवि
यप्रस्थानतासोंकहतउपायकवियहआछेपसुजान २१ उपायाछेप कोंनहूइति प्र
स्थानरोकिए २१ मोकोंसवैव्रजकीजुवतीहरगोरिसमानसुहागिनिजानैंअेसीको
गोपीगोपालतुहूंविनगोकुलमेंवसिवोउरआनैंसूरतिमेरीअडीठकेईठचलौंकिरहो
जकछूमनमानैंप्रेमतिछेमनिआदिदेकेसवकोऊनमोहिकहूंपहिचानैं २२ मोकोंस
वैइति हरमहादेवकोंजैसीगोरीसोहागिनीहैंहरकेवामभागसोंलागीरहतिहैंनायिका

85A

नायक सों कहत हैं तुमारे प्रेम विना मूरति मेरी अदीठ कैं ई ठ चलो कि रह्यो है ई ठ मित्र हमा
री मूरति कों अदीठ करिकें अरु एक रिकें कोई औ मिन टेषें तुम चलो किं वा रह्यो जो कछु दोउ
वात में मन मानें सों करो अरु इतातो लगजन सो भी होति हैं हमारे सरीर मैं तन मैं विषयक
प्रेम है औ छेम कल्यान हैं आदि पर तें बुद्धि है औ मन हैं सो भी हमें नहीं पहिचानि सकें ऐसी
अरु छतान हीं वनि आवैं यातें नायक नहीं चलि सकैं २२ अथ सिक्षाक्षेप लछन जहं हेरा
षिए सिष ही सिष लछहानि सिक्षाक्षेप कछु वर निछ्छे वारहवांति २३ सिक्षाक्षेप ।
लछही इति सी व सिषाय कैं वारह छप्पय मैं वारहन रहकी वानी वचन हैं किं वा निरो ष होय
ताकैं भी वारहवांनी को कहत हैं २३ चैत्र छप्पै फूली लतिका ललित तरुन फूले तरुवर फू
ली सरिता सुभग सरस फूले सब सरवर फूली कामिनि कामरूप करि कंतनि पूजहिं सुक
सारो कुल केलि फूलि कोकिल कल कूजहि कहि केसव ऐसी फूल महि सूल न हू फूलन लगाउ
ए पिय आपु चलन की का चलैं चित्त न चैत चला इए २४ चैत्र वनें तं फूली इति चैत्र मैं परदे
स जाने कों चित्त भी नहीं चला इए ताहि चैत्र मैं तरुन जवान ता के सरीर फूले सानंद भए पति कों
कामरूप जानि आदर करत हैं फूलनि कों हमारे हृदय विषै सूल त्रिसूल समान मति लगा
इए २४ वैसाष केसव दास आकास अवनि वासित सुवास करि वहत पवन गति मंद गात

उपाय करत है

न

के॰
८६
86

मकरंदविंदुधरि दिसविदिसनिछविलागभागपूरितपरागवर होतगंधहीअंधधुवधिरभौं
राविदेसिनर सुनिसुषदसुषदसिषसीषिपतिरतिबईसुषसाषमें वरविरहनिवधत
विप्रापकरिकामविसिषवैसाषमें २९ वैसाषकेसवइति वरजोरकरिकामकेविसिष
वानविरहिनिकोंवेधतहै मकरंदफूलकोरस हैवराहदिसापूर्वादिविदिसाकोनयाको
जोभागविभागसोंपरागसोंपूरितहै सोमानोछविसोंलागिरहीहै लपटिरहीहै भौं
रानेअंधहोतहैं फूलछोडिगजकेकपोलपैवैठतहैं विदेसीसीषनहीसुनैंसुनैतोआप
कोंचेतकरैंआपनेघरजानेकोउपायकरैहै सुषदनायकसुषदजोयहसीषसिषातीकों
सुनोऔसिषो यहरतिकेपतिकामनेसुषकीसाषमेंसाषीतोवेदकीहोतिहै उहाकोक
कीजानिए किंवाहेपतियहरतिकामकीसीकिंवाप्रीतितानेसिषाईहै सुषदायकसाषी
मेजैसे भलेकोककोदोहाआदिछंदसोसाषीकहावतिहै वरविरहइत्यादिसाषी २९ जेठ।
एकभूतमयहोतभूतभजिपंचभूतभ्रम अनिलअंबुआकासअवनिहै जाततथापि तसम
वंधधाकितमदनकिनसुषितसरसिंधुरजोवन कोकैंदरककोसउदरनेरकेहरिसोवत।
पियप्रवलजीवइहिविधिअवलसकलविकलजलथलरहत तजिकेसवदासउदासमति
जेठमासजेठेकहत २८ जेठ एकभूतइति भूतजेअनिलआदिकहै तेपांचसोंकभूतमय

संभारवेको

श्रि॰

८६

ए

86A

तेजमयहोतहैं पांचभूतहैं यहभेदभ्रमसोंजातहै छूटिजातहैं अवनीएथ्वीमदमुकितमट छोड़त सुखसरसिंधुरहाथीदेषतहैं काकोदरसर्पसोहाथीकेकरसूंड़सोंभयोकोससंपु टतासोंमैसोवतहैं भवलसवजीवऔअवलसवजीव याविधिजलथलमेंविकलरहतहैं जे ठमासमेंजेठवड़ेलोगकहतहैं २६ असाढ़ पवनचक्रपरचंडचलतचहुंओरचपलगति भवनभामिनीतजतभवनमानहूतिनकीमति सन्यासीदुहूमासमहोतइकआसनवासीपु हुषनकीकोकहैभएपछियोंनिवासी इहिसमेंसेजसोवनलियोश्रीहरिसाथश्रीनाथहू कु हिकेसवदासअसाढचलमेंनसुनोश्रुतिगाथहू २७ असाढपवनइति यहपवनचक्रजहाँ चलतहैं औजोअसाढमेंवरकोंओभामिनीस्त्रीकोंछोड़तिहैं तिनकीमतिमानोंभ्रमतिहैं श्री नाथश्रीवामनजीश्रुतिवेदताकोगाथासंगानमेंकिवाणीतिमें २७ सावनकेसवसरितासक लमिलतसागरमनमोहै ललितलतालपटातितरुननतरवरसोहैं हचिचपलामिलिमे घचपलचमकतचहूंओरनिमनभावनकहूंभेटिभूमिमिमोरनिरहिहीरीतिरमनरमनीनि सवरमनअहलगेरसावन पियगमनकरनकहेकोकहेगमनसुनिएनहिंसावन २८ सा वन केसवइति लतासोंतरवरवछक्षकेतनसरीरसोहतहैं चंपलाबीजरीहचिचाहसोंमेघ सोहै पतिनासोंमिलिकेमनभावननायकमेघयारीतिसोंरमननायकसवरमनीनिकोंर

मिकूजन

क॰
८७

87

मावनक्रीडाकरावनलगेआपुरमनलगे गमनकरनकैंकोंनकहिसवैंयहछवकोंभे
दहैं २८ भादौघोरतघनचहुंओरघोषनिर्घोषनिमंडहि धाराधरधरिधरनिमूसलधा
रनिजलछेडहिझिल्लीगनझंकारपवनझकिझकिझकझोरतबाढसिंचुगंजरतपुंज
कुंजरतहतोरतनिसिदिनविसेषनिसेषमितिजातसुआलीआजुएहेसपियूषविदेस
विषभादौभौननछोडिए २९ भादौघोरतरतिघोरदुहाउमडिघोकारोसहूघोषदाउ
रमोरइत्यादिकेदुहालीजिएनिर्घोषमेघुकेसहूधराधरमेघधरनीसोंलगिकैंझिल्लीगं
गर कुंजरदहाथीकेपुंजसमहजहारातिदिननहींजानिपरेंतमारेआरोआलीआजुएहे
आंचरपसारिडेरीमांकिएदेसतौपीयघरअमतदै आविदेसविषदै २९ आश्विनप्रथमपि
इहितप्रगटपितरपावनचरआवैंनवदुर्गनिनरएजिस्वर्गअपवर्गदिपावैं छत्रनिदैछिति
पत्तिलेतभुवलैसंगपंडित केसोदासअकासअमलजलजलजननिमंडित रमनीयरजनिरज
नीसहचिरमारमनहूरासरति कलकेलिकलपतरुकारमहिकंतनकरहुविदेसमति ३०
आश्विन प्रथमहिंइति लागतआश्विनआगेंनवदुर्गाकीपूजा अपवर्गमोक्षछितिपति
राजाप्रपानकरैंमाथ्येपैंछत्रदेकैंपरभूमिकोंलेतहैं संगमेंपंडितरजनीसचंद्रमारमारम
नश्रीकृस्नचंद्रकलमनोहररासक्रीडा ताकोकलपवृक्षसमकुआरहै ३० कार्तिकवनउ।

पवनजलथलअकासदीसंतदीपगानसुषहीसुषदिनरातिजुवाषेलतिदंपतिजनदेव
चरित्रविचित्रचित्रचित्रितआगनचरनगतजगतजगटीसजोतिजगमगातनारिनर. दि
नदानन्हानगुनगानहरिजनमसुफलकरिलीजिए कहिकेसवदासविदेसमनिकंत
नकार्तिककीजिए ३। कार्तिकवनइतिवतआउपवनबागइत्यादिकमेंदीपदान सवही
सुषसुषसौंदिनमेंअरातिमे नायिकभीसुषसौंषेलैंहैं नायकाभीसुषसौंषेलैंहैं कहूं
सुषहीसुषसुषराति ऐसोभीपाठहै सुषकारीजोरातिहै तामें देवताकोजोविचित्रचरित्र
लीलाताकोजोचित्रितसवीरतासौंचित्रितआअंगनकियाहैदर्पनीयकियाहै आगनजहां
मेवकीचदालिषीहैठाकुरगोवर्द्धनकोधरेहैंइत्यादिजगतीएथ्वीतामेंदेवऊठनीएकादषी
कादिनजोतिरूपजोतिरूपजगदीसश्रीवामनजीतहांजागतेहैंउत्तिष्ठोत्तिष्ठगोविंदइत्यादिमे
त्रकरिलोगजगावतहैंतादिनलोगउत्साहकरतहैं आछेभूषनजरीकेकपरापहिरकैंजग
मगातहैं दिनमैंदानकीजिए भगवानवहुतप्रसन्नहोतहैं यहश्रीराधिकाजीकोमहीना
हैं श्रीराधिकाजीकेस्तोत्रमेंकार्त्तिकदेवतानामहैं श्रीतुलसीजीकेसेवनकोविशेषमाहा
त्म्यहै ३। मगसिर मासनिमेंहरिअंसकहतयासहुसवकोऊ स्वारथपरमारथनिदेतभा
रथमहिदोऊ केसवसरितासरनिफूलफूलेसुगंधगुहकूजतकलकलहंसकलितकल

हंसिनिकेसुर हिनपरमनरमसीतननगरमकरमकरमयदपाप्रवित्त करिमाननता
घपरदेसकहेमारगसिरमारगनचित्त ३२ अगहनमासनिमैंइति महीननिमैंया
सहूयामहीनासांसबकोईहरिकोअंसकहतहैं यहभारथमहिहैं इत्यादि हैं श्रीभ
गवानकोवचनहैं भारथमैंगीताहे तहांकह्योहे महीननिमैंअग्रहनमेंहों स्वारथओ
परमारथदोऊवातकोदेतहैं गुरुवडोजामें सुगंधकलअव्यक्तमधुरजोकलहंसजा
तिविशेषताकोजोकूजितसहतासोंकलितजुक्तकलअव्यक्तमधुरराजहंसनिकेस
रहैं जहांकलहंसनकलहंसनिदोऊपाठहैं कलअव्यक्तमधुरजोंओरिपक्षिनिकेकू
जितसहतासोंकलितजुक्तकलहंसओकलहंसिनिकेस्वरहैं जहांक्रमक्रमसोंप
हिलेंकुआरवीछेकातिकफेरिअग्रहन किंवाकर्मजोहे पूर्वजन्मकोसुकृततताकेक
रमसोंदयाकरैं यारितकोंपायकैं मगसरमेंमार्गपथतामेंचित्तमतिकरो ३२ एस सी
तलजलथलवसनअसनसीतलअनरोचक केसवदासअकासअवनिसीतलअ
समोचक तेलतूलतामोरतपनतापननवनारी राजरंककसवछोडिकरतइनहीं
अधिकारीलचुपेंसिटीहरजनीरमनहोनतुसहतुषहूषमेंपदमनक्रमवचनविचा
तिपियपंथनवूझिएएसमें ३३ एससीतलइति सीतलजलओसीतलस्थलओ॰

88A

सीतलअसनभोजनअरोचकहैं नहीं हैं आकासविषैं औअवनीभूमिमें जो सीतलतषा
रहै सो वियोगिनिके असनपान ताकों छोड़ावति है किंवा आषि सों आसन छोड़ावै है आकास
जो है सो अवनीमैं सीतल असन आसन ताकों छोडति हैं ऐसें भी कोई कहत है तपनको अर्थ
आगि छांनां को वारिकें करत हैं एवमें घरहट करत हैं ताकों तापनो आनवीन नारी हून
कों अधिकारी करत हैं इसमें नायक सो हू छिवेमं ३३ माघवन उपवन के कीक पोतको
किलकलबोलत केसवभूले भवर भरे बहु भाय निडोलत मृगमद मलय कपूर धूरधूस
रित रसौं टिसि तालमृदंग उपंग सुनत संगीत गीत निसि षेलत वसंत संतत सुघर संत अ
संत अनंत गति घर ना रहे नैं डियमाहमें जो मन माहि सनेह मति ३४ माघवन इति बहुत
जो भाव मन को विकार मनता तासों भरे फूलनि कों भूलि जात है कुरीके कपोल पर जोत
हैं या तरह सों डोलन है फिरत है वसंतपंचमी सों होरी को ष्याल होत है उपंग वाजा है सो सुघ
र प्रवीन सो संत होउ किंवा असंत होउ सो अनंतगति सो अनेक तरह सों वसंतमें षेलत है ३४
फागुन मैं स लोक लाज तजि राज रंक निरसंक विराजत जो ई भावत सोइ कहत करत फुनि
हो मन लाजत घरघर जुवती जुवनि जोर गहि गांठि निजोर कहि वसन छीनि मुख मांडि
आंजि लोचननि तिन तोर गहि पटवास सुवास अकास उडि भूवमंडल सब मंडिए कहि केस

को

89

वह्वासविलासनिधिफागुनछंदिए ३९ इतिश्रीकविप्रियायांविशिष्टालंकारवर्ननंनाम
मदशमःप्रभावः १० फागुनलोकइति नवतीनवाको जोरसोंपकरिकैंगांठिवांधिदेत
हैं सहतमारीसोभईतिनकहिएतरुनताकोंनोरेंहैं इनकेहूपैंकाहूकीनजरिमतिला॰
तिनायपरवासहुगंथअवीरताकौवास हैविलासनिधि किंवाविलासनिधिफागु
न फागुकोखेलिवोयाप्रभावमेंएकव्याक्षेपालंकारहैं ३९ इतिश्रीहरिचरणदासकृ
तायाकविप्रियाभरणाख्यायांकविप्रियाटीकायांदशमप्रभावव्याख्या १० अथक्रमा
लंकारगननालंकारलछनं आदिअंतभरिवरनिएसोंक्रमकेसवदास अरुगननासों
कहतहैं जिनिकेवुद्धिप्रकास १ अथक्रमालंकारगननालंकार आदिइतिआदिसोंले
कैअंततांईजहांक्रमसोंकहिए जहांमहतताहैसोगनना १ धिकमंगनविनगुनहिगुन
हधिकहुनतनरिकियुरीकिहधिकविनमानमानधिकदेतनविषिकियहीकोधिकवि
नसाचैंधिकधर्मनभावै धर्महधिकविनदयादयाधिकअविकहंआवै अहअरिधिक
चित्तनसालईचितधिकजहंनउदारमति मतिधिककेवसभरज्ञानविनज्ञानहधिकवि
नहरिभगति २ धिकइति सोगुनकोंधिकारहैं जोसुनिकैंओरिरीझैनहीं मानवक
सीस सत्रुपरदयाआवैं मंगनकेंअवयगुनसों गुनआगेंदयाआइवेसोंगवितभ

साच

न

यो २ सोभनिसोनसभाजहांवृद्धनवद्दैतेजपढेंकछुनांही तेनपढेजिनसाधुनिसाधितही
हृदयानहिए ॥ जिनिमांहीसोनदयाजनधर्मधुरंधरधर्मनसोजहांदानवथ्याहीदानन
सोजहांसोचनकेसवसोचनसोजवसैंछलछांही ३ सोभतिइति सोसभानहींसोहति
हैं जहांवृद्धनहीं सोवृद्धभीनहींसोभैजोकछुपढोनहोय तेवृद्धपढेतोभीनहींपढेजि
ननेंसाधुनिकीउत्तमपुरुषनिकीसाधितउत्तमपुरुषनिजोकोकरीहैंऐसीजोदीहवडी।
दयाजाकेहृदयमेनहीहैं परसरीरविषेंकिवाएहीविषें सोदयाभीनहींसोधर्मवेदोक्त
विधिकोनहींधरें सोधर्मभीनहींजहांवथ्यादानवेस्यादिककों सोसोचभीनहींजामेंछ
लकीछायाजलकवसैं कहेंवसेंछलमंहीयहभीपाठहैं इहांभीवैसेंजानिए ३ तजहु।
जगतविनभौनभवनतजतियविनकीनो त्रियतजजनहपदेड्डहपतजिसंपतिहो
नौ संपतितजिविनुदानदानतजि ॥ जहांनविप्रमति विप्रतजहुविनधर्मधर्मतजि
जहांनभूपति तजिभूपभूमिविनभूमितदीह दुर्गविनुजोवसइ तजिदुर्गहकेसवदास
कविजहांनजलपूरनलसइ ४ तजहुइति स्त्रीविनांजोघरकियोसोतजोविप्रकोदेनेवि
षैमतिनही जहांराजानहोयतहांधर्मनहीनिवहें दीहदुर्गवडोकोट ४ अथगननएकस्था
नमाचक्ररविएकहक्रकीदृष्टि एकेदसनगनेसकोजानतिसगरीसृष्टि ५ अथगननाप

न

क.
५.
१०

कइति आत्मा ब्रह्म रविके रथको चक्रभी एक है गनेसकों भी एकदांत है ४ नदीकूल
है रामस्यामल पक्ष खड्गकी धार है लोचन द्विजजन्म पदभज अश्विनीकुमार ६ अश्वदे
य नदीकूलइति नदीकोतट रामस्यामकुसलव पक्ष कृसपक्षओसुक्लपक्ष किंवा
पक्षीकेपक्ष ओ दोयधारकी तरवारभी होत है द्विजकेजन्म एकतो मातनके यरजन्म
तै एकसंस्कारतें अश्विनीकुमार दोय है ६ लेषतिरंकभुजंगकी रसना अयननिजा
नि गजरदन प्रषचुकरैं उकेकक्षा सिषावषानि ७ लेषनिइति कलमकी फार अयनउत्त
रायन दक्षिनायन चुकरैं दोय म्रषको सर्पकक्षाकांषसिषा अलक ७ तीन गंगामग
गंगेसदृग ग्रीवरेषगुनलेषि पावककालत्रिसूलवलि संध्यातीनि विशेषि ८ अथतीन
नवक्त गंगाइति श्रीगंगाजीको मगपथ स्वर्गमर्त्यपातालमें मंदाकिनी स्वर्गमें भागी
रथी भूमिमें भोगवती पातालमें गंगेस सिवताकेदृग ग्रीवगर्दनताकीरेषा गुनसत्व
रजतम पावकअग्नि तीनि हैं दक्षिनाग्नि गार्हपत्य आहवनीय काल भूत भविष्यत वर्तमा
न वलितीनि हैं वलिकों काहिकें आह्वानभेंजन करत हैं किंवा उदरमें त्रिवली संध्याम
ध्याह्नकी संध्या सायकालकी ८ पुष्कर विक्रम राम विधि त्रिपुर त्रिवेनी वेद तीनि ताप
परितापपद ज्वरके तीनि सबेद ८ पुष्करइति पुष्कर तीरथ सो तीनि हैं एकतो वृद्धपु

90A

करकहावतहैं दूसरोराजद्वावाय तीसरोजेरकुंइविक्रमबलतनकोमनकोत्र्प्राथ
नको रामदासरथीदूसरोवलभद्रतीसरोपरसुराम विधिक्रियातीनिसुभ अत्र्प्रस
भत्र्प्रामिश्रितकिंवावेदविधिलोकविधिकुलविधि त्र्प्रौदैत्यकेतीनिपुरथेताकोंर
सिवनेंमारे त्र्प्रौत्रिवेनीगंगायमुनासरस्वती वेदरिगवेदसामजजुर्वेद अथर्वन
कोंकहूंगननतेंकहूंनहींगननतहैं यामेंमारनादिकहैं तीनतापहैंत्र्प्राधिभौतिकत्र्प्रा
धिदैविकत्र्प्राध्यात्मिक त्र्प्रौतीनिपरितापहैं मनपरितापवलपरितापत्र्प्रौवीर्ज
परिताप स्यानगनाममैनतिकोग्रंथहैंतामेंहैं त्र्प्रौज्वरकेतीनिपावहैंसखेदउष
सहित ९ चारिवेदवदनविधिवारिनिधिहरिवाहनभुजचारिसेनात्र्प्रंगउपायजुग
आश्रमवरनैंचारि १० चारिवेदइतिवेदकोचारिभीमाननहैं समुद्रकोंचारिभीकहत
हैंसातभीकहतहैंहरिकेवाहनत्र्प्रश्वसोचारिहैंमेघपुष्प वलाहक त्र्प्रौसेनत्र्प्रौसुग्री
व त्र्प्रौहरिकेभुजभीचारिहैं त्र्प्रौसेनाकेत्र्प्रंगत्र्प्रस्वरथप्यादाहाथीउपायचारिसाम
दानभेदनिग्रह जुगसतजुगत्र्प्रादि त्र्प्राश्रमचारि गृहीब्रह्मचारीवानप्रस्थसन्यास
वर्नब्राह्मनत्र्प्रादि १० स्मरनायकवारनेरदनकेसवदिसावषानि चतुरव्यूहरचना
चमूचरनपदारथजानि ११ स्मरनायकइतिस्मरनायकइंद्रताकोवारनहाथीताके

वि॰

को॰
४१

९१

रदनदांतचारिदिसाकोचारिभीआठभीदसभीगनततहैं व्यूहमेंचारिव्यूहकीरचना॰
हैंसकराकारक्रौंचाकाररथनुमाकारचक्राकार चरनश्लोकके चारिहैं पदार्थअर्थ
धर्मकाममोक्ष ११ पांचपंडुसुतइंद्रियकवलरूद्रवदनगनि बानलच्छनपंचपु
रानकेपंचअग्निगअहप्रान १२ पांचपांडुसुतइति युधिष्ठिरआदिइंद्रियत्वचाश्रो
त्रनेत्रजिह्वाघ्रान कवलग्राससोपांचपंचग्रासीभोजनसमयमेंकरतहैंशिवकेमु
षपांच गतिमोक्षसालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यएकत्वबानकामकेपांचपुरा॰
नकेपांचलच्छन सर्गप्रतिसर्गवंसमन्वंतरभूम्यादिसंस्थानं औपंचांगतिथिवार
नक्षत्रजोगकरनप्रानपांच प्रानअपानसमानउदानव्यान १२ पंचवर्गनहूपंचअग्नि
पंचसवदपरमान पंचसंधिपंचांगिभनिकन्यापंचसमान १३ पंचइति पंचव
र्गकुचुटुतुपुवर्गाः तरुवृक्ष मंदारपारिजातसंतानकल्पवृक्षहरिचंदन पंचसहृद
रिमानयाकोअर्थकेतनेकरततहैं पांचसहृके प्रमानहैं सुत्रवार्त्तिकभाष्यकोष
महाकविकेप्रयोग औइनसौनहींसधैओकोषुमेंहोयऔमहाकविकेप्रयोग
मेंहोयतोप्रमानहैंसंधिपांचहैं अचसंधिहलसंधिविसर्गसंधिस्वादिसंधिऔप्र॰
कृतिभाव प्रकृतिभावभीसंधिहैं प्रकृतिभावकियोजहांआवैश्लोकमेंतहांअस॰

४१

षिदोषअलंकारकोनहीलागें अग्नितीनिकहींपांचभीकहतहैं भारथमेंवनपर्वहैतं
हांतीर्थजात्राकेप्रसंगमेंअष्टावक्रसोंवंदीकोवचन पंचाग्नयः पंचपदाचपंक्तिः या
कीटीकामेंदक्षिणाग्निगार्हपत्यआहवनीयसभ्यऔलौकिक औपंचकन्या अहल्या
द्रौपदीताराकुंतीमंदोदरी १३ पंचभूतपातकिप्रगटपंचजज्ञजियजानि पंचगव्य
मातापितापंचामृतनिवचानि १४ पंचभूतइति पंचभूतपृथ्वीअपतेजवायुआ
काश पातकीब्रह्महत्यासुरापीस्वर्नकोचोरगुरुकेसेजजायऔइनिकोसंगकरैंसो
तोहैंपातकीपातकब्राह्मनकोमरनोआदिऔरनकोसंगभीपापहै औपांचजज्ञ व
टीवचनटीकामें देवजज्ञभूतजज्ञभूतपितजज्ञमनुष्यजज्ञब्रह्मजज्ञ पंचगव्य दूधद
हीघृतगोबरगोमूत्र मातापंच गुरुपत्नीनृपपत्नीमित्रपत्नीपितापत्नीस्वसुरपत्नीपिता
पंचजनकउपनेताविद्यादाताअन्नदाताभयत्रात औइनिकीस्त्रीसोभीमाताजानिए।
पंचामृतदधिदूधघृतमिश्रीमधु १४ षट्कुलिसकोनषट तर्कषटदरसनसरितअं
ग वक्रवर्त्तिसिवपुत्रमनुषस्तुनिषटरागप्रसंग १४ अप्पषट कुलिसकोनइति ।
कुलिसवज्रताकेकौंनतर्कसास्त्रषटवेदांतसांख्यपातंजलिन्यायमीमांसावैसेषि
कदर्शननामसास्त्रकोंहैं इहांवैसवचालनजोगीसन्यासीजंगमसेवरायहलोकप्रसि

के ९२

92

हुहै किंवारहसनसास्नुतहांपढनवालासौंलछनाकरिअभेदविवछाकरीछसास्त्रकेपढ
नवालेवेदांतीआदिजानिए रसषट मिठाअम्लकटुकषायलवनतिक्त रितुषट वस
तग्रीषमवरषासरदहेमंतसिसिर औअंगवेदके सिक्षाकल्पव्याकर्नछंदजोतिषनि
रुक्ति औचक्रवर्तीराजायुधिष्टिरविक्रमसालिवाहनविजयाभिनंदननागार्जुननिःक
लंकाअवतारभएचक्रवर्तीकेतनेकहतहैं वेनवलिधुधुमारअजयपालपर्वतकमान।
धाता सिवपुत्रकार्तिकेयतिनकेमुषषटहैं औरागषटहैं भैरवकोसिकआदिहिंडोल
दीपकश्रीरागहिंपुनिवोल मेघरागपुनिछठयेमानि इनैगुहषटनिश्चैजानि यहभा
षासंगीतदर्पनमेंहै १५ षटमातातषटवदनकीषटगुनवरनहुमित्र आततातइनरषट
गनहुषटपदमधुपकविन १६ षटमातातृति षटवदनकार्तिकेयतिनकीमाताषट कृ
त्तिकानक्षत्रहैंतिनकेछेताराहैं औगुनषटहैंसंधि १ विग्रह २ याति ३ आसन ४ द्वैधी
भाव ५ संश्रय ६ औसौर्यपै योटिभिकहतहैं आततताईषट आगिलगावै औकाहू।
कोंविषदेइ औसस्त्रलिएमारिवेकोंआवैं औकाहूकोधनहरिलेइ औछेत्रकोंहरैं औ
स्त्रीकोंहरैं औमधुपभौंराकेषटपावकविनछप्पयलीजिए १६ सातसातरसातल।
लोकमुनिदीपस्वरदयवारसागरस्वरगिरितालतरुअन्नईतिकरतार १७ अथसात।

के

९२

सातरसातलइति अतलवितलसुतललितलतलातलरसातलपाताल औलोकसा
तहैं भूलोकभुवलोक महलोक तपलोक जनलोक सत्यलोक सातऋषि भारतकीष्टी
कामें मरीचि अत्रिअंगि पुलस्तपुलहक्रतुवशिष्ठ द्वीपसात जंबूद्वीपतहांजामुंकोवृ
क्षहै लक्षद्वीजामेंपाकरिकोवृक्षहै सालमलिद्वीपमेंसेंवरकोवृक्षहै कुसद्वीपमेंकुस
है क्रौंचद्वीपमेंक्रौंचपर्वतहै साकद्वीपमेंसाखकोवृक्षहै पुष्करद्वीपमेंकमलहै स्वरह
यसूर्जकेघोरासातहैं वारदिनसातहैं सागरसमुद्रसातहैंजंबूद्वीपकेक्रम खारसमु
द्र इक्षुरसोदक सुरोदघृतोदक्षीरोद दधिमंडोदस्वादूदक १७ सातदुर्गसातोंपुरीसात
त्वचास्तुसात चिरंजीविमुनिसातनरसप्तमातृकातात १८ स्वरसातहैं निषादरिषभ
गंधार षड्जमध्यम धैवत पंचम सातगिरिपर्वत देवताहूपमुख्यहैं मेरुहिमालय उदया
चल विंध्यलोकालोक गंधमादनकैलास औसाततालसरोवरहैं चारिपर्वतसुमेरुके
ओरउद्यूनहैंतापैंचारिसरोवरहैं औमानसरोवर औविंध्यसरोवरतामेंकर्दम मुनितप।
स्याकरीहैभगवानकीआंखिकोआंसूकोविंदुपरयोहैश्रीभागवतमेंकथाहैऔपंपास
रपतनेमुख्यहैं सातनरु मुख्यहैंकल्पवृक्षआदिपंचएकअक्षैवर औकैलासपैं एकव
टकोवृक्षहै चारिसैकोसकोजाकेनीचें चिंतामनिसिलहै औसातअन्नमुख्यकहतहैं।

६३

93

प्राचीनदोहा अरुहरिगोहूंसालिजौंचनामूंगओमाष एहीअन्नकदन्नसोचितनव
हैंअभिलाष कहूंजम्मुनांइतिकरतालऐसोभीपाठहै सातधाराकहूंजम्मुनांकोभ
ईदेंकोईपुरानमेंयहभीकथाहोयगी ईतिसातहैं अतिहिहिअनावहिमूषकसल
भहृकस्वचक्रपरचक्रकरतार कवकेताल संगीनमेंनाचिवेकेताललतोवहुतहैं इम
मोहनलीलाग्रंथवनायोहैतामेंरासकेप्रसंगमेंवहुततालल्लिखेहैं गाइवेकेसाततां
लमुख्यहैंएकतालीरूपकजतिइत्यादिकोईकहतहैंसातकह्योहैं प्रकृतिओसत्वरज
तमब्रह्माविस्नुमहादेव १२ सातछंदइति भारतकीटीकामेंसातछंदमुख्यलिखेहैं।
औछंदतोवहुतहैं ऐसेंसवठौरमुख्यजानिए गायत्रीउस्निक अनुष्टुप वृहतीपंक्तित्रि
ष्टुपजगती सातपुरी अजोध्यामथुराद्वारकाकासीमायाअवंतीऔकांची सातअंग
मेंवचाहै औमुखसातहैंरसिकप्रियामेंकहेहैं खानपानपरिधानपुनिज्ञानगानरति
अंग सुभसंजोगवियोगविनसातौसुखतियसंगचिरंजीवीसातहैं अस्वस्थामाव
लिव्यासहनुमानविभीषनकृपाचार्य औश्रीपरसुराममुनिसातहैंतिथिपंचमीकौं
रजतहैंकस्यपअत्रि भरद्वाजविश्वामित्र गौतमजमदग्निऔवसिष्ट सातजातिकेन
रमानुषहैं ब्राह्मनछत्रीवैस्यसूद्रवर्नसंकर अंत्यजजवनमानासातहैं ब्राह्मीमाहे।

६३

93A

ब्रह्मी कौमारी वैस्नवी वाराही इंद्रानी चामुंडा षट्पिताक हिआ एतान यहसंबोधन १८ ।
आठ जोग अंग दिकपाल वसु सिद्धि कुलाचल चारु अष्ट कुली अहिआ करन दिग्गज
नहि निविचारि १९ आठ जोग इति जोग के अंग आठ हैं जम नियम आसन प्रानाया
म प्रत्याहार ध्यान धारना समाधि दिसा के पालनवाले आठ पूर्व कौनो इंद्र याक्रम तें जा
निए अग्नि जम नीरिति वरुन मरुत कुवेर महादेव आठ वसु हैं भारत कौटी का मैं जल
ध्रुव सोम धरा अनिल अग्नि प्रत्यूष प्रभास आठ सिद्धि हैं अनिमा महिमा गरिमा लघि
मा प्राप्ति प्राकाम्य ईसत्व वसित्व औ आठ पर्वत के नाम कुलाचल हैं औ आठ कुल सर्प हैं
वासुकि सर्पराज हैं यातें न ह्वै लियो तक्षक १ महापद्म २ संख ३ कुलिक ४ कंवल ५ अस्व
तर ६ धृतराष्ट्र ७ वलाहक ८ औ आठ व्याकरन हैं इंद्र चंद्र इत्यादि प्रसिद्ध हैं दिग्गज आठ हैं
पूर्व में ऐरावत याक्रम सों जानिए पुंडरीक वामन कुमुद अंजन पुष्पदंत सार्वभौम सुप्र
तीक नहि नीनाइका आठ विरहनी खंडिता कलहांतरिता इत्यादि प्रसिद्ध १९ नव अंग द्वा
र भू खंड रस वाधि निकुच निधि जानि सुधा कुंड ग्रह नाडिका नवधा भक्ति वषानि २० ।
नव अंग इति सरीर में नव छिद्र हैं भूमि के नव खंड हैं इलावर्त्त रम्यक कुरु हरिवर्ष किंपुरु
ष भरतखंड केतुमाल भद्राश्व खंड रस शृंगारादि नव औ नाहरी के कुच नव औ नव निधि

के०
९४

९५
व

महापद्मपद्मसंखमकरकछपमुकुंदकुंदनील खर्वअनंतकेनवकुंडहैंकोईयाकोअर्थ
करतहैं पितरनिकेजलमेंनवप्रकारकेकुंडकेभेदहैं सुधापितरनिकोंकीदीजिएता।
कोनाम ग्रहनक्षत्रइत्यादि नवनाडीसरीरमेंमुख्यहैं इडापिंगलासुषमनागांधारी ग
जजिह्वा पूषापषादमनी संखिनीभक्तिभगवानकीनवप्रकारकीहैं श्रवनत्ननसमरन
चरनसेवनअर्चनवंदनदाससख्यआत्मनिवेदन २० दसरावनिसिरश्रीरामकेदसअ
वतारवषानि विश्वेदेवादोषदसदिसादसादसजानि २१ दसरावनसिरइति रावनके
सिरदसभगवानकेदसअवतार मत्स सूकर कछप नसिंह वामन परसुराम राम
चंद्र बलदेव औबुद्ध औनिष्कलंक पितरदस विश्वेदेवापितरदसहैं औदसदोषमनु।
षकेकहेहैं चोरजुवारीअनृतअहंकायरमूककहूयअंधपंगुअहंवधिरइनिकोदोष
दसपूर दिसादसहैं औदसादसहैं अभिलाषचिंतागुनकथनइत्यादि २१ विरोधाभास
अलंकार एकथलप्यि नपैवसतप्रतिजनजीवहिकरपैदेसदेसकरकोथरनहैं विगु
नकलितबहुबलितललितगुनगुननिकेगुननतहफलितकरनहैं चारहीपदारथकों
लेतचितनितितिनिदीवेकोंपदारथसमूहकोपरनहैं केसोदासइंद्रजीतभूतलअ
भूतपंचभूतकीप्रभूतिभवभूतिकोसरनहैं २२ अथपूर्वोक्तकेउदाहरन एकथलइति

९५A

इंद्रजीतजोहै सो भूतलमें भूमिमें अभूतवज़े पंचभूत अद्भुत जे पृथ्वी अप तेज वायु आकास ।

की ताप्रभूति है तासों उपज्यो है यह अर्थ भवसंसार में जो भूत उपज्यो है ताको सरन है रछक है अ

द्भुत ताके है हितके प्यार सों सत्रुकों भय सों जीव में बसत है दोयहाथ है देस देसको लो

गनिके हाथ पकरें है आपने आधीन करति है औ देस देस के दंड कों धरन वालो है लेन वा

लो है गुनिन के गुन रूप जेव दाता कों सफल करत है गुन सु गुनि कें दान देत है पदार्थ समूह

कों देनवालो औ सो पर हू समान नहीं है एक दोयतीनि कहै पलभूमि एक है पदार्थ समूह वस्तु

समूह पदार्थ चारि कहिआए २२ दरसैं नर सरसे नरेस सिर नावैं निति घट दरसन ही कों सिर

नायियत है कैसो दास पुरी पुरहूत निकोपालक पै सातही पुरी सों एरो प्रेम पाइयत है ना

यिका अनेक निको नायक नगर न व अष्ट नाइकानि हीं सों मन लाई तहै नवधाई हरि कों भज यं

नई इंद्रजीत जू कों दस अवतार ही को गुन गाइयत है २२ दरसै इति सुर देवता सारी षोजिनकोने

ज ओ रूप है ऐसो नरेस जब सिर नावै है तब दरकहिए थोरो सेन इसारा हाथ कों किंवा नेत्र को

करि मन रोलेत है जब नरेस सिर नावे है तब थोरो सैं न करे है एक हूं को आपने माथे हाथ

नहीं राषत है किंवा सरसे नरेस सिर नावे है ताको आछी नरह दरसैं नहीं अति हूरतें मुजरो

करति हैं वैस व ब्राह्मन आदि पीछें पर दरसन कहै सात पुरी अजोध्या आदि पीछें कह्यो

क० ५९

95

हैमानविधानावहुतहैंअनेकनाइकाकेनाइकहैं नागरकोअर्थनागरगुहकौंलघुपदौ
औनागरप्रवीनहैं औनवबयःक्रमहै चाहिएनाइकाइनकेमनकौंवसकरैं नहींवसक
रिसकतिहैं सास्त्रकीअष्टनायकासोंचित्तलगावतिहैं सास्त्ररतहैं यहअर्थक्रमकोभेद
गननाकही २३ अथआसीर्वादवर्ननं मातपितागुरुदेवमुनिकहतमुकुतिफलपा
य ताहीसोंसवकहतहैंआसिषकविकविराय २४ अथआसिषमातपिताइतिऔ
रभीवडेलोगजानिए २४ मलयमिलितवासकुंकुमकलितजुतजावककुसुमनषरुजि
तललितकर जटितजरायकीजंजीरीवीचनीलमनिलागिरहेलोकनिकेनैनमानोमनह
र पन्नगपतंगअहकिन्नरअसुरसुरमसकरायंदस[illegible]मचाहतअचरचरैंहृयपरगयप
रपलिकासुपीठपरअरिउरपरअवनीसनिकेसीसपर २५ मलयइति श्रीरामचंद्रजी
केचरनकोवरननं मलयचंदनतासोंमिलीहैंवासजाकीऐसोजोकुंकुमकेसरि कुंकुम
को नामकेसरिभीहैं औरोरीकोभीहैं केसरिसोंकलितजुक्तऔजावकजुक्तहैं विवाहन
नेमेंकिवावालकपनामेंपुरुषकौंभीजावककदेतहैं औकुसुमसोंरुजितनषहैंजाहिचर
नविषैंनषकेसेहैंललितहैंकरकिरनजामें जंजीरचरनभूषनपगसोंकरिकहतहैं तोडु
भीकहतहैं जराऊकीजंजीरवीचमनोहरनीलमनिजटितहैं ताकी[illegible] मानोलो

५९

95A

६५

गनिकेमनलागिरहेहैं पन्नगसर्पपतंगपक्षीअरुकिंनरअसुरमनुष्यादिसुरएस
व औछोटोजीवमसकआवडोजीवगयंदहाथीपर्यंतजेइनकेवीचमेंहैं सोसवसम
कैंअर्थसवऔवराबरि समकहिएसवजेभ्रचरस्थावरऔचरजंगमजादिचरन
नुगकोंचाहतहैं कहूंतीसरीतुकहेंचिरचिरसोहोरामचंदकेचरननुगदीयाकरोआ
सिषअसेषमिलिनारिनर गयहाथीकीपीठसिंहासनकिंवाचोकीइनआदिपरसो
होयहआसिष २४ होयथौंकोउचराचरमधमउत्तमजातिअनुत्तमहीकोंकिंनरकैन
रनारिविचारकिवासकरेंचलकेजलहीको अंगीअनंगकिमूढअमूढउदासअमीत किमीत
सहीको सोअर्थदोकवहूजिनिकेसवजाकेउदोतउदासवहीको २५ होयथौइति य
हकवित्तवहुतपोथीमेंनहींहैं चराचरकेवीचउत्तमजातिकोहोउ किंवाअनुत्तमजा
तिकोहोउअंगीहोउकिंवामूढहोउकिंवा अमूढहोउ सहीसोचकोउअमित्रहोउसोक
वहीजनिअर्थयुवोयहआसिष २६ प्रेमालंकार कपटनिपटमिटिजायजहांउपजैसर
नछेम ताहीसोंसवकहतहैंकेसवउत्तमप्रेम २७ प्रेमालंकारकपदइति छेमअनुरा
गलहूंतासोंलीजिए २७ कहुवातसुनैसपनेंहूवियोगकीहोनचहेंहुइहूकहियो।
मिलिवेलिएजासहुवालकतेंकहितासोंअवोलोकोंजातकिया कहिएकहोकेसवने

ननिसौंविनकाजहिपावकपुंजपियो सषितूवरजैंमग्रहलोगहूमैंसवकाहेकौंप्रेमको
नेमलियो २८ कछुइति पावकपुंजपियो देषैंविनावरतहैं तप्रेमकोनेमकाहेकौंलियो
यावातकहिकैंलोगसेहैंतहैं सषीसौंविनकपटहृदयकीप्रीतिकहतिहै सषीतोमान
करायोचाहतिहै २८ अथश्लेषालंकारदोयतीनअहभांतिवहुअनजमामेंअर्थ ।
श्लेषनामतासोंकहतजिनकीवुद्धिसमर्थ २९ अथश्लेष दोयइति दोयतीनिभांति
केअर्थकिंवावहुतभांतिकेअर्थ २९ द्वि शीर्षधरतधरनिईससीसचरनोदकनिगावतच
तुरमुखसवसुषदानिए कोमलअमलपदकमलाकरकमलकलितवलितगुन।
कौनउरआनिए हिरन्यकसिपुदानकारीप्रहलादहितहिमपदउरधारीवेदनिवषा।
निए केसोदासदारिदद्दुरिदकेविदारिवेकोंएकेनरसिंहकिअमरसिंहजानिए ३०
अथद्विर्थ धरतइति दारिदद्दुरिदहाथीतिनकौंविदारिवेकौंएकश्रीनरसिंहजीहेकिं
वाराजाअमरसिंहजीकोंजानिएनरसिंहजीकैसेहैं कच्छपरूपहोयकेंधरनीपृथ्वी
कोंराषतहैं औरईसजोमहादेवतिनकेसीसपैंआपनेचरनकोउदकजलगंगाताकों
राषतहैं किंवाधरनीकोईससिवसोजाकेचरनोदककोंसीसपैंधरत भगवानस
वकोसुषकेदानीदाताहैं यावातकौंचतुर्मुषब्रह्मागावतहैं वेदमेंयहअर्थहैं पे

96A

रिकोमलग्रौग्रमलनिर्मलजाकोपदचरनसोकमलालक्ष्मीजीतिनकेकरकमलहा
थसोंकलितञ्जक्तहै लक्ष्मीजीचरनसेवाकरतिहैं इब्यामेंजोरहैसोगउनग्रैसोलक्षन॥१
व्याकरनकोलीजिए सौंदर्य्यउदारनामनोहरलइसादिसोंकोनउरविषैंग्रानिए किं
वाकोमलंमऋलेताये हैमेंकोमलनामनरमकोग्रौजलकोकोमलतहाग्रमलनि
र्मलपदस्थानहैंजाकों जलसाईभगवानहैं सोस्थानकैसोहैं कमलालक्ष्मीताकेकर
कहिएकिरनसोंग्रगकीजोतिसों ग्रौकमलासोंकलितञ्जक्तहैं जहांजलतहांकमल
वर्निएपीछेकहिग्राए गुनमायकोंतीनिलिए रूपगंधस्पर्षपासोंवलितञ्जक्तस्थान
हैं फेरिकैसेनरसिंहजीहैंहिरन्यकसिपुग्रसरताकोदानकारीषंडनकारीदानकोग्र
र्थहेममेंषंडनभीहै ग्रौप्रह्लादकेंतिहैं हिजभगताकेपदकहिएपावकोचिह्नताकों
उरविषैंधरेहैंवेदनिमेंजाकोंवषानिएहैं र्थताग्रमरसिंहकेसोहै धरनीकेईसराजा॥१
जाकेचरनोदककोंसीसपैंधरतहैं ईश्वरकरिमाननहै यहग्रर्थ किंवाधरनीकेईस
सिवतिनकेचरनोदकनिकोंसीसपरधरतहैं ग्रौचतुरगुनीसोमुषसोंसवसुषके
दानीगावतहैं फेरिकोमलग्रमलजाकोपावहै कमलानामहेममेंलक्ष्मीकोग्रौवा
रुक्षीको कमलावरांगनानावासोंकलितहैं कलितवलितग्रनेकग्रर्थकोंकहतहैं स

हि

क॰ २८
९७

बिनतहे जानिए मैं तर्ज औ दार्य्यादि गुनसों जुक्त जो अमरसिंह ताहिकों नउरमें आनिए फेरि
हिरन्यसों नाना कौ कसिपु सेजता के दानकारी हैं मन्यादान देत है बडो जो आङ्का दआ
नंदता सौं सहित हैं फिकि रिनहीं आनें सदा आनंद करत हैं द्विजपद उरधारी ब्राह्मनके पा
वकौं उरविषैं मनविषैं राषत हैं किंवा हेममैं द्विज नाम ब्राह्मन क्षत्रिय वैस्य को हैं आपकी
को हैं द्विज क्षत्रिय औ वैस्य जाके पद वाक्य आज्ञा को वचन ताकौं उरमें हृदयमें धारनवाले
हैं हुकम भलत नहीं किंवा द्विजगाह ठसो हैं पद वैठिवेको स्थान जाको ऐसो जो भगवान
ताकौं उर हृदयमें धारनवाले हैं हेममें पद नाम स्थानकौ वाक्य को पावको जिन्ह को इत्यादि ।
किंवा द्विजराज नाम चंद्रमा को हैं व्याकरन रीति सों द्विजराज यो राजको लोप भयो द्विजक
हें चंद्रमा जानि परत है जैसें उग्र कहे उग्रसेन जानिए सत्यभामा नाम हे ताकी प्रतीति सत्याक
हैं भी होति है भामा कहैं भी होति है द्विजचंद्रमा ताको पद स्थान सिव सिवके भा लमें रहे हैं द्वि
जपद जो सिव ताकों उरमें राषनि हार हैं उदयपुरके राजा मैं एकलिंग महादेव हैं तिनको इ
ष्टविशेष है द्विजपद विस्नु किंवा सिवते के से हैं जाकों वेद विषैं वषानिए हैं किंवा अमरसि
ह जीवेद कौं वषानें हैं वेदको व्याख्यान करें हैं किंवा पढे हैं ३॰ अथ अर्थ परमविरोधी अ
वरोधी है रहत सब दानिनिके दानिक विके सब प्रमान हैं अधिक अनंत आप सो हत अनं

शब्द को

२८

९७A

नमेंगंगाश्रसरनसरननिरछककनिधानहैं दुतभंककरिहतमतिश्रीपतिवसतहियभावनहैं गंगा
जलजनकोनिदानहैं कैसोरायकीसोककहेंकैसोरायदेषिदेषिहरइकिसमुद्रकिग्रमरसिं
हुसानहैं ३१ अथअर्थपरमइतिहरइहैकिंवासमुद्रहैकिंवाग्रमरसिंहुसानाहै हरइकैसोहैं
परमविरोधीजेहैं भवानीकोवाहनसिंहग्रोसिवकोवाहनवृषभकार्तिकेयकोवाहनमयू
रसिवकेकंठकोनागगनेसकोमूषक एसबविरोधछोडिकैरहतहैं दाताजेतनेहैंताकैं
दाताहैसिवसौंसंपतिपायलोगग्रोरनिकोंदेतहैं हेममेदाननामकाटिबेकोग्रोरछनको
भीहैं कारनवालाकोग्रर्थमारनवालामारनवालाजमग्रोमत्सुताकोदानीमारनवालाहै
ग्रोकेसवजोभगवानताकोकविहैं सिवकेबनाएभगवानकेस्तोत्रहैं फेरिग्रधिकग्रनंतहै
जाकोकोईग्रादिग्रंतनहींजानैं किंवाग्रधिकहैं पिकनाममनिंदाकोग्रधिककोग्रर्थनहींहैं
निंदाजाकीग्रनिं हैं फेरिग्रनंतहै ग्राकासरूपहै ग्रष्टमूर्तिमहादेवहैंतामेंएक मूर्तिग्राका
सभीहैं ग्रापसिवग्रनंतभगवानकिंवाग्रनंतनागनामहैंताकेसंगमेंसोहतिहैं फेरिग्र
सरनिकोसरननिमेंग्राश्रयमेंग्रापरछककहैग्रोनिधानप्रवीनहैं ग्रसरनहैं ग्रसरननामर
छाकर्ताकोजाकोग्रोरिकोईरछकनहीं फेरिसरनएकपद निरछककहसरोपद कनिधा
नतीसरोपद सरनग्राश्रयविषंग्राएजेनिरछकजाकोंईरछकनहींहैं कनामसुषकोहैं

को

ताकोंसुषदैंने कोनिधानहैं प्रवीनहैं किंवासरनविषैंआयजोरहरारूसरावनआदिता
कौंकसुषदेनेंकोनिधानप्रवीनहैं फेरिहुतभुकअग्निताहिविषैंहितकीमतिहैं जाकी
तीसरोनेत्रअग्निकोहैं यातेंहेममेंश्रीनामसंपत्तिकोभीहैं ताकेपतिकुबेरतिनकेहृद
यमेंवसतहैं कुबेरसिवकोभक्तिहैं पुरानप्रसिद्धहैं औजाकोंगंगाजलभावतहैं सिव
पैंगंगाजलचढतहैं औजगतकोनिदानआदिकारनहैं किंवाहुतभुकहितअर्जुनरो
गीअग्निकोषांडववनवरायकेपुष्टकियोहैं तिनअर्जुनविषैंमतिचाहहैं जाकीऐसोजो
श्रीपतिभगवानकोहृदयमेंसिववसतहैं नारायनकोंअतिप्रियहैंयातें नारायनकेसोहैं
जगतकोनिदानआदिकारनहैं औसिवकोंगंगाजलभावतहैं केसोरायकीसोंहकरैहैंक
हेहैंयामेंकेसोरायभगवानकोंदेषायामेंभगवानकोभीवर्ननहैं नारायनकोंअतिप्रिय
हैं औनारायनजगकोनिदानहैं याग्रंथमेंसोंहसाचभई केसोरायइत्यादि पाद एरना
भीजानिए समुद्रपक्ष परमविरोधीदेवता औदैत्यसोजामेंरहतें इनहीसमुद्रव
ननमेंवस्योहैं हेकि यौकेसवकरूपकोजरदेवअदेवनिकोमनमोहैं किंवापरमको
अर्थ परमप्रेमालक्ष्मीहैं विनाम पच्छीकोताकोरोकनवालोहैं अपारहैं पच्छीपारन
हीजायसकनहै अविरोधीहोयकैंरहतहैं पच्छीसोंवाकोविरोधनहीं अविरोधीहोय

कैं विरोधी हूं भासत है विरोधाभास है सब दानिनिके दानि याको अर्थ सब वस्तकैं देत
हैं ऐसो कल्पवृक्ष ताको दानी है हेम में दान नाम गाछिवेको भी हैं कल्पवृक्ष तराघनवा ताहैं
किं वा कल्पवृक्ष देवननिको दियो है प्रमान याको अर्थ जथार्थज्ञानको नाम प्रमा ताको
जथार्थज्ञान नहीं है केतनो गहिरो है केतनो ऊंनत है केतने जलजीव है इत्यादि के रिस इ
सब तीर्थनिसों अधिक है वड़ो है पुरानवचन है जेतने तीर्थ पृथ्वीमें है तेतने समुद्रमें है
औ अनंत व्यापक हिए जल है जामें औ अनंत जाके संग में जलचर सोहत है अथ मेघको
दूसरो अर्थ करनो याके लिए अन्वय कीजिए अनंत व्यापको अर्थ कियो अधिक सोहत
अनंत संग कको अर्थ जल अधिको अर्थ विषे व्याकरनरीतिसों अधिक हिये जल विषे अनं
त बहुत पारसी में संग नाम पाषानकौं है सो सोहत है सो मिवाय धर्म जवाहिरको है रत्न परी
क्षाकों दोहा मानिक मोती नीलमनि मरकत हीरा पाच अरु घ्यरत्न ए जानि एक है रामक
विसाव पुष्पराग गोमेद पुनि वैडूर्य जन्ह प्रवाल ए चारयौं उपरत्न हैं ग्रंथनि वरन्हैं रसाल ल
सनि औ नाम उ ए मनी आदि चौरासी जाति है सरन कहिए चलनो जो नहीं चलै सो अस
रन कहावैं नग अग असरन एक जानिए असरन जो है मैनाक ताको सरन इंद्र पर्वतनि
के पक्ष काटिवे लगे तब हिमालयको पुत्र मैनाक समुद्रमें भाजि गयो ताको निरक्षक है

क.
५९
99

निश्चय करिवैं अतिसय करिवैं रत्नाकर हैं औ निधान हैं निधि जामें रहति हैं जहां श्रीलक्ष्मी
नीर हैं तहां सव निधि रहति हैं हुतभुक वडवानल तामें जाकी हित मनि है जाके हियमें मध्य
में श्रीपति भगवान वसत है श्रीगंगाजी स्त्री है सो वहुत भावत है किंवा गंगाजी को समुद्र
वहुत भावत हैं जलरूप जो जगत सृष्टि ताको निदान आदि कारन हैं वरुनलोक में मूर्त्ति
मान जल रहत है अथ अमरसिंह पद्य परम विरोधी सत्रु किंवा चोर साहूकार ठगि औ
वटाऊ इत्यादि सो अविरोधी है को अर्थ देय कैं सवर हत है दाननि को दाता है चाकर सवर
न सौं पायकें औरनि देत हैं किंवा औरअर्थ करिए दाननाम रत्ननि को दानी जे हैं सज्जनलो
गपर की रक्षा करत हैं ताकौं दानी रत्नाकर है हेम में दाननाम रत्नको भी है किंवा दानि निज
दोपद हैं दानी में विक्रम भोज इत्यादि तामें यह नीकी आछो दानि है आदर कै देत है कवि
के सवक हत हैं पे कवि प्रमान हैं वडो ऊंचो जाको चित्त है ऊंचो चित्त सो मान औ अधिक है सव
राजनि में इनकी अधिकाई है इस्लिपातसाह की चाकरी नहीं करी औ पातिसाह पास वैठे
श्री आपु अनंत हैं जाकों अंत भेद पायो जाय नहीं किंवा सव राजनि तें अधिक अनंत पृथ्वी
हैं जाकौं ऐसो आपु हैं अनंत वहु लोग जाके संग में सोहति हैं संपत्ति वडाई पायकें आखेला
गत हैं किंवा अनंत लोग जाके संग में सोहत हैं असरन को अर्थ नहीं है सरन चलिवो आदि

५९

विषेंचोरऔलुटेराऔवटपारकेडरसेंऔसेसमरनिकेपच्छनिकेरछककहें ऐसोप्रता
पीहें दुर्गमपथमेंडरनहीं ऐसोनिधानप्रवीनहें हुतभुकदेवताहिविषेंजत्नादिकरिकें
हितकरिवेकीमतिइच्छाहें जाकीइच्छाकोभीनाममतिहें ऐसोश्रीसोभापतिप्रतिष्ठाजा
मेंवसतिहें हियमेंमनमेंगंगाजलकोजोनिदानआदिकारनधर्मसोजाकोंभावतहें
ऐसेजगकोनिदानआदिकारनश्रीभगवानसोजाकोंभावतहें पुरानमेंकथाहेंजववा
वनजीकोपावब्रह्मलोकगयोतवब्रह्मानेंधर्मकोंजलकरिवामनजीकोपावधोए।
वहजलश्रीगंगाजीहें २१ अथचतुर्थदानवारिसुषदजनकजातनानुसारकरषतप
नुगुनसरसुहाएहें नादेवछ्यकरकरमहूरनषरदूषनकेदूषनसुकेसोदासुगा
एहें नागापरप्रियमानिलोकमातासुषदानिसोदरसुहायकनवलगुनभाएहें ऐ
सोराजारामव्रजरामकिपरस्यामकेसोदासराजारामसिंहउरआ एहें २२ अथच
तुर्थदानवारिइति ऐसोराजारामव्रजरामकिपरसरामकेसोदासराजारामसिंह
उरआएहें जोआगेंविशेषनदेहिंगेंताहिविसेषनकरिकें ऐसोराजारामश्रीरामचंद्र
जीहें किधोंव्रजराजवलभद्रजीहें किधोंपरसरामजीहें किधोंबांधवकोराजाराम
सिंहजीहें यहकेसोदासकेउरमेंहृदयमेंसमानआएहें कहूंऐसोपाठहें ऐसोराजारा

क॰
१००

100

मत्रजरामकिपरसरामकिधौंअभिराममबलिरामउरआएहैं कहूंपाठहैंऐसोरा॰
जारामबृजरामकेंपरसरामके धौंकेसोदासस्यामरामउरआएहैं श्रीरामचंद्रजीके
सेहैं दानवकेअरिकिंवादानवहैंअरिसत्रुजाकोऐसोजोइंद्रताकोसुषदाताहैं जन
कजातनानुसार नृवराजनिसोंधनषनहीटूट्योतबजनकजीकोमनोदुषभयोसो
कहतहें जनकजीकोभईजातनाथीउतताकोअनुसारपायकेंजानिकें करषतधनु
गुनतवधनुषकेगुनकोंषेंचतहेंतोरिवेकेलिए फेरिसरससुहाएहें सवराजाहू
तिगएयातेंसरसअधिकसोभितभएहें किंवाजनकजासीतातिनकेतनसरीरताको
अनुसारअनुकूलहोयकें किंवाजनकजाकेतनकहिएओरअनुसारकियेंफिरसो
ताजीकेदेषतयहअर्थधनुगुनषेंचतहें फेरि नरमनुष्यओदेवताताकेत्रासना
करिवेकोहेंकर्मक्रियाजाकोऐसोजोरावनताकेहरनहेंमारनवालेहें ओषरदूषन
राक्षसताकेदूषनहेंदुष्टहेंमारनवालेहेंयाचानकोसुंदरीतरह केसवदासजोवा
ल्मीकआदिमुनिहेंतिननेंगाएहें फेरि नागधरप्रियमान नागनामश्रेष्टकोभीहें
नागश्रेष्टजेपुरुषहेंधरकोअर्थधराएसीताहिविषेंरामचंद्रजीकोप्रियमाननहें प्रि
यमनऐसोभीपाठहें धराविषेंश्रेष्टपुरुषकेमनकेप्रियहें लोकमातालक्ष्मीकिंवाति

१००

नकेअवतारश्रीसीताजीताकोंसुषदाताहैं सोदरकोअर्थभाईलीजिए एकउदरसों उपजेऐ
सैंअर्थनहीं लीजिए सोदरलछमनजीतिनकोंजबरावनकेहाथकीसक्तिलगीतबसजी
वनिमेंगायसहायकियारछ्याकरी राजाभाईकोंनहीचाहतहैं यहनवीनगुन किंवानि
कृष्टजीवगीधताकोंमुक्तिदीनीवनचरनिकृष्टतासोंमित्रतासवरीकेवेरषाएइत्यादिजेअ
धमोद्धारनवनवीनगुनसोंभक्तनिकोंभाएहैं अथव्रजरामश्रीवलदेवजीकैसेहैं दानवा
रिअरुकंसतिनकैकोंसुषदहैंकिंवादाननामकाटिवेकोंहैं यातेंमारिवोलीजिए तासोंजोवा
रैरोकैरछ्याकरैं सवलसोंनिवलकोंमारिनहीं पावैंइन्द्रव्रजपरवीजुरीचलाईभगवानब्रज
वासिनिकीरछ्याकरी दानवारिकंसताकोंसुषदहैं जनकवसुदेवजीतिनकोंकंससोंभ
ईजातनापीडा तासोंअनुसारअरुकठोरजानोहैजाकोंदेवकीजीकेगर्भसोंरोहनीजीके
गर्भमेंभए करषतधनुगुन हेममेंधनुनामवित्तकोंअरुगोधनकों ककहिए सुषसोंरा
षतहैं व्रजमेंचरावतिहैं धनुगायनिकों जाकेगुनसरसअनुरागजक्तजेहैंभक्ततिन
कोंसोहाएहैं पेकिंनरअरुदेवताताकोक्षयनासकोंकरैहैंअैसोजोकरमपापताकेहरन
वालेहैं किंवानरकोरुक्मीताकोंदेवकहिए क्रीडामेंउपनासकोंकरैंअैसोजोकर्मप्रहारता
केहरतेहैं पहुचावनवालेहैं हरननामपहुचाइवेकोंअरुचोरीकोंअरुविनासनकोंरुकमी

क॰
१२

|0|

कौंचोपतिखेलतमारेहै। फेरिखरदूषनकेदूषन तालवनमेंगदहाकोरूपधरेंअसुरवडु
तधेनसरदारकोनामधेनुकथोखरजोदुष्टताकेदुषहैं केसोदाससगाएहै याकोअर्थवडु
तजेगायेहैंतिनकेकेसवभगवानदाससेवकभएहैं गायनिचुराएहैं यातेंकेरिनाग
धरप्रियमान श्रीवलदेवजीकोअवतारसेषनागहैभक्तकहतहै लोकसेषनागको।
अवतारकहतहै नागकोजोधरसरीरताकौंप्रियमानतहैं प्रभासक्षेत्रमेंअंतर्धान।
लीलाकरीहैतहांसर्पकोरूपहोयसमुद्रमेंजातरहेहै हेममेंलोकनाममनुष्यकोओ
मातानामपृथ्वीकोलोगनिकौंअरुपृथ्वीकौंदूषदाताहैं भूमिकोभारउतारेहै ओभू।
मिकौंलिएरहतहैं सोहरदोयपदहै सोवलभद्रजीदवनामत्रासकोहै त्रासनुपरेंसहा
यकरतहैजोकोईउनकोंस्मरनकरें फेरिनवलहैनवीनअवस्थाजाकीसदाहै फेरिनु
नकहिएसोंदर्यादिभाकहिएप्रभा एदोयपदार्थजामेहैं परसरामजीकैसेहैं दानवा।
रिसुषदजिनकौंसंकलपकोजलब्राह्मननिकौंसुषदहै जनकजमदग्निजीतिनकौंभ
ईजातनापीडा कामधेनुलेतकेंसहस्त्रार्जुनसों ताकेअनुसारताकौंपायकेंजानिकें
धनुषकेगुनकरषतहैंधनुषपेंचढावतहैंलरिवेकेलिए रसजोरौद्रतादिसहितसोमि
तभएहैं किंवाकरषतधनुधनुजोगायताकोंकरषतकेंषेंचतकें तवसहस्त्रार्जुनषेंचि

१९

101A

वजा

कैंलेचलैयोनवजनवृजमहिगिरिजीतिनकोंजोभईहैजातनायीहूतासोंद्रोमसयेथोसोगा
यहमारीलियजातहैयातेंपीडाताताकोजोअनुसारविचारकरिकेंगुनजोहैं [illegible] देष
उनेंमारिवेकीइछाम्नघपैलालीछाईहैजासोंसरसअधिकसोहापहैं हेमसेंधननाम
गोधनकोभीहैगोधनमायजोधनवेनुवेगोधनचरैंनामदेवकोस्वामीआनंदकरैं ने
रीगलीनिहैजादिननैंतनिकसोमनमोहनगोधनगावत हेषचों सगुनमेंहैं अनुसा
रविचारकोंभीकहतहैं सवरातिनिअनुसारिसयकमनकीजेसवगुनरूपनिधानगोविं
दहितीजैं फेरिनरदेवराजाताकेक्षयकरैहैं नासकरेहैं करमसुभअसुभताकेहरन
हारेहैं सुभकर्मसोंस्वर्गअसुभसोंनरकहोतहैंताकोंहरनहारेहैंमोक्षदाताहैं यहअर्थज
वताईपुन्यपापपरहैंतवताईमुक्तिनहीहोतिहैं किंवानरदेवजोराजातिनकोक्षयकारी
जोकर्मअसुरसमूहहारताकोहरनअंगीकारहैंजाकोंअवमेंनिक्षत्रियमेदिनीकरीगो
यहप्रत्याज्ञाकरीहैं फेरिपरतीछनजेदोषगुरुकेअपराधकरैंइत्यादिताकेउपरैंदूर(
करनवालेहैं फेरिनागधरसिवताकेप्रियमानो लोकमातापार्वतीताकोंसुषदाताहैं ।
सिवगुरुहैंपार्वतीगुरुपत्नीहैंयातें सातमाताकहीहैं ब्राह्मीमाहेस्वरीकोमारीइत्यादि ।
माहेस्वरीपार्वतीलोकमाताजानिए फेरिसोदरभाई [illegible] ताकोसहायकर्तानहीहै ।

वी

जाके बल औगुन भाए हैं सज्जननि कौं राजा पद्म दानवारि देवता ताकौं जज्ञ दान करि सुष
देहैं कुत्सित जो जन न लोग सो जनन कहावत है व्या[illegible]करन रीतिसौं जातक हिए समूह
जनन कौ बुरा लोग ता कौ ज्ञात समूह ताको ना कहिए नहीं हैं अनुसार उनके संग लोग जो
उनके पीछे चलैं नो जाहि राजा कौं बुरे लोगनि के जो धन के गुन मद ताकौं करषत हैं षे
चत हैं धन मद नाहीं राषैं किंवा करविशेषत कहिए छूत हैं धनुष के गुन को जाकौ धनुकी
प्रत्यंचा कौ वाम हाथ मैं चढ़ाए रिजात है रसना महेममैं पराक्रम कौ भी हैं पराक्रम सहित
सोहत हैं नरनि मैं देवता ब्राह्मन तिनको कर्म जप होमादिक ताको क्षय नास करिवे कौ क
मर है जा दुष्ट लोगनि कौं ताको दूर नहे मारन वाला है फेरि दूषन के दूषन श्री रामचंद्र जी तिन
कौं के सवद्रा सजे वे सव सा होय कैं कै तिन मैं वैठि कैं गाए हैं फेरि नाग हाथी ताके धरन वाले
पकरन वाले जे लोग ताकौं प्रियमानत हैं और आपनी माता कौं सुषदाता हैं सोदर भाई कौ त
रह पजा कौं सहाय करे हैं भाई जैसैं वेगि सहाय करैं फेरि नक्षत्र गन नवीन जे पुन औरसौं औ
रि राजनि मैं नहीं नए तरह के गुन सों सोभत हैं चौथी लक के पाठ और तरह पोथिनि मैं हैं एक
पाठ लिख्यो है यौं है अमरसिंह मेरे डर आए हैं जो अर्थ राजा रामसिंह कौ कियो है सोई अम
रसिंह पै लगाइए जहूं ऐसो पाठ है ऐसो राजा राम ब्रजराम कि परसराम कि यौ अभिराम

वलिरामउरआपुहे राजारामश्रीरामचंद्रव्रजनरामश्रीकृस्नओपरसुरामऔवलभद्रजी
यापाठमेंअमरसिंहरामसिंहनहीं श्रीकृस्नचंद्रपछलगावनोहे कहूंपाठहे ऐसोरा
नारामव्रजनरामकैंपरसरामकेथैंकेसोदासस्यामरामउरआपुहे केसोदासएकवार
आयोहेफेरिचरनपूरनार्थ इहांस्यामश्रीकृस्नचतुरर्थसेंपंचार्थभयो श्रीकृस्नप
दादानवारिसुखद दानवजेनरकासुरआदिसोफेरिवेसहें भगवानकेअरिसत्रुहेंति
नर्वेभगवानसुखद सुषकोअर्थसुंदरगोषनामआकास जाकोंपरमव्योमकहत
हैं जाकोंअलसहदकहतहें ग्यानीजहांमनहोतहे सिद्धलोकहेंसिद्धाअहासुषमआदे
साअहस्सिनाहता: याकोअर्थ सिद्धवृजसुषकोंप्राप्तहोतहेंओभगवानकेमारेहेंसप्रा
प्तहोतहें दानवजेअरितिनाकोंसुषपरमव्योमदकोअर्थदेनवालेहे किंवावारिजसेनाज
लतहांकोदानजगानसोजाकोंसुषदहे जमुनामेंनावचलावेंहें व्रजदे विनिसोंजगा
तलेतहें किंवावरसानेपासचारीहे उहांव्रजदेवि निसोंदानलीलाकरतहेंदानलेनेकी
जोवारिभूमिचारीसोजाकोंसुषदहे हेममेंवारिनामभूमिकोभीहे जनकश्रीनंदजीति
नकोंवहनकेहूतलेगएतवभयोनोइष्पतवउनकोअनुसारकियोपीछेंगए करषत
पनु गुन पननामसषीकोंहें प्रमानसीतकोसंतापोधनरासिमेंपरतहें इससेअर्थमेंसषी

क॰
१०३

103

कौंकरतहैं धनव्रजदेवीनाहिसबकौंअपनेसौंदृष्यादिगुननसौंकरषतहैं षेचतहैं पति।
सौंप्रेमछुडायआपनेवसकरतहैं रसश्रृंगारताहिसहितसोहायहैं नरनिमेंदेवताजे।
हैं श्रीनंदजीइत्यादिब्रजकेअवतारहैं किंवानररूपजोदेवतागोपश्रीभागवतमेंकंससौंश्री
नारदजीकोवचनहैइत्यादिजेव्रजमेंगोपहैं औउनसबकीजेस्त्रीहैं तिनैंदेवताजानो छेय
नामसवरभीहैं गोपनिकेघरमेंकंसकौंकरदेनेकौ जोकर्मक्रियाथीताकेहरनहारहैं
वरिबसौंधिंनदादिगोपकंसकौंकरदेइ इयेकंसकौंमारयौतबसौंमिटिगयौ नंदादिके
घरसौंकरजानोयासौंछुडाये तालवनमेंषरजोदुष्टताकेदुष्टहैं केतनेषरकौंइनभीमार
केतिकेसोदासनापहैं हेताकेसबभगवानतिनकौंलोगनिदासगायोहैदासकह्यौहैं।
यासनामधीवरकौहैं श्रीजमुनाजीमेंनावचलायोहैतासौं किंवाससारसमुद्रकेपार
करतहैंयातेंपदहै साध्यकरिरघुनाथकेवदपूरोहैं कतहरिगीताकेआदिमेंश्लोकहैतहां।
कैवर्तःकेसवः फेरि नागजोकालीताकोधरनवालेहैं औप्रियमान मानजोवडाईसो
ताकौंप्रियहैं भक्तस्तुतिकरतिहैंसोजाकौंप्रियलागतिहैं किंवानागसेषनागतिनकौधू
रसरीरताकौंप्रियमानतहैं सेषनागपैसोएहैं लोकमातालक्ष्मीसोजाकौंसुषदायकहैं
किंवाताकेसुषदायकहैं किंवावामनरूपकरिलोककेमातहैंनापनवालेहैं औरूप

को

दा

१०३

दहैं सोदरबलभद्रजीतिनकेसहायकहैं किंवाउद्धवनामहेमेमेंरनकोभीहैं उदरललराईताहिं

तेवर्तमानअर्जुनआदि भारतमेंताकेसहायकहैं नवीनगुनसेंभाएहैं किंवाछोटरभाई

इनकेकंसनेंमारेतिनकीसहायकरी फेरिलेआए देवकीजीकेललनपानकराएकृतक्रकिए।

नकारइहांकाकुस्वरसेंपठिए नवलगुनभाएहैं याकोअर्थ बलदेवजीकेगुनप्रलंबआदिको

मारनोसोजाकोंनभएहैं भाएहैंयहअर्थ किंवानवलनवीनस्त्रीताकोंजाकेगुनभाएहैं ३२

अथपंचार्थ भावतपरमहंसजातगुनरूनिरूपपावतसंगीतमीतवेवुधवषानिए सुघटसुक

तिपरसमरसनेहीबहुवदनविदितनमसकेसोहासगानिए राजेंद्विजराजनृपदभूषनविमलकम

लासनप्रकासपरदारप्रियमानिए ऐसेलोकनाथकेंत्रिलोकनाथकेयोंनाथनाथराजाराम

सिंहजानिए ३३ अथपंचार्थभावतइति एजोविसेषनसोंएतनेजानिए लोकनाथब्रह्मादिक के।

त्रिलोकनाथश्रीकृष्णचंद्रहैं कैश्रीरघुनाथजीहैं कैनाथनाथदिसापालनिकेनाथमहादेव

जीहैं कैराजारामसिंहहैं यहजानिएहैं ब्रह्माकेसोहैं भावतपरमहंसजात परउत्कृष्टहंस।

पक्षीविशेषताकीजोजातकहिएजातसोजाकोंभावतहै वाहनहैंयातें किंवापरमकोअर्थ

परश्रेष्टमालक्ष्मीहैजिनविषेहरिकेवक्षस्थलमेंलक्ष्मीरहतिहैं ऐसोपरमजोभगवानसोहं

सहंसकेजिनब्रह्माकोंजातकोअर्थपामभएसोजिनिकोंभावतहैंसोहातहैं श्रीभागवत

सह

रघुनाथ

को

क॰ ॥
१०४
104

मैंकह्याहैसनकादिनेब्रह्मासौंप्रस्नकियतवब्रह्माकौंउत्तरनदीआयोतवहंसरूपधरिकैंभग
वानआयकैंउत्तरदियो पहिलापद्यमेंहंसजातकोगुनसहूतताकोंसुनिकैंसुषपाव
तहैं दूसरापदमेंभगवानकोगुनहंसरूपजोभगवानआएसोकहिवेलगेतवबसो
सुनिकैंसुषपावतहैं फेरिसंगीतमीत संकोअर्थआछीतरहगीतगानहैंताकौंऐसो
जोवेदसोताकोमीनहितहैविवुधवषानिए औविसेषकरिकैजाकौंबुधकविवषानेहैं श्रीभा
गवतकेप्रथमस्लोकमेंब्रह्माकौंआदिकविकह्योहै कविनामपंडितकोहै हेममेंवुद्धनाम
कविकोभीहै फेरिसुषकीदेनहारीजोसक्तिसामर्थ्यताकोंधरनवालेहै ब्रह्मासौकोईजो
सुषचाहततहैसोईवरपावतहै फेरिसमरसकहिएएकरसनदीकोअर्थप्यारकरनवाले
हैं ब्रह्माकीसमानप्रीतिसवसोंहै कोईसुषीकोईदुषीसोआपनेकर्मसोंहै फेरिवहुवद
नहैं चारिजाकेवदनमुषहैं औविदितप्रसिद्धजाकोजसहै यहकैसोदासकविनेगायोहै
किंवावहुतवरनविषेविदितप्रसिद्धजसहैकेसवकोजाकोंऐसोब्रह्माहै सवसुषसोंभग
वानकोजसकरततरहतहैयहअर्थ दासगानिएयाकोअर्थहेममेंदासनामधीवरकोऔ
भक्तकोऐसोशूद्रकोऔदानपात्रको याबातकौंदासकहिएदानपात्रउत्तमब्राह्मनतातेंगाए
हैं सुनिनिकह्योहैयहअर्थ फेरिद्विजपक्षीताकोराजाहंससद्विजनिविषेसोभतहैयातेंद्विज

104A

राजहंस द्विजराजएंजाकेंपदचरनसोभूषनसारीषोराजतहैंमानोंपीठिकोभूषनहैं फेरि
विमलजोकमलसोजाकोआसनप्रकासजाहिरहैं किंवाप्रकासभयोहैफूल्योजोविमल
निर्मलकमलसोजाकोआसनहैं फेरिपरमश्रेष्ठसारसुतीब्रह्मानीताकेप्रियमानिएहैं त्रिलो
कनाथश्रीकृस्नकैसेहैं भावतपरमजाकों भाकहिएकांतिसोरहैहैजामेंसोभावतसूर्ज
आदिकनिमेंपरमहैश्रेष्ठहैं सहस्रनाममेंकोटिसूर्जप्रतीकासनामहै फेरिहंसज्ञातगुन
सुनिसुषपावतहैं हंसनामसूर्जकोतिनसोंज्ञातउत्पन्नश्रीराधिकाजीतिनकेगुनसोंदर्यादि
सोसषिनितेंसुनिकेसुषपावतहैं वृषकेसूर्जकेअवतारवृषभानुजीहैंयहपुरानमेंप्रसिद्ध
हैं सूर्जतपस्याकरीजाकेवसश्रीकृस्नहोहिऐसीमेरेकन्याहोय किंवाहंसज्ञातहीजमुना
जीसोजाकेगुनकोंसुनिकेंसुषपावतहैं श्रीजमुनाजीकीउत्पत्तिसूर्जसोंहै फेरिसंनामसुष
कोजाकोसुषदायकजोगीनगानसोंज्ञाकोंमीतहितहै ऐसोजोविबुधदेवतासोवषानतहैं
तारीफकरतहैं किंवामीतहूयारहै विबुधदेवताजाकेऐसीजोअप्सरासोजाकोसंगीतगां

उत्तमगीत

नताकौंवषानतिहैंकरतिहै फेरिसुषदसक्तिजोश्रीराधिकाजीआह्लादिनीसक्तिहैंताकोंधार
नकरतहैं किंवासुषदसक्तिलछमीजीसोहैधरसरीरविषेंजाकें हैमनैंसक्तिनामश्रीकोभीहैं
फेरिसमरकामताकेसनेहीहैं वह्योजोकामताकौंउपजायोहैयातें फेरिबहुवदनविद्रुत

हैंवदनमुषजाकेंअैसोजोसेषनागसोजाकेविदितप्रसिद्धजसताकोंगानिए एकोअर्थ गवद्दे
याहीहैं केसोदासकविकहतहैं किंवावहु[illegible]कहिए वधूस्त्रीजनजाकेवदनमुषविषैविदि
तहैंजसजाकौ केसोदासकोअर्थपीछिलामेंकरिआए इहांकेसोदासकविकहतहैं।
मानिए पेविदेसमेंद्विजनामब्राह्मनक्षत्रियवैस्यकोभीहैं एदनामरक्षाकोआसहैको
भीहैं द्विजराजक्षत्रियराज यहपदएसाहै जाकोंराजैहैसोभेहैं किंवाद्विजराजनाहड।
ताकेपदचरनकमलजाकोराजैहैंसोभेहैं पेविमनिसक्ताआदिवनमालाआदिजेभूषन
विमलसोजाकोराजतहै पेविक्रमलाआदिपरदारकोविसेषनहै परदारपरस्त्रीव्रजदेवीस
[illegible]वपरदारकैसीहैंकमलाहैवारांगनाहैं पेतिसनकहिए उत्तिमहैंप्रकासअंगराकोउजास
जाकोंताकेप्रियमानिएहैं किंवमानिए याकोअर्थ एश्रीकृस्नमानीहैं नायकभीमानी
होतहैं सठकोप्रभेदहै हमारोकियोसभाप्रकासमेंहैं किंवाकमलासनजोब्रह्मातिनको
प्रकासउत्पत्तिहैंजाहिश्रीकृस्नतें परस्त्रएरारहतिमिनीआदितिनकेप्रियमानिए
हैं श्रीरामचंद्रजीकेसेहैं परमहंससनकादिऔरसुकदेवआदिजोगीस्वरतिनकोजात
सच्चहत्ताकोभावतहैं रामकोअर्थभीहैं जोगीजामेंरमैंसानंदहोयसोरामरूपरसरसा
दिचौवीसगुनहैं जिनरामजीकेगुनकहिए रूपसोरूपनिवैस्वषपावनतहैं संगीतमीत

विबुधसंगीतकेमीतगंधर्वकिंनरदेवतासोजाकौंवषानतहैं उनकेगुनकौं श्रीरामजीश्र
वनकरतहैं किंवाजाहिरामचंद्रजीकौंहंसजातहूजेवंसीसोपरमअनुभावतहैं किंवाअंस
तहूजेवंसितिनिकौंभावतहैं फेरिसंकहिएअछीतरहगीतगानहेंजाकोऐसेजोअसमोतहैंजाकौं
फेरिजाकौंविबुधदेवतावषानतहैं किंवाविनामपछीकोताकोमेंबुधकहिएपंडितज्ञानीऐसे
जोकाकभुसुंडिसोजाकौंवषानतहैं रामायनगरुडकाकभुसुंडकोसंवादहै किंवाहंससहूजे
तिनसौंजातउतपन्नजोअस्विनीकुमारतिनसौंपरमउत्कृष्टभावतहैं कांतिमानहैं भाकांतिसो
जामेंरहेसोभावतकहिएफेरिसंअछीतरहगानकहिएभक्तनिनेगीततताकौंसुनिकेसुषपा
वतहैं फेरिवीकोअर्थविनष्टहैं बुद्धज्ञानजाकोऐसेजेलोगसिलागीधसवरीवनचरइत्यादिसो
जाकोमीतहै याबातवषानिएहैं अधमोद्धारनलोगकहतहैं फेरिसमरसहूताकेमेंसुषदयाको
अर्थसुषकौंजोकाहेंसंसारसुषकोंजोछोडावैंऐसीजोसक्तिवरछीरावनकीचलाईताकोंआप
नेवक्षस्थलपरधारनकरनवालाजोलक्ष्मनजीताकेसनेहीहैंप्रियहैं किंवासुषदशक्तिजो
श्रीहैसमैंसक्तिनामश्रीकोभीहै सोरहतिहैंपरमसरीरविषैंजाकेंवक्षस्थलविषैंलक्ष्मीवसत
हैं समरयाकोअर्थ समनामसबकेभीहै रकोअर्थव्याकरनरीतिसौंदेनवालोसमकहिएस
बपदार्थअर्थधर्मकाममोक्षतिताकौंजोदेइसोसमरकहावै समरहैंसववस्तुकोदाताहैं ओसने

मी

होहैं सबसों प्रीति करतिहैं फेरि बहुवदन रावन ताकरिकैं विदित जस हैं जाको रावन के मारिवे
केलिए देवतनि प्रार्थना करी तब रामजी प्रगट भए फेरि पदनाम हेम में पावकी निसानी को।
भीहैं जाको हिरनराज भए तातें चरनकी निसानी विमल भूषन उर्वसी ताहि सारी धारी जैहैं
सोभै हैं दोहा ह्मा वडनिकों उचित है नीचनिकों उतपात कपार भृगुपतिको छूटिगयो जोभए
गुमारी लात। फेरि कमल जलता को असन भोजन है जाको ऐसे जे जोगी जो जल पान
करि रहत हैं ताकौं दें प्रकास जाको श्रीरामचंद्रजीकों देखत हैं फेरि पर अग्रदार स्त्री श्रीसी
ताजी तिनके प्रिय मानिए हैं किंवा नरसिंह अवतार करि परसत्रु हिरण्यकस्यपु ताको दारफा
रिवो ताकौं प्रिय मानत हैं हिरनकसिपु की आंतरी को दिगला में पहिरलिए नाथ ना थासिव
हैं सें नाथ हिसापाल ताके नाथ सिव हैं भावत परमहंस जाको तपत पस्या ताको भाव क्रिया
हैं भावनाम क्रिया को भी है रमैं है सानंद होत हैं हंस परमात्मा विषें जटिल है नग्न हैं भस्म लगा
ए हैं समाधि लगावै हैं इत्यादि तपस्या की क्रिया करि परमात्मा में रमें हैं रमे को रस ऐसो।
पढ़ो जैसें विहारी उन दोहा अरथियां ककै कें अलसों ही देह कैं कै की ठा रक कैं पढ़ो तैसें इ
हां भी जानिए फेरि जातक हिए जाति आगुन सब रज तम रनिकरि सत सहै ब्रह्म है पहैं औ जा
सों लोग ब्रह्म सुख कौं पावत हैं औ संगीत जाको हित है सिव आपन स करत हैं संगीत ताडव नस

सिवप्रोक्त है औ जाकों विबुध विशेष लोकिक ज्ञान करि विदित बषानिए है भोलानाथ कहिए है भो
ले कै पायो है कंनह मार धनूर निहै धनल हिलियो है फेरि सक्ति धर कार्त्तिके पिता को सुषद है किं
वा सुषद सक्ति पार्वती ताकों वाम अंग में धरे है फेरि समरस सांत रस ता को नेही है सांत रस भावे है
फेरि बहु वदन विदित है प्रसिद्ध है पांच मुष है जाको जस गायो है किंवा बहु वदन कार्त्तिकेय तिन
नें जिनि महादेव को विदित जस ताको गान करे है फेरि द्विजराज चंद्रमा ताको पद स्थान है फेरि सोभ
त है फेरि विमल विनष्ट होत है मल पाप जाते ऐसी जो विमल गंगा जी सो जाको भूषन है किंवा द्विज
राज जो चंद्रमा ताको जो पद रक्षा सो जाकों विमल भूषन है आपने माथे पें जो चंद्रमा है ताकी रक्षा
राहु सों करत है ता द्विसा राजत है फेरि कमलासन पद्मासन सो जाको प्रकास है सब जानत है किंवा
कमलासन ब्रह्मा तिनसों प्रकास उत्पन्न है जाको फेरि परम श्रेष्ठ जो दार स्त्री पार्वती ताके प्रिय मानि
ए है किंवा परदा भिन्न पद र भिन्न पद पर कहिए श्रेष्ठ जो पदार्थ अर्थ धर्मादि ताको दाता है यह परदा को
अर्थ संभु सो नाम अग्नि कों है ताको प्रिय मानिए है तीसरो नेत्र अग्नि है अब राजा राम सिंह के सो है ।
जो सब क्रिया को छोडित पकै रे सो परमहंस सो जाकों भावत है किंवा परमहंस भगवान सो जाको भा
वत है औ आपुनी जान के गुन सुनि सुष पावत है किंवा जात कहिए उपज्यो है गुन द्वेष जाको राजा कौ
कोई दुष्ट भयो है या वातकों सुनि के सुक कहिए आछी नरह सो [illegible] षपावत है मारि डारत है चोवीस गु

क॰
१०७
107

नमे द्वेषभी है किंवा परश्रेष्ठ जो है सब्य अक्ष सो जाकौं भावत है फेरि जात उपजै सो है गगन या ग्राम में यावा
नकों सालिहोत्री सो स्तुति कै सुष पावत है इस में इस नाम ग्रंथ कौ भी है फेरि संगीत मीत संगीत सा स
सो है हित जाकौं ऐसे जे विबुध पंडित किंवा विशेष है ज्ञान जाको ऐसे जे नर्त्तक सो जाकौं वषानत है
राजा कौं संगीत के समझवार कहत है किंवा संगीत मीत जो विबुध है वृत्ता श्रीकृस्न किंवा महादेव तिन
वषानत है तिनकी स्तुति करति है ऐसी तीनि सक्ति है प्रभाव सो उपजै औ उत्साह सो उपजै औ मंत्र सो उ
पजै एतीनि सक्ति सुषद ताको धरन वालो है किंवा प्रजा कौं सुषद है औ सक्ति वरछी ताको धरन
वालो है समर जहू ताको सनेही है जहू जाकौं भावत है फेरि बहुत लोगनि के वदन कहिए एक
हु तो तातें विदित प्रसिद्ध है जस जाको वदन नाम कहिबे को भी है के सोदास कविनि गान किए है ।
फेरि द्विज राज ब्राह्मन श्रेष्ठ ताको जो पद पालन सो है विमल भूषन तासों एजै है किंवा द्विज
क्षत्रिय जो राजा तिनको पदस्थान जहां राजत है राजा सब चाकरी करिबे के लिए ग्रांड छां मे
हरवना ए है जैसे दिल्ली मैं सब राजनि की ठौर है सो पद के सो है जा मैं भूषन कहिए भूमि
के षाला यरना को तहषाना कहत है सो जामें निर्मल है फेरि कमला लक्ष्मी ताको जहां प्रकास है
बहुत संपत्ति देषिबे में आवति है फेरि परदार द्वारपाल ताकौं प्रिय मानत है विश्वास को जाति
कैं कहूं अमरसिंह जानिए ऐसो भी पाठ है तहां यही अर्थ अमरसिंह कौ कीजिए २२ अथ

८

१०७.

श्लेषभेद तिनमेंएकअभिन्नपदऔरभिन्नपदजानिश्लेषसुबुद्धिहुवेषकेकेसोदासवषा।
नि अथश्लेषभेदतिनमेंइतितिनसाधारनश्लेषमें एकभिन्नपदहै एकअभिन्नपदहै श्ले
षसुबुद्धिहुवेषहेसुबुद्धिहोयतबहकेश्लेषहै ३७ अभिन्नपद सोहतिसकेसीमंजुघो
षारतिउरवसीराजारामसोहिवेकोंसुरतिसुहाईहैंकलरवकलितसुरभिरागरंगजुत
वदनकमलषटपदछविछाईहैं भ्रकुटीकुटिलधनुलोचनकटाक्षसरभेदियतनम
अतिसुषदाईहैं समुदितपयोधरदामिनीसीनाथकाकामकीसीसेनाकामसेनावनिआई
हैं ३८ अथअभिन्नपद सोहतइति जहांएकहीसबदअर्थहोय सबदअर्थकोभेदनपरतोहो
यहोऊपक्षमें तहांअभिन्नपदजानिए नाथनायकताकेसाथमेंकामकीसेनासारिषी
कामसेनाजोहैताइकासोवनिआईहैं जैसेंदानवारिइत्यादिमेंदानवपदाथजुदाकिया
हैं अरिपदजुदाकियाहै पैरिदानवजुजुदोवारिजुदोकियाऐसैंइहांनहींहै कामसेनाकेसी
है सुंदरलावेकेसहैजाके ऐसीअपसराहै ताकेससहसुंदरकेसहीकोकहतहै उहांअ
पसराकोविसेषनहोतहै इहांनाइकाकोविशेषनहोतहै औरताकेसबदऔरतिअर्थक
रिएकठौरमेंविसेषनहोइतोभिन्नपदहोयजायसोइहांनहीहै ऐसेंमंजुसुंदरघोषस
हहैं जाकौंरतिप्रीतिहैयामेंभीप्रीतिहैं उरवसीकोअर्थभाषामेंउरमेंवसी ऐसीवहभीहै

साथ

क॰
१०८

108

किंवा रतिप्रीति करि उरमें वसी है कलरवअवक्रममधुरधुनिजुतवद भी है यह भी है वाके
वदनकमलपरषटपदभौंराकी छवि छाई है याकेभी कछ्वैप प्रमुदित पयोधरकुचउ
नकेंभी याकेंभी इहांमेचकोअर्थनहीलेनोभिन्नपदहोयजाय दामिनीवीजुरीसारी
बीवहभीयहभी २४ अथभिन्नपद पदहीमेंपदकाहिए ताहिभिन्नपदजानि भिन्नभि
न्नपुनिपदनिकें उपमाश्लेषवषानि २५ अथभिन्नपद औउपमाश्लेष पदइति यामें
होयलछनहै हेममेंपदनामसहुकोऔवस्तुको एकसदृमेंदूसरीवस्तुकाहै ताकोंभि
न्नपदजांनैं केतिएकपदकतिपदनिकोंभिन्नकरैं उपमादेइ सोभिन्नपदमें उपमाश्लेषक
होवै उपमादेहिलीदीपकन्यापकरिहोयवारलगाइए २६ वृषभ वाहितीअंगाउरवा
लाकिलसतनवीनंसिवसंगसोहैसर्वदासिवाकिरायप्रवीन २७ वृषभइति वृषभसह
वैलकोंकहतहैं तामें दूसरीवस्तुधर्मनाकोंकाढ्योभिन्नपदभयोविनांतारेएकहीपदको
होयभेदकियो २७ उपमाश्लेष रनैरजकेसोहासहूटतअस्हनलारप्रतिभटअंकनोते
अंकपसरतहै सेनासुंदरीनिकेविलोकिनवभूषननिकिलकिलकिजाहीताही
कोंधरतहै गाहेगाहवेलहीविलोननिमेंतोतरडारैंजगजयजसचाहत चंद्रकोंअरतहै
चंद्रसेंनभवपालअंगनविसालरनतेराकरवालवाललीलासीकरतहै २८ उपमा

१०८

108A

श्लेष रंजेरजइति हेचंद्रसेनभूमिपाल विसालवडीजोरनभूमिसोईआंगनहेंतहांतेरीकर वालतरवारसोवालककीलीलासीकरतहैं ॥

विसालरनमेंआंगनहैंअभेदकरिएकक्रिया यापदकों फेरिभिन्नक्रिया करवालविसालरनमेंलीलामातिवोहप्रक्रियाकोंकरतिहैं वालकआंगनमेंविलासकरतहैं लीलानामविलासकोंग्रोक्रियाकों रंजेरजरजजोरजोगुनसो रजधूरिहैं फेरितरवारमेंरजोगुन वालकपक्षरजधूली सर्वत्रएककरिभिन्नकरनो अहनहुधिरतरवारतेंछूटिपरेहैं इहांअषतेलार प्रतिभरभरभरमति इहांग्रकनितेंआरनिकेंअकपसरतहैंजातहैं पसरतअसोपाठतोपसरिजातहैं फेरिसेनासोईसुंदरीहै ताकेमुषभूषनकोंविलोकिकें सेनाकेमुषदेषिकेंसुंदरीकेभूषनदेषिकें तरवारकिलकिकें चमकिकें वालककिलकारीकरिकें फेरिगाहेंजेगढहेंतेषलवेकूषिलोनाहैं तरवारनेंगढतोरे वालकनेंषिलोनांनातोरे तरवारजयकोंपावें वालकजसकोंपावें वालकपरिमेंलोटेषिलोनानातोरेंतोलोगववोनहीकहें स्यावासीदेतहैं तरवारचाहअाछेमेंजोधातामेंआवेहैं हठहैं वालकचंद्रमालेनकोहठहैं ३८ वहुत्योएकअभिन्नक्रियाअविरुद्धक्रियआनरुनिविरुद्धकर्माअवरनियमविरोधीमान ३९ वहुत्योइति पांचभेदश्लेषकेफे

क॰
९९
109

रिकहतहैं एकअभिन्नक्रिय दूसरोअविरुद्धक्रिय तीसरोविरुद्धकर्मा चौथोनियम पंच
मविरोधी ३९ अथअभिन्नक्रिय वर्नं अवर्ममेंएकक्रियालागेंसोअभिन्नक्रिया ३९
अथअभिन्नक्रियाश्लेष प्रथमप्रयोगियतवाजिद्विजराजप्रतिसुवरनसहितनविहि
तप्रमानहैं सजलसहितअंगविक्रमप्रसंगरंगकोसतैप्रकासमानधीरजनिधानहैं
दीनकोंदयालप्रतिभटनिकोंसालकरैं कीरतिकोंप्रतिपालजानतजिहानहैं जानतहै
विलीनहूं दुनीकेदानदेषिरामचंद्रजूकोदानकिधौंकेसवकृपानहै ७० प्रथमइति
रामचंद्रजीकोदानहैं किधौंकृपानतरवारहै श्रीरामचंद्रजीकेदानकोंदेषिकें दुनीकहिएदु
नियांसंसारताकेदानविलीनहोयछपिकेजातहैं दानकेसोहैं प्रथमहीपहिलेंप्रयोगिय
तहैं वाजीअश्वद्विजराजब्राह्मनमेंजोश्रेष्ठताकों पीछेंऔरनिकेंदीजियतहैं फेरिसु
वर्नसहितहैं नविहितकोअर्थनहींकियोहैं प्रमानजाकोदानदेनेकोप्रमाननहीं फेरि
दानसजलहैं संकल्पकेलिएजललीजिएहै सजलजाकोअंगहै जलविनाआकोअ
नहीहैं किवाहितप्रीतिसोजाहिदानजाकोअंगहैं सहितअंमेंविसप्रीतिदानकरतहैं
राजनिकौंविक्रमपराक्रमकेप्रस्तावमेंरंगसोभाहै जैसेंजुद्धवीरसोभातैसेंदानवीरसो
भाहै जोजाचकमाथोमांगेंतोमाथोदेइसोदानवीरविक्रमविनादाननहीहोय फेरिको

दीजीयतहै

ग
९९

109A

सभंडारतें प्रकाससमान हैं इहां दानको अर्थ देनो औ जो वस्तु दीजिए सो भी दान धीरजअ
निधान जे पुरुष हैं तेको सतें प्रकाससमान करत हैं प्रतिभट वैरी वरिके दाता किंवा सत्रु
ताको साल करै है कृपान कैसी है पहिले प्रयाचित है पहिले मिलाइए है तरवार को
का है के अंगनसों जोग करिए है मारिए है यह अर्थ वाजी अरु द्विज छत्रिय तिनके राज
निसों फेरि तरवार सुवरन है संदर्भ आवनेरंग सो जामें है तरवार एतन ने सत्रु पै चलाइ
ए यह प्रमान नहीं कियो है किंवा तरवार को नाम निस्त्रिंश है निस्त्रिंस को अर्थ तीस अंगु
लसों अधिका होय अधिका कतनो यह प्रमान नहीं कियो है फेरि कृपान सजल है जल
पानिप जामें है फेरि अंग मूठि नासहित है किंवा सहित है याको अर्थ हितको अर्थ धार
न औ सको अर्थ विद्यमान अंग का कहिये ओ हाथ ताहि विषै विद्यमान है धारन जाको फेरि वि
क्रम पराक्रम को प्रसंग चरचा है जह वीरनि कौं फलाना गहु ऐसे मानिए ताको रंग सोभा
किंवा चाहता कौं करति है किंवा रंग प्यार बढावति है रंग नाम प्रीति को भी है हरि सों रंग लाग्यो
प्रीति जानिए को समर्पनता सों प्रकाससमान होति है जाहि सों छत्रिय धीरज कौं पावत है हमारे या
स तरवार है शत्रु आवै तो मारेंगे गो धीरज को निधान अतिसय करि धारन रन में जासों होत है ।
किंवा धीरजनि करिके वहुत धीरजनि सों जाकौं रन में धार ग्रहन है दीन इहां कायर प्रतिभट

५ क.
११.
110

जोञ्चा इहांक्रियाप्रयोगियुतयह दानसोंश्रीकृपानसोंलागी फलविरुद्ध दानमानको पोषै
है तरवारप्रानकोकरषैहै एकक्रियासोंबहुतकोअन्वयहोय श्लेषहीमेंहोयय्यहनियम
नहींविनाश्लेषभीहोयएहीलछनजानिए ५. अथविरुद्धक्रियाकछुकाहूसुनोकलवो
लतकोकिलकामकीकीरतिगावतिसी पुनिवातेंकहैकलभाषिनिकामिनिकेलिकलानि
पढावतिसी सुनिवाजतिवीनप्रवीननवीनसुरागहिएउपजावतिसी कहिकैसवदासप्र
कासविलाससवैवनसोभवढावतिसी ५१ अथविरुद्धक्रिया कछुकाहूइति कलअव्य
क्तमधुर मधुरभाषिनिकामिनीवातेंकहतिहैसोकेलिकलानिकोंमानौंवढावतिहै नवीनन
येजेरागप्रेमवाकोंमानौंउपजावतिहै प्रकासजोविलासताकोंमानौवनकीसोभाकों
वढावतिहै इहांक्रियाजुदीजुदीहै कोकिलकोवोलवोअरुकेलिकलाकोपढाइवोअरु
वीनाकोवाजिवो फुलजोहैवनकीसोभावढाइवोसोकहै जुदीजुदीक्रियानिकोजहांव
हुतनकेरफएकहोय ऐसोयाकोलछनजानिएकोईप्राचीनग्रंथकोमतहै नवीनके
मतमेंअनुप्रासद्वत्तलहै एकसहूमेंअर्थअनेकसोश्लेष काहूनोकलअव्यक्तमधु
रकोकिलवोलतिहै वनजोधरताकीसोभावढावतिहै मानोंहेममेंवननामघरकोऐज
लकोअरुवनकोभाषामेंकलाचतुराईकोंभीकहतहै कलभाषिनिकलाचतुराईकी

१

बोलनिवालीहै प्रवीनत्तमपुरायाकेमनोरथओचेष्टताकोंजानतहोऐसेंलगाइए ४१ अ
थविरुद्धकर्म दोऊभगवंततेजवंतवलवंतअतिउडुनिकीवेदनिकाषानीवानऐसीहै ।
दोऊजानेपुन्यपापदुहुनिकेविषिवांदुहुनिकीदेषियतसूरतिसदेसीहैं सुनोदेवदेववलदे
वकामदेवप्रियकेसोरायकीसोंलसमकहोजैसीतैसीहैं वारुनीकोरागहोतसूरजकरतअ
स्तउदोद्विजराजकोजहोतयहकैसीहै ४२ अथविरुद्धकर्मा दोऊइति दोऊसूर्जचंद्रमा।
भगवानहैं हममेंभगवाननामएतनीवस्तुकोसूर्ज ओज्ञानओमहात्म्य ओजसओवे
राग्य ओसत्रि ओरूपओवीर्जओप्रयत्नओइच्छाओश्रीओधर्मओएश्वर्य चंद्रमामेंश्रीसो
भाहैयातेभगवानसूर्जकोपिताकस्यपरिषि चंद्रमाकोपिताअत्रिरिषि कोईकहतहै
देकामदेवप्रियहैदेवहैवहैश्रीवलदेवत्तमसुनोंलसमवारुनीमदिराकोंजानतहो वारु।
नीनामपश्चिमदिसाकोओमदिराकोरागरंगओप्रेमहोयपदमेंश्लेष पश्चिमदिसामेंला
लीहोतहै वारुनीपश्चिमदिसाकोरागहोतहीउपजतहीसूरजकोअस्तहोतहैं सूर्जदे
षिवेमेंनहींआवतिहै दूसरोअर्थ मदिराकोरागप्रेमहोतहीसूरअस्तहोतहैंनासकोप्रा
मदोतहैंओपश्चिमदिसामेंचंद्रमाकोउदयहोतहैं श्लेषमेंद्विजराजब्राह्मनकोराजाचं
द्रमानाकोंवारुनीमदिराकेरागसोंकोंकरिउदयएश्वर्यकीप्राप्तिहोययहकहोब्राह्मन

क॰
१११

।।।

कौउदयप्रकासयहविरुद्धकर्म उदयमेंस्लेष वचनहैं त्रिभिर्विप्राविनपंपतिहालाह
ल हलाहलेः तीनिवस्तुकरिब्राह्मनकोनासहोतहैं हालामदिरा औहलकेचलाये
औहलाहल विषताकोसाधनकिए ४२ अथनियम वैरीगायबांभनकौकालेसब
कालेनहोकविकुलहीकोसबरनहरकाजहैं गुहसेजगामीएकवालकैंविलोकियतउ
मातंगनिहीकोमतवारेकोमैसाजहैं अरितगरीनिप्रतिकरतअगम्यागोनदुर्गति।
हीकेसोदासदुर्गतसीआजहैं राजादसरथसुततराजारामचंदतुमचिरचिरराजकरो
जाकोऐसोराजहैं ४३ अथनियमश्लेष वैरीइति जहांएकअर्थसोंदूसरोअर्थनिक
रेसो औनियमहोययहयाकोलछन सबरनमेंदुर्गतिमैंसहसोंदोअर्थनिकरेंऔनिय
मयाकौनहीं औदूसरोअर्थनिकरेहैसोउदाहरनहैं हेश्रीरामचंदतुमचिरचिरबहुतव
हुतकालराजकरो जोतुमारोयातरहकोराज्यहै जाहिराज्यमेंगायबांह्मनकोवैरीस
दाएककालहैं आयुर्वलघटैएकजमवैरीहैं औरबरलनहींयहअर्थअर्थमेंसोंनिक
सो कविहीसबरनकोंहरेहैं औरिनहीं इहांभीअर्थमेंसोंअर्थनिकसो सबरनसो।
नाऔअछरसोयाकोउदाहरननहीं जाहिराज्यकीनागरीप्रतिकोईराजानहींजाइ
सकैयातेंअ गम्या लंकाआदितहांतुमगोनकरतहो औरठौरअगम्यागोननहींय

हैनियमकियो दुरीतिमेंश्लेष दुषसोंजानोऔनरकऔसैजानौं ४३ अथविरोधीश्लेष
कृस्नहूरेंहरघहैरसंपतिसंभुविपत्तिहरेहेंअधिकाई जातककामअकामनिकामिनिको
दितजातककामसहाई छातीमेंलछ्छुरावतवेतोफिरावतएसवकेसंगथाई जद्यपिकेस
वएकतऊहरितेंहरसेवककौंमतभाई इतिश्लेष ४४ अथविरोधी कृस्नहूरेंहरति हरए
हरैयाकौअर्थऔसैंऔसंपतिकौंहरतहैं संभुविपत्तिकौंहरतहें फेरिकामनाकौंजात
कपुत्रहैंऔअकाम जेपुरुषहैंजोकामनानहींकरतहैंताकोंऔजोनिकामनाकोंह्रीविष
याककामनहींराषेताकेदितहे संभुकामकेजातकहे सकामजेहैंकामनाकरिकेभजत
हैंताकेसहायकर्त्ताहैं वेभगवानलक्ष्मीकौंछातीमेंछ्पावतहैंएमहादेववाहीलक्ष्मीको
वरदानकरिसवकेसंगमेंफिरावतहैं जोभीहरिहरात्मकरूपएकहैंतोभीहरमहादेवहरितें
सेवकनिविषेंसत्यभावहे अछ्याभावहे आज्ञाहेसभाव एकसरूपहैंजोहरिकरेसोहर
नहींकरतहें यहविरोध दोयविरुद्धअर्थमिलेहें यातेंश्लेषएकसद्ध केदोयअर्थसोन।
हीं लक्ष्मीकोअर्थरमाऔसंपतियातेंइहांश्लेषनहीं ४४ अथसूक्ष्मालंकार कोनकुभा
वभावतेंजानेंजियकीवात इंगिततेंआकारतेंकहिसूक्ष्मअवदात ४५ अथसूक्ष्माल
कार कौंनकुइति काईक्रियाकेप्रभावसामर्थ्यतेंजीवकीवातजानीजाय इंगितचेष्टातें।

क॰
११२

112

क्रियातें आकारस्वरूपतें ऐसी सूरनि बनावें जो मनकी बात जानी जाय अब दोहा तहां
क्रियातें आकारस्वरूपतें ऐसी सूरनि बनावें जो मनकी बात जानी जाय अब दोहा तहां सूछमालंकार ४९ रसिकप्रिया सषिसों कहत गोपसभामहि गोविंद बैठे हुते इति
कों धरिकैं मनु केसव पूरनचंद लसै चित चाह चकोरनिकों हरिकैं तिनकों उलटो क
रिआनि दियो किहूं नीरजनीरन यो भरिकैं कहिकाहे तें नेकु निहारि मनोहरके दिढि
यो कलिका करिकैं ४६ सषि इति चाहताहं दरतासौं मुषकी सोभातें चंद्रमा सो मु
षहै यातें चकोरनिके चित्तकौं हरिकैं बैठे हुते कहूं चित्तचाइ चकोरनिको यहभी पाठहै
चकोरनिके चित्तकी चाहकौं किंवा चारु आछे जे चकोर हैं तिनके चित्त हरिकैं चुरायकैं जो
जो परायाके मनकी बात जानि जाय ताकों चकोर कहत है चकोर जे हैं नेत्र तिनाजति
ननें भी इनकी क्रियाकौं नहीं जानी वे भी इनके मुषकी सोभा देषि छकि रहे कलीकरि
के दिढि दियो नीचो मुषकिएहैं नाइकाकी आंषिते नवीन आंसू आयो है अब तुमा रेस
गमे पीतवनां ही याकमल जब कली होयगो मुद्रित होयगो रात्रि समें तब मिलेंगे ।
नाइकानें कमल पठायो या क्रियासौं नायकनैं विरह जान्यौ नायकनें कली करि पठा
यो नायिकानें रात्रिविषें मिलन जान्यौ यह क्रियाको उदाहरन है ४८ अथ लेसालंका
र चतुराईके लेसतें चतुरन समुझत लेस बरनत कविकोविद सबै ताकौंकेसवलेस

112A

४७ लेसालंकार चतुराईइति चतुराईकेलेसतें जहां थोरी चतुराईकीक्रियामिलैं तातेंच
तुरलोगथोरौभीसमुझिनहींसकैं सोलेसालंकार ४७ षेलतदेहरिवागेवनेजहांवैठीप्रि
यारतितेंअतिलोंनी केसवकैसेंहूपीठिमेंनीठिपरीकुचकुंकुमकीरुचिरौनी मातसमीप
दुराइभलेंतिनिसात्विकभावनिकीगतिदोनीधनिकपूरिकीपूरिविलोचनसंधिसेरोरुह
आदिआदोनी ४८ षेलतदेंरति लोंनीलावन्य(?)ज्ञदीठिकैसीहै कुचपरलगायोजोकुं
कुमकेसरिताकीरुचिकातितेंरमनीयहै कुचकुंकुमकहै सोंपीसीकेसरिलीजिए औकुच
केरंगसोंअतिपीतहोनीकोअर्थहोनीहुईजो कपूरकीधूरिसोंओसछिपायो कोइसंगयेहै
कमलआदिनवमाधोहलायसराहैहैक्याअच्छाहै यातेंकपासात्विकछपायो औदनीआहै
रोमांचहितकोंनहींदेषतोहोयताहियेंहितकीरुपियरे ताभीषवरिपरिज्ञायघट्(?)प्रेममेंवर्न
नहै तीरचलावेंप्रवीनअधेरीरातिमेंओतीरकाहूकेंलागैंतोतीरंदाजकोंषवरियेरहै गुरु
जननेंनहींसमुझीनाइकाकीक्रिया ४८ अथनिदर्शना कोनहुएकप्रकारतेंसतअसत्य(?)
सतसमान करिएप्रगटनिदर्शनासमुझतसकलसुजान ४९ अथनिदर्शना कोनहुइ
ति कोइएकप्रकारतें भेदतेंकिंवासाहृश्यतें कोईएकतनरहतेंयहअर्थसतअच्छाअसतवु
रायाकोंसमानतुल्यकहिए कुवलयानंदकेमतपरभाषाभूषनताकोयहलछनहै ज

क॰
११३

.113

होंय असतसतकोकरैं क्रियाहीसोंउपदेसक्रियाकरि असतवस्तु औसतवस्तुकोंबुझावैं रवि
सोंनसितमयोधरै जगतविरोधीनास यहअसतकोउदाहरन रविसोंनष्टहोवैअंधकारलो
कनिकोंसमझावतहैं जोजगतविरोधीहोय ताकोनासहोय सतकोउदाहरन जवतवृफल
तिजवहिकोकरितहितकुमुदप्रकास चंद्रआपनीवहिकोफलजनावैहै लोकनिकोंजोव
हिहोयतोहितकोभलोकरैं इहांकवित्तमेंदोऊबातकहीहैं ८९ तेईकरैंचिरराजराजनिमें
राजेंराजतिनहीकेलोकलोकलोकनअरतहैं जीवनजनमतिनहीकेधर्मकेसोदासऔरि
निकेपदनिमेंत्योंदिननिबटतहैं तेईप्रभुपरमप्रसिद्धपुहमीकेपतितिनहीकीप्रभुप्रभुताई
कोंरटतहैं सूरजसमानसोममित्रहअमित्रकहसुखदुखआपनेउदैहीप्रगटतहैं ९० तेईकरें
द्युति जोराजामित्रकोंऔअमित्रसत्रुकोंआपनेउदयमेंऐश्वर्यचटनमें सुखदुखकोंप्रगटकरैहैं
मित्रकोंसुषदेतयहअछीबातहै औअमित्रकोंदुषदेतहैं जोअपनोउदयहोयतोमित्रकोंसुष
दीजिएअमित्रकोंदुषदीजिए सूर्जचंद्रमायहलोगनिकोंसमुझावैहैं ऐसोअर्थकिएकुवल
यानंदकेमतसोंमिलो जोराजाऐसोकरैताकोंलोकलोकमेंलोकनामनस स्लोकनामज
स स्लोकओपद्यकोंभाषामेंलोककहैसोनहींसमातहैं यहभलोफलजोऐसोनांहीकरतहैं
ताकोयसकोलेषोदिनघटतहैंबीततहैं बोफल ९० अथउजेअलंकार तगेननिजदंका

११३

तिजीविकासोदेहुगो सगरी जूजे एक रहे देत हैं पूरव के कृत कर्म राजा औरां कहा रिह
नरा जनक रो[illegible] ये सब थे सो वह हमें कोई काम नहीं काहे कों कोई काहू कौं देत है यो मां
गेगो तो हम नांही देहिंगे इत्यादि इह इहां जगत को निर्वेद सांतरस किंवा शांति अर्थांत
र्थांतरन्यास औरन्याति एक अर्थ जहां औरे वस्तु बखानि अर्थांतर को न्यास यह चार प्रकार
सजाति ९८ अथ अर्थांतरन्यास औरइति जहां और ही अर्थ के दृष्टांत कथन होय ता कों
पुष्ट करिवे के लिए और ही ग्रंथ आनिए चारि भेद अर्थांतरन्यास है ९८ भोरे है भोद च
हारु चितै इहपाइए कैं मन कौं हूं करै रो ताको तो के सब कौ रहिए दुष होत महा सुक है।
इते है री केसा है तो रा हियो हरि मैं रहि छो रे नहीं तन छूटत मैरो छूटक दूध को मासो है वा
धि सुजानति होमाई आयो न तेरो ९९ भोरे है इति श्री जसोदा जी सौं कोई ब्रजदेवी की उक्ति
मन कौं कोई तरह करैरो कठोर करि जौं भोल पुष्टो दुष पाइए तो ता कौं दुष होत है हमारी
औरटे छे हरि कौं ऐसो बांध्यो है तेरो हियो मन कैसो है हरि मैं इति विषै जान्यो नहीं जात
हैं हरि लैवे ठि रहि वो लै मति मेरो छो तो तनु थोरो भी नहीं छूटत है ऐसो गाढो बांध्यो है यातें तेरी
प्रीति हरि विषै नहीं है या बात कौं पुष्ट करिवे के लिए कह्यो तेरो जायो नहीं है तज न मायो नहीं है
९९ अथ भेद जक अजक बखानिए और ही अजक ताजक कै सब दास विचारिए चौथो जक को जक।

९९ अर्थांतरन्यासकेभेद जुक्ताइति चारिभेदकहतहैं एकजुक्त १ दूसरोअजुक्त २ तीसरोअ
जुक्त ३ चौथोजुक्ताजुक्त ४ ९९ अथ जुक्तलछन जैसोजहांजुबूझिए तैसोतहांसुख्याति ।
रूपसीलगुनजुक्तिवलगुयैसेजुक्तवषांनि ९० जुक्तलछन जैसोजहांइति रूपऔसीलऔ
गुनजहांकेवलजुक्तिसोठहराइए सोजुक्त ९० गरवोगुरुकेदोषदूषितकलंककरिभू
षितनिसाचरीनिअंकनिभरतहै चंदुकरमंडलतेंलैलैतोप्रचंडकरकेसोदासप्रतिमास
मासनिसरतहैंविखधरवंधुहेअनाथनिकोप्रतिवंधविषकोविशेषवंधुहियोहहरतहै क
मलनयनकीसौंकमलनयनमेरैंचंद्रमातेंन्यायहीजरतहै ९८ गरवोइति विरहनीकोव
चनसखीसौं कमलनयनपुंडरीकाक्ष भगवानताकीसपथहमारेंकमलनेत्रहैं सोचंद्रमा
सौंजरतहैंसोन्यायहै जुक्तहै चंद्रकैसोहैं गरवोकहिएभारीहैंवडोहै यहअर्थगुरुजोव्रहस
तिनासौंकियोजोदोषअपराधतासौंदूषितहैं व्रहस्पतिकीस्त्रीचंद्रमानेहरीचंद्रमासोंबुधउ
त्पन्नभयो औकलंकसोभूषितहै कलंकभयोहैयहअर्थ हमसेंनिसाचरीनामव्यभिचा
रनीकोभीहै अंकनाम दुषकोभीपापकोभी निसाचरीव्यभिचारनीताकोपापकोंभरत
हैंधरतहै यहमारिमलारात्रिमेंव्यभिचारहोतहै किंवानिसाचरीरात्रसीतासौंअंकभरतहैंबुरु
वतहैं फेरिचंडकेंप्रसन्नताकोकरकेंप्रचंडजोकरकिरनताकोंलेइलेइकेतोमहीनापर्यंका
रतहैंबीतर

जे

चंद्रप्रसि

119A

118A

सेकेदिन चंद्रमा ऐसो सूर्ज एक ज्ञरहेहैं फेरि चंद्रमा सौ ग्रगति हैं निक
अनलै अनत्रे नकीकिरनहै सूर्जकीकिरनचांदिले आवैहैं विरहनीकों तापकरत
पकहैंपी विषधरसिवताकोवंधुदिनहैं यातैभी दुखदाईहैं अनायत्ताही हैंना
निकौवं विरहिनीताकों प्रतिबंधु दुषदाईहैं विषऔ चंद्रमा समुद्रतें उत्पन्न भए
षसंमभि वंधुहै यासौं हृदयहहरैहै कैपैहैं कलंकअनकहैं अंतिसौं रूपकद्यो फेरि
ह्यौनाहीं सौमें प्रकासहै यह प्रकासहीन सा मेहै यह भी रूपकद्यो सूर्जकोकिरन
मेंगर्भ स्वभावकद्योजाहि देषें हृदयडरेहैं यह गुनऐसो और भी काहिए भील
कागरु भीलकैसेहैं गरवोगुरु जो बालाननआदि तासों कियो जो दोषलुद्यो माहौ
आछी ७ पापताहिसों भरेहैं निसाचरी भीलनी चंडती अम्रसत्वहैं कर मंडलता
तरमानियें कर दंडलेलेकैं प्रतिमास मासर प्रतिमासलेलेकै चें विचेकेलिए
पेहोत्तमनाही भीलऔगुनकह्यो ५८ अजज्ञाअलंकार जैसो जहां न ग्रकिएतै
तैकेके रिचौ वि केहिवरनवहैं सबकोय ५९ अथ अनज्ञा जैसो जहां इति जैसो
लेआवनो हैं वडोकै कहिवरनवहैं सबकोय ५९ अथ अनज्ञा जैसो जहां इति जैसो
वातह्निकैं मोनऐआछोलागै ५९ केसोदास होतिमार सिरी वे हमार सिरी आ
चसैंत्रिवली करनी सैलवलासपै से ललितकपोलतें अधरत्न मोलधरै इगति

क॰
११८

118

८८ अर्थांतरन्यासकेभेद ग्रह मनमें छबीलेलाललोचनगवार छीनलेहै इतग्रावरीवारवार
ग्रकं ३ चौथोग्रजकाग्रजक्र रिवारीआनिवारीहैं तूवावरी ७० केसोदासइति मारकाम
रूपसीलगुनजुक्तिवलमें जोह्यावसोवचैनाही सोहमार सखीनाइकासोंकहै
गुनजहांकेवलजुक्तिकोतिहै ग्रैसोकह्योचाहिए हमारकरि
षितनिसाचरीनिग्रकामकीसोभाकोंमोहनकरैहै चाहियेकामकोनहीचाहिए
मासतिसरनहैविष्कीसोभास्त्रीकेवर्ननमेंलज्जितहोतिहै ग्रघतमोलधरैचाहि
मलनयनकीसोकचाहिएकपोलकीउपमावतासानहीचाहिए
चनसखीसों कम्वाहिए नेत्रमेंस्यामतासेततांहै सोतिलचा वरहै यहभीनहीचाहि
सोंजरतहैसोग्रजेहैतेछीनिलेहिगो यहभीनहीचाहिए मेंवारवारतोकोंवरजतिहै
तिलासोंकियोजतवोंमेंलेवारमलिनदिनमें ससिग्रसग्रोग्रमावासग्रेसेदिनमेंमें
तवत्रमयो ग्रोलति हो किवावारोग्रानतकिग्राकलामहै नाइकाकहीवाहिरनिकरी
रसीकोभीहै ग्रंतजग्रर्थकहिरोकतिहै सखीकीग्रज्ञानतानायिकाकेरूपकीहानि
हैधरतहैयहग्रांहिविरोधीदोषनहीमानतहैजेसेचावरमेंतिलदेषिपरैं ग्रेसेंइहांग्र
वतहै फेरिचंडकरैहै यहप्राचीनकोईनास्तिककेकिएग्रलंकारहैताकोमतहै ग्रव
ग्रथग्रग्रतनुक्त ग्रसभेसभहैजानतजहांकोंहूकेसवदास इहै

चंद्रमुखि

११९

119

119A

अनत्रैनत्रकविवरनतवुद्धिविस्वास २१ अनत्रतत्रत्रक अरुभैइति पहिलैंअनत्रत्रत्रअजो
अनत्रैंनत्रकनविवरनतवुद्धिविस्वास २१ पातकहानि पितासंगहोसिनगर्भकेसूलनितेंडरिएजू नाल
नकहैंपीछैंनत्रककहैं २१ पातकहानि पितासंगहोसिनगर्भकेसूलनितेंडरिएजू नाल
निकोबंधवोवधशरकोनाथकेसाथचिताजरिएजू पचफरैलैंकरैरिनकेसवकेंसेंहूनीर
धसेंमरिएजू नीकीसदालगैंगातिसरोनकीडाइभेलोन्नगयाभरिएजू २२ हानि आ
छीनांहीपापकीहोयतोआछी हांकिआछीनांहीपिताकेसंगमेंहोयतोआछी असवसा
मेंगर्भमेंसूलचलेहेंतासोंडरनहीं तलावकोवाधिवोरसदाविहूताकोवध आयुर्वलको
कागदफाटेसोआछोनहीरिनकोकागदपाटैसोआछोपापकेसंभोगतेंतोपापकीहानि
आछी २२ आगेहूलीवोइहैं न्नचितेंरतचोकिउतेंद्रगअैंचिलईहैं मानिवेकोवहईप्रतिउ
तरमानियेंवातन्नूमोनमईहैं रोषकीरेषवहैरसकीहषकाहेकोकसवछाडिदईहैं नीहि
ऐहोत्तमनाहीसुनीयहनारिनईनकीरीतिनईहैं २३ आगेहूइति इहांनायककोआगेहि
तैकेफेरिचोकिकेंफेरिओरिओरकोतेत्रषेचिलेनोयहक्रियासोंमानोनायककोआगेहै
लेआवनोहैंवडोआदरसोलेआवनोहैं कोईवातनाइककहूताकोप्रतिउत्तरजवावमानिए
वातसुनिकैंमोनगहेंतोजानिएमानिलीनी रोषक्रोधकोजनतावेंअैसीमोरेषाभौंहकेवी
चमेंत्रिवलीकरनीसोईरसकीलरहहैं सूधीवातकोकाहेकोविसवासतेंछोडिदीनीहै यहन

क॰
१२

120

हीजानी जातिहै किंवा अछरकों औरहै अछरकों छाडिटीनीहै हे पियकाकहत तहां ऐसें नहीं वो
लति हैं तांहीकहनो सोरहा स्वीकार हैं नजविफे रिवो आदि अस्त्र भअजोग्य है सो सभया छो
लागति है ७३ अथ अनन्तअनन्तः इष्टवात अनिष्ट जहां कैसे हूं है जाय सोई अनन्ताअनन्तककहिव
रनतक विसूषपाय ७४ अथ अनन्तअनन्तः इष्टवात इति इष्ट जहां अनिष्ट होय ७४ रसि
कप्रिया सूलसे फूलसुवास कुवाससी भाकसी से भए भौन सभागे केसव बाग महावन से
जु रसी चहीजो हूं सबै अंगदागे तेह लगेपा इवनाहर सो निसिना हचरी कक हूं अनुरागे गारी
सेगीत विरी विससी सिंगार हैसिंगार अंगार से लागे ७५ सूलसे इति सोभागभरे घो अने
कसामग्री सों औरचना जामें थी जो हूं चांदनी देषें जुरसी चहीदै औसव अंगनिकों दागत
हैं विरहमें फूलइत्यादि इष्टहितदे सो अनिष्ट भए ७५ पापकी सिद्धि सदा निवरद्धि सुकीर
ति आपनी आप कहीकी दुःषको दानजु सूतक हानि जुदासी की संतति संतत फीकी वेटी कै
भोजन भूषन रांड कों केसव प्रीति सदापरतीकी कूरमें लाज दया अरिकों अहवां भन ज्ञा
तिसों नीति ननीकी ७६ पापकी इति सिद्धि इष्ट है पापकी सिद्धि होय तो अनिष्ट दान आछो
है पैं दुषमें ग्रहसांति के लिए दीजिए सो आछो नहीं ऐसें जानिए ७६ व्यतिरेक तामें आ
नें भेदक छूहो इजवस्तु समान सो व्यतिरेक सुभांति हैं जानिसहजपरिमान ७७ अथ व्य

१२

१२०A

निरेक ता में इति जो वस्तु समान वरे वरि होय ता में भेद ल्यावैं एक अक्रिया व्यतिरेक इसे वोस हज
व्यतिरेक ।। अक्रिया व्यतिरेक सुंदर सुषद अति अमल सकल विधि सदल सफल बहु सरस से
गीत सौं विविध सुवास युत केशार्द्रास आस पास राजै है हिज राजत तन परम पुनीत सौं फूले ईरद्रत
दोऊ दीवे हू को प्रतिपाल देत कामनानि सब मीत हू अमीत सौं लोचन वचन गत दिन इतनोई भेद इं
द्र तरु वर ग्रह इंद्रजीत सौं टीका सुंदर इति इंद्र तरु वर कल्पवृक्ष ग्रो इंद्रजीत तासों एतनोई भेद
है कल्पवृक्ष में लोचन नहीं है ओ वचन नहीं है बोलै है नहीं जउ देयाते अगति विना है इंद्र
जीत में लोचन आदि सब है इंद्रतरु कैसो है सुंदर है सुषद है अति अमल निर्मल है सब क्रिया
करिके दलपत्र ओ बहुत फूल है तामें सरस वे सहै संगीत को अर्थ सेकहिए सुषता के गीत गा
नसैं लोक सुषदायक कहत है याते वे सजानिए अनेक तरह के गंध युत है फूल के ओ फल के
ओ पत्र के गंध जाके आस पास पछि राजत है ताके परम पवित्र तन सरीर तासों राजत है दोऊ इंद्र
तरु ओ इंद्रजीत दोऊ है तिनको फूले रहत है बहुतो फूल सहित इंद्रजीत फूल्यो सानंद रहत है प
लि पल कामना को देत है मीत सो भीत सो ओ जा वक अमीत है यत ताहू सौं भीत सो किं वा के या
को अर्थ में सो है मीत हू को अमीत हू को देत है ऐसे जानिए इंद्रजीत के सो है जे तन प्रजा के सु
षटराजा है तामें यह सुंदर है आछो है फेरि सब जे विधि क्रिया स्नान दान जजन इत्यादि कवि

इंद्र

कैंअमलनिर्मलहैं फेरिदलसेनानादिसहितहै फलकहिएलाभनाहिसहितहैं सदाजाकों
राजाकरदेउठेतहैं फेरिसंगीतसास्त्रसौंवहुतअनुरागजाकैहै फेरिअनेकनरहेकेसंदरवा
रवसतनासोंजाकैहै फेरिआसपासद्विजराजवाह्मनअैसेसोभतहै फेरिपरमपवित्रतनस
तीरसोभाजातहै ७८ सदजव्यतिरेक गायवरावरिधामसवैधनजातिवरावरिहीचलिआ
ई केसवकेसदिवानपितानिवरावरिहीपहिरावनिपाई वेसवरावरिटीपतिदेदवरावरि
हीविधिवृद्धिवढाई एअलिआनहींहोइगी कैसेंवडोतमआंषिनहींकीवडाई ७९ सदजव्य
तिरेक गायइति नाइकासोंसषीवचन धामचरवरावरिजेसोचवडोश्रीवृषभानजीको
तैसोईश्रीनंदजीको औरिसवधनसंपतिवरावरि अोकंसकोटीवानसमानतहातुमारेऔश्री
कुलकेपितानेवरावरिपहिरावतिसिरोपावपाई विधिक्रियाविवाहादिउत्सवमेंजेसोदा
नउपदानवृषभानजीकियोहैतेसोईनंदजीकियोहैं आंषिकीवडाईआंषितुमारीवडीहै
तासोंवडीकैसोंकरिहोइगी आंषिवडीहैएतनोभेद यहअसआदिजुकिटेकविनहीकह्यो
सहजहीकह्यो नायककीआंषिकेंप्रमानसोंतुमारीआंषिकोप्रमानवडोहै ७९ अथअ
पह्नुति मनकीवस्तुदुरायमनुषऔरेकहिएवानकहतअपह्नुति सकलकवियासौंवुधिअ
वदान ८० अथअपह्नुति मनकीइति मनकीवाततोदुराइएअंहसोंऔरिवातकहिए ८०

121A

सुंदर ललित गति वलित सुवास अति सरस सुवृत्ति मति के रमन मानी है अमल अदूषित सुभू
षित निभूषित सुवरन हरन मन सुर सुघटानी है ऐसी अंग अंग गूढ भाव के प्रभाव जानिबे को सुभाव
ही के भाव रूप पचि पहिचानी है केसोदास देवी कोऊ देषी न सुनी न हीं राजनगर प्रवीनराय जू की
यह वानी है ८१ सुंदर इति कोई आपनी स्त्री सों पूछै है तुम कोई देवी है तब नायिका कहति है

देषी

हे राजन यह प्रवीनराय की वानी है राजस्त्री पति को कहति है देवी कैसी है सुंदरि है औ ललित आछी
गति सुगादि प्रसिद्ध है याते सुवास सुंदर जो वास वस्त्र है तासों अति वलित जुक्त है औ सरस है अधि
क है सुंदर वृत्त चरित औ मति है जाकी फेरि अमल है औ अदूषित है काहू नें जाको दोष नहीं कह्यो
है सुभूषण भूषन सों भूषित है औ सुंदर रंग जाको वर्न रंग है मन को हरनवाली है सुर देवतनि को सुघ
टातो है ऐसे अंग अंग के गूढ गूढ के गूढ रस में जो भाव चेष्टा ता को जो प्रभाव शक्ति ऐसी चेष्टा करै है ता
पाके मन में यह वात है यह काम करैगो मनोरथ की जाननवाली है ही को हृदय को भाव रूप आ
त्मा रूप है जाको पचि कें महनत परिश्रम करि कें लोगनि नें पहिचानी है प्रवीनराय की वानी कैसी है
सुंदरा है औ ललित जो राग प्रातसमै को ललितादिक वरागना जानिए ऐसो पी छे भी कहि आए हैं ता
की जोगति लेने की क्रिया तासों वलित है जुक्त है वानी औ अति जामें सुवास सुगंध है वाले है तब सु
गंध आवै है मुष तें सो वचन में ठहरायो फेरि सरस रसीली है फेरि सुंदर जो वृत्त छंद सो कहिवे में

मतिइछाहैं जाकी मति इछाकोभी नाम है आछी तरह छंदहीमें वोलिए फेरि अमलसा फहैं अरु
षितदोषरहितजेसभूषनउपमारूपकआदिजेअलंकारतासौभूषितहैं छंदरजेवरनअछरजे
मनकौंहरैं सोहैजामें अैसेजेसुरनिषादरिषभआदितासौकरिसुषकीदाताहै अगंकहिएस
ह्रितरंइमीततिनकाअंगकेगरूहगुनजेभावमनकीरतिताकेजोप्रभावउत्कर्षमोहमनोरथता
कोजानिवेकोसुभावहैजाको रंइमीतकीयामरजीहैयावातकोंकहतिहैं फेरि हृदयकोभा
वअभिप्रायरूपहैं जोकछुकाहूकेहृदयमेंउपजैसोकहतिहैं यावातकौंपचिकेंपहिचानीहैं
[illegible] कहूंभावहृचियहभीपाठहै हृदयमेंजेसोभावउपजैतेसोईमुषपैंकांतिहोय क्रोध
हर्षआदिमुषपैंजान्यौजातहैतांकोंपचिकेंअसकरआछीतरहविचारिकैंपहिचानतिहैंकहि
देतिहैंअअैसीमरजीहै ८१ कारेसटकारेकेसलोनीकहुहोनीवेससोनितेसलोनीउतिदेषि
यततनकीआछेआछेलोचनचितोनिआचलनिआछीसुषमुषकविनाविमोहैमतिमनकीके
सोदासकेहूंभागपाइएजोवागगाहिसासतिउसासैंसाथएजेरनिरनकी वेदीकाहूंगोपकीवि
लोकीप्यारेनंदलालनांहीलोललोचनिवडवावडेगनकी ८२ इतिश्रीकेसोदासविरचितायां
कविप्रियायामेकादशःप्रभावः ११ कारेइति पहिलेंनायकनेंनारीफकरीसोऊपरीकाहूनें
कनिलीनीतासौंनायकछुपावेहैंअपह्नुतिकाअर्थछुपावनोहैप्यारेनंदलालतुमकाहूगोप

कीवेदीखिलोकीहैं वडेपनकी वहुततारीफकैं माफिकयह अर्थ पननामसद्भ तिकोभीहै नाय
ककहतहैं हेलोललोचनिचंचलतैनिवडवाघोडीवडेपेनकी वडेमोलकीदेखीहै गोपद्द
ताकैसीहै कारेओसटकारेचहाबउतारकेऊपरकछुमोटेनीचेपतलेऐसेकेसहैं जाकें लैं
नीकंदरकछुकेअर्थअनिर्वचनीयकहीनजायऐसीहोनवालीवैसहैं जाकीओसोताकेस
लैंनीलावन्यभरीचमकनीयह अर्थ तनकीदुतिदेषियतहै ओमदुषदायकन्नाकोमुखहैं
ओकवितासोंमनकीमतिकोमोहतिहैं किंवामनकोंओमतिकोंओरिझवतहैकोईभारणसैं
सोताकोंवागवारीताभैंगदिपादुए पकतिलीजिएतोवाकेजेसुगंधस्वासहैताकेउसासैंचलै
सैंतोरतिरूपजोरननाकोसाथएजे वडवापह्ल कारेसटकारेजाकेकेसवारहैं ओलोनीआर
हीहैं वयक्रमकरिकैंकछुआगेंहोनिहारहैं पेरिसोतातेसलौनी चपारताहै कविसुलगाम
ताकरिमुषसोंसुषदेतहैं गहजोवननहीहै किंवालनआछीसुषकीहैरहवालचलैहैओन
सविषैनोकविताविचछननताप्रवीनतावागकाइसारासोंदारेहैं चलैहै वडीहोतिहैंएडाचाव
ककोकामननहीयातेंमनकीमतिइछाचाहताकोंविसाहैहेविसेषकरिलभायराषेहै मन
चाहैतोजल्दहोयमनचाहैतोधीरीहोयकविताताम‌देममेंविचछनकोभीकत्योहै जैसें
महसंचघोराकहतहैं घोराकहतहैं घोरापखहैं सोचफूठिकहोजानैतैसेविचछनताठ

क॰
१२३
123

हगाईहैं याकोज्ञोवागयकरियाइयतोसासतिउसासैंजवतांईसासचलैं एकसासभैंतरत
यहूअर्थवरननकीजोरतिप्रीतिताकीसाधपूगैंतरतजीतिहोयययदअर्थ ८२ दूषणवर्द्धौप्रभाव
मेंएतनेकहे क्रमालंकार १ गननारअश्लासिष ३ प्रिय ४ श्लेष ५ अभिन्नपदश्लेष ६ भिन्नप
दश्लेष ७ उपमाश्लेष ८ अभिन्नक्रियश्लेष ९ विरुद्धक्रियश्लेष १० विरुद्धधर्मा ११ नियम
१२ विरोधी १३ सूक्ष्म १४ लेष १५ निदर्शना १६ ऊर्जस्वित १७ रसवत १८ शृंगाररस
१९ रौद्र २० वीर २१ करुन २२ भयानक २३ वीभत्स २४ अद्भुत २५ हास्य २६ सांत २७ ।
अर्थान्तरन्यास २८ उक्त २९ अनुक्त ३० अनुक्तउक्त ३१ उक्तानुक्त ३२ उक्तव्यतिरेक ३३
सहजव्यतिरेक ३४ अपह्नुति ३५ अलंकाररससबमिलिपैंतीसकहे ३५ इतिश्रीहरिचर
नदासकृतायांकविप्रियाभरनाख्यायांकविप्रियाटीकायामेकादशः प्रभावः ११ अथउ
क्तिअलंकार बुद्धिविवेकअनेकवलउपजततर्कअपार तासौंकविकुलउक्तिकहिवरन
नअमितप्रकार १ बुद्धिइतिबुद्धिकेविवेकेविचारतें बहुततर्कउपजतहैं ताकोनामउ
क्ति १ उक्तिभेदकथनेवक्र अन्य व्यधिकरनकहिऔरविशेषसमानसहितसहोक
तिमेंकहीउक्तिसपंचप्रमान २ उक्तिभेद वक्रइति एकवक्रोक्ति दूसरीअन्योक्तिती
सरीव्यधिकरनउक्तिचौथीविशेषोक्तिपांचौंसहोक्तिलक्षन ॥२॥ केसवसूधीवातमेवरन

१२३

वक्रोक्ति

123A

तेरे है भाव वक्रोक्ति तासों कहत है सदा सवैक बिनाव्र वक्रोक्तिलछनं केसव इति सुधी बात
मेरे है भाव आसय ३ रसिकप्रिया ज्यों ज्यों हुलास सों केसवदास विलास निवास हिए अवरे।
ष्यो त्यों त्यों बढ्यो उर कंप कछू भ्रम भीत भयो किधों सीत विसेष्यो मुद्रित होत सषी वरही मेरे।
नैन सरोज निसा चके लेषो तैं जु कह्यो मुष मोहन को अरविंद सो है सो तो चंद सो देष्यो ४ ज्यों
ज्यों इति षंडिता को वचन सषी सों विलास निवास नायक को मुष जामें अनेक तरह के वि
लास हैं वक्र कथन में पर स्त्री विलास निवास है हियरमा रो मन तें अवरेष्यो लछित क्रिया
उर में कंप सात्विक सो इहां क्रोध सों जानिए वक्र लाने त्र कमल है [illegible] ते भयो यह सुधी वात चंद
मा सों व्यतिरेक प्रकास है जाकी सुधी वात है कलंकित यह वक्रता ४ अन्योक्ति और हि प्रति नवषा
नि एक कछु और की वात अन उक्ति यह कहत हैं वरनत कवि अप्रचात ५ अन्योक्ति और इति ओ
र प्रति और सों कहिए कछु और की वात आरिकोह की कल ५ दलट देषो न ही न डु गाडो वडो अ
हघाम है नो जल को हरि है केसव वाधु वहे दिन दाव दहे धरधी रज को धरि है फल है फु
लना हि कितो लों तही कहि तो पदि भरष सही परिहे कछु दोहन ही सुष सो भन ही कहि की रव
गीर कहा करि है ६ दलट देषो इति संपत्ति हीन राजा को कोई सेवत है ताहि सुनाइ कै कवीरव
व पै वठो है सुक तासो कहत है संपूर्न वाक सों यह धनि संपत्ति हीन को नहीं सेइए करी र

सीतल
व

कहि:

क॰ १२४

कौंभाषामेंकेरआरेहीकहतहैं रेसरइसूर्षसतक दलपातदेष्योनहींहैं यातेंयाकेनीचेंसीत
वहुतलागितहैं वायुयोंनकेवहेंवनमेंआगिलागेसोदाव पूरवमेंडाहाकहतहैं दावकेदहे
सोंदिनकहिए विपत्तिहोयगीतवतसामोसरीरधीरजकौंकरिधरिहैं भाजैगोजवताईपू
लैंगोतांहीं ६ अंगाअलीधरिएअंगिआऊनआनुतेंतोदौनआवनदीजैं जानतहौंजिय
नातेंसषीनिकेलाजहूतोअवसाघनहीजें षोरहिंद्योसतेंषेलनतेऊलगीउनसोंजिनैंदे
षतजीजे नाहकेनेहकेमामिलैंआपनीछांहहूकीपरतीतिनकीजें २ अंगइतिनायकसों
छपिकेंप्यारकरआईहूंसषीताहिसनायकेंअन्नसंभोगदुष्पताकहतहैं अलीअंगिआहूप
भीसषीउननायककेलिए उनूनायकपासजातकैंतोताहूकौंअंगपूनहींधरिए आनिहा
रूपसषीकोंआज्ञतेंआवनेनहींदीजिए औरहमारेजीवसोंअंगिआगेंजीदसषीहैं तिन
कौंहमसोंजैसोनातासंवंधहैंसोमेंजानतिहौं लाजहूसषीकोंसाथनहींलीजिए षोराहीदि
नतेंतेऊवेअंगिआआदिसषीहमारेजीवसोंषेलनलागीहैं हमारेप्रानकोंषेलोना
कियोहैं जिनैंदेषिहमजीतिहैं वक्रकहतिहैं मामिलाव्यवहार २ अधिकरनोक्ति और
हिमेंकीजैप्रगटऔरहिकोगुनदोषउक्तिरहैं अधिकरनकीस्तुनतहोयसंतोष ८ अधि
करनोक्ति औरहिमेंरति औतिकेगुनदोषऔतिमेंप्रगटकीजे ८ जानुकरिनामिकू

124

फले

व

२७

१२४

124A

लकंठपीठभुजमूलउरजकरजनरेषरेषीबहुभांतिहैं दलितकपोलरदललितअधर
हविरसनारसनिरसरसमेंरिसातिहै लोटिलेटिलोरपोटलपटातिबीचबीचहांहांहूंहूं
नेतिनेतिबांनीह्वैनिजातिहै आलिंगनअंगअंगपीडियतपद्मिनीकेसोतिनिकेअं
गअंगपीडनिपिरातिहैं ९ नान्वइति आलिंगनमेंअंगअंगपद्मिनीकेपीडियतुहैं
बहुजोपीडवांबनिमसलिबोसोसोतिनकेअंगमेंपिरातहैं उषातिहै नाभीकेनजीक
करजनखनखतकीरेषासोरेषहैंउरहीहैं रदटांतमैंकपोलदलितमर्दितहैं फेरिरदसों
दलितजोअधरतामेंललितहविहैं रसनाजीभिसोरसकोआस्वादनकरतिहैं नेतिने
तियहमतिकरैं नायिकाकेअंगपीडनदोषतेंसोतिनिकोंपीडादोषजानिए ९ राजभा
रसाजभारलाजभारभूमिभारभवभारजयभारनीकेह्वैअटतुहैं प्रेमभारपनभार
केसवसंपतिभारपतिभारजतअतिन्हूनिजरतहैं दानभारमानभारसकलसया
नभारभोगभारभागभारचटनाचटतहैं एतेभारफूलनिज्योंराजैराजारामसिं
तिहिदुषसत्रुनिकेसीरषफटतहै १० राजभारइति भारअषतिआर ओवोफासाज
संरंजामपनप्रतिज्ञापतिभारसबकोमेंपतिह्वोकिंवाप्रतिष्टा पावातसोंजजहोयवैं
नहूनिसोंजूटतहैं भागकोभारकीजोचरनाक्रियाताकोंकरेहैं भारराजारामसिं

कृ. १२५

125

हूबांधवकोबांधेलाकेसिरपैंहैं ताके उषसेंा सत्रुनिकेसीरषमाथासोफारतहैं इहां राम
सिंहकेगुनमेंासत्रुनिकेसीसफारिबोदोष याउदाहरनमेंसंदेह सीसफारिवेकोकार
नसोराजापैंहैंसीसफारिवोकाजेसत्रुनिविषेहैंअसंगतिभासेहैं यातेगुनतेदोषको
उदाहरनसाफदेतहैं १० प्रतभयोदसरथकैंाकृसबदेवनिकेहेरबाजीबधाई फूलहे
फूलनिकैा बरषैंनहफूलफलेसबहीसुषदाई छीरबहीसरितासबभूतललिधीरस
स
सीरहोगंधसुहाई सर्वलोकललचावनतेष्षिकैंहारिददेहहराइरसीपाई ११ प्रतभयोइ
तिसविनाछीरबही भूतरितरहसीकोनामहै उमडिकैंनदीतटमेंभीबहीगुनतेंहारि इको
देहफटिबोदोष ११ विशेषोक्ति विद्यमानकारनसकलकारजहोयनसिद्धिसोईउक्ति
विसेषमयकेसबपरमप्रसिद्ध १२ विशेषोक्ति कारनहैतसोजहारहैं १२ कर्नसेउष
तैपुहहूतेभरपापसेंापुष्टनसासनहारैं सोदससेन उसासनसेंसबसाथसमर्थभुजा
उसकारैं हाथीहजारनिकेबलकेसबअैविषयकेपटकोंइरडारैं द्रोपदीकोउरजोधन
पैंतिलअंगनऊउचस्योनउघारैं १३ कर्नसेइति पापसेंाअतिपुष्टहुते सासनअमाजाउ
सासनसारीखेभाईनिकीसेनासाथीअोउनकेसंगमेंसमर्थलोगाघे भुजाकोउसकारैं
हैंउकसावेहैंवसनषैंचिवेकों इरडावेनिइरहोयकैंकर्नआदिअंगउघारिवेकेकारनहैं

125A

अंगउधारिवोकाजनहीभयो २३ रसिकप्रिया सिषैहारीसषीउारपाय्यहारी कादंविनीदा
मिनीदिषायहारीदिसिअधिरातिकी रुकिरहारीरतिमाररहाहै्यामारहारीरुककोर
तिनिविथरातिवातकीदईईनिरदईदईवाहिअैसीकाहेमतिजारतजरैनदिनदाहअैसेगा
तकी कैसैंहूंनमांनेहांमनायहारीकेसादासवोलिहारीकोकिलावुलायहारी चातकी २४
सिषइतिसषीवचननायकसो कादंविनीमेघमालादि साजाहिअैरनायकहै रतिप्रीति
रुपदिरुपटिहारी सषीनायकसैंाकहतिहै देवविधातानिर्दयहै वाहिअैसी दाकीवुद्धि।
सारीषीवुद्धितमैकाहेकोंदईहैदीनीहै तममनावतहोनांहीतमभीहठिवैठेहो नायक
सोंउरांहनेकोवचनयहभीमिलापकराइवेकोअनुकूलहैअैसेगातकीअैसेसुकुमारगा
तकीजोहैनाइकाताकोंविरहमेंउपजीहैदाहसोराति दिनजारतिहैदाहभीमानछुडाइवेको
अनुकूलकारनहै कोईकहतहैसषीकहतहैविधातासोंवाहिनायिकाकोंकोईसीनिर्दयम
तिकाहेकोंदीनीहै निर्दयमानहठकरिवेकोकारनहैतहांअैसैंलगावतहैं यानायिकाकों
विधातानैनिर्दयीमतिदीनीहै अैसोनायकसोनेहथोजोसोतिकेदिनमेंआपुनायकसों
मिलिआवतीसोवुद्धिआजुनहीहै २५ कनकपाहिजहोनतहांतिनकोपनकाहूपैजा
यनदाहै्या भीमगदाहियरेंधनअर्जुनतजहूनरेंजिनसोंजमहाहै्या केसवदासपिताम

श्री

हूभीषमसीचकरीवसलैंदिसिचास्यो देषतहीतिनके उरजोथद्रोपदीसान्हेंहाथपसास्यो
१९ कर्नहूतिकृपाचार्य कहूकृतऐसोपाठहै जिनेकोकियाभीषमपितामहनेंसीचमस्त
चारिहूदिसाकोंवसकियो तिनकेभीदेषतनेंकें एसवदुजोधनकेरोकिवेकेकारनहैरो।
किवोकार्जनहीभयो १९ वेईहैंवानविधाननिधानअनेकचमूजिनजोरदईज्नवेईदैथ
नुधीरमहीहूदिसाजिनिज्नहूजईज्न वेईहैंअर्जुनआननहीजगमेंजसकीजिनिवेलिवई
ज्नदेषतहीतिनकेनवकाव्तिनीकहिनारिछिनाइलईजू १९ वेईहैंइतिवानकेजोविधा
नचलाइवेकीक्रियाताकेनिधानप्रवीनरहेंजोजानिए चमूसेनाहूहईमारी कावाजातिवि
शेषनीकेआछीतरह विनामारेंविनाघायलभयेंऐसोअर्जुनरछाकरिवेकोकारनहै
रछानहीभई १९ सदोक्ति हानिवढिसभअसभकहुकहिएगूढप्रकासदोइसदोक्तिस
साथहीवरननकेसवदास १७ अथसहोक्ति हानिइतिजहांसंजोगहोयतहां १७ सिस
तासहितभईमंदगतिलोचननिगुननिसोंवलिनललितगतिपाईहैं भौंहनिकीहोडा
होडहैगईकुटिलअतितेरीवांनीमेरीरानीसननसहाईहै केसोदासमनषहासहींसि
षेहीकवितरछिनछिनसहमनछवीलीछविछाईहैं वारवुद्धिवालनिकेसाथहीवढी
हैवीरकुचनिकेसाथहीसकुचउरआईहैं १८ सिसुताइति गमिनीचचलथीसोसिस

वाहुवंदे

126A

ताके संगगतिकी चंचलताकीभीहांनिभई य
तासमेतमंद भई सिस्रताकीभीहांनिभई
हुनूहभनिमेंनिकसो हांनिश्रस्रभईहै औलोचनिमेंगुननिसोंजत्रकललिलतगतिपाईहै
इहांहुद्धिकहीहै गुनभीआपललितगतिपाईहै सहही सोंअगहहेंसभईहै अथकेहास।
कीहीसिषैंपासों बालकबुद्धि थासोबारनिकेसाथवही १८ अथब्याजस्तुतिनिंदा लु
तिनिंदामिसहोतजहांस्तुतिमिसिनिंदाजानि ब्याजस्तुतिनिंदावहैकेसवदासवषानि १९

स्पर्द्धा

ब्याजस्तुतिनिंदास्तुतिइति निंदाकेमिसकरिछलकरिस्तुतिकरे औस्तुतिकेछलकरिनिं
दाकरे १९ स्तुतिकेब्याजकरिनिंदा रसिकप्रिया सीतलहूहीतलतुमारेनवसतिवहतेम
नतजततिलताकोउरतापगोहु आपनोज्योंहीरासोपरायेहाथब्रजनाथदैकेलोग्रकाथसा
थमैनश्रैसोमनलहु एतेपैकेसोदासतमैननप्रवाहिवाहिवहैजकलागीभागीभषस्रषभ
लैगोहु मांझामहछाडोछिनछलनिछवीलेलालश्रैसीतोगवारिनसोतुमहीनिवाहो
नेहु २० सीतलइति हेछवीलेलालएसीगवारनिसोंतुमहीप्रीतिनिवाहततहै गवारिय
हसोंनाइकाकीनिंदाकरतिहैनाइक कीस्तुतिकरततहै औयाहीमेंनायककीस्तुतिकरे
हैनायककीनिंदानिकरतिहै सीतलजोतुमारोहृदयतामेंवहनाइकानाहीवसतहै यह
नाइकाकीनिंदाआछीठोरमेंनाहीरहतिहै नायककीस्तुतिहै नाइकाकोहृदयविरह

क॰
१२८

127

सौं तुम रहत हैं वह प्रीति समुझति हैं तुमारैं विरह नांही या पै कठोर हृदय हो नाइका
की स्तुति नायक की निंदा गूढ हैं नायक की स्तुति नायका की निंदा प्रकास हैं तुम तिल
थोरो भी वाको ताप को चर हृदय ताकों नांही जानत हो तुम ता नीठोर में वसत हो नायक की
स्तुति नायका की निंदा प्रकास तुमै वह भूलति हैं नांही हृदय में राषति है तुम ऐसै निर्दय हो वा
के पास जाते नहीं नायका स्तुति नायक की निंदा आपनो जीव हीरा सो वहु मोल अकाथ
निरर्थकता के साथ मो मसा रीषो थोरो मोल को तुम ही सो सत पुरुष लेत हैं पछे तुमारो म
नहीं रासो कठोर वाको सुन मो मसो कोमल तुम ही रासो अमोलि कदियो सोम को लियो
या वात की तुमैं परवाह नहीं वा नायका कैं वही नकलागी है हमारो मन गयो तुम वे परवा
हि हो यह निंदा है वाकी आसक्ति है यह स्तुति वह भूषन सब भूली तुम नही भूले इहा प्रकास
कहो तुम तो वाको मुष के सरि चंदन सौं मांडो भूषित कियो वा नायिका ने एक छन न छल
ही छांडो भाजि गई नायिका की निंदा नायक की स्तुति फेरि वाने आपनो मुष मंडिन।
कियो शृंगार सा जि तुम सौं मिलिवे कौ आई थी किंवा तुम एक दिन वाको मुह मांडो के
सरि आदि सौं तो भी भीतरि सौं छलन नहीं छांडो ताकों छांडि कैं तुम चले गए छलन नहीं छां
डो तुम छबीले लाल हो सुंदर हो स्तुति पाछे देषिवे को आछे हो भीतरि कपट भरे हो

की

वक्तावोधव्यकेप्रभावतेंयहध्वनि ऐसेजानिए ऐसेंगवारपनासोंतुमहीनेंदूनिवाहत
होइहौस्तुतिकेछलसोंनिंदानायककी २० व्याजनिंदास्तुति केसरकपूरकजकेतकी
गुलावलालसरवृतनचंपकचंवेलीचाहतोरीहै जिनकीतूपासवानहूजिएतेंआस
पासठाहीकेसोदासकीनीभयभ्रमभोरीहै तेरैकोनाहकतकिधोंसदनसखवासहीतें
वसिगईहतिचितकेंहूचारावोरीहै सुनदिअचेतआईइहहेतनहीतरुतोसीग्वालगाकु
लगुवरहारीयारीहै २१ व्याजनिंदास्तुति केसरिइति लालपतनीवसतनहींसरवृतहै
पासवानपासघडीरहनिवालीस्त्री ताकौंतूभयसोंभ्रमसोंभोरीकीनी यहनायकके
चितचढीहमसोंक्रोधकरैयहभय याकेअधीननायककौंभयोयहभ्रम किंवानायक
कोइएवस्तुसोंआसक्तिछुटीयहकहादसाभईयातेंभय तोसोंजोआसक्तिनहीजानी।
औरअनुमानकरिवेलागीयातेंभ्रम कछूठीककरिनहीसकीयातेंभोरी सकृतपुन्य।
हेअचेततूसुन नायकपासआईहै याकारनतें इहांनिंदानिकरतिहै स्तुतिभीनिक
रतिहै गोनामनेत्रसोंवरकहिएअश्रेष्ठहैजाकोनाकरिकैंहारीमन
कीहरनिवालीथोरीहैं दोयएकहौंकिंवाकोईहोयतोहोयनहींतोनहीं नायकतो
सोंअतिआसक्तभयो हूपगुनतेरोसोनहीहै उनहींनायकआसक्तहोयतोवडेच

क॰
१२८

128

रकौहैंजाकौतोहिपासवानहूलिए एतेरीसहजसुवासभीहैं हौनेहैंतहूनायककौं।
अचेतकरिवेकौंमोहरूपजाइवेकौंआईहैं मोहसंचारीताकौलछिनअचेतहोनोंय।
दहैतप्रीतितोओरसौंनाहीहै सषीसाननीसोंकहतहैंनिंदाकौमिसिकरिकपटसौं
स्तुतिकरतिहैं चंबेलीतोरीहैंयातेंवरषारितुहैं तोहिविनासवरितुकेफूलनकौं
नेहीसूहतहै यातेंकालविरोधनहीं २१ जानिएनजाकीमायामोहतिमिलेहूमो
हिएकहाथपुन्यएकपापकौंनिवारिए परदारप्रियमत्तमातंगसुताभिगामी।
निसिचरकोसोमुषदेषौदेहकारिए आजनलोअजादिराषेवरदविनोदभावैएतेपैंअ
नाथअतिकेसवनिहारिए राजनिकेराजाछाडिकीजततिलकतादिभीषमसोंक
हाकहौंपुरुषननारिए २२ जानिएनइति युधिष्टिरकेराजसूयजग्यमेंसिसुपालकौ
वचनश्रीकृस्नसौं निंदाकरतस्तुतिनिकरतिहैं जाकीमायाकपटसौंमिलतहीकैं
मोहतिहै जानीनांहीजातहैएकहाथयाकोपुन्यकोहैऔएकहाथयाकोपापके
है लोगनिकेदेषाइवेकेलिएदानकरैहैफेरिछीनलेतहैंयावातकौंनिवारिएहैं न
हीकरिएहौंहूविचारिएयहभीपाठहैं फेरिपरदारवृजदेवीतिनकेप्रियहैं फेरि
मत्तरहतहै मातंगसुतअमरमेंमातंगनामचंडालकोहैं ताकेसुतकोअभिगामी

क

128A

मे॰ ४ १

हैं ताके संग फिरत है वाके सोभने जात है कथा है स्वभक्त उद्धव कौ पुत्र थ्यो ता सौं भगवान प्रसन्न
ह्वै श्रीभागवत कौ वचन है निरपेक्ष होय मुनि होय औ सांत होय सब कौ वैरी वरि देषतौ।
होय ताके पीछे फिरत हैं निसिचर राक्षस सरीर स्याम है फेरि आज लौं अवतांई थ्यो रा
ई दिन छोडे होत हैं अन वक राक्षस आदि पसु ता को ब्रज में राष प्याच रावे थ्या वरनि सो जो है विनो
दक्रीडा सो जाकों भावै है राजनि मैं कवै बैठो गए तै पे याको अर्थ एतना या मैं पै कहि ए दोष है
फेरि अति अनाथ हैं कोई लोगनि कौ नाथ राजा नहीं है लोग भी षुम कौं नपुंसक कहत है अ
थस्तुति जाहि भगवान की जो है माया सो जानी नहीं परति है मिले पर भी मोहति है देवतनि
कौं भगवान को दरसन होत है तौ भी मोहति है देवतनि कौं भगवान मिलत है तौ भी माया मो
हति है श्रीकुल कौं सव देषत हैं सव नादव जानत है भगवान कोई नहीं जानै पुन्य किए स्वर्ग
होय पाप कियें नर्क होय जा कौ भगवान मुक्त कियौ चाहत है ताकौं पुन्य पाप को निवारन करैं
जव पुन्य पाप नायत व ब्रह्म में लीन होय औ सो वेद वचन है परश्री जो अपार लक्ष्मी ताके प्रिय
हैं मातंग हाथी ता को सुत राज सो फेरि मत्त थ्यो हथिनी कें संग में लेकें सरोवर में विहार क
रिवे गयो थ्यो तब ग्राह ने पकर्यो तब वाके अभिगामी सामुहें न गए थे निसिचर चंद्रमा ताको
सो जाको रूप है देह कारी ए याको अर्थ देवता मनुष्य आदि को सरीर ताको करन वालो

हैं अवतारी ई भी अज ब्रह्मा आदि जे देवता ता की रक्षा करति हैं फेरि वर दे वर को दाता हैं विनो
द रास आदि क्रीडा सो भावत हैं फेरि सुदामा सों क्रीडा करी पद हैं दाता कोन कोन की अै
सो मंदिर देषि सुदामा भीता फेरि अतिअनाथ हैं जा को कोई नाथ नहीं हैं सब के ईश्वर हैं ।
सब के ईश्वर ए हैं किंवा अनाथ जे वेल जा की नाथ में नाथना ही ता को जो विनोद सो जा को
भावत हैं अजोध्या को राजा नग्नजित ता की प्रतिज्ञा थी सात वैल हैं ता को जो नाथे ता ही को
ग्रह नाग्नजिती कन्या आदि देहि श्रीकृस्न नें नाथे इहां निंदा में सरस्वती ने स्तुति करी २२ अ
मित लछन जहां साधन नैं भोग वें साधक की सुभ सिद्धि अमित नाम ता सौं कहत जा की अमि
त प्रसिद्धि २३ अमित अलंकार जहां इति जा सो काज की सिद्धि कीजिए सो साधन २३ आन
न सी करसी क कहा हियनो हित तें अति आतुर आई फीको भयो सुघटी मध राग कौं तेरे पिया
वहु वार वकाई मीतम को पट कैं पलटैं अलि केवल तेरी प्रतीत कौं ल्याई के सबनी कै ही नायक
सौं रमि नायका बात निंही वहराई २४ आनन इति नायका अस संभोग दुःषिता ता कौ वच
न सषी सौं सीकर यसे वकी कनी सीत्कार ग्रंथ कथ की सुघटी सौं मुष में अधर को रंग इहां सा
धन सषी सो साधक जो नाइका ता की सिद्धि संभोग रूप ता को भोग कियो २४ कौ रानैकन जग
मति सेन पसाय सवेदल राजनि ही को जाने को षान कि ने सुललता न सों आयो सहावदी साह

दिलीको थोरडेकें आनि नहेगो कहिके सब साहि मधुकर सों सवकजी को दोरिके हलहराम
रजनीतिको हो अपने सिरकी रतिटीको २४ कों गनै इति जाके मन में राजन्दी की फोजत
होकर ने आज गन्मनि राजाकों कोगनै धानदु मराव आहरतान षानसाद मधुकरसाहि
सों राजाकों जी वकी संकादे मधुकरसाहि प्रधान तिन की सिद्धि हलहराम भोगी २४ अ
यपर्यायोक्ति कोनदु एक अरष्टते अनहीं कियें जु होय सिद्धि आपने इष्ट की पर्जायोक।
तिसोय २६ पर्यायोक्ति कोनदु इति आपना इष्ट की सिद्धि को इक मेव सतें किवा बिनाकि
एं होय २६ षेलत दी सत रंज अली निमें आपहि तें तहां हरि आए किधौं काहू के बुलाए री।
लागे मिलि षेलन मिलि कें मनहरे रटेन लागे दाव आपु रमन भाए री उठि र गई मिस मिस ही
जित ही नित के सो राइ की सों दोऊ रहे छवि छाए री वो कि रति हि छिन राधा जू के मेरी आली।
नलज से लोचन जलद से है आपरी २७ षेलत ही इति सषी सों सषी वचन आपु ते तहां आप
कि धौं काहू के बुलाए आप सब सों मिलि कें औ सब के मन सों मिलि कें हरैं र आसे आसें रा
तिक रिवे के लिए प्रथम मिलन दें जलद से मेघ से जल भरि आए आ सूं साति क भयो नाइका
ने आपनी सषी पठाय बुलाई नाहीं प्रहर्षन सों एतनें भेद प्रहर्षन में पहिले जतन पीछे जतन
न बिनां सिद्धि इहां पहिले जतन नाहीं २७ अथ जुक्ति जैसे राजा को बुद्धि वल कहिए ते मोह

ए

इति

क॰
२३९

13
130

प नाकौंकविकुलयुक्ति यहवरनतवहुतसहूप २८ अथयुक्ति जैसोंजैसोजाकोवुधि
श्रीवलश्रीहूपहोयतैसोकहिए २८ मदनवदनलेतला जकोसदनदेषिजदपिजग
तजीवमोहिवेकौंहैछमी कोटिचंद्रमानवारवारिवारडारोजाकेकाजव्रजराजग्राज
लोंहैंसनमीकेसोहासमविलासतेरेमुषकोसवासमुषिमनिग्रारसहीसारसनिलै
रमी मित्रदेवछितितिरुगदंडदलकोसकुलवलनाकेंताकेंकहोकोंवातकीकमी २९
इतिश्रीकविप्रियायांद्वादशःप्रभावः १२ मदनइति सषीवचननायकसों कैदेषिकै
पायदसोंलेआइए तेरोमुषदेषिकैं मदनकामताकोवदनमुषसोलाजकोसदनच
लाकौंलेतहै लज्जाहूपनेोयरतामेंपैठतहै अतिलाजकरतहै हमारोमुषऐसोना
हीमदनसंसारकौंसुंदरतासोंमोहिवेकोंजोभीसमर्थहै कामकेमुषकीउपमाहीके
मुषकोंकविनांहीदेतहै यातेंऐसोंयुंथ लाजकोसदनतेरोमुषदेषिकैमदनसोवद
नकघनसोग्रहनकरतहै तेरेमुषकीतारीफकरनेंलागतहै किंवावंदननामनम
स्कारकोग्रोस्तुतिकोभाषामेंवंदनकोवदनपढौ वंदनस्तुतिलेचलतहै जगतकों
मोहितकरतहै सोग्रपमोहितहोतहै देवारिदेयारेदिनकीकोटिचंद्रमानिकोंतेरेमु
षपैंवारिडारों तेरेमुषदेषिवेकोंव्रजराजग्राजलोंसंत्रमीव्रतलिएहै वाहीकोमु

न

वारि

२३९

130A

घटै यें औरनिकौं मुख नांही है यां के रति विलास सहित जो तेरो मुख ताकी जो सुवास सुगंध है
ताकौं प्यारसही सहुजही कछु श्रम नांही करनो पर्यो सुगंध वस्तु षाई परमुख सुगंध कर
नेके लिए ऐसो श्रम नदी कूं करनो पर्यो सरसनि कमलनिकौं ग्रहन करि कै रमी है वामें रमि ग
ई है मिलि गई है कमल में तेरे मुख ही को सुवास है किंवा लेस ह्र आदि वाचक है सारसनिसौं
लैकें जेतनी सुगंध वस्तु है तामें रमि रही है किंवा सारसनिकौं लै कै पकरि कै नोरा वरीसौं रमि
रही है मिलि रही है तेरे मुख की सी वास कमलनि में है यह अर्थ आगें ऐसी वास नदी थी औरि
कोई वान की कमी न थी कमल कैसे है मित्र सूर्ज सो जाको देवता है छिति जो भूमि सो जाको दु
गै है कदिन स्थान है जल में रहत है याते जल आवन ओ पहार की ठोर डगी है फेरि जाको दंड है
नाल है और दल पत्र ओ जाकौं कोस है कमल को सकहावत है ओ कुल जाति जाकैं है हेम मेव
ल नाम रूप जाको है किंवा कुल को वल है जाकौं वहुत कुल है जैसो कमल है तैसो कह्यो उ
गै आदि पदनें ध्वनि में राजा कह्यो २९ द्वादस प्रभाव पांच भेद उक्ति के कहै वक्रोक्ति १ अन्योक्ति २
व्यधिकरनोक्ति ३ विशेषोक्ति ४ सहोक्ति ५ व्याज स्तुति ६ व्याज निंदा ७ अमित ८ पर्यायोक्ति ९
जुक्ति १० दस अलंकार कहे इति श्री हरिचरणदास कृता या कवि प्रिया भरनाख्या यां कवि प्रि
या टीकायां द्वादशः प्रभावः १२ अथ समाहित हेतन कौं कहें होत महादेव जोग तें काज ताहि

लैके

सयान

समाहित नाम कहिवरनन कविसिरताज १ अथ समाहित अलंकार हेतु इति कोई कारन
तें कारज की सिद्धि तांही होय पीछें देव जोगानें होय १ रसिकप्रिया छविसों छवीली वृषभानु
की कुवरि आज रही हुती रूप मद मान मद छकिकैं मारहूतें सुकुमार नंद के कुमार ताहि आए
री मनावनें सवन किकैं हसि हसि सोहें करि पाय परि परि के सो राय की सों जब रहे जिय जकि
कैं तिहि समें उठे घन घोर घोर दामिनी सी लागी लोटि स्याम घन उरसों लपटिकैं २ छविसों
इति सयान चतुराईकरिकैं जबकछु उपायनहीं चलीतव जकिरहे आश्चर्यसों मानि रहे घ
नसे घगाजि उठे यह उद्दीपन है औ स्त्रीकों भय उपजावत है मृघ फेरि सोई थी सो लोटिकै
करो रफेरिकैं मेघके गर्जसें मानछूट्यो यह दैवजोग हेतु हसिवो आदि तासों मान न छूट्यो
छूट्यो २ सातहू दीपनि के अवनीपति हारिरहे जियमें जब जानें वीसविसें व्रतभंग भयो सुककौ
अव केसवको धनु तानें सोककी आगिलगी परिपूरन आय गए घनस्याम विहानें जानकी के
जनकादिक के सवफूलउठे तरुपुन्य पुरानें २ सातहू इति जनकजी नें जानी हमारी प्रतिज्ञ
ज्ञा को भंग भयो विहानें प्रातसमें घनस्याम श्रीरामजी आए पुरानें वहुत दिनके जे पुन्य
रूपनरु तें फलें या ही तें घनस्याम कह्यौ मेघसों वडवाफूल तदे असें सोककी आगि घनस्याम
सों वूझी राजा सवधेता सों कार्ज न हीं भयो श्रीरामजी विन वुलाए आए यह दैवकर्मको १

म

131A

जोग ३ सुसिद्धालंकार साधिसाधिश्रौरैं मरैं श्रौरें भोगैं सिद्धि तासों कहत सुसिद्धिस
वजैहैं वृद्धि समृद्धि ४ सिद्धालंकार साधि इति करिकरि सधि सं चिसिद्धवस्तु श्रौरि भोग
करैं ४ मूलनसों फल फूलसबैं दलजैसीकछु रसरीति चलीजू भाजनभोजनभूषन
भामिनि भौंनभरी भवभांति भलीजू डासन श्रासन वासन वास सुवासन जानविमा
नथलीजू केसवकैं महाजनलोगनमैं भवभोग वैलैलै वलीजू ५ मूलनिसों इति
मूलजरिसों लेकें सब फूल श्रौ फल श्रौ दलपत्र जैसो कछु रस श्रौ षधताकी रीतिमें च।
लीश्राई है सोभी सो महाजन राषतहैं महाजनराषनवालाकोउपलक्षनहै जोवस्तुको।
जो संग्रह करै सो इहां महाजन जानिए भाजनपात्र भोजनमें वामिठाई श्रौ भूषनहै मी
में भवननाम घरको श्रौ भावको भामिनि स्त्री सोभवननाम कटाक्ष श्रादितासोंभरीहै।
किं वा घरनिमें भरीहै वेस्या श्रौ परकीया भवसंसारमें भलीभांतिहै भवनामहै सम्भेक
ल्यानकोभीहै कल्यानसों भलीभांतिहै ताकों जो वावर श्रौ भोगकरिवेमें जे समर्थ है ते ले
लेके भोगवत है श्रासननाम है समें हाथीके कांधाको श्रौ विछर पीढ़ा श्रादि श्रौरनको भी
होतहै डासन सतरंजी श्रादि श्रासन विछर श्रादि श्रनुप्रासके लिए श्रौ सहके ज्ञानके
लिए कहे है वासनि घरनिकों वासवस्त्र वाहन घोरा श्रादि जानपालकी श्रादि हेमें सो

तषंडकोघरसोविमान ताकीथलीहैंर एसवश्रोरवनावतहैं श्रोरभोगचतहैं ४ छ
पै सरघासेचिसेविमेरेंसहरमधुपानकरतमषष षनिषनिमरतगोवारक्षूपक्षलप
थिकपियतसषष वागवानवहिमरतफूलवांधतउदारनर पविपचिमरहिंसवार
स्रूपभोजननिकरतवर भ्रषनसनारगोहिगाहिमरहिंभामिनिभूषितकरनननकहि
केसवलेषकलिषिमरहिंपंडितपढेंहिपुरानगन ६ छपै सरघाइति सरघामधुकी
माषीसोमधुकोंसंचतहैं मषनामहेमसेंश्रेष्ठकोभीहैंसहरकेमषकहिएश्रेष्ठलोगपान
करतहैं पथिकसषसेपीवतहैं वागवानमालीमिहनतिकरतिहैं सवारकहिएजोर
सोईकेरेरसोईदार गनसमूहहंहांभीवेसेंहीजानिए ६ प्रसिद्धालंकार साधनसाधैंएं
कभववभगवेसिद्धिश्रनेकतासोंकहतप्रसिद्धसवकेसवसहितविवेक ७ प्रसिद्धालंका
रसाधनइति एकजहांसाधनक्रियाकोंकरैंसंसारसेवाकीसिद्धिश्रनेककोंभोगकरावे
७ मातकेमोहपितापरितोषनकेवलरामभरेरिसभारे श्रोगुनएकहीश्ररजुनकोछि
तिमंडलकेसवक्षत्रियमारे देवपुरीकहंश्रोधपुरीजनकेसवदासवडेग्रहवारे सूकर
स्वानसमेतसवैंहरिचंद्रकेसत्यसदेहसिधारे ८ मातकेइति मातारेनुकाजीतिनकेमो
हसेंपिताजमदग्निजीतिनकोंकेवलसंतुष्टकरिवेकेलिए रामपरसुरामजीवडेरिस

132A

सैंभैं अनेनसुहस्थानेनकामधेनुहरीइहांसुहक्रियाकोफलअनेककेंभोगकराये देव
पुरीसर्गतहांकौंअयोधपुरीकेजनलोग ह्वैहैंआवारेबालकस्त्रकरस्थानसमेतहरिचंद्रा॰
जाअजोध्याहीकोथो किंवाहरिचंद्रराम चंद्र ८ विपरीतअलंकारकारजसाधककोजहां
साधनबाधकहोय तासैंसवविपरीतकं हिकहतसयानेलोय ९ विपरीतअलंकार
कारनइति कार्जकोंसिद्धिकरैंकरावै ताकोजोसाधनजासैंसोसिद्धिकीजिए सोबाधकहो
य ९ नाहतैंनाहरजिवजेवरीतेसांपकरिद्यालैंग्रवीथिकावसावतिवननकी सिवहिसिवा
हभेदपारतिजिनकीमायामायाहूनजानैछायाछलनितननिकी राधाजूसैंकहांकहौंगै
सिनिकीस्त्रनैंसिवसांपिनिसहितविषरहितफननिकी वेनिपरैंबीचबीचआगिऔनस
हिसकैंबीचपारीअंगनाअनेकअनेकअंगननिकी १० नाहतेइति कोईप्रियसखीनायिकाकों
स्वनायकाहूसैंकहतिहै एत्रियऐसीहै नाहकौंहठायकैं नाहरकरिकोअर्धकरिदेतिहै औ
घरघालैहैं उरगमावतिहैंऔवनकीजोवीथीराहताकोंवसावतिहै ऐसीहैंसिवकेआधा
अंगमेंसिवापार्वतीरहतिहै तामेंभीभेदजुदांगीकरिसकैहै जिनकेतनकीजाछायाता॰
सैंजोछलनकीठगिदेकीमायाकपट ताकौंमायाजोहैसंसारकौंमोहितकरतिहैसोभी॰
नांहीजानतिहै किंवाजाकीमायाकपटतासौंमायाजोकोईहैसोभीनहींजानिसकैं छल

य

तिन्है सो भी पाठ है जिनके तनकी छाया कांति सो छलि लेत हैं अमर मैं छाया नाम सहज की
ही की औ कांति कौ औ प्रतिबिंब कौ औ छांह कौ फेरि फनायक कौं नांही हैं पै विषसहित
सापिनि है नायक नायिका सौं वीचि तिन फावत कौंन परें इनकौ पा होवी च औंगि भी नांही
सहिसकैं अनेक अंगनकी जे हैं अंगना संदति ही तिन लै वीच [illegible] पारी हैं कार्ज साधक।
नाइका ताको साधन सखी सो वाधक भई मिलन रूपका जेको १॰ साधन स [illegible] यानोकोऊ
हाथन दध्या रघुनाथ जूकी जगपको तुरंग गहि राख्यो ई काछनिक छोटी सिर छोटी।
छोरीका काकपछ पांच ही वरिसके न जूं अभिलाख्योई ढील न लगं गह सहित जाम वेत है
नमंत से अनंत जिति नीरनिधिना ख्योई केसो दास दीप दीप भूपनि सौं रघुकुल [illegible] लव
जीतिकैं विजय रस चाख्योई ११ साधन इति श्रीरामजीको अस्वमेध को घोरा कुसलव नैं
वांधौ न हां जूं किया जिनके साथमैं सज्ञान लोगन ही है कछोरी की काछनि है कछोटी
कैसे है माथे होय सो चोटी कानके नजीक के सराहें सो काकपछ कहावत है औ अल
कक हावत हैं औ पांच वर्षके हैं अभिलाख्यो चाह्यो जिनि हनुमन्तने नीरनिधि समुद्र नांघ्यो
लांघ्योई जहां जज्ञका र्जता को साधक कर्ता श्रीरामचंद्र जी तिनको साधन पुत्र कुसलव सो
ई वाधक भए ११ अथ रूपक उपमाही के रूपसों मिलो वरनिय रूप ताही सों सवक दत

133A

हैं के सब रूपक रूप १२ उपमा इति उपमा के रूप सों मिल्यो उपमेय को रूप वर्निए १२ वदन चं
द्र लोचन कमल बाहु पास ज्यों जानि कर पल्लव अरु भुज लता बिंबाधर निवरानि १३ वदन इति
वदन सो चंद्र है उपमा चंद्र है ताकों उपमेय मुष ता सों मिले कें अभेद करि कह्यो चंद्र सो मुष
ऐसो न कह्यो वाहि मो है सो पास बंध जियमें जानों बिंब फल होत है यह साधारन अवभे
द कहत हैं १३ ताके भेद अनेक मैं तीनें कहे हु भाव अद्भुत एक विरुद्ध अरु रूपक रूपक नाव
१४ ताके भेद इति ताहि रूपक के अनेक भेद हैं मैं इहां तीनि भेद कहे १४ अद्भुत रूपक सदा एक
रस वर्निए औरनि ताहि समान अद्भुत रूपक कहत हैं ता सों बुद्धि निधान १५ अद्भुत रूपक
सदा इति एक तरह रूप करस जा में हां वृद्धि नांही १५ सोभा सरवर मांहि फूल्यौ ई रहत सषि रा
जै राजहंस नि समीप सुष दानी ए केलो दास अ पास पास सौरभ के लोभ च्चने ग्रानिके देव भौर
भ्रमत बषानिए होत ज्यों नि दिन दूनी निस में सह सगुनी सूरज सुहृद चारु चंद्रमान मानिए
प्रीति को सदन छूइस कें न मदन ऐसो कमल वदन जग जानकी को जानिए १६ सोभा इ
ति कोई सषी श्रीरामचंद्रजी सों कहति है हे सूरज सुहृद सूर्ज के मित्र सूर्ज वंसी हैं यातें पीछें
सूर्जसुत ग्रीव कों भी कहि आए हैं ताके मित्र जगत में श्रीजानकीजी को वदन सो ऐसो कम
ल हैं जानि परत हैं सोभा जो सोई सरोवर ता में सदा फूल्यो ई रहत है यह अद्भुत फेरि स

न



षीजोहैसोराजहंसनीसोसमीपमेंराजतिहैं तिनकौंसुषदहै आसपासहोनेवहूतजोसो
रभसुगंधताकेलाभतेंआनवासिकाकेइनोदै होताकोदेवतापश्चीहै सोभ्रमरसोभ्रमतिहैं
फिरतिहैं ओरदेवताजोउदाआनकेलोभआयसकेंनहीं जयंतइंद्रकापुत्रआयोथोताकीवह
दसाभई एपश्चीलगाईहै औमाताहैवहवात्सल्यकरिमायोभीसुचिसकेंहै भौरीकीठौर
भौरहैं भाषामेंइकारदविविजानतेहैं किंवाभौंरकीफिरवेकीक्रियाएपश्चीकेफिरवेकीक्रि
याकोउपमानहैदोषनहीदिनमेंचंद्रमासोंहूनीहोतहै याअर्थतेंचारुसुंदरचंद्रमाकों
नहीमानिएरतिप्रीतिकोसदनघरहै यहप्राकृतजोमदनकामताकौंछ्वैनहीसकतहैं
सोभासरोवरसोंअभेदकिएजैसैंओरिभीअभेदजानिए मुषसोंकमलसोंअभेदसदाफू
ल्योरहतहै ओरिकीजोतिघटतिहैवढतिहै यहसदाहूनीसोगुनीहोतिहै यहएकुरसचंद्र
माकोसमाननहींऐसैंअद्भुतजानिए कोईसषीसंबोधनलगावतहै रामलछमनकेसमीप
फूल्योरहतहैऐसेंकहतहैं १६ विरुद्धरूपक जहांकहिएअनमिलकहूसुमिलसक
लविधिअर्थसोविरुद्धरूपककहैंकेसवबुद्धिसमर्थ १७ अथविरुद्धरूपकजहांकहिए
इति जहांअनमिलवातकहिएऊपरसोंअनमिलभासेंअर्थअनमिलनहीहोय जहांए
कअर्थमेंएकअर्थअंतर्भूतरहै जानोजाय ओरिग्रंथमेरूपकातिसयोक्तियाकोंकहतहै

१८ सोनेकीएकलता तुलसीवनक्यौंवरनौंसुनिबुद्धिसकैछ्वै केसवदासमनोज
मनोहरताहिफलेफलश्रीफलसेहैं फूलसरोजरह्यौतिनिऊपररूपनिरूपितचित्तच
लैच्वै तापरएकसुआसुभतापरषेलतवालकषंजनकेद्वै १८ सोनेकीइति प्रथमदः
षीतिनायककौंनायिकाकौंभयोहैताकोवचनसषीसौं तूयावाततैसुनि तुलसीवन
श्रीवृंदावनतामैं एकसोनेकीलताहै लतासोउपमानतासोंउपमेयनायिकाजानिए
रतिहै काकुस्वरसौंकहतिहैबुद्धिछुइसकैनहीछुइसकैयहअर्थ मनोजकामताकेम
नकेहरनवालेश्रीफलसेदोयफलफूलेहैंकुचजानिए सरोजसोमुषजानिए रूपके
ठहरावनेमेंचित्तमनसोद्रवहोयचुईचलैहै तापरएकसुआसुकनासिकाजानिए सु
भआछोषंजनकेवालकनेत्रकहतकैअनमिलअर्थसुमिल १८ अथरूपकरूपक रूपभा
वनहीवरनिएकौंनहुबुद्धिविवेक रूपकरूपककहतकविकेसवदासअनेक १९ रूपकरूपक
रूपभावइति रूपओभावमनकोविकारजहांवरनिए १९ काहूकैसितासितकाहूनीकेस
वपातरमौंपुनरीतिविचारो कौटिकदासचलैंगतिभेदनचावतनायकनेहनिनारोवा
नलहैंमरुहासमदंगसुदीपतिदीपतिकोउजिआरोदेषतिहोहरिदेषितुमैंयहहोनतहैं
आंषिनहीमेंअषारो २० रसिकप्रिया देहरितुमदेषतहोतुमैंदेषिकैंनाइकानैंआंषिनि

क. १३४

135

मेंआंखिकीठौरमेंअंबारानाबिवेकीठौर यहहोतिहैसितसपेदरंगआअसितस्यामरंगहैसो
ईकाछनीहै ताकोंकाछेंपहिरें पूतरीसोपातरिहैअभेदकियो कोरिकूटाहसोनाच
कीजोगतिताकोभेदहै लटाछेदउडपतिरपहुत्सादिगतिभेदहैं नेहजोहै सोनायकहैन
चावनिहारनरआहैंनेत्रकेहासमेंतोसहूनहींयातैंअैसैंलगाइए निजारोवाजनतहैम
दुहासमरदंग आविनमेंलोअबारोहै पैमुषकोजोमदुहासमोमरदंगहै सोनिनारोज
दावाजनतहै अंगकीजोदीनिप्रकाससोदीपककोउजेरोप्रकासहै रूपककह्योकाछेंइत्या
दिकरितमेंदेषिकेयामेंमनकोविकारहै संवीगअभेदकरिएतनाअधिककह्योयातेंरू
परूपक २० अथदीपक वाचिक्रियागुनद्रव्यकोवरनहूकरिइकठौर दीपकदीपति
कहतहैकेसवकविसिरमोर २१ अथदीपक वाचिक्रियाइति प्राचीनग्रंथवाच्यचंद्रिका
हैतहांजातिक्रियागुनद्रव्यअैसोपाठहै इहांभीवाचिकीठौरजानिए याकेपाठकोअर्थ क्रि जाति
यावाचीगुनवाचीद्रव्यवाची [illegible] जोसहदेषनोहसनोइत्यादिक्रियावाचीहै नी
लपीतइत्यादिगुणवाचीहै द्रव्यसोंजुदानहीरहैसोगुन द्रव्यचरवहलइत्यादि इनकोंज
हाएकठौरमेंवरनिए तहांदीपकअलंकारकीदीपतिप्रकासकहतहै इहांवर्न्यअवर्नकों
एकधर्मनहीलियो २१ दीपकरूपअनेकहैंमेंवरनेंहैरूप मनिमालातासोंकहैकेसव

प

135A

सवकविरूप २२ दीपकहपइति मैंदोयतरहकेवरनेहैं ताहीसोकविरूपमनिश्रोमा
लाकहतहैं एकमनिदीपकदूसरोमालादीपक २२ मनिदीपक वरषासरदवसंतस
सिसुभतासोभसुगंध प्रेमपवनभूषनभवनदीपकदीपकवंधु २३ मनिदीपक वरषा
इति सुभताकल्यानपन ओसोभाकाहूकी एसवदीपकअलंकारकेवंधुहैं इनसोंदीप
कपुष्टहोतहैं २३ इनमेंएकजुवरनिएकोंनहूवुद्धिविलास तासोंमनिदीपकसदाक

इतिश्लमे

हियतकेसोदास २४ इनिमेंवरषाआदिमेंएकभीज्योंवरनिए ऐसेंजानिए २४ प्रथमह
तिननेंनिहिरिहिरिहरिकीसोहरषिहरषितमतेजनिहरतहैं केसोदासआसपासपरम
प्रकाससोंविलासिनिविलासककहूकहिनपरतहैं भांतिभांतिभामिनीभवनकहूंभूषे
भवसुभगसुभायसुभसोभाकोंधरतहैं मानिनिसमेतमानिमानिनीनिवसकतिमेरो
मनतेरोदीपदीपतिकरतहैं २५ प्रथमइति हेमानिनिमानसमेतमाननीकोंवसकारी
जोहैंश्रीकृस्नअवयदीजिए सषीनायककेपह्लकीकहतिहैं मेरेमनकोजोयेप्रकासक
आनंददायकऐसोजोकृस्नसोतेरेमनकीदीप्तिप्रकासआनंदताकोंकरतहीहोयगोकु
हाभयोजोअवारहहिवैठी पहिलेहरिननैंनीजेनाइकाहैं हरिकीसोंयाकोअर्थ हरि
केसोम्हनेहरषिकेंतमकोजोतेजप्रवलताताकोंहरतिहैं दीपककोधर्महैतमकोनासक

क.
१३६

136

रतहैं इहांनांही देषो थ्यो जवतांई तासौं भये जो विरह तासौं उपज्यौं जो दैन्य तासमै कहे को श्लोक है
प्रिया विरह संतप्त मनताकों श्रीकृष्णके आसपास चहू ओर अंगकौ फैल्यो जो है बड़ो प्रकास तासौं
विलासिनीनाइकानाको तो विलास करी हास आदिक कछु होन नहीं पावत है औ भांति भांति
के भांमिनिके भौन रचनाको भूषित करत है श्रीकृष्णके अंगको प्रकास फेरि हरि कैसो है
भव नाम है मैं सुभ कोभी है भव कल्यान पुंज जाकौं कोइ अमंगल नहीं फेरि सुभगा सें
दर है फेरि आछी सोभाकों राषत है हरषि वेसो प्रमत्त मतंगज नासिके सें दीपक प्रकासक कासि
नीके भवनकौं भूषित करत तैं भव नभीवर सो ऐसें भी कहत है जिनिके लिए भामिनि आपनैं घ
रकौं सिंगारति है भयपदसौं सुभकैसो यादी तें भव संसार नहीं व्यो सुभगसो सुभताकू है
सबबात जाकी आछी है ऐसैं जानिए जामें गुन रहे सो दूषद हरिन इत्यादि द्रव्य वाची शब्द हैं हे
रि है तिहररत है इत्यादि क्रियाशब्द है जाकी जिए चेष्टा सो क्रिया प्रकास गुन २९ दछिन पवन
दछन छिनी रव निल मिलो लालक रत लौंग लवली लताके फलके सोहासके सर कुसुम
को सरसकन तन्तन तितनहूंकों सहित सकत भर कैसोंहूंकों हूंदे तत हठि सा द्रस विलासव
सचंपक चंबेली मिलि मालती सुवास हर सीतल सुगंध मंदगति नंदनंदकी सौं पावत तक
हातें तेज तोरिवेंकौं मानतह २९ दछिन इति सषी पवनके प्रसंग कहि मान छोड़ावति

१३६

136A

ना

है दछिनदिसाकोजोपवनहै सोदछसमर्थ है जछनीरसनजोकुवेरलगिकोअर्थ ऊँनदीनाउमल
यहीकैलासताईजानैकोंसमर्थहैतोभीलवेगलताकोंओलवलीसछसोलागीजेहैलतानकिफ
लकोंऐसोमंदहैयहअर्थजछिनीरवनिऐसोभीपाठहै नेजछिनोसीसंदररमनीस्त्रीहैलागिके
लोलचंचलनहीकरनिहैलवंगादिकों कहूदछिनीलतानिलगिपहभीपाठहै केसरिनागके
सरकिंवाकेसरनाकेजेकुसमफूलताकोजोकोसगछानाकोजोरसमकरंदनाकीजोतननन
छोटीकनिकानाहूकोभरभारनाहीसहिसकतहै उरतोजानहै कैसेहूहैहढसोसाहसजोरावरी
सोचेपकलताआदिजेनायिकाहूहठकरतिहै जोरावरीसोंपकरिलेतहै नवउनकेविलासवस
होतहै उनकेवनहैताहिसोलागेविनाआगेनहीजायसके सुवाससुगंधसोअवमेंवसऐसोहै
नेटनेटनकोसपर्यिकरिकहतहैं मानरूपहेछउद्दोपवनवनेनसुगंधवनेनजछिनीसखीषी
नहूसंदरिसोभावनीकिंवापवनकीसोभावरनीपवनइत्यादिद्रव्यलोलकरनोइत्यादिकियाशएसी
नलसुगंधसुन २६ मालादीपक सवैमिलेंजहंवरनियदेसकालबुधिवंतमालादीपककहतहै
नाकेभेदअनेन २७ मालादीपकसवैमिलेइति क्रियागनद्रव्यवाचीजोसबसोजिहांमिलायकैव
रनियेवरघासरदइत्यादिलीजेदेसकालभीवरनोंबुधिवंत २८ दीपकदेहदसासोंमिलैंसुदसामि
लितेजहांजोतिजगावै जागिकैजोतिसवैसमफैनमसोधिसुतोसुभनादरसावै सोसुभनारचै

कैसेहूं

क॰
१३७

137

रूपकोरूपकरूपसुकामकलाउपजावैकामसुकेसवप्रेमबढावतप्रेमलैप्रानप्रियादि।
मिलावै २८ दीपकइति देहसोदीपकहैसोदसाजोअवस्थाजोवनताकैसोंमिलीऔदसाव
तीकोभीनामहैदसाअवस्थाऔरवत्तीतेजनामहैममेवलऔप्रभावकोभीहैतेजपहूला
औअग्निताकोंमिलिकैजोतिप्रकासभयोपीछैंज्ञानभयोसमझिवेलागीदीपपछि
जोंजोंहीदेषिवेमेंआवैघोसोदेषैलागैपातमअज्ञानऔअंधकारताकोंदूरिकरिकेसुभ
ताआनंदताकोंदेषावैहैहेममेरूपनामआकृतिकोऔसुंदरताकोभीसोजोहैसुभता।
मेंआकृतिकोजोरूपकसुंदरताताकोंरचैहैमनमैंबढावैहैयहसुंदरपदार्थहैमिलेइ
त्यादिक्रियाप्राहूप्रकासइत्यादिगुनशाहूदीपकदेहइत्यादिद्रव्यसोभाहैसुभताहैप्रेमहै
सोमिलापकैवरमोहैऔजोवनकोकालहै २८ चैननिकीचोरसुतिमोरनिकेसोरसु।
निसुनिसुनिकेसवअलापआलीजनको हासिनिदसककदेषिदीपकीदिपतिदेषिदेषिसु
भेसुजदेषिसदनसुवनकों कुंकुमकीवासघनसारकीसुवासभई फूलनिकीवासमन
फूलिकैमिलनको हसिहसिमिलेदोऊअनहीमनाएमानछूटिगयोएहीछोरराधि।
कारवनको २९ चैननकीइति आलापकथनइहांसुनिवेक्रियासुचैनकीचोरआदि
मिलेहैं सदनचरसुवनकोफूलकोइहांदेषिक्रियासोंसवमिलेहैं वाहीतशद्दक्रिया

रस॰
१३७

१३७A

गुनरूपकौं जानिए वरषाकाल है सुभतासौं आनंद है सुभ है सुगंध है प्रेम है वनमे मोर बोले हैं ।
वने रहे हैं ऐसें जानियैं २९ अथ प्रहेलिकावरनन तवस्वइच्छा यह जहांकौं नहु एक प्रकार तासौं ।
कहत प्रहेलिका कवि कुल बुद्धि प्रकार ३. प्रहेलिका भनत इति वस्तुकौं काहू एक तरह छि
पायके २. सोभित सहस्र ईस सिर उन सठि लोचन लेषि छप्पन पद जानैं तहां वीस बाहु व
रदेषि ३१ सोभि इति हरि औ शिव औ ब्रह्मा ए तीनों देवता सहित वाहन सहित सूर्यमंडलमें
रहत हैं एक मस्तक हरिके सिवके पांच ५ चारि मस्तक ब्रह्माके ४ एक लक्ष्मीजीके १ एक
सावित्रीके १ एक पार्वतीके १ एक गरुडके १ पैं वृषभके एक १ हंसके १ सूर्यके १ औ संज्ञा
सूर्यकी स्त्री है औ छाया भी सूर्यकी स्त्री है ए कोई छाया नहीं लेत हैं शनैश्चर लेन हैं भवानीको वाह
हन हों वृषभ ही लीजी ए सिंह नाहीं औ रत्रहनको एक सिर १ औ सात अश्व सूर्यके सात मुष ७ ह
रिके नैन दोय २ शिवके नेत्र १५ ब्रह्माके नेत्र ८ लक्ष्मीके नेत्र २ पार्वतीके २ सावित्रीके २ ग
रुडके २ वृषभके २ हंसके २ रविके २ छायाके २ अश्वके नेत्र १४ सातन अश्वके अठाईस २८ अरुणके २
चरन वृषभके चारि ४ अरुनकौं चरन नहीं औरनिके दोय दोय जानिए चारि भुज भगवानके औ
रनिके दोय दोय एसें जानिये ३१ प्रभाकर मंडल वरन अष्टादस बाहु दस लोचन सताईस मारतिहै
शनिपालके सोभत गणार हसीस ३२ चरन इनि है ये चरन भगवानके दोय लक्ष्मीजीके २ दोय गरुड.

क॰
१३८

138

के २ दोयमहादेवके २ दोयपार्वतीके २ चारिवृषभके ४ चारिसिंहके ४ चारिवाहुभगवान
के दोयलक्ष्मीजीके दोयमहादेवको २ दोयपार्वतीकौ २ लोचनदोयभगवानके दोयलक्ष्मी।
जीकेदोयगरुडके २ पंद्रहमहादेवके दोयपार्वतीके दोयवृषभके दोयसिंहके विसरूपपा
लनकरतहै सिवरूपसंघारतहै सोसभगवानके एकलक्ष्मीजीके एकगरुडके एकमहा
देवके पाचपार्वतीके एकवृषभके एकसिंहके एक ३२ सोपहनवही देवताहै पक्षीजि
हिंगोह केसोसोईराषिहै इंद्रजीतजमदेह ३३ सोपस्वइतिसातग्रसवसूर्यके ? एकवृ।
षभ १ एकसिंह १ देवतानवव्रह्मा १ विस्नु १ शिव १ सावित्री १ लक्ष्मीजी १ पार्वती १ सूर्य
चंद्रमासिवके माथेमे १ अग्निएकशिवके भालमें १ पक्षीदोयगरुड १ ओहंस १ जाके च
रमेंकेसोअकनपक्षीहै पेचरमे सूर्यमंडलके वीचनहीरहतहै वेवाहिररथचलावैहै या
तें ग्रहननहींकि योअैसोसूर्यहै ३३ अर्कमंडलदेषैस्नेनघायकछुपायनजनवतीजाति।
केसवचलाननहारईयासरतिनैंनराति ३४ देषेइतिलोगचलतिहै वेजोपथसोनही
हारतहै पाहूँलसोंकहतहै पथजानिए ३४ राहहै केसवताकेनामके आषरकहियेरा
प सुधेभूषनमित्रके उलटेदूषनहोय ३५ केसवइति मित्रकौंराजिकहिकैवोलिए रा
जिइहांआवो उलटिकै पढैजराबुहाईकोनामसोदोषहै सवहीजानो ३५ राजज्ञाति

छ

१३८

लता ३ हूं आषरहिनामकहै सबको यसुधे सुषभछिपं३ लरैं ऐसो बरहोइ ३६ जातिलता
इति लताबाकी जाति है दोय आषरको नाम है भषिएषाइ पैतो सुषके सुषदोइ सुधे
सुषभछिपं ३ लरें ऐसो बत आषरदोष ३ लरे पढै षटाकोई बस्तुविशेषहै ३६ दोषसुव
सुषचाहै भोगयोजो पियएकहिवार चेदगहै जहांराहकों जैहोतिद्विदरबार ३७ सेव
सुषइति वीरबलको दरवान चंद थो जो कोई जातो ताको रोकतो ३७ वीरबलको चंद
दरवान ऐसो सूरिदिषायसषि जियजानतसबकोय पीठलगावतजासुर सक्षाती
सीरीहोय ३८ ऐसोसूरिइति पहेलीको भेद किठारीभीहै देषतार मैंप्रसकरें जैसें सभामैं
बैठोकहै हमैं याठोर मैंबगावेहाचान्नवजो चनवालावारीकोव नापदेत है फेरिकहै हमैंक
षटेषावोतबफरासको बतायदेतहै परामहूक विशेषओ जोबिछोनाकरैसो औगुत्रवतीहू
छतिहै सबी सोहै सषिमूरिकैफिरिकै सोरिकोरैऐसी बस्तुबतावो पीविसों आयकेपुत्रलय
टेहैं तो ताके रससो अनुराग सों छाती सीतलहोतहै पुत्रवाही ठोरमैं है ऐसैं जानिप ३८ परि
हासिजहांकरतकहू और हीरूपजिपरतकाकहू और तासों परिहासजानिअक्रूके सबकरवि
सिरमोर ३९ अथपरिहासतिरैलेकार जहांकरतइति औरकायेकरत और कायेइपजे ३९ रसि
कप्रियाहमि बोलनही सहूसें सबके सबलाजभगावतलोगभगेकछूवानचलावतचेरुचले

क.
१३९
139

मनआनततहींमनमत्थजगे सषितेंजकहैसुकतीमनमेरैहूं मानिदहैनहिंयोउमगे ह
तिहैंानेकुंहोटिपसारततहींअंगुरीनिपसारनलोगलगे ४६ हसिबोलइति सषीकह
तिहैतूंनायकसोंबोलिमिलितबनाइकाबचननायकसोंबोलततहींसबलोगहसैंहस
तिहैतिहंतहैसुषकैविलासकोकार्यकियोनिंदाभई लाजकैांछोडततलोगहसेंभा
जतहैदमेंजातिमेंसोकाढतहै हरिकीकछुवातचलावतदें तवचोरचोरचाकैलतदैंहसि
बोलत हीइत्यादिप्रथमवचनसिंगारसवलोगहसतहैइत्यादिहूसरोवचनइनकेमत
मेंवीभत्सरसलोगजातिमेंसोकाढतिहैछीछीकरतिहैअैसेग्लानिमनमत्थजगेसिंगा
रहहदयनहीउमगेग्लानिहोतिहैपरिपतिसांवीभत्सडीठपसारिबोसृंगारचेष्टालोगअं
गुरीपसारिहमेंवतावतहैयहवीभत्सइहकवित्तरसिकप्रियामेंरसदोषमेंकह्योहैप्रत्यनी
करसकोउदाहरनहैजहांविरोधीरसकोमिलापसोप्रत्यनीकस्रृंगारकोविरोधीवीभत्स
हैयातेंइहांपरिवृत्तकोउदाहरनकैांदियोयहप्रवलरसदोषजउदाअलंकारदोषजुदोज
होरसदोषहोतहैतहांभीअलंकारनिकरतहैजोअलंकारदोषमेंदियोहोतोअैसोवाही
कवित्तकैांअलंकारकोउदाहरनदेतेतोकविकोभ्रमनिकरतेतो लाजलिएसषीकुंजमेंतू
त्वियसोंरसकीनप्रीतिभईतवचंदमुषीहरिहैकामनवीनइहांलाजसंचारीअैारसको

दोष

१३९

139A

प्रीतिस्थायीसहृवाच्यसेंरसदोषहैअलंकारउपमांतोनिकरतहैअलंकारदोषरसदोष
यहसवदमारोकियादोषकेनिर्नयकोकविवल्लभग्रंथहैतामेंस्पष्टहै ४८ हाथगह्योव्रजना
यकभावदरीछूटिगईधुरिधीरजताईपानभयेंमखनेनरचीरुचिस्याबसीदेखिकदैहमठाई
हैपरिरंभनमोहनमोमनमोहिलियोसजनीसुषदाई लालगोपालकपोलनषछतते
रेदिएतेंमहाछविछाई ४२ हाथगह्योइति सषीवचननायिकासोंसुंदरभावमनकोविका
रसोंजवतेंहाथगह्योतवनायककेधुरिकहिएआगेंधैर्यछुटिगयोकिंवाधुरिधीरजता
कोंभातिपकरिवे कार्यसोंछूटिवोभयोपानतोंमषषातहै नैननैंआपनीहचिलालिरचीहै
तमस्यारसीलदेषिकेहमठाईसाचीकहैं इहांअसंगतिभासैहै परिरंभनआलिंगनतेंरकपो
लमेंलालनेंनषछतएतेंमहाछविसोंछाइगईयोंकरतसोभाउपजी ४२ नीवहियोजि
निजन्मदियोजगजिनाहीकीजोतिवड़ीजगजानैं ताहीसोंवैरमनोवचकायकरैरुतकेस
वकोडरआनैं संषकतेंरिषिसिंहकरोफिरिताहीकोंम्हरषरोषविनानैं अैसोअकहृयहका
लहैजाकोभलोकरिएसुचुरोकरिमानैं ४२ इतिश्रीकविप्रियायांत्रयोदशप्रभावः १३
नीवदियोईजाकोभलोकरियतहैसोचुरोमानतिहैभलाकरतचुराभारीउठीजोतिजा
हिभगवांनसोंमनक्रतवैरकरैकायक्रतवैरकरैकिंवातिनकीक्रतकरनीकोंनहीमनमें।

क॰
१४॰

140

त्या वे एक रिषि के आश्रम मैं मूषक कयो ताहि रिषि कौं कह्यौ मोहि बिल्ली मारें चाहति है रिषि
नै कह्यौ तूं भी बिल्ली होइ फिरि कुत्ता सौं मह्यौ ग्यो सें कर तें सिंह की योज बसिंह भयो तब रिषि कौं
मारिबे कौं चाह्यो तब रिषि नें फेरि वा कौं मूषक करि दीयो ४२ तेरह अलंकार या प्रभाव मैं
कहे १२ समाहित १ सुसिद्ध २ प्रसिद्ध ३ विपरीत ४ रूपक ५ अद्भुतरूपक ६ विरुद्धरूपक
७ रूपकरूपक ८ दीपक ९ मनिदीपक १० मालादीपक ११ प्रहेलिका १२ परिवृत्त १३ इ
ति श्रीहरिचरणदासकृतायां कविप्रियाभरणाख्यायां कविप्रियाटीकायां त्रयोदश प्रभा
वः १३ अथ उपमालंकारवर्नन रूप सील गुन होय सम ज्यौं क्यौंहूं अनुसार ता सौं उपमा
कहत कवि केसव बहुत प्रकार १ अथ उपमालंकार रूप सील इति रूप सील स्वभाव गुन
न ईनि करि जहां समता होइ को इतवद् १ नाम संसय हेतु अभूत अतिअद्भुत विक्रिया ज्ञा
नि दूषन भूषन मोह [illegible] नियम गुनाधिक आनि २ उपमा नाम संसय इति संसयोपमा १
हेतूपमा २ अभूतोपमा ३ अद्भुतोपमा ४ विक्रियोपमा ५ दूषनोपमा ६ भूषनोपमा ७
मोहोपमा ८ नियमोपमा ९ गुनाधिकोपमा १० या दोहा मैं दस नाम कहे २ अतिशय उत्प्रे
क्षित [illegible] १२ श्लेष धर्म विपरीत निर्नय लाचनिकोपमा असंभावित मीत ३ अतिशय इ
ति अतिशयोपमा ११ उत्प्रेक्षितोपमा १२ श्लेषोपमा १३ धर्मोपमा १४ विपरीतोपमा १५ निर्न

१४॰

योपमा १६ लाछनिकोपमा १७ असंभवोपमा १८ आठ उपमा या दोहा मैं कही ३ बुद्धिविरो
धिमालोपमा औरि परस्पर ई स उपमा भेद अनेक है मैं वरनें इकवीस ४ बुद्धि इति विरोधी
बुधि रोय विरोधोपमा १९ मालोपमा २० परस्परोपमा २१ इमक विराजत इकईस भेद कहे संकीर्नो
पमा लेकै बाईस भेद होत है संकीर्न बाईसमौ से दोहा ५ जहां नहीं निरधारक कछु सब संदेह
सरूप सो संसयोपमा सदा वरनत है कविभूप ५ अथ संसयोपमा जहां इति जहां निरधा
र निश्चै नही ५ खजन है मनरंजन के सब रंजन है न किधौं मति जी की मीठी सुधा कि सुधा
धर की दुति दंतनि की किधौं हाडिमही की चंद भलो मुख चंद किधौं सखि सुरति काम की का
ह की नीकी कोमल पंकज कै पद पंकज प्रान पियारे कि मूरति पी की ६ रसिकप्रिया या
खंजन इति सखी सौं नायिका नायक की सुंदरता स्तुति है खंजन मन के रंजन करनवाले
हैं किधौं नैन मन के रंजन करनवारे हैं तेरे जीव की जो मति है निश्चय करी जो मति है सो कहे
किं वा मति नाम इछा को है जीव की इछा खंजन नैन देखत चाहत हैं किं वा नायक के नेत्र को प्रान
अति प्रिय है किं वा पिय नायक ताकी मूर्ति संदेह ही किधौं निश्चै काहू की नहीं करी जो सौं सं
देह करै है तासौं उपमानोपमेय भासै है खंजन औ नैन इत्यादि जानिए ६ हेतूपमा लछन
होत कौन हू हेत तैं अति उत्तम सो हीन ताही सौं हेतूपमा के सव कहत प्रवीन ७ हेतूपमा

हेतुइति कोईएककारनतैंहीनजोवस्तुसोउत्तमश्रेष्ठहोय ७ अमलकमलकुलकलित
ललितगतिवेलिसोंवलितमधुमाधवीकोंपानीएअगमरदिकपूरधूरिचूरिपगकेसरि
कोकेसबविलासयहचानिए केलिकेचंवेलीकरिचंपकसोंकेलिसेइसेवतीसमेतहे
तकेतकीसोंजातियेंहिलिमिलिमालतीसोंआवतीसमीरजवत्तवतेरोमुषवासस्वास
सोवषानिए ८ अमलइति ऐसोहोयकेजवसमीरपवनआवतहेतवतेरोमुषवासऔ
स्वाससोकहिएहेकहूंमुषमुषवासऐसोपाठहेसुषदायकजोतेरोमुषताकीजोसुवास
ताकोसमानकहियतहेपवनमुषवासकोंअनन्तमहेइनन्हेतुसोंउत्तमभयोतवमुषकीस
मतापाईपवनकेसेहोयअमलहोयभूमिकीरजआदिलीएंनआवतहोयजलमेंस्नानकरि
आवतहोयऐसोकमलकेकुलकोंदलितकिएहोयवाकोंमसलेहोयवालोंलागेहोहोयऔल
लितगतमंदगतिहोयवेलिलतानसोंवलितमिल्योहोयफेरिमाधवीवासंतीलतानाकोम
धुफूलकोरसताकोंपानिएपीयेंहोयमरगमदकसतूरीऔकपूरकोंपावसोंचूरिकिएहो
यकहूनोतागंधलिएहेंताकोंपतनोतरहेसोंकहोनेयाधेहोषभासेहेचंवेलीकोंयामिके
लागिकेसेवतीकोंसेइकेताहिसहितकेतकीसोंप्रीति ८ अभूतोपमाउपमाजायकहीनहीं
जाकोरूपनिहारि सोअभूतोउपमाकहीकेसवदासविचारि ९ अभूतोपमाउपमाइति

केध्नर

उपमानहीकहीजाय ९ रसिकप्रियाजुरिहैकैंभूषनैंसन जुतिजोवनकीदेहहीकीजोतिहो
तिहैासऐसीरातिहै नाहकोसुवासजागेंहूहेकैसीकेसवसुभावहीकीचासभौंरभीरफारैं
षातहैं देषितेरीमूरतिविसूरतिहैंलालनकेद्रगदेषिवेकौंललचातहैचलिहैकोंचंदमुषी
कुचनिकेभारभएकचनकेभारतेंलचकिकटिजातहै १० जुरिहैइतिसषीनायककोंसुनाय
कैकहतिहैभूषनवसनअरुजोवनकीजुतिकोंकरिहैतेरीदेहकीजोतिसोंदिनसारीषीरातिहो
तिहैतेरीमूरतिकीसूरतिसोंदर्यदेषिकैसोच तिहैंविलषातिहैंजवतेरेवडेकुचहोहिगेत
वहेचंदमुषीतेकैसेंचलिसकैगीदिनसीरातिहोतिहैऔचंदमुषीयहदोउठौरमेंउपमानिकर
तिहैसोनहीलेनीनाहकोंसुवासलगेंकैसोहोयप्रीयाकोउपमासोंकहीनहीजातिहैऐसेंजा
निए १० अदभूतोपमा जैसीभईनहोतिअवआगेंकहेंनकायकेसवऐसेंवरनिएअद्भुतोउप
होय ११ अभूतोपमाजैसीइति आगेंकोईनहीकहेंगेंयातेंभूतभविष्यतवर्तमान जानिए ११
प्रीतमकोअपमाननमाननिदानसयाननिरीफिरिजावे वंकविलोकनिवालअमोलनिवा
लतौकेसवमोदवढावैहावहूभावप्रभावसुभावकेभावनिभामिनिचित्तहरावे ऐसेविलास
मोहेंदिसरोजमैसोउपमामुषतेरेकीपावे १२ प्रीतमइति सषीनायिकाकोंराजीकरिवेके
लिएंकहतिहै यातरहकेविलाससरोजमैंहोहितवतेरेमुषकीउपमाकोपावेतीनकालमैंयातर

क॰
१४२
142

हकेविल्लासकमलमैंनाहीसंभवैयातैंअद्भुतप्रीतमकोअपमानअनादरकोकरनवालोहोयओमा
ननिकौंआदरनिकौंकरैओवुद्धिसौंचतुराइसौंआपुरीझैओरिकौंरिझावैहावकरिकैंओभावसं
चारिलज्जाआलसइत्यादिओमनोहरतोकोईसुभावहैसुंदरसिंगारदेषतनैननकोंकौहिलो (न)
इत्यादिताकेप्रभावसामर्थ्यताकरिकैंहेभामिनिभावुनिभावनिक्रियानिवारिकैंओचित्तकोहू
(भावप्रभावके) रैकहूंपाठहैहावहूभावसुभावकेंभावनिचित्तचुरावैयाकोअर्थओहावभीवामैंहोयओभा
वसंचारीसात्विकओसुभावकेभावनिसोमनहरक्रियानिकेप्रभावसामर्थ्यताकरिकेहेभामि
निमैंकरचित्रिकौंकमलचोरावै १२ विक्रियोपमाकोंहूकोहूवरनियेकोअनहुएकउपाय विक्रि
यउपमांहोतितहावरनतकेसोराय १३ अथविक्रियोपमा कोहूइति कहूंकोईतरहवरनियें
कहूंकोईतरहवरनियैकोईएकउपमायहुसौं १३ केसोदासकुंदनकेकोसतैंप्रकासमानचिंतामनी
ओपनीसोंओपिकेउतारीसीईदुकेअद्योततेइकोरओसीकाटीसवसारसंसारससोभासारतैनिका
(री) रीसी सोधेकीसोधीदेहसुधासौसुधारीयावधारीदेवलोकतैंकिसिंधुतेंउद्यारीसी आजु
यासौंहसिषेलिबोलिचाललेहुलालकालिएकवालिसाथौंकामकीकुमारीसी १४ टीकावचन
नायकसौं केसोदासइति कुंदनसोनाताकोकेसमसूरतैंप्रकासमानहेयातैंअतिगोरीचिंताम
नकीजेओपनीतासौंजिल्लादेकेउतारीहैवनाईहैचिंतामनिकीहैजैसीओपमनमैकरैतैसीओ

142A

पचहैआवनीहोतिहैजासौंतरवारकटारीकौंहूसिकैचमककारेहैचांदिनीमैंतेषोदिकैउकीरकै
षोदिकैकाढीहैयातेंआनंददायकयाकेअंगकीजोतिहूंसरसजोसारसकमलताकीजोसो
भाताकोजोसारवहतेंसोभायातेंसुकुमारअमृतसौंसुधारीसौंधेसौंतोसुगंधऔअमृतसौं
माधुर्यदेवलोकतेंआईयातेंऔसिंधुतेंनिकारीयातेंअलौकिकसोभालीनीकालिभीमैंअसी।
कामनीकुमारीसीलेआवोयातेंयाकीनिंदानहींठौरठौरसुभावमिलाए १४ अथदूषनोपमा ।
जहांदूषन गनवर्निएभूषनभावदुरायदूषनउपमाहोतितहांबुधजनकहतबनाय १५ दूषनो
पमाजहां दूषनइति जहांदोषकेसमूहवर्निएवाकोभूषनसोभाताकौंछपायकै १५ रसिक
प्रिया जैसैंकहूंकेसबसोमसरोजसुधासुरभंगनिदेहहदहैं दाडिमकेफलश्रीफलविदुमहा
रककोटिककष्टसहैहैं कोककपोतकरीअहिकेसरिकोकिलकीरकुचीलकदैहैंअंगअनूपम
वाप्रियकेउनकीउपमाकहुहैवेईरहेहैं १६ जैसैंकहैंइति नायककोमानसविचारमुखकीउप
माजैसोसोमचंद्रमाकीकहौंतोसुधासुरजेहैंअमृतकेपावनवालादेवतासोचंद्रमाकीदेहकौंद
हतहैंछीनकरतहैं यहअर्थदेवतनिकेअमृतपीएसोएककलाचंद्रमाकौंप्रदारहतिहैयथा
कथाहैऔसरोजकहौतोयाकोअंगतिनैंपावकसोदवायकेउषटियोहैदाडिमकेफलदांति।
निकीउपमासोतोवनमैंरहतहैऔपवनकेमारेफटतहैश्रीफलनारिअरसोमाथाकीउपमावि।

क॰
१४३

143

कुमरूंगासैंओ ठकी उपमासोंतो वैरादपेचहतहै यहषरा उषहाटकसो नाओके सरिसोरंगकी
उपमाकोकचकवासोकुचकी ऐसें जानिए उनके अंगनिकी उपमाकों उनहीं के अंग हैं सो समझा
दिके दोषवरने उनकी सोभाकों छपाई १६ भूषनोपमा दूषन दूरउरायजहं वरनतभूषनभा
यभूषन उपमा होति तहं वरनत कवि कविराय १७ भूषनोपमा दूषन इति दूषनकोंछि
पायभूषनवरनिए १७ सुवरनजुतसुरवरनि कलितपुनि भैरवसों मिलिति गति ललि।
तवितानीहै पावनभगादरुति दुजनिकी देषियत दीयति अतिभुन सुषदानी है सोभासुभ।
सानी परमारथनिधानी हीहै कलुषकृपानी मानी सवजगजानी है सूरवके पूरेपुन्य सुनिए
प्रवीनरायतेरी वानी मेरीरानी गंगाकासो पानी है १८ सुवरनइति कोई स्त्री कहति है हेमेरी
रानी प्रवीनरायतेरी वानी गंगाजीको पानी है गंगाजी को पानी केसो है सुंदरता वनेउ जलता
हिसोंयुक्त है सुरवरवडेदेवतासोंयुक्त है भैरवसिवतासों मिलित है फेरिजाने ललितगति सुंदर
गति प्रवाहताहि विनानी है किंवाललितगति मंडितताकों करी है पानीकी अधोगति है औ पानी
में वूडि मरै अगति होति ताकों छपाई श्लेषमें गाहकें अर्थ सों समता लीजीए उहां दूषनतु रावूवे पर
तात्पर्य नहीं औ स्तुति भूषन होय यह भी चाहत नहीं जैसें छुनदा नप्रियमूर्थ केसो है छनदा रात्रि।
ताको प्रियनाटी है नायिका कैसी है छिनदानकों रात्रितिकों प्रियमानति है इहां श्लेष है छनदान

दिपत

१४३

143A

प्रियकेहैं सूर्यकोदोषनहीं छिपायो औ स्तुनि तो नहीं निकसी पतनों श्रेष्ठ सों बीच फेरि गंगा
जी को पानी केसो है पावन है प्रगट है जाहि रज है द्विजन की गति है ब्राह्मन मान करिवे को
जा [illegible] न है यह देषियत है फेरि दीप्ति जाको तिनासौं अति दीपत है प्रकास है फेरि जाकी श्रुति
प्रवाई सो सुषदा नाहै औ छी सोभा सौं मिली है औ परमारथ में परम जो अर्थ है द्रव्य किंवा मोक्ष
ताको निधान निधि है रत्नाकर की सी है याते कलि कालि को जो कलुष पापन ताको काटि
वे कौं कृपानी [illegible] नरवार [illegible] मानी है सब संसार जानत है पूरब देस को श्रेष्ठ पुन्य है जहां गंगा
जी है यह स्तुति है पतनी वातन कहीं गंगाजी के पानी के दोष दूषण भूषन वरनैं ता को उपमा
दीनी याते भूषनोपमा वानी के सो है सुंदर जे वरन अक्षर ता सो युक्त है वरअर्थ औ छंजेसा
न स्वर निषाद रिषभ आदि ता सो कलित जुक्त है फेरि भैरव राग सों मिलित है औ ललित रा
ग की गति प्राप्ति है जाहि वानी कौं फेरि पावन सुद्ध प्रगट इनि जन हो उज दोनन ताकी देषिय
त है द्विज दांतन के स है दीप्ति चमकता सों अति सोभै है श्रुति जे कान ता को सुषदा नी है औ छी
जा मैं सोभा है परम औ छो जो अर्थ ता की निधि है भगवान के गुन गावनि है याते दीह वंश।
जो पापन ताहि काटिवे कौं हरपानी लोगनि नैं मानी है संसार जानत है पूरब को जो वडो पुन्य
होय तब स्तुति वैसें आवे है प्रवीनराय पातरि के वचन नरक दायक है ताहि कलि कलुष कै

कवि
प्र०
१४४

144

पातरपनेकोदृष्टांत॥

पानीकहीएसैभीकोईकहतहैसोनहींउपमामेंउराइयेउपमेयमेंनहीं १८ अथमोहोपमा
रूपककेअनुरूपज्योंकौनहूविधिमनजाय ताहीसोमोहोपमासकलकहतकविराय १९
अथमोहोपमारूपकवेहूतिजैसैकाहूकोरूपसोयअनुरूपताकोसमाननाहिवस्तुमेंम
ननजायवाकोसमानयहहैऐसीवातविचारिकै १९ षेलतननषेलककछूहासीनहूसतिहू
विसननतनकानमानतोनवानसीवहै औरतननग्रेवरनिउलनदिगवरेमोसंवरञ्योसव
राविरुषदेहकोंदहैभूलिहूनसधै फूलिफूलिकुमिलानजातघातवीराइनवानकाहू
सौंकहहैदेषिदेषिमुषचंदकेसवचकोरसमचंदमुषीचंदहूकेविंवसोचितवदें २० षेलेन
नरतिसषीनायकासोंकहतिहैहेचंदमुषीतेरेमुषचंदकोंदेषिदेषिकेनायकचकोरकेसमा
नचंद्रमाकेविंवत्योंमंडलकीओरचितवहनहैतेरेमुषकीआकृतिचंद्रमासोंमिलतिहैषेल
चौपरआदिनहींषेलतिहैतोनजाकोंवानसमोनलागतिहैसवरारिकाममेंसोवाकोंदुषदेकै
देहवरावतहैसंवरज्योंजैसेसंवरदैतकोंदुषदियोजैसेफूलकुमिलातजातहैमुषकेअनुरूप
सहषाचंदमाहैयहमोहसोंदषतिहै २० नियमोपमालछन एकहिसमजहांवरनिएमतक
मवचनविसेष कैसोदासमकासवसनियमोपमासुलेष २१ नियमोपमाएकहिउति एक
हीकोसमनातजहांवरनि ऐसभएसोभीयावहैतदोपकहीउपमोकीसुभसोभाजहांवरनिए २१

२८

को

१४४

144A

कलिनकलैकेनकेलग्रीसितगानभोगजोगकौंग्रजोगरोगहीकोफलसोपूनोंहीकोंसबनरेपनि
दिनदूनोहोतछिनछिनछीनविछोलरकोजलसोंचंदसोभवरनतरामचंदकोउदाहरनोईम
तिमंदकविकेसबकुमलसोसंदरसुवासग्ररुकोमलग्रमलग्रतिसीताजूकोमुषसषिकेव
लकमलसो ३२ कलिनइति सषीसोंसषीवचनसीताजीकोमुषसोकेवलकमलहैएकक
मलहीसोंसमतावरनीहैचंद्रमासोंनहीचंद्रमाकेसोहैग्रहनकियोहैकलेकरूपकेतुषकाजा
नेंग्रेसोजेकेतदैत्यकोग्ररिचंद्रमाफेरिसतजाकेग्रगाडेरवतकुष्टहैयहग्रर्थफेरिभोगकोग्र
जोगहैग्रभिसारिकाउरतिहैविहारीग्ररीषरीमटपटपरीविधुग्रायेमगहैविग्रोजोगकोंग्र
जोगहैकामकोउद्दीपकहैयातेंजोगीडरतिहैंग्रोरोगकोफलवेकानोहैजोसदाछायामैसोवे
नाकोंरोगनहींहोययहवचनहैकिवाहीरोगकहियेहृदयमनताकोजोउषमनोउषताको
वेकानोहैचंद्रमोमनकोदेवताहैमनकोउषचोथोग्रमेरग्रादिचंद्रमासौंहोतहैपूनोंहीकोंता
पररतरहै नहैदिनप्रतिदिनदिनमेंदूनोहोतहैदूषीहोतहैदूननामउषीकोहैसोभाकीहानिहो
नहै छीनचंद्रनिवलकहोवनहैलोगजाग्रामैंगिनतनहींराषतिहैनाराकीगननाकरतहैग्रो
छीनचंद्रमाकोपापग्रहकहतहैयातेंउषग्रोछिनछिनमोजाकीछविछीनपरतिहैजैसेंछी
लरउलषकोजलजोवढतनगाढिरोनहोयताकोनामछीलरकोकुयनिकुमलसोकुमलप्र

वीनहैनहींप्रवीनहैयहग्रंथसुंदरआदिगुनकमलमैंआगुषमैंभीएककमलहीकोसमक
ह्यौसुभएसोपावमैंउपमानकमलताहीकोसोभनउपमालायककह्यौ २२ गुनाधिको
पमा अधिकनहूतैंअधिकगुनजहांवरनियतहोय तासौंगुनअधिकोपमाकहतसपा
नेलोय २३ गुनाधिकोपमा अधिकनिरूतिग्रंथजाहिरहै २४ वेनुरंगमेतुरंगासेवाएक
एअनेकहैंसुरंगाओरंगारंगापैकुरंगमीनतैसे पानिसंकअंकयंत्रवेससंककेसोदासएकलेक
रंकवेककलंककहीकलीनसे वेपिपंसथादिपसथान्निथीसकेरसैंजसाचहूसनीतएपुनीत
वेपुनीतसे टीहाटिएविनोंदिएनदेटिविभगानहैनहींटिगेनइंद्रइंद्रजीतसे २४ वेनुरंग
उनिइंद्रजोहैसोइंद्रकेसमाननहींकवहैभयोनहींकवहींहैओनहींकवहीहोयगोइंद्रकेसो
हैजाकेसंगमैंसेनुरंगाकोएकअश्वउच्चैश्रवाहैइंद्रजीतकेसोहैअनेकनुरंगजाकोसुरंगहैं
संदररंगकेहैंकेतनेलालअश्वहैंकेतनेस्यामहैंकेतनेअवलषहैं औकेतनेऔसेहैंजाकेअं
गकेरंगपैकुरंगमीनसेकुरंगहैविनसोहै मीनजाकौंअंसोजोचंद्रमानाहिसोरीषासेनवारिएए
तनाअर्थांक्रियाहैकहूहैसुरंगअंगाअंगाकेयहमीपावहैअंगाकोहैएनरहअंगअंगाकेतरहत
रहकरिकेचंचलताकरिकेकुटिवकरिकेदौरिवेकरिकेकुरंगजेहैंविनताकेमीनसेहैंसको
अयेउहांमानोंकुरंगकेमीनहैमानोंकुरंगहैविनइनसोमिलौकरनहैएदौरिकेहैमेंपकरन

विना
जीत

लेहिंफेरिपुरंद्रजीतनजगकेअंकनिसानीकोंउमेदपजूपनासोंनिसंककहैईकैतनोजगकरोवैइं
द्र डरनहैकोंईसनतयज्ञकरैतोहमारोइंद्रासनछिनायलेइगोइंद्रजीतकलेककमिकैरकद
विद्रदेइनकौंकलेकनाहीहैवेइंद्रगोतमकीस्त्रीसोंकलेककरिकलितनगहैसुथानिधि
चेद्रमातिनकौंईससिवतिनकेरसकौंप्रेमकोंकिवातिनकीभक्तिकेस्वादकौंसाचवानमें
भीएसुनीतिहैज्ञानततहै यह दंडमाफिकहैतोभीनितिशास्त्रदेषैविनादंडनहींदेतहैंइंद्र
जोहैसोपुनीतभीहै धर्मात्माभीहैश्रीवेपुनीतग्रंथमीसोहै वृत्रासुरकीहत्यालागीपुरा।
णमैंकथाहैअवताईइंद्रकोजगभागनहींदेइनवताईनहींदेतहैसवनेअधिकइंद्रतासोंअ
धिकगुनइंद्रजीतकौंकह्यौ २४ अतिशयोपमाएककछुएकेविषेसदाहोइसएकअति
सयउपमांहैतितहांवरननसहितविवेक २५ अतिशयोपमा एककछुइतिएककोईव
स्तुएकहीविषेएकरसएकतरहविकारकौंनहींप्रापतभईश्रीसोवरनैं २५ केसोदासप्रगट।
प्रकाससोंयुक्तासमुनिईसरकेसीसरजनीसप्रवरेविषे थलथलजलजलअमलअचल
अतिकोमलकमलवड़वरनतविशेषविषे मुकुरकेदोषवड़नाहिनअचलजसवस्तुयाँनिर्म सुधा
यथाघरनिलेखिएएकरसएकरूपजाकीसीतासुनिसुनितेरोसोवदनतैसोनाहिविषेदोषि

सीता

क॰वि॰
प्रि॰
१४८

146

ए २८ केसोदासकहुति आकाससों आकासकमिकै जाको प्रगटप्रकासहै ऐसो रजनीसचंद्रसो
ईश्वरमहादेवकेसीसमें अवरेषिए है निहारिए है थलथलमें ठौरमें औ जलजलविषै अमलनि
मेंलग्रो अचलकवही जायनहीं जलकों औ कमलकोहूनोंकोविसेषनसंभवैहै अनेकरंगके
कमलकेअथरमें अमलनिकोलेषिएहै विचारीएहै गीतगानवडाईचंद्रआदित्तोठौरठौरमें
हैनैरोमुषतोहीविषैहै २८ उत्प्रेक्षोपमाएकैदीपतिएककोहोयअनेकनमोहि उत्प्रेक्षि
तउपमासनैंकहीकविनकेनाह २७ उत्प्रेक्षोपमाएकेदीपतिकहुति एककोईकीएकजोदीप
तिप्रकाससोभाअनेकनिमेंहोयकविनकेनाहसिरदार २७ न्यारोहीगुमानमनमानननिके
मानियतजानियतसवहीसकेसैनननताइए गर्ववाहोपरिमानपंचवानवाननिकोंऔन(
औनभांतिविनुकैसैंकैवताइए केसोदाससविलासगीतवेगरेगानिकुरंगअंगानानिहूंकेअ
गाननिगाइए सीताजीकेनयननिकाईहमहीमेंहैसुफूठैहैकमलषंजरीटहूनैंपाइए २८
न्यारोहीइतिन्याएसंसारसों जुदोप्रमानमीनकेमनमेंमानिएहै श्रीसीताजीकेनैननकोनि
काईसोभासोहमहीमेंहै औरमैंतोहीहैसवकोहोकहिएमनसोजानतहैसकोअर्थसोवानके
सैंकनहींनहींजनाइए काकुस्वरसोजनाइए जादिरकिएहीवनैकिंवासवहीसवकोईजानतहैं

ठीक

146A

गमनहीकोकैसैकैसोनहीजनाइएकामकेवाननिकौंपरिमानअपरिमितग्रोरिग्रोविनरहकेग
वैमीनमैंग्रसोमोहनक्रियाकहोहैफेरिग्रीसीताजीकेनैननिकोतिकाईसौंदर्यहमहीमैंह
मारेनेत्रनिमैंदयावानहूंकुरंगजेहरिननताकीजेग्रंगनांसीताकेग्रंगनमैंरहेवकीठौरमें
गाईएहैवसवगावैहैंकहैहैयहग्रर्थहमारेनेत्रकेसैंहैंसविलासहैजैसैंकटाछिग्रादिको
विलाससीताजीकेनेत्रनिमहैनेसोहमारेनेत्रनिमैंफेरहमारेनेत्रभीमीनहैप्रसिद्धहैलोग
निनारीफकरीहैफेरिहमारेनेत्रभीसारंगनिसौंयुक्तहैसोतासेननानासोयुक्तहैमीनग्रा
दिवहसवरूवेहैंकमलनिविषेग्रोषंजनिविषभीपाईएहैयेवेमैंग्रावेहैकेवलउनहीविषे
नहीएकग्रीसीताजीकेनेत्रनकीसोभामीनग्रादिग्रनेकमैंवरनीहै २८ ग्रेषोपमाजहास
रूपग्रयोगिएसहएकहीग्रर्थकेसोनासैंकहनहेग्रेषोपमासमर्थ २८ ग्रेषोपमाजहाइ
तिएकरूपकोशब्दकरिएउपमानउपमेयसैंभिन्नरूपकैनहीलागेएकहिग्रर्थकरिलागे
२९ सगुनसरससवग्रंगरागरंजितहैसुनद्रमभागवडेभागवागपाईएमंदरसवासतनुको
मलग्रमलमनषोडसवरसमयहहरषवढाइए वलितललितवासकेसोदासमविलाससे
हरिसिंगारल्याईगहहनल्याइए चातुरीकीमालामोकचातुरहैनंदलालचंपेकीसीमाला
वालाउरधारमाइए ३० सगुनग्रतिसषीनायकसौंकहतिहैहैनंदलालयहजोचातुरीकीमा

लाग्यरहै जामैंचित्रकारी आदि बनाई करी है किंवा कोई उपरी आवै तो देषि न ही सकै ताकै
मांझ वीचमै आनुरहोयकै जलदहोयकै कहूं चातुरहै यह भीपावहै चंपाकी माला सारी
वीजो घटवाला है सो झाती सो उरमारू पलगाइ पयह अर्थ मालाकैसी है गुनडोरा नाहि स
हित है सरस है रस सहित है सूधी नो ही है फेरि सवयाके अंगपत्र सो पीत रंग सो रंगे है विथा
ताने है सभागा वडभागा विभाग फेरि सवंदी जामैं किंवा जुदी जुदी जाति के हल्के जुदा जुदा ल
गाए है ऐसे वागनि मैं पाइए है फेरि सुंदर है फेरि सुगंध है जाके तनु सरीर मैं किंवा तनु सरी
र कौं सुवास करै है किंवा सुवास है तनु सरीर कौं कोमल लगति है है अमल मन षंडस वर
समय सो मद वरसि के चंपाके फूलमैं सुगंध बहुत होन देहरष कौं वढावति है फेरि ललित
आछे वासव सुमोल पटी है सुगंध जातो न रहै यातै सविलास विलास सहित जो मातिनि
मौं वनायके ल्याई है यरा हिर विलेव मति कीजी ए वाला पहु भले गुन सहित है फेरि सरस
औ मिनायका नतैं वस है किंवा सूंगार रस सहित है फेरि सव अंग जाके रागा केसरि मद है
जावक रत्नादि सों किंवा अनुराग सों रंगा है है सभागा वडेभाग ए सौं वागमैं पाई ए है फेरि सुंदर
है फेरि सुवास है सुंदर वास ठरह जाकौ भले अच्छर की है औ तनु पतली है किंवा कोमल तनु
सरीर है जाको औ अमल निर्मल जाको मन है औ सोरह द वरसि की है औ हरष कौं वढावत है

श्रीललितवस्त्रमौंवेष्टितहैश्रोसविलासहैसुंदरिजोसषीमौंसिंगारिकैल्याईहैगादिवि
लेवनहीलगाइएश्रैसैंअर्थकिएलछननदीलागैनासौंश्रैसंलगाइएसगुनमालामैभीडो
राहैयामैंभीचोटीवेधनतीवीवेधनकेडोराहैएभीश्रोभीसवसवेसहैएभीश्रोभीभारारेगता
सौंरंगीहैहेसभागवागवारीमैंयाकोभीयाइएहैहेअमलमनसुंदरजाकेननमैंगंधहैश्रोको
मलहैश्रोसविलासजोपुरुषहैताकोंदोऊसुंदरीहैश्राछीहैसिंगारकैवनाइकेल्याईहैमा
लितिश्रीसषी १० धर्मोपमा एकधर्मकोएकश्रोजहांजानियतुहोय ताहीसुधर्मोप
माकहतसघानेलोय ११ धर्मोपमाइतिएकइतिएकधर्मकोजहांएकश्रेवाहाइकोईतरह
कविजहांवरनिएधर्मरसश्रादिजानिए ११ उजरेउदारउरवासुकिविराजमानहारकेसमा
नउपमानश्रानदोहिए सोभितजटानिबीचगंगाजीकोजलबिंदुकुंदकलिकासेकेसागय
मनमोहिएनषकीसीरेषाचंद चंदनसीचारुजनश्रेजनिसिंगारेहैंगारलहचिरोहिएसव
स्वषसिद्धिसिवासोहैशिवजूकेसंगजावकसोपाककलिलागलगेसोहिए ११ उजरेइतिशिव
केउरविषेउज्वलश्रोउदारवडाश्रेसोवासुकिनागविराजमानहैकिंवासिवकेउज्वलनिर्मल
श्रीउदारवडेउरविषेसोहारकोतुल्यहैजाकीउपमाश्रोरिनहींवाजिएहारहीउपमाहैजल।
विंदुजोहैसोकुंदकीकलीकोसमानहैचंद्रमानषरेषासारीषीहैमयाकोनषनायककोभी

कवि·
प्र·
५८

148

वरनतहैंस्यामसगातनघरेषविहारीगरलविषनाकीरुचिकांतिसोंअंजनसिंगारैहैनायिका
कौअंजनलागैयोहै१दाएकधर्मकौनदैंसिंगाररसनाकोएकअंगआभासमानजांतिपरैहै
षरीसिंगारमिवविषनहीभासैवासुकिकोहारकेसमानइत्यादिकहैसोथमोपमा १२ विप
रीतोपमाकेसवसूरेपुन्मकेनईकोदृष्टिहीन ताँसोविपरीतोपमाकेसवकहनप्रवीन १३
विपरीतोपमा केसवसूतिपुन्यकेपूरेसहूतनकेपूरेजाकोंआगेंसंपतिरहीहेनाकोंफेरिही
नभागयकरिकैजानिएसूरवसूरेगुननिकेयहभीपावहेपहिलेसूरनाआदिगुनसोंपूरे १४
भूषितदेहविभूतिदिगंबरनाहिनअंबरअंगनवीनोहरिकेसुंदरसुंदरीकेसवदोरिदरी
नमेंमंदिरकीनो देषिविमंडितदंडिनसोंभुजदंडडओअसिदंडविहीनो राजनिश्रीरघु
नाथकेराजकुमंडलखंडिकमंडललीनो १५ भूषितदृतिजाकीदेहसंपतिसोंभूषितथी
सोअवदिगंबरभएहैंनाहिनशब्दतरहवाचकहैअंबरनाहिनआकासकीतरहसून्यहै
किंवानाहिनकोअर्थनहीहैअंबरवस्त्रताकोयातेंदिगंबरअंगभएहेउरिकेकंपिकेसुं
दरपुरषऔसुंदरिस्त्रीदोरिकेजलदीसोंदरीमेंमंदिरघरकीनोहेजाकेभुजदंडदुऔहोऊ
दंडनिसोंलाठिसोंमंडितभूषितदेषोअसितरवाररूपजोदंडताहिकरिविहीनहैकिंवा
आसिकसिऔकाहूकोंदंडदेयथेइनदोउवानकरिहीनहै दोउशब्दइहांलगाएश्रीरघु

"

कंदरी

१४८

148A

नाथकेराज्यमैंराजनिनेकुमंडलपृथ्वीमंडलकौंछांडिकेआपनोदेसछांडिकेकमंडल
लीनोहैदंडीभएहैराजाभागपकेपूर्वजन्मसौंपुन्यसोराज्यमिल्योथ्योसोअबहीनभए ३४
निर्नयोपमाउपमाअरुउपमेयकौजहंगुनदोषविचारनिर्नयउपमाहोततहांसबउप
मनिकोसार ३५ निर्नयोपमा उपमाइतिस्पष्टहै ३५ एककहैअमलकमलमुषसी
ताजीकोएककहैचंद्रमाईआनंदकोकंदरी होइजोपैकमलतोरैनिमोहिसकुचैरीचंद
जोतोवासरमैंहोयइतिमंदरी वासरहीकमलरजनीहीमैंमुषचंदवासरहूरजनीवि
राजैजगबंदरी देषैमुषभावननदेष्योईकमलचंदतातेंमुषमुषैनकमलचंदरी ३६
एककहैइतिसषीसोंसषीकहतिहैएककविकहतिहैश्रीसीताजीकोमुषअमलकमल
हैएककविकहतहैआनंदकोकंदजोमुषसोचंद्रमाईहैरीसषीवासरमैंदिनमैंकमल
कीसोभाहैऔरजनीरातिमैंचंद्रमाकोमुषसोभतहैमुषजोहैसोजगबंद्यहै जगतज्ञा
कीस्तुतिकरतिहैसोमुषदिनमैंऔरातमैंविराजतहैसोभतहैमुषतोदेषैसोभावतहैकम
लचंद्रदेष्योनहीभावतहैनहभावतकमलचंदयहभीयावदैकमलचंद्रकोदोषकह्यो
मुषकोगुनकह्यो ३६ लक्षनोपमा लक्षनलसज्ञवरनिऐउपिवलवचनविलासहै
लक्षनउपमासुयहवरननकेसबदास ३७ लक्षनोपमालक्षनउति एकवस्तुलक्षनति

सषी

कवि.
प्र.
१४९

149

सानी होय एक लस होय जामें लछन सों जो निए सोलह ३६ वासौं मृगअंक कहैं तो सौं मृग
नैनी सवै वासौं सुधाधर तो हू सुधाधर मानिए द्वद्विजराज तेरे द्विजराजि राजै वहकला
निधि नो हू कलाकलित वषानिए रतनाकर के दोऊ के सब प्रकास कर अंबर विलास
कुवलय दिन गानिए वाके सीतकर कर तेरे दो सीता सीतकर चंद्रमा सौ चंद्रमुषी सब जग
जानिए ३७ वासौं उतिमषी कौ उक्ति नायिका सौं वा मैं चंद्रमा सौं लोग मृगअंक कहत है
मृग है अंक विषै जाके तासौं सब मृगनैनी कहत हैं तेभी सुधाधर है सुधा है अधर विषै
जाके द्विज होत ता की राजि पंकति सोहति है कलावन्त राई की निधि ठिकानो चंद्रमा औ है
सषि तेरे रतनाकर समुद्र ता के प्रकास करन वाला राजी करन वाला चंद्रमा पुत्र है तेरे लछमी
है याते किवा रतनन के आकर समुद्र है तेरे अंग मे है ता के प्रकास कौ फेरि दोउ कौ अंबर आका
स औ अंबर वस्त्र कुवलय रात्रि विकासी कमल औ कुवलय भूमि मंडल तो सरोजक मैं।
श्लेष कौ लछन लागत है दोउ सष्ट मैं लछन जो निए याते श्लेषोपमा न ही चंद्रमा के कर कि
रन सीतल करन वाले हैं तेरे कर हाथ सीतल है चंद्रमुषी तो हि चंद्रमा सौ सब जग जानत है चं
द्रमा औ सीता जी लछमन गनैनी इत्यादि निसानी सोई लछन ३८ असंभवोपमा जैसें भाव
न संभवै तैसें करन प्रकास होत असंभावित न तहां उपमां के सब दास ३९ असंभवोपमा

लक्ष्मी

१४९

जैसैंइति जैसीवस्तुजामैंनहीसंभवैजाभीहै।यतेभीनहींसंभवैतैसोप्रकासकरै ३९ जैसैंग्र
तिसीतलसुवाससमलयजमांहि।ग्रमलग्रनलवुद्धिवलपटचानिए जैसैंकोनोकालवसको
मलकमलमांहिकेसराईकैसोटामकंटकसजानिए जैसैंविधुसुधरमधुमयमांहिमोहै
मोहरूपविषविषमवषानिए संदरिसुलोचनिसुवचनसुदतितेसैंतेरमुषआषरपरूप
रूपमानिए ४० जैसैंग्रतिसीतमलयचंदनग्रतिसीतलहैंग्रासुवासहैंग्रोग्रमलहैउदिके
वलसोंवामैंग्रनलग्रग्निपटचानिएहैजोवडूतचसैतावामैंग्रागिनिकरेग्रागिवामैंसंभवे
नहींहै जैसैकोईकालकेवसतेंकोमलकमलकेकोसमैकेसराजोहेसोईकंटकसोहोतहै
विरहनीकोंविरहसमयमैंइहोभीनोहीसंभवैहैजैसैं विधुमधरमधुरमधुमयमांहिमोहेया
कोग्रर्थजैसैंविधुचंद्रमोसधरथासमहितग्रर्थइतयहग्रर्थहैममैमधुरनामप्रियवस्तु।
कोंग्रोस्वादकोंग्रोरसकोनाम विधुसधरग्रर्थइतमधुरप्रियजोमाधुर्यताहिमयहैसो
योकोंमोहनहैमोहरूपविरहनीमोहमर्छाताकोरूपतेयहैजाकोंसोविरहनीविषकहै
तिहै ग्रोविषमयग्रमहाकहतिहैहैसदतोसुदरहैदोतनतेरेतेसोतेरोमुषमैंपरूपकठोर
ग्राषरमोंतिएहैनहीसंभवैहैसोकहिएहै ४१ गवोविरोधोपमाजहैउपमाउपमेयसोग्रा
पसमांकविरोध सोविरोधउपमासदावरननजिनहिप्रवोध ४२ विरोधोपमाजहांइति

धो

ग्रंथसंख्या ५१ कोमलकमलकर कमलाकेभूषनकौकेसोदासहू षनसरदससियाईहै
ससिप्रतिअमलअमृतमयमानिमयसीताकोवदनदेषिताकौंमलिनाईहै सीताकोवदन
सबसुषकोसदनजाहिमोहतमदनदुषकदननिकाईहै आयोपलमाधोजूकेदेषैबिनु ५
सोईससिसीताकोवदनकहूंहोतदुषदाईहै ५१ कोमलइतिकमलकोमलहैपंथिक
मलालसीकेकरकोभूषनहैसरदकोजोससिसोसीताकोदूषनकरतहैसंकुचितकरतहै
सरदमेंधोतलेकमलगलजातहैं अमृतमयजोससिसोमनमयमानिकेहैभूषनजहांअ
सोसीताजीकोमुषदेषिकेमलिनहोतहैं सीताजीकोवदनजाहिदेषिकेमदनमोहितहो
तहैजाकीनिकाईदुषकोकदनमासकहैमाधोजीकोश्रीरामचंद्रजीकोदेषविनाविरहमेंसो
ससिवदनकौंदुषदाईहोतहै चंद्रमासोसीताजीकेसुषसोंपरस्परविरोध ५२ मालोपमामद
नमोहनकहोरूपकोरूपककैसोमदनवदनअ्रैसाजोद्विजगामोहिएमदनवदनकैसोंभा
कोसदनस्यामजैसोहैकमलरुचिलोचननिपोहिए कैसोहैकमलजैसोआनंदकोकंदसु
भकैसोहैसुचंदजैसोउपमांनदोहिए कैसोहैसुचंदयदकेसबकुवरकाकूसहैनोंप्रानधारीजे
सोतेरोमुषसोहोए ५३ मालोपमा एकसोंएककौंमिलायमिलायबरनैंमदनइतिमदनजोका
मसोमोहनजोश्रीकृस्नतिनकौंरूपसौंदर्यकोरूपकहैसमताकरनवालोहैसषीनायिकासोंक

मो

ता

150A

हतिहैनायिकापूछतिहैकैसोहैमदनवदनजाहिश्रीकृसकोदेषिजगतमोहिजानैजेसो
हैफेरिनायिकापूछतिहैसोभाकोसदनजोस्यामसोमदनवदनकैसोकहिएसमानहैनवसषी
कहतिहैकमलकोरुचिजाकेलोचननिकुंजाहिएहैदेषिएहेनायिकापूछतिहैजेसोस्व
भयोक्योआनंदकोकेदमलहोयफेरिपूछतिहैसोकंदकैसोहैजाकोचंद्रमाकोउपमानदी
हिएहैषोजिएहेओरिनहीचंदकैसोहैश्रीकृससारीषोसषीस्नेओनपारीसोकाहेजेसोमे

सो

रोमुषसोभतहैतेसोभतहैयहप्राचीनमतकीमालोपमाहैचमत्कारनहीनवीनमतकी।
मालोपमाचमत्कारहै ४२ परस्परोपमा अभेदजहांवषानिएउपमाअरुउपमानतास्पेप
रस्परोपमाकेसवरासवषान ४४ परस्परोपमा अभेदइतिपरस्परउपमालागैअभेदवहरोईए
४४ वारेनवेउनहूहनोहिनैगटदमासिद्धवावरेनवृद्धिवेतनारीओननदसे अंगीनग्रनेगी
गातउजरेनमैलेमनस्यारऊनसरेरनथावरनचरसे हवेसनमोटेरकराजाऊकेहेनजायमरन

म्रु

अमरैआपनेनपरसे वेदहूनकहूभेदपावतहेकेसौदासमदरजूसेहै हीरहरिहैहरिहरिसे

हे

४५ वासिनउति हरिजूसेहहीरहरिहैहोरहरिहरिसेयाकोअर्थकोईकोरसोंकहनहैहो
संवोधनहरमहादेवसारीषोहसिहैहरहहरिसारीषोमहादेवहैएकहैयहग्रंथस्यारको
यरनहीओमरनहीमरैभीनहीअमरभीनहीअवतारजहांदेषिएहैनहांआविभावतिरो

भाव भी है येरि अवतार सब वचनैं भी है अगोचर है यह अर्थ ४५ संकीर्नोपमा वंधु चोर वादी सु
हृद कल्प हंस प्रभु न्नाति सम मित्र प्रमाद रक्ष आदि दैवके अर्थ वषानि ४८ संकीर्नोपमाउ
पमा वाचक शब्द कहत हैं वंधु चोर इति संस्तुत में उपमा वाचक हैं ताके अर्थ में एक वंधु आ
दि आहृ सब है ४८ विधु को भ्राता वंधु किधौं चोर हास्य रस को किकुंदनि को वादी किधौं मो
... तिनको मीत है कल्प कलहंस कोकिलो रनिधि कवि ... हिमगिर प्रभा प्रभु प्रग
ट पुनीत है अमल अमित अंगी गंगा के तरंग सम सुधा को समूह री शुभ रूप को अभीत है
देस देस दिसि दिसि परम प्रकास समान किधौं केसौदास रामचंद्रजी को मीत है ४७ इ
ति श्री कवि प्रिया यां विशेषालंकार वर्ननं नाम चतुर्दशः प्रभावः १४ विधु इति विधु को
वंधु है अर्थ में निकस्यौ विधु के समान है यार्थी उपमा भई सब उज्वल कहत है हास्य रस उ
ज्वल है ताको चोर है किधौं मो... तिनको मीत है किधौं उत्प्रेक्षा वाचक है मीत उपमा वाची है
यातें संकर वहत उपमा है यातें संकीर्ने कलहंस को कल्प हृद कहै सम है यह अर्थ छीरनि
धि कौ छवि को सर्व निदरो है ते हमें सौ गो थो है हिमालय को अप्रमा को प्रभु है सुधा को सम
ह है औ रूप के विशुद्ध वाई ताके भी वंधु है बुद्ध मीत है ४७ कोकिल से अतिक्रम से घन कमि
नी सम गजराज मरगमू गौंगाज सौं अमो वरनत लाज ४८ हीनोपमोऽयथि को पमा दोष है

मूग

151A

घटदोहावद्रतपोषीमैंनहींहैकोकिलछोरेनाकीउपमामेहकौंग्रैसेंकरिनीताकीउपमा
मृगराजकौंअधिकजेमृगराजताकीउपमामृगकौंग्रैसीनहीवरनिऐ ४९ इतिश्रीहरि
चरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकविप्रियायांचतुर्दसप्रभावव्याख्या १४
अथनखसिखवर्ननसविताकेप्रतापज्योंवरनेकविताअंग कोहीजयामलिखनिन्योव
नताकेप्रत्यंग १ अथनखसिखवर्ननेप्रामानिकपोथिनमेंनखसिखवर्ननहींहैकेसव
दासकेभाईवलभद्रतिननखसिखवनायोयातेंकेसोदासनहींवनायोकिंवापीछेवनायो
हैयातेंसवपोथिनमेंनहींहैग्रायाप्रभावकेअंतमेंचाहीएसोआदिमेंअप्रसन्नहैतोभीटीका
करनहै सविताइतिसविताससूर्यताकेउपमाकेथसजेसेंकविताचारिज्योंजिसनरहकोवि
ताकेअंगवरनेज्योंतिसनरदेवनिताकेप्रत्यंगएकएकवरननहै १ कहीजुएववपोइतन
ताकीजितनीजाति तिनकोः कविताअंगकीउपमाकहोंवषानिरकहीइति जानिकहि
एसमुक्ति २ जवाकेदेवीदेवकौंश्रीहरिदेववषानि ताहरिकौंश्रीराधिकाइष्टदेवताजानि
३ जगकेइतिजगकोजोदेवीदुर्गाआदिग्रौदेवतामहादेवग्रादितिनकेदेवश्रीहरिहैइष्टदे
वतासीहैकिंवाइष्टहैग्रौदेवताकोंग्रथैकोआरामग्रादिताकीकरनवालीहै ३ भूषिनति
नकेभूषनतिविभुवनपतिकेअंग तिनकेकेसवदासकविवरननहैप्रत्यंग ४ भूषित

कवि॰
प्रि॰
१५२
152

इति लीलाकरैंनवआपनैंभूषनश्रीहूलकैंपहरावैनिहारीभूषनहूंपहिरैंपियअपनों
तुमेंयहरावौंतुमैंकहौंवृषभानुतातुलीहौंनेंदनंदनकहावौंसूरदासकोपदहैंअनंगासव
अंगा ४ नषतेंसिषलौंवरनिएदेवीदीपतिदेषि सिषतेंनषलौंमानुषीकेसवदासविसे
षिएनषतेंइति देवताकौंपावकीओरतेंवरनीएंओमानुषीकोंसिषाकीओरतेंवरनिए ५
चरनउपमाउपमाओरसमानअवयवतनौंभेदवषांनि जावकजुतनपगवरनिएमहंदीसंजु
तपेति ६ चरनउपमाइतिपुरुषकेचरनकीउपमाओस्त्रीकेचरनकीउपमासमानहैएन
नोभेद जावकमहावरजुतपाववरनिएमहदीयुतपानवरनिए ६ जावक रागरजोगुन
कोप्रगटप्रतिपक्षीओभागरंगभूमिजावकवरनिकोपरागों जावकवर्ननरागइति ६
जोगुनकौरंगहैभागप्रातसमैतामैंलालीहोतिहैताकोमतिपक्षीसत्रुहैतेसोहैयहग्रंथ
ओरंगभूमिलालीहोतिहैतेसोवरनिएकोपकोरंगओअनुरागकोरंग १ कोमलमलता
कीरंगभूमिकैथौंयहसोभियतअंगनकेसोभाकोमदनकेंअरुनदलनिपकीनोकेनर
निकोपनीसोकिधौंरजोगुनराजीवकेगनको पलपलअनयकरतिकिधौंकेसोदासला
गिरओभूषनानुरागपियमनको परीवृषभानकीकुमारीतेरेपायमाहेजावककोरंगकै
सुहागसोनिजनको ८ अथएड़ीका कोमलइतिकोमलताओअमल लालाकीरंगभूमिहै

अनुराग

अ

152A

कै कियो सोभा को जो सदन ग्रुरता को अंगन है पाव है कै अरुन दल कमल है सो कै सो है जो पैतह
निसूंपै को पकियो है को पकोरे गलाल लै औ कमल लाल ता सों अति ललाई जो निपकियो पाव
नि नैं राजौ कमल के रान सम हता को जोर जो गुन थो ता को जो मो ता को मत्रु है मन यप्रेम अनुरा
ग लाल है ८ पाव वर्ने ने अति कोमल पद वर्निए पल्लव कमल समान जलज कमल से चरन
कहि कमि कहि थलज प्रमान ९ पाव वर्ने ने अति कोमल इति कमल के पल्लव पत्र समान पल्ल
व नाम पत्र को भी है किवा कमल समान कोमल जो पल्लव पत्र ते सो जल सों उत्पन्न भयो जो कम
ल है सो रीवा चरन कों कहौ औ थलज कमल कमि कै कहो चरन थल कमल है करि कै या को
अर्थ अभेद करि कै यह प्रमान है ४ गंगा जू के जल मध्य के व के प्रमान पे विपादि पदि स्तंभ
ते आनंद वदावही के सोहा सद्दाम जल सीत सहे एक रस ठाढे एक पाय को रिकल पन साव
ही कोमल अमल भए कमला निवास भए हंद सुवास मनज दपि भ्रमावही पायो पद ब्रह्म
सनपद मिनि पद मिनि निते रे पद पदवी को पद पैन पावही १० गंगा जू के इति पद्म निकमल
निने ब्रह्मा सुतपुत्र है ऐसो पद पदवी बडाई पाई है है पद्मिनि तेरे पद की वडाई है ताको पकप
द एक भाव भी नहीं पाय सके रती मासा पाव पयो रोंवा ची है कमल तपसा करन है सूर्य
को मंत्र पदन है काहू कौं तु रानही मन ल्यावति है आनंद वदावन है को रिकल्प विना वन है तप

व

ता

राव्

कवि॰
प्रि॰
१५३

153

स्यामसोंअरुनमएहै मनकमलकौंचाहतोफिरतहै १० पादांगुली अंगुलीचंपककीकलीजीवन
मूरिप्रमान तारारविससिसुमनमनहुनगनानिनषनिसमान ११ पावकीओंगुरी अंगुली
मूंनि नायककीजीवनमूरअंगुलीवैनीनषसुमनफूलहैमानौंआमनिगनकेसमानन
ष ११ विछियावोकअनोटकीनाहिनउपमाआनसोभाप्रभातरंगगतिहैसअसमनहुचान
विछिआद्युति वोकअनोटकोभेदहैसोभाजुतप्रभाजामेंचमकरहैताकोआनतरंगसोजानौं
रूपनटीकोतरंगअसुकिरनतननजानवषतरजिरहताहिसम १२ चंपकलीदलजुतैंभ
लीपदअंगुलीबालकीरूपरसैहै सुअसुटसलसैनषयोंजनुप्रीतमकेहगदेववसैहै वो
कअनोटवनीविछिआनिविभूषितजोनिजनायग्रसैहै केसवसोमसरोजनिरूपविकोपि
मतनतनुचानकसैहै १३ चंपकलीद्युति रूपजामैंरसिरह्योहैभीजिरह्योदहगनेबताकेदेव।
तासमंचंद्रमावसैहै वोकअनोटसौंवनीपकविरहीओंगुरीविछिआनिकीजोतिसोविभूषि
तहैविछिआओंजराउजामैंलसैहै कहूंग्रसैयहभीपावहैनहोषचिकेवंहैंआगमीनिमैं
मानोसोमचंद्रमाओसरोजकमलनैंजीतिवेकेलिएमानोतननजानवषतरपहिरेहैं नषकी
समतावेंद्रमाकरतहैपावकीसमताकमलकरतहैयातैं १४ नूपुर नूपुररकाभ्जवमति
लोचनगुनगनहार जाचकजनसपावकमयुपजामिकवंधुनिवार १५ नूपुरवनेनेनूप

रञ्जितरक्षाकोजेत्रहै किधौंरक्षाकोमनिहै काहूकीनजरिनलगीजाययाकेलिएऔगुनकेजेगा
नमसूदनताकेनेत्रहैजाभिककोनवाल ॥ गतिनिकेहारकिविहारकेपादरूपकिधौंप्रति
हाररतिपतिकेनिलयकेहैसगतिनायककिरूढगतनायककिश्रवनसहायककिमाय
कहैंमयके केसवकमलमूलअलिकुलकूजनकि [illegible] केधौंप्रतिधुनिनसमनिननिचयके
हाटकघटितमनिस्यामलजटितपगानूपुरजुगलकिधौंवाजेहैंविजयके ॥ गतिश्रुतिश्र
नेकतरहकीगतिरूपजेस्त्रीहैताकेगारकेहारहै किधौंविहारकेपादरूपहैहैपादहूकोनवा
लकहूपाठहैविहारकेपादरूपतिकिधौंविहारकेजोपादरूहैताकेहरीहैकोनवालीवा
नतामेहरीरहतिहै लोहकीहोयसोवेरीकाठकीवांधवेकेलिएहोयसोहरीकहावतहैरति
पतिकोमतताकेनिलयघरताकेप्रतीहारहैहारपालहैहैमप्रतीहारदरवाजाकोभीना
महारपालकोभीनामहैसकीसीगतिसिषारूवेकेनायकहैजोस्त्रीनिकोनाचवेसिषावेसो
नायकमयनामदेनकेकोईसंवंधमैमायावीहैकिधौंकमलकेमूलविषकुनमवालनअ॰
लिकुलहैरतिमैजोशब्दहोयताकोनामममनितरतिकूजनकेजोसमूहताकेप्रतिधुनिकेक
रनवालेहैहाटकमांनानासौघटितरचितहैं जेहरि जेहरिजयकेकनककलितकेसवदा
समजान मनोमालास्तभमभासीमासमसोपान १९ जेहरिवननजेहरिश्रुतिजेहरिजीति

क.वि.
प्रि.
१५४

154

कोकें कनककलितऋनेकार्थ शाहूहै तासौं कलितसारी षीजोनीप मालासी जेहरिसालाधरसी
सुभकल्यानताकीसभासुभकीजोसीमामेंडसोपानसीढी १९ कोमलकमलहूलनहूअनव
लअलिकुलनकीमालाकिधौंकेंसवसुभायकी चरनसरोवरसमीपकिधौंविछियाकुनित
कलहंसनिकीवैठकवनायकी गजनिकोहंसनिकोजोतिगतितेरीगतिवांधीजयकेंकनकी
सोभासुषदायकी अमिलसुमिलसोहीमदनसदनकीकिजगामगेपगजुजराजेहविजराय।
की २० कोमलधुतिकमलसोअमलचरनजोनीपताकेहूलनजोकनूपुरसोईनवीनअलिकु
लहैताकीनीकीसुभावहीकोआछीमालाधरजेहरिहैविछियासोईकुननकलहंससैतिनकी
वैठिकवविवेकोस्थानकिधौंजेहरिहैगजनिकोआहंसनिकीगतिकोनेरीगतिनैंजीतीकेवि
जयकौंजतावैएसोकंकनवांध्योहैकिधौंसुषदाईसोभाहै आजेहरिकेवीचवीचकोरहोतहै
सोहोभीअमिलसुमिलउचीनीचोहोतिहै २१ दुहूवननउरूकरीकरकेलिसमकरभसोभसोलीन
चक्रवाकथलगुलिनसमवरनिनितेवनितीनें २२ कोमलकमलमुषितेरेपजुगलजानुमेरेक्ल
वीवजकेमनदिहरतहै सोरमसुभायसुभरेभासोसदमऋकेसवकरभहूकीसोभानिदरतहै
कोटिरंतिराजव्रजराजसिरताजकीसोंहाषिदेषिगजराजलाजनिमरतहै मोचिमोचिमदहू
चिमकलसंकोचसोचसुथआएंसुंडनिकीकुंडलीकरतहै २३ कोमलरतिसषीवचनताहि।

154A

कामैं नुवालज्ञानुदोउजेह्यासोवलवीरश्रीकृ लनितकेमनकौंहरैहैकहूंपाउवलहिहरतुहै
जेह्यादेषिमैंछकितहोतहैमूर्छाआपवलनहींरहतहैसभावहीकीजाकौंसोरभसुगंधतोहै
सभावकौसोरभसुगंधसुभआछौंताकोसदमहुरेहैऔरभाकेलातेंसोहैअवयजोनिएक
रभहाथकोअवयववपीछैकहैताकीसोभानिदरतिहैचोटिजातिहकोरितिराजकामनता
केव्रजराजसोसिरकेतानकलगीसमानहैश्रेष्टहैयहअर्थतिनकीमेंसोहसपछिकरति
हैंमेरोसुंदरअंसोसुंदरतोहीयातेंगजराजलाजनिमरतहैमदकीहविसोभाताकोकोटि
सवतरहकोसकोवसोचिकैविचारिकैतेरीजेयाकीजवसुधिआवतिहैतवसेउकीकुंउली
करतिहैसुंदिससेटिकुंउसोवनावतहैहै १९ चहूंअभचितचोरचाकचकाचक्रमनिसुंदरंस
नदरमनहोनेहैं दितिसुनमुषनिह्वदाइवेकोसुषहषसुरनिवदाइवेकोकेसवप्रवीने
हैं सवदीकेमनतिहरनकरिहरिहूकेमनमथिवेकोमनमथहाथदीनेहै रविसुचि
सेंचिसकेलिकेंतहनिनेरकाहूनएचन्दवनितेवचकीनेहैं २० निजंववनंन चहूंआ
रइनि कटिनेपीछलाभागसोनितेवचहूंऔरहैगिर्दहैकिंवाचहूंओरसोंचित्तकोचो
रतहैमनिकोजेसोचक्रचाकहोयअसोयामेचाकचाक्यचमचमाहटिहैओसुंदरसुंदर
सनचक्रसोहैफेरिसुंदरसनकविकैहीनहैकपरासोंछपायोरहतहैओसुदरसनचक्र

संदर

कृ

कोभीदरसनसवकोउह्नैंनहींहोतहैवाचक्रसोंयहतनयोचक्रहैयामेंअधिकगउनहैवह
चक्रजोहैसोदितिसुतनदैत्यनताकेसुषकौंहरिवेकौंप्रवीनहै औसुरदेवतानाकौंवढा
इवेकौसुषहूषसुषकोहूषतोरहैताकोऔप्रवीनहैयाचक्रअधिकहैसवजेसषीजनता
केमनकौंहरिवेकरिवेकौंवाचक्रसवकेमनकौंनहींहरतहैकाहूकौभयउपजावतभीहै
न औरवाचक्रसोंहरिकोमननहींमथ्योजातहैयासोंहरिहूकेमनमथिवेकोजवनहींमिलतवया
कुलकरिवेकौंकोईचतुरजोयाकोवनावनिहारहैतानेवनायकेमनमथकेहाथमेंदीनेहैं
मन्मथकेवसमेंकरिदीनेहैसषीनायिकासोंकहतिहैहेतरुनिरुचिकोतिसुचिपवित्रता
औसंकोचयाकोसमेटिकाहूचतुरविधातानेनेतेरोजोनितंवसोनयोचक्रकीनेहै २० कटिउ
दरयोमावली कटिअतिसूक्ष्मउदरउतिचलदलउँनमोनरोमलतानमध्यमअतिचारुरुचि २१
दीनसमान २१ कटिइतिकटिअतिपातरीवर्निएफेरिउदरपेटताकोउतिवर्निएऔचलदल
पीपलताकोपातवर्निएताकोउपमादीजिएरोमावलितोनमध्यथकारसमसूक्ष्मसमवर्निए
अतिसुंदरवर्निएचीटीपिपीलिकाकीडीकहतहैताकीपंक्तिसमवर्निए २१ भूतकोमिठाई
जैसेंमीमाधुकोफवाईतेसीमारकोटिवाईऔसोकौनकहैविनुदेंथोराकोसोहासकेसोदास
दासीकोसासुषसुरकोसोसंकअकरंककेसोविनुहै सुमकोसोदानमहामूढकोसोज्ञा

नगोरीगोपनकोसोमानमेरेजांनसमुदितुहै कौनेहैमवारीहृषभानुकीकुमारीयहनेरीकटि
निपटकपटकोसोहितुहै २२ भनतकोमिठाईइतिहै हृषभानकीकुमारीतेरीकटिनिपटक
पटकोकारनहैकिंवाछ्यवड्रीवैनुमेंछीनतेरीकटिहतिहैसोकपटकीप्रीतिसारीषीहै
केहिवेकोहैदासीदहलमेंरहतिहैताकोंसुषकहिवेकोंहैंग्रंकनामहेममेरुषकोभीहैम्र
रकोंजैसेंउरस्रोउपरेंकहोहैताकोंजैसोंविनुथनगोरीपार्वतीगौरमहादेवपार्वतीमानिनी
नहींहोयमहादेवमोनीनहीहोयजोमानकरेसोजनदारहैदेनोसमुदितहैंकृतनेपदसेदे मिलेतहैं
हकरावतहैंजैसेंभनतकोमिठाईमायाकीवस्तुसोचैहैकेरूठदेषवविनहीपरेकतनेपदग्र
भावजनावतहैंसुरकोंउत्साहहवोदेहेसेकानोहोसेकाहोय नोवीररसनहींहोयकेतनताप
दस्तकमताजनावतदैदासीकोसुषहहैवेथारोंहैग्रेसेंनिकारीए २२ रोमावलीग्रोउदरव
नेन कियोंकामवागवोनवईहैसिंगारवेलिसीचिकेंवदाईनाभिकूपमनमोहिए कि
योंदरिनेनषंजरीटनिकेषेलिवेकीभूमिकेमोदासनषपंकरेषरोहिएकियोंचलदलपत्र
पियकोकपटज्वरदूरिवेकोमंत्रलिषिलोचननिजोहिएसुंदरउदरसुभसुंदरीकोरोमरा
जीकिधौंचितचातुरीकीचोटीचारुसोहिए २३ कियोइतिवागवानमालोनाभिरूपताकूप
हैताकोंसीचिकेंवढाई हगकेनैनसोईषंजनहैताकेषेलिवेकीभूमिउदरताकेनषमेंला

गौहैजोपंकताकीरेषारोमावलीप्रगटभईहै चलदलपीपरताकेपातपरपियकोकपटरूप
जोयाकोंन्वरहैताकेहूटिवेकेलिपंत्रलिष्योहैविधाताने लोचननिसोंजोदिहैहैदोषिएहैचि
त्तकीजोचत्तराईताकीचोरीहै २३ कुचचक्रवाककुचवरनिएकेसवकमलप्रमानसिवोगरि
घटमठगढक्रफलसुभइभकुंभसमान २४ कुच चक्रवाकरति कुचएसेवरनिएजेसोच
कवाचकईकोजोडाओसिवकेमूर्तिसेओपहारसेगढ्ढाफूलकैइभहाथीकेमाथापरकेकुंभस
मान २४ किधौंमनोहरमनिहारउतिसुषेलेजोवनकलभकुंभसोभनदरसेहै मोहिनीकेम
टकिधौंइंदिराकेमंदिरकिइंदीवरईउसुषीसोसभसरसैहै आनंदकेकंदकिधौंअंगरागहैअनंगा
हीकेवाटतनुकेसोदासवरसदरसैहै एरीवृषभानुकीकुमारीतेरेकुचकिधौंरूपअनुरूपजा
तरूपकेकलसहैं २५ किधौंरतिकिधौंमनोहरजोमनिकोहारसोद्युतिजोतिजेहैंसुरतभासोज
होषेलनहैकिवासुरकोअथैजोपाछीनरहदानकरैसोसुरकहावेमहादेवसोंजोवरचाहैसो
वरपावैयातेसुरमहादेवलीजिएकिधौंमनोहरजोमनिकोहारहैतामेंउतिसेभायुकजो
सुरमहादेवसोक्रीडाकरतहैकिवामनकौहरेसोमनोहरएसेजेकुचतामेंमनिकोंजोहारहैसो
द्युतिसुकसुरहैसोक्रीडाकरतिहैकियोकिंवाकिधौंमनकोजोहरमहरजोकुचजाहिमेंना
यककोमनवसतहैताकेनिहारिकेउतिसोभासोहैसुरदेवतासोषेलैहैंमूर्तिमानसोभा

156A

रहति है यह ग्रंथ कि थोजो वनमोर ईहै कलभ हाथी के बछा ताके कुंभ हैं सो भन जाको दरसन
है सो हिती जा मायाथो है ताके रदहि वेके मब है न हा विद्यार्थं दडी उत्पादि रहै सो मब रंदि रालछी
ताको मंदिर कमल है ताहि विषें रही वरस्याम कमल है नीचें गोरे ऊपर स्याम सखी कहति है
हे रंउ मुषी सोर भम्हु गे थहै सरस वेस है कि वाग्रंनग को मनाके दोय अंग है पर स्पर में बंदत
है तेरे रूप के अनुरूप योग्य है कि थोजा तरूप सोना ताके कलस है २५ भजतब नैन कर पंक
ज पल्लव बरनैं भुजन विसलता सु पास रत्न तार का कुसुम सरन षह्यों विकेस बदास २६ भु
जकी ऊति करकैं पंकज ने से अरु पल्लव से बरनै ओ भुज कौं विसलता कमलता को जविस
नालता हि हारी थाओ पास वाथि विको रही ओर रत्नसारी षीना रासारी थी ओ कुसुम सारी
थीओ सरसारी थी न षह्यों विहै जामैं २८ के सोदास गोरे गोरे गोल कामसूल है रभामिनि
के भुजमूल भारु से उतारे हैं सो भासु षबर सतमा षन में परसत दरसन कें चनमे कठिन सुधा
रे हैं वलय वलित बाहु दे षि री के हरि ताहू मानौं मनपाषि के कौं पासी ओ विचारे हैं मलिन
सनाल सुषपंक में उरा एड बदे थोजाय कातिनि में छेद करि डारे हैं २७ के सो रति भामि
नि के भुज मूल गोरे गोरे हैं और गोल है और मन को काम के सूल के हरन वाले हैं हर को ग्र
पौ पद हूं छा वनेवाला भी जो निपमानौं विधिने षं रादयें भ्रमाय के उतारे है कें चनसे दीसत

श्री

157

है विधाना नेंक ढिंनाई सों कढिनक रिवनाए हैं वलय चूरी केकन मन कौं पासिवे कौं वाधिवे
कौं मृनाल मेंरुनि की सोभा देषि मलिन भयौ न व आपनौं मृष पांक में छपायौ है वौ जाय के
उषनै वा कौं नौ [illegible] छेद कियौ है मृनाल में छेद होत है करभूषन वनैन राजराकर निराज
मोतिनि के आभिनी के ज्ञिन कौं श्रज्ञौं तिज्ञोति के सोदास भाई है वलय वलिन वर कंचनक
लिन मझे लाल की ललित पौं चौपों चनि वनाई है मेनपीत हरित फलक कफल कनि लाल स्या
मल समिल मेर सोभ मनभाई है मानौ सूर सोम की कलास केलि आपनीयौ आपनौ सषी
कौं सुष पायय पहिराई है २८ करभूषन राजराइनि राजराकरभूषनसो राजमोतिनि के आ
तिनों के विराजत है गाढ़ पव घानि प के चन सौं कलितयुक्त एजो वलय चूरीनासौं वलित वे
ष्टित करत है लाल मनि जो मानिकनाकी ललित पड़ै चौपड़ै चनि में वनाई है मानौ स्वेत स्या
मा पीत काच की चूरी सोइ हरित भी औ स्याम लस्याम भीनाकी फलक सो हाथ में फलकति है स
मिलत है अन मिलन हीं है जहां जो वा हिएन हों सौ तेसौ है सपोक हत है है मारो हित जो स्याम
श्री हलस तिन के मन में सोहाई है मानौ सूरस सूर जैसो मचंद्रमा ता की कलास केलि के समेटि के आ
पनी यौ आपनौ भी कलास मेटि के यानै प्रकास विशेष आपनी सषी जो है मृनालता कौं पह
राई है चंद्रमा उगनत के लाल है स्वेत चांदनी है कलंक स्याम है २८ नषोगरली मुद्रिका गोरी गो

157A

गोग्रगगोतिरागनेसेहचिरनथग्रीवग्रतिपंनेपेनेरविहविकोनेहैं रतिजयलिषवेकौलेष
नीसेरेषकियोमीनरथ्यमारयीकेनोहननवीनेहैं कियोकेमोदासपंचयानन्नकेपत्रवान
सकलभुवनत्रितिवसिकरिदीनेहैंकेचनकलितमनिमंदरीललितमानोपियपरिज
नमनहाथकरिलीनेहैं २८ नखोंगुलीमंदरीयोरीदुति हविरहदरनथहैउरकादिएग्र
ग्रभागसाग्रतिपेनेपेनेतोछनतोछनपेनापैसौतोछनहोनहैवियातानेरविकेवनायकेह
विकोतिन्नकनधतिकोंकीनोहैरतिमेंनायिकाकोजोतिलिषिवेकौलेषनीकलमहैसुवै
घनामेंहैदविरधाहोतिहैसहथपदपावहैतोलालकमेंनहैमोनहैरथ्यमैंजाकोग्रसोजो
कोमनाकेसारथीताकोनोहनहैवेललाकेवकोछरीहैएरवमैंनाकहतहैनवीननयाके
सेवोनहैं त्रिनसेपूरनेभुवनकेवासिकरदीनोहैकेचनमोगुंकिमनिकोमंदरीमुंदरहेसो
मानोनायककेपरित्रननतोकेकेरहनवालेहैंतलोकनाकेमनहाथकरिलीनेहैंवस
विलीनेहैंसवयाहीकोवडाईकरतहै २९ महदीमंजतहाथसवसोभातिहूलोककोरा
चीमहदीसाथतिहूपुरनायकतोभयेनाकनायकाहाथनिग्रातिमनोकिंतिकोछवि
व्याई दीदग्रहीहनसकमथलगाहीहगगोनिकोदोनिगोराई महदीमयविउघनोति
नमैंमनमोहनकेमनमाहिनीलाईरंदवधूग्रविंदकेमंदिरईदिराकौमनदेखनग्राई

पे

राधकारूपनि
धानकेपानिर

इनके

158

३॰ मंहदी संयुक्त दोहा यवर्नन राधिका रूप द्युति पानन निहारयति मैं छिति पृथ्वी अर्थ यह सं
सार में जेतनी सोभा है सो छाय रही है दोहा यकें मैं हैं दीह बड़े जे जीव अदीह न छोटे जीव न।
औ सूक्ष्म जीव औ स्थूल जीवं हैं गोन रचता की वा की राहि का है ए आदी यं करन वाली गोराई
जा में दोरी है है म में गोर नाम लाल को भी है मिंहदी मय वैं होनता में है किंवा थोरी सि मिंहदी
लगाय वैं दी मेंहदी को लगाई दोहा य मैं घनें बहुत ता सों मन मोहन के मन मोहि वे कों मोहि
नी जो कोई माया सो लगाइ है वैं दीन दीं है २ द्रव धूवीरव धूदी सावन की डोक री भी है कहत।
हैं अरविंद कमल के उर में कमल रूप ध्वरमें सुंदि रालसी जा को मानों देषिवे कों आई है १
केंव अग्रौ पीठि केंवम केंवु कपोत द्युति के सब दाम प्रमान पीठि कनक की पाटि काजा नत सु
कल सुजान २१ केंठ पीठ वर्नन केंव द्युति कें ठ केंवु सं पनाहि मारी घावानि ए अरु कपोत क
द्युत रचना की द्युति वानि ए पीठि कनक की पाटी मारी घीवनि ए २१ स्तन रस आक्रांत कविन रीति
अभ भटी सानि कीं स्न भारती की भारती यों भोरी की कि थों के सोदा स कल गान ता सुजान ता
निसंकता सों वचन विचित्रता कि सारी की अंड्र साई की सी सोहै हैं अविका ऊंदेषि देषि अंबुज
नयन केंवु ग्रीव गोल गोरी की नावे नृपि कस्तु व सोभा की विरेषाह चिम नव चक्र मनी कि पि
यमन चोरी की २२ सुरति सघो नायक सों कहति है सुरभाषा में नरभाषा में प्राकृत भाषा में

158A

जेकोविन्नकरिवेकीरीतिहै सोभीश्रीश्रारभरोसालिकीश्रीभारतीरमिकप्रियामेंहूतिकदी
हैभारतीयायाकोग्रंथरूतसवकीभारतीभीवानायिकानेभोरीकरीहैइनसौंवाकीसोभाव
नीनहींमानतीहैभोरीभोरीलौकिसोरीनायिकाजोहैवाकौवचनविचत्रताजोहैविचित्रवोल
बोलैहैजवनिसंकतासौंवालहैमधुरगानहोहैकिवासुजानताप्रवीनताहैवह।
किसोरीजोनायिकाहैवाकोजोवचनविचित्रताहैजवसपिनसौंनिसंकतासौंविचित्रवचन
वोलैहैलजीलीकोईरूपविसुनिनलेयहसंकासौंकिधौंमधुरगाननताहैमधुगानसुननतेजो
सुषहोतहैसोवाकेविचित्रवचनसुननतहोतहैकिधौंप्रवीनताईहैग्रवसांईभगवाननताकी
सपयकरिकहतहोहैग्रवुजनयतनग्रेविकाभवानीसोभीकेउसंपसीजोगोलग्रीवागोरीकौ
देषिकैमोहितहोतहैकेवमेनीनिरषाहैसोवीनाकोसरवेनवेसीकोस्वरपिककोकिलको
स्वरताकीजोसोभाहैसोश्रायवसीहैकिधौंसोईनीनिरषाकीकांतिहैमनिकरनिकपटमन
सोंपियजोहैतमनमारोमनचोर्यौताकोपकरेवालिषीगईकैममनोहरवाचग्रादिकियाता।
कसिवाहतौहमरीनरहकीचोरीगनिवेकेलियेहूसरीरषाकाढीहैग्रैसेवचनसौंकहैग्रैव
जनयनयहभीपाठहैतहांसषीसौंसषीवचनजानि॥३२ केउभषनवनेनं लेतिमोललाल
कौंग्रमोलचित्रगोलग्रीवलोललैनैनदेषिदेषिजानिगर्वभागिकै॥स्यामसेतपीतलाललकेउके

र

स

वकंठमालन्नानितोंदिनैंकहीरहीनुजोतिजागिकें केसोदासग्रासपासवासकैरहैमनोंसमे
तरागनीनिरागराजरंगजागेकें सूरकेनिवासतेंप्रकासमोमजूकेयोग्रनेकभांतिकीकिधौं
रहीमयूषलागिकें ३२ कंठभूषनलेतद्दतिनायिकाकोजोमालग्रीवामेंलालिकोग्रमालि
कचिन्नमालिलेतिहैग्रावनोवसकरतिहैग्रतेकनायकनिकोंदमवसकरतहैयहजोयका

नाथ

कोगर्वेषोसोवाकेचंचलनेत्रनिकोदेषिभाजिजातहैग्रेसीकंठमालाहैताकीजोतिजगमगा
यरहीहैसोकहीनहींजातिहैकंठमालानहीहैकंठकेग्रासपासतारागनोतिनिसमेतताराराज
राजश्रेष्ठताकौरंगजागिरह्योहैसूर्यकीजोतिचंद्रमाप्रकासकरैहैकह्याहैकिधौसूर्यके

तबचंद्रमामेंपेठहैतब ७

निवासतेंप्रवेसतेचंद्रमांनेप्रकासकस्योहैयातेंग्रनेकतरहकीकिरनमयूषजागिरहीहैसू
र्यकोरंगग्रनुरागतेलालचंद्रमाकोग्राकलंककोरंग ३३ पीठिकेसबकुवरदेषीराधिकाकु
वरग्राजुसोवतिसुभायसेंजजननीजनककी वेनीमेंवनायगुहीकाहूग्रलीभांतिभली
कुंदनिकीकलीततननकततनककी पीठिमेंतिनकीप्रतिमूरतिविलोकियततूरततनयत
जगासूरनिवनककी हरिमनमथिवेकौंमानोंमनमथलिषरूपकेहाथिग्रेकपाहूका
कनककी ३४ पीठिकेसबउत्ति सुभावहीसोंसहजैमाताकीरतिजीग्रोपितावृषभान
कीताकीसेजपैसोवैथीकुंदनकीकलीकेसीहैतनिकतनिकछोटाछोटाननसरीरकी

आकृतिकीपीठमैंतिनकीस्त्रीकीप्रतिमूरतिविंवदेषियतहैवानिककीसवतिनाकौंनायक
केदोउनैननकौंपूरतदेभरतदेकलीसोरूपाकोसुंदरचंद्रकैंकुंवपीठिसोनोकोपारोहै ३४ चि
वुकेंकज्जलमनरसछौटिछविरदनराडुकीआनफेंककामसरंचिवुककोस्यामलविंदव
षान ३५ चिवुककज्जलइति कज्जलविंदुवरनिएंपियकोमनलाग्योहेवरनिएंसिंगाररसको
छौटिलागौहेवरनिएंकुविजनकवरनिएंराडुकोरदनदोननाकीनिसानीवरनिएंआनआ
रिभीरुपमादीनिएंओकामकावानकीफेंकलीगाडीकोंकहिएचिवुकऐसोवरनिएंओ
स्यामविंदुवषानिएं ३५ सोभनसिंगाररसकोसोछौटिसोहैफेंककामसरकीसीकहौं।
इगतिनिजोरिजोरिराडुकोसोरदनरह्योहेवुभिचंदसोहितसोंकोसुहागकियौंडास्योतिन
लेंविजोरिचतुरवीहारीजकोचित्रसोचिढ्दैरह्योचितपतैकेसोदासलेतिमनचोरिछोरि
ननकचिवुकतिलतेरेपरमेरीसषिडारौंवारिनकनीतिलोत्तमासीकोरिकोरि ३६ सोभन
इति कामकेसरकीफेंकसीसोहतिहैजुकनिकोंजोरिजोरिसषीकहतिहेदोहामेंकह्योहेआनछौ
रिभीकहिएतसोंअथैरोगतिननकोसोहागदेवुडहिरह्योहेलागिरह्योहैछोटासोतिलनरोठो
डीपरहेतिलोत्तमासोअपसरा ३६ अथरदनअथरविंवपल्लववरनिप्रगटप्रवालसमान मुक्ता
दाडिमकुंदमनिहीरारदनप्रमान ३० अथरओदांत अथरद्युतिअधरनीचलाओठविवला

लफलहोतहैंपल्लवनवीनलालपत्रप्रवालमणहोतदाडिमकेबीजमेकुंदकेफूलसेमनिसमा
नहोतसमान १७ अथरअरुनअतिसुखसुथाकेथरकोमलअमलदलइतिछीनलीनीहै
केसबसुगंधमेंदहासजुतकोनकामविद्रुमकबोरकहूंविंबमतिहीनीहै सूछमसुरेषअ
धिसूधीसूधीसविसेषचतुरचतुरमुषरेषाविकीनीहै मानौमेनगुरुहरिनाहकेनयनगा
तिगतिलिगतिलेवकहूंवियागतिहीनीहै १८ अथरदनि सषीसषीसोंकिवानायिकासोंक
हतिहै अधरअतिअरुनलालहैंसुखसुधाकेधरनवालेहैंकिंवाहसुद्धिकोमलअमल
जेदलपत्रताकोइतिछीनलीनीहैताकेशत्रुहैं आधीउपमाकोवारजोविद्रुममूंगासोकोनको
मकीप्रतीपविंबकौउपमादीजियेतोविंबकहूंहैतबमतिजोहैसोहीनहोतिहै षटजानहेतु
षमोहेनेकोनहीचलेसूत्रमेंहोअतिसुंदरजेअधरताकेऊपरजेरेषाहैंसविसेषओरनिकों
ऐसीनाहींवनाइवेमेंप्रवीनजोचतुरमुषब्रह्मासोरचिकैसवारिकेंकीनीहैमानौमैनकामगु
रुहेहरिजोनायकताकेनेत्रकीजोगतिओरनायिकापरजानौताकोंगतिगतिलेवकोआ
जुवानायिकाकोदेषनोछोडयोवानायिकासोंआसक्तथोदेषेथासोआजछोडायेगतिगति
निकेवियाहीनीताकीएकलकीरकरीहैसरीकोहसरीओसेंजोनिएकहूंपावहैमानौमेंन
पुरहरिनाहकेमणनमनगुनगनलीवेकडूवियागनदीनीहैहरिनाहकेमनमापिवेको

160A

गनकौसमरलेवकुंविद्याचनगराईगनिकैरेषाकादिकैदीनीहै १९ दोनवनेनसळुमसुवेष
सुधीसुमनवतीसोमानौलळुनवतीसमानौलळुनवतीसीहै कीमरतिविसेषिएरनीहैरसी
हैरनीकरहविसेतसवकिधौंससिमंडलमैंसुरतिकीसभाग्रवरेषिये किधौंपियजगतिग्र
षंजनाकेषंटिवेकौंषंजनकोकेसवलरककुलिलेषिए दीनीहैनीकलाविधिनेरसुषचंदकौ
सुन्यायहीग्रकासचंदमंडलनिदेषिए १९ दोनवनेनसळुमरतिसधौवचनसुमनकुंदकेफूल
सोवनीसोवनीदोनवनीसलळुनकदेहैहीकेनाकीमरतिविसेषदेयहाविसेषनदीजिए
हैनाकीविधुधमत्रिहै परसोपासमोंग्रावेग्रेसीजुकिवनावेजोग्राषंजनलिनाकेषंजनकेलि
एंफुलाइवकेलिएकुलिसंसुनेजोतिधीन्यायसोहनाकोषंजनहकेराकारिकेदोनवनाएहै
हैषीनहीन्याय नाकेषंजनकौदोनसवनकेन्यायसाहनाकेजलपरवारहैन्यायहीवाजिवी
देनुकहैहनाकेग्रागेएकगुनामेटहोतहै २९ किधौंसातौंमंडलकेमंडनमयंकमधिवीज
रीकेवीनसुधासीविकुंडगाएहै किधौंग्रलवेलीकौचेवेलीकौचमकचौकिधौकीरक
मलमैंदाडिमदरसाएहै किधौंसुकनाहलमहावरमैंराषेरेंग किधौंमनिसुकरमैंसुधरसुहा
एहैकेसोदासप्यारीकेवदनमैंरदनछविसेसहैकिरनकादिवतिसवनाएहै ५० फेरिकि
धौंइति सातौमंडलकेमानौदीपकेमंडनम[illegible]जोमयंकचंदमोनाकेवीचमैंवीजरीको।

वीन सुधा सौं सींचि कै उगाए हैं जन माए हैं अलवेली कौ चोका दोन ता मैं चवेली की कली चमक
नि हैं मनि सुकुर मनि कौ दर्पन सुष ता हैं सुन्दर आछौ सोहाए हैं चंद्रमा की सोरह कलान की किर
न कौ टिकै वन्नी सकि ए हैं सो वन्नी सदा तन है ४ अथ हास ज्योति जुन्हाई दामिनी दीपति सुधा प्र
काससमद्दिमा मोद मरीचकी रुचि मोदनी सुहास ४२ हास वर्ननन ज्योति रुति एसौ हास वर्नि ए जो
त
नि दीप्ति न्योन्हाई चांदिनी वीजुरी की दीपि ओ अमृत कौ प्रकास माहे की माहमा वडाई मरीचि
का मृगतृस्ना मोहिनीं ज्ञा माया जा की रुचि ४३ कियौं सुष कमल मैं कमला की ज्योति होति कियौं
चारु सुष चंद्र चंद्रिका चुराई है कियौं मृगलोचन मरीचिका मरीचि कियौं रूप की रुचि रुचि सौं
रुचि
डुराई है सौरभ की सोभा की दसन घन दामिनी की केशव चतुर चित्त ही की चतुराई है एरी गोरी
भोरी तेरी थोरी थोरी हासी मेरे मोहन की मोहनी की गिरा की गुराई है ४४ कियौं कुंति कमलाल
ह्मी की ज्योति चारु ज्यों सुष चंद्रमा ताने चंद्रिका चांदिनी चंद्रमा की चोराई है सुष मीन रवी है आप
नी चंद्रिका वाहिर पसारी है मृगलोचन कौं मरीचिका मृगतृस्ना की रुचि है रूप रजन रवत है ता की ज्यो
रु
रु चिर ज्यो सुंदरी ४५ कोनिता कौं सुचिस्वत कौ नाम है आपनौ सुचिस्वतता मौं छिपाई है सौरभ सुगंध
ता ता की सोभा है दसन ज्यो सेन घन मे हू ता की दामिनि कियौं किंवा दसन ज्यो घन ति विजु कियौं चतु
रि ज्यो नायिका ता के चित्त कौ चतुराई है हंसी कियौं हमारे मोहन की मोहनी है कियौं गिरा वानी ता

161A

कीगोगारहै ४२ सुषवास मदनजीविकासुषजननिमनमोहनैविलासे निपटकृपानीं कपटकीरतिसु
षमांसुषवास सुषवासमदनइतिमदनकीजीविकाजिआवनवालीउपजावनवालीओसुषकीउपजा
वनवालीओमनकीमोहनवालीअैसेजाकोविलासहैकपटकोछिवकोंअतिकृपानीतरवारहैओरति
प्रीतिताकीपरमसोभाहै ४३ कियोभयोउदितअनंगअंगकोअंगउरसुरभितैअंगरागगदाहैदेहदुषकों
कियोंचितचातनीचंवेलीचारुफूलिरहीफैल्योब्रजकेसवप्रकासकरसुषकों कियोपरमलप्रेमपूरनावतेस
निकों कियोंवरवानीवनमालीकेवसुषकों कियोंपायेप्रानपतिहृदयकमलफूल्योताकोंगंधवंधुकेसुगं
धसुषमुषकौ ४४ कियोंउनिउरमेंमनमेंअनेगकामताकेअंउदितप्रगटभयहैंकाहेतेंसुरभितेंसुषकी
जोसुरभिसुवासतातें ओसुरभिनामवसंतकोहैवसंततेंकामप्रगटहोतहैप्रसिद्धहैयातेंमदनजीविकाप्र
२ गटभईअंगअंगअंगावतासैजाहीथेअवयुपजेहैंतामेंभयोहैरागप्रीतितासौदेहकोजोदुषयाहमारासवहैपंदे
हनहींयादुषकोदीनहैवरावतहैयातेंसुषकीउपजावनवालीसुषवासदूहांकामकौंसुषउपजायोकहू
नायककौंसुषउपजावेहैकिधोंचितकीजोचातुरीतेरइहैचंवेलीसोंसुदरफलिरहीहैताकोसुवाससुगंधफै
लिरहीहैहैमनमेंप्रकासनामप्रगटकोओहासकोओउद्योतकोनामओप्रसिद्धतौनामसुषकोप्रकासक
रनवालोप्रसिद्धकरनवालोयाकोसोसुषकाहूकोनहींताकोअैसोवासहैकिवासुषकोप्रकासउद्यो
तताकोकरकिरनहैकिधौंपूरनजोहैप्रेमसोअवनेसकरनेफूलनताकोंपरमलमनोहरगंधहैकिवासु

षमेंजोवरुष्ठहवांनीसरसतीहैताकौवनमालानाकौवासहै किंवावाकेसरीरकोवासहै किंवाप्रानपतिना
यककेपायकेहृदयकमलफूल्योहैताकेगंधकेबंधुहैवाकोसहसहै किधौसुषदायकगंधसुषकोहै
किंवासुषरूपसुषकोगंधहैप्रकासकरसुषकोऐसोपावहैतौसुषपुनरुक्त ५४ सुषरागअरुनोद
यराजीवमेंअंगरागअनुरागरूपभूपरतिराजसोंराजतसुषसुषराग ५५ सुषरागअरुनोदयपुनिरा
जीवकमलमेंअरुनकौउदयहैकाहूकेअंगकोरागरंगहै किधौंअनुरागरूपभूपजोहैरूपकोराजाजोहै ३
रतिराजकामतासोंराजैहैसुषदायककोमजोसुषकोरागरंगकिंवारूपभूपयाकोअर्थऔरकौजोरूप
तेसोईहैरतिराजकामतासोंसुषदायकसुषरागसोहतहैकिंवारूपभूपयाछोरूपसोंऔरभूपकोम
सोंतेरोसुषरागसोहतहैजवकामचेष्टाहोतिहैतवसोवहुतसूंदरमिलागतिहै ५६ केसोदासराग
गिनीनिकोकिअंगरागकिधौंद्विजसेवतहैंसंध्यासलीभोरकोअरुनरदनवहुरतननकोधानिकिधौं
उरहीकलककलकनिचढ्योरकौ किधौंभाषाभूषनकोमनिनिकोचाकचकाचौरलेतिचितचा
लितेरेचितचोरकौलागिरह्योअनुरागकिधौंनाहनैननिकोकिधौंरुचिरचालेरेनरूलीतसोरकी ५७
केसोदासनिसुषमेंरागरागिनीहैताकेअंगरागकहेंद्विजब्राह्मनऔदांतभोरकोसंध्यासानौंद्विजदांत
सेवतहैअरुनलालजेहैदांतसोवहुतरतननकोधानिहैउरहीयाकोअर्थवहीजोरतननकीफलकहै
सोकिकोअर्थकिधौंचढ्योऔरफलकनिहैचाकचकवहुतचमकजोहैसोतेरोचितचोरभावहहसनी

...केरागहै

163A

तैसे

कुंडलमकराकारकेसोहासचितयें सेचितवककें चौपिकैंवल्लनह्वैं गोरेगोरेगोलअनिअमलअमोललनेरल।
लिनकपोलकिधौंमैनकेमुकुरहै किधोंहमिरति हरिकोनेमनोरथरक्षाहपरथलाकोस्रुपप्रभसिहै
समनताकदीपीनरथकामनाकामनकीजागानिहैसोकछुईनहींसकेभगवानकोभियाहैयातेरूपओरा
जाहैमरानेहैलोचननायककेलाकोमरीचिकामृगतृस्नानाकीमरीचिकिरनहोयकेनायिकामिली
हैयामभईहैमरीचिकाहैपारगहैरहैंनायिकाकेपीछेनायिकहोरैयोसोआनंतमिलीहैसषीमि
लेपरनायिकासोंकहतिहैआनिकेकुंडलसोमकराकृतहैमकराकृतिकुंडलवरननहैताकेसरसरो
वरकपोलहैचित्रवककचौपिनातहैमदनकेमुकुरदर्पनहैदोउहै नासिकाकेसवसुगंधत्तासमसिद्ध
निकोगहाकिधौंपरमप्रसिद्धसभसोभनसुवासिका किधौंमनमथमनमोनकोकुंचनीकिधौंकुंदनको
सीवलोललोचनविलासिका मुक्तामनिनिकीहेमुकतिपुरीसीकिधौंकिधौंसूरसेवनहैकासीकोप्र
कासिका त्रिभुवनरूपताकोतुंगलोयनिधिताकेतोयकीतरंगकेतक्रनितेरीनासिका ५३ नासिका
केसवसुतिसुवासमोहैसासेसोईहैसिद्धनाकीकिधौंसुंदरगुहाकेदरहैपरमप्रसिद्धहैसवजानतेहै
सुभअशकोसोभनहैओसुवासिकासुवासकरनवालीहैकिंवाहैमनमैपरमनामअगुम्रकोयाहैप्र
सिद्धनाकौंसवजानेहैसोसुभकोअर्थअर्थछौओमपसोनामननाराकोहैनश्येहैयमोतीहैनाकीना
राकोउपमोहैपरमअअग्रसरआगेंवलिवेवारेहैंप्रसिद्धओसुंदरभकहिएनारायहैसतिओ अनुकनाकों

कवि.
प्रि.
१६४

164

हैं ऐसी नासिका है सुभ को नाल खगकार है ऐसी कहै तो भाव मैं सब सकार दे त्यहो जानि ए केरि आछी
वास सुगंध ना की करन वाली सो भनि है या को सुगंध सों औरि भी वस्तु वस्त्र आदि सुगंध होत है मन मथ
का मन ताको जो मनि सो मनि मकरी है ताको कुवेनी है जा हि पाव मैं मकरी एक रिके धरि देत है सो पावकु
वेनी कहावत है कि वा काम सो धीवर है ताको कुवेनी है नायक को मन मीन ताकौं पकरिके धरै है ।
कुंदन सो नाना की विधाता ने दो उनेन के बीच मैं सीमा मेड़ बनाई है विलासिका को अर्थ विलास लोचन
लोल चंचल है मिलित जो हित ताके विलास के लिए कुंदन को मेड़ बनाई है कि वा दो उनेन के बीच कुंदन
की सी मांड़ है लोल नाम चंचल को औ जा मैं हित सो चाहत है ताको भी नाम है वा दृग भरे जे नायक के नैन ताको
विलास की विलास करावन वाली है सुकाम औ मनिता की मुक्ति पुरी स्वर्ग में स्वकाम निवड़त है ताक स
गी को भी नाम है कि वा मनि सोइ मुक्ति लोग है ताको मुक्ति दायक पुरी वैकुंठ है स्वरदेवता औ सुरना
सिका कौ पौन चलति है सो तासो प्रकास काम प्रकास करन वाली है का सी कौं भी सुरदेवनासे वत है त्रिभु
वन को जो रूप ताको नगर वो वड़ो जो ता निधि समूह ताके जल की तरंग है कि यो है तरह नि ते री नासि
का है ५३ नकमोती वर्नन के सब आनंद फल सु था पुं दुम करे दै मनय ते गको दीपक नि नकमोती जगा
वंद ५४ नकमोती वर्नन के सब दुनि सुंगे भाये ५५ कै सो दास सैं कन सुवास को निवास षिकि यौं त्र
रविंद मधि विंद मकरंद को कि यौं चंद मंडल मैं सो भित श्रम राग रू कि यौं गोरचे द जु के पैले सन चंद को

164A

वाहैरूपकामगुनदिनहूंनैंहीनकियौंचंदफूलसूंघनतेहैआनंदकेकंदकौनाकनायिकानहूंनैंनीकौंन
कमोतीनाकमानौमनुरफिरश्योहैनंदनंदकौ ५५ केसोदासरतिनसषीनायिकासोंकहतिहैदेसषि
सकलसुवासकोनिवासनोहैअरविंदकमलश्रीमकरंदफूलकोरसचंदमंडलमुषमानोश्रम्रगार
श्रुकेवेद्कोमनतुषमुषसोचंद्मुकासोहैफूलनाकोंकिथोंसरछनहैनासौंरूपवारतनहै श्रीकामकेश
नमोहननासौंहूनोदिनदिनमैंहोतनहैनकमोतीसुंदरलागतहैयहश्रथकोरनायिकामैलगावनतैहै
तामैंरूपवारतनहै श्रीकामवारतनहै श्रीगुनतौमैंदिनदिनमैंहूनौंहोतहैतेरीनाकमैंनकमोतीजोहै
सोनाकसरीनहाकोजोनायिकाहैताकौनकमोतीसैंनीकोलागतिहै ५५ लोचनवरनैने लोचन
चारुचकोरसमचातकमीननरंगश्रंजनजनतश्रलिकामसरंपंजनकेअकुरंग ५८ लोचनरतिचातक
पिपीहाश्रीकामकोबानश्रीकुरंगहरिनपियमनहूनकियौंप्रेमरपसनकियौंभवरश्रभनवपुवास
केसुरंगहैचितचतचहैश्रोरश्रीतमकौचितचोरचंदकेचकोरकियौंकेसवकुरंगहैवानमदभंजनके
षेलिवेकेषंजनकिरंजनकुंवरकामदेवकेतुरंगहै सोभासरलीनमीनकुवलयरसभीननलिननवी
नकेथौंनैनवडुरंगहै ५७ पियरतिपियकेमनकीहकीकतिसवकहिदेतिहैप्रियलागतिहैमनकी
वानसवकहिदेतहैसूतसारथ्योवासकेसुगंधकेमाकेवपुतरीरहैश्रीसुंदरताकोरंगहैकिवालाल
हैरोकियाकोभीकहतिहै चलनकियाजाकोसुंदरीहै कियौंचंदमाकेपालेचकोरहैचकोरको

उपमानेन्द्रकीहै किंवाहरिनहैवानकोजोमदगर्वताकेहरकरनवालेहैं कीडाकरिवेकोंषंजनहैं श्रीकु
लकोपुत्रकामजाकेरहै ताकेरंजनराजीकरनवालेहैं किंवाकामदेवकेरंजनकोकोकीठौरकूपद्यो
हैवस्त्रशुक्लरंगअरुस्वेदहै सोभारूपजोसरोवरताकोलीनअमिलेमीनहैं रसजलऔरसभावतासाभानेकु
वलयपरात्रिविकासोकमलहै किधौंनवीननलिनकमलहैबहुरंगहैस्यामस्वेतलालजामेंरंगहै किं
वावहुरूपियाहै अनेकतरहकेरंगकरतिहै ५७ अंजनविषसिंगाररसतलनमदूरपातकलाज मन
रंजनअंजनसेवेरनतहेकविराजे ५८ अंजनविषसिंगाररूत्रिविषवर्निपसिंगाररसनतुल्यवनिपत
मग्रंथकारपूनेंनमकिंवापूनेपानकलानजक्रवर्निए ५८ किधौंरसराजरसरसिनअसितकिधौंललि
तविसिषविषवलितसुभालकैं किधौंजगजीतवेकोंराजारतिनाथहाथवाहनवनाएकेसोदासचल
चालकेंवुनथानपानकविनचोरिवेकोंनमदेषिवेकौंनंदलालललितकरेकालकेंलागिरहीलोक।
लाजपंजननयनकिधौंपिपमनरंजनकिअंजनहैंवालके ५९ किधौइतिरसराजसिंगाररसमेसोहैर
सनलवासरसितहैं जतकहैंसिंगारस्यामहैतासोंअसितस्याममपहैकेकिधौविषसौवलितशुक्रवाकोभा
लहैलोहकोभालहोतहैअरुसोविशिषवानहै किंवामैंभालिकैंदेषिकेकहतिहोंरतिनाथकामसोआ
प्रापनेहाथसोंवाहनवनाएहैंसिंगारेहैंरंगाहैचलचालचंचलकैकिधौंअंधेरेमैंचोरीहोतहैनमअंथ।
कारलालकरैलालचकरैमैंकचतिहैनरहहैघोपूरवमेसिंहनीकहतिहैकालिकोपंजनमेस्याम।

कि

सेननयननामैंलोककीलाजकिधौंलागिरहीहैपियकेमनकौंरंजनराजीकरावनवालेअंजनहैं ५५
भकुटीवनंनेभकुटीकुटिललताधनषरेषाषड्गअनूप केसवदाससुपासससमरवरनअवनकरिह
य मोहवनंनेभकुटीइतिभौंहकौंकुटिलदेषीकमेवनिएओललनापीओधनुषसीओनरवारसीओ
पासवेथनसीअवनकोनकेरूपकसिवमी ८० किधौंलागीपंकजनकेअंकपंकलीकाकिधौंकेसवमा
पंकअंकअंकितसुभायकौंजेबहेसुहागकोकिमंत्रअनुरागकोकिमंत्रनिकोबीजअथउरधअभाय
कौंआसनसिंगारकोकिकामकोसरासनहैसासनलिष्यौहैप्रेमपूरनप्रभायकौंटीकारहषवेषवि
षपीषूषविसषमयभामिनीकीभौंहैंकिधौंभौनहावभायको ८१ किधौंइतिपंकजकौंपंक
कोलकौरयअंकलिनिसानोलागीहैकिंवाअंककुवीचमेंपंककीलीकलागीहैकिधौंमयंककौंअंक
मध्यहैसुभावहीकौंअंकितस्यामतासुभावहीकोहैकिधौंसोभागकौयंत्रहैनायककोअनुरागवहा
रवेकोमंत्रहैकिधौंमंत्रहैकिधौंमंत्रनिमेंसक्तिहोतहैकेसोहैअधिकहिपनीचोउरधकहिएउपरना
कोअभावहैमुषमंडलकेनीचेनहीओरउपरनहींवीचमेंहैसरासनधनुषपूनेप्रभावसासमर्थजाकौं
अभेसोप्रेमताकोसासनआज्ञाहैमानमेरोषकोधकोनरहनदेतिहैविषस्यामहैताकोवेषसरूप
हैजाकौअभेसोकोईपीयूषअमृतविसषहैभामिनीकोयवालीकिधौंहावलीलाआदिभावसंचारी
किंवाभावमनकोविकारताकौंप्रगटकरतिहैहावभावकौंनचवरहै ८२ कर्नेणगवनभाजनभव

भौ

नसोभनग्रवनपवित्र केसवलोचनलाजकेमनकेमंत्रीमित्र ९२ कानवनेनरागरुतिरागजाकौंभावेहै
रवनकद्दनवारेभाजनपात्रग्रोभवनग्रोभंडारवानिएलाजकेनेत्रमनकेमंत्रीग्रोमित्रग्रोपवित्रकहिए
पवित्रीमासैंचरनामृतलेतहैंतेसैं ९२ रागनिकेआगाररागिनिरागकेविभागकरमंत्रकेभंडारगूढकेरव
नहै ज्ञानकेविवरकिकिधौंतनुकननकननकनककचोरीहरिसमग्रचवनहै ग्रतिनिकेरूपकि
धौमनकेसुमित्ररूपकिधौंकेसोदासरूपभूपकेभवनहै लाजकेनयनकिधौंनयनसचिवकिधौंनय
नकगाछमसलताकेश्रवनहै ९३ रागरुतिरागनिकेआगारप्रवीनहै विरागोविशिष्टरागएकरागमें
हसरोरागमिलेंग्रोरोरागहोतहैजैसेंकछ्यावरग्रोगौरसारंगइत्यादिग्रामेजोरागनिकेविभागकरने
वालेयामेंपतनोंग्रसग्रोरिरागनिकोहैकिंवाविरागविरागताकोंकरनेवालोहैयहभलोरागगावत
हैयहबुरोरागगावतहैजोमसलहतिकीवातसुनेसोग्रपनेमेंराखेयातेभंडारकैहैंगूढशब्दजाकोग्र
र्थकविनग्रोरकूटनामफलानोनामकोनकोहैताकोरवनकद्दनवालेहैंव्याकरनरीतिमोंजोनिर्णविवरवि
लक्षोटाक्षोटाहैसरीरजाकोहरिकोनोरसताकेग्राचमनीयविमीहैचरनामृतलेनेकुंजैसोछोटीकर
छोहातिहैकिंवाहरिकेरसकेपानकरनवालेहैंस्त्रीकोवेदकोग्रधिकारनहीहैहेमसेग्रुनिनामवा॰
नीकोभोहैग्रोसुनिवेकोहैताकेरूपलीजिएरूपसौंदर्यजाकोर्भराजतहैताकेग्रहैलाजकेनेत्रहैकि
धौंनेत्रसचिवमंत्रीहैनेत्रकेकटाक्षिसरकेलक्षनिसानाहैकेकोग्रर्थकिधौं ९२ कनेफूलताटंक भनि

गूढ

विभाग

मनिमयुनारेकनुगललितिनलसपरिमानतकनलरनिचलचकसेकेसवकुसुममसमान ८४ कनेफलि
भनिरनिभमैनोकहेजनुगदेयमनिमयनारेक कनेभ षनलसानिषानांह नजुवाग्रचेउदोयदरीकोसर्य
जैसे चलचेचलवानकहतमेंश्रीचकसारीघाग्रीफलसी ८५ पहिरेंकनेफलदेषिहेकुमारीएकसुन
द्रकवरकाद्रसोभेसुघरानिपतिनकेतनकोजोतिजोतेजोतिवेतसवकेसवग्रनेतगतिकेसेंउरश्रा
निएंमानोकामदेववामदेवजूकेवेरकामसाधेसरसाधनानिलसग्रनुमानिएं जहूंदिसिद्धहूंधजमर
कुटोकेमाननताननमनकराकवानवेधनननाानिए ८ पहिरेंउनिकनेफलकोसोभासुघदानीहे ति
नकनेफलनिकोतनकीजोतिज्योतिवेत सूर्यचेइमाग्रादिफेरिकनेफलग्रनेतगतिकेसेहेंग्रनेतजो
भगवानतिनमेंगतिचलतोजाचककोकेसोयाकोग्रथेचकछोसेकोग्रपैसारीषेयावानकोउरमैंश्रा
निपहेमनमेंल्याइएहेकहेपावहे ग्रनेतगतिकेसेंउरश्रानिएताकीगतिक्रियाग्रनेतहेजानीनहीजात
हे सोकेसेकेमनमेंल्याइएविचारीएएकदोपगतिहोयतोविचारीजायतोवहेतकविनिषेयेनवि
धिमुशीतल्लोनाटहतांगइवेनायकरमनकौकहतहेनायकामाघोहलायकेतोहीकहतहेतत्री
जोनायिकानाकेजोतांउवतुग्रहिलियोसोतोहीकहिकेविधिजोकर्मव्यताकोस्पर्शकरतिहेतोही
कहतिहेसीकारकरतिहेमानोंकामदेवजोहेसोवामदेवमहादेवसोंजोहेवेरताकेलेनेकेलिए
सरचलाइवेकीसाधनातिनकोंग्रनेकनरदकेरलामालनिकोंसाथेहेकरेहेनाकोनाटकेलस

कवि. प्रि. १६८

167

निसानाहै ग्रनुमानकीजिए है कांमदेव३ हूं दिसउहूं तरफ दोउ भुजनसौं भ्रुकुटी कमान तानिकै नेत्र के
कटाक्ष सो सर है तासौं वर्षे है तांटंक के तनकौं पद ज्ञानिए किंवा वेपत है काकु स्वरसौं न जो निए है किंवा
हलैं होय मैं कमान लैकै चलावत है यहतौ भेदा जो ज्ञांनी नदीप रहै ८५ कनभूषन षोटिला ग्रादिव
नैने चलदलसी कियौ नीन री जनपताक मन मीन सर समकर स ग्राकास के सोभन दीपन वीन ८६ षो
टिला ग्रौ पीपर पत्रा ग्रौ फवफवी वनैन चल३ इति चलदल पीपर तैसी पीपर पताका दहन है नी नरी पछी
पताका सारी षी मन सारी षी मीन सारी षी सर सकदि ए ग्राकास को कलस फवफवा मैं कलसकी ग्रा
कृति मिले है नयो दीप ८७ षोटिला षचित मनि सो हनवनि कवने कनक कुरस छबि हवि रवन
है तनन कतनन कतनन तीन भीन रलगति मोन दू पताका पीति पी इनि पवन है कालिंदी के कूल कूल जो
तनलके लिकद कालही सराहे मेरे कालीके दवन है के सोदाम संदरअ [illegible] वन ब्रजसुंदरी के भावै मन
भावैतै भवन है ८८ षोटिला इति मनिसों जटित षोटिली है सो है दे वनाव सौं वन्यो है कनक कलसकी
छवि फवफवी समननायक ताकौं छवि लागति है किंवा छवि सुंदर देय मन विहार में वाजन दो हैन
रलनार की तीन रको सीन रल चंचलता की गति है वोलनमैं हिलनि है पौन सो पौइनि हिलाई कालिंदी लो
हि सराहे योकाली नागको दमन कर्ता श्रीकृष्ण [illegible] सवंद [illegible] सषी सौं सषी कहति है भावतो नायक ताके मन
कौं भावने मैं हावने ह्वर है ८९ ललाट कनक पाटिका समकदी के सबललित ललाहसो भनसो भाकी

केभावते

सभा ग्रहै चंद्रमा चारु ९२ ललाट कनक रति सोभा की ग्राछी सभा समस्त है ग्रो ग्राधा चंद्रमा को सम ९३
केस व ग्रसोक किधौ सुंदर सिंगार लोक कनक के दार किधौं ग्रानंद के कंद को सोभा को सभाव किधौं
प्रभा को प्रभाव देषि मोहे हरिराय सषी नेंदनसु नेंद कौ ग्रमकनि चाह रुचि गंगा को पुलिन किधौं चक
चौंधे चित्र मति मेंद हूं ग्रमेंद को सेज है सुहाग की कि भाग को सभा सुभ भामिनि को भाग कीधौं भाग चारु
चंद को ९४ केसव रति ग्रसोक जामें फिकिर नांही प्रमो ग्रं गार रसना को लोक स्थान है किधौं किधौं
कनक के उपजिवे को के दार षेत है सो सोना में सुंदरता वा षेत की है किधौं ग्रानंद को षेत है किंवा ग्रानं
द के कंद मूल उपजायवे कों किधौं सोभा को षेत है किंधौ सोभा को सुंदर भाव सत्ता विद्यमानता है कि
धौ प्रभा को तिता के प्रभाव सामर्थ्य है नेंद को सुंदर नेंद जो हरिराय राजा है सषी सो देषन ही मोहि रहत
है श्री गंगाजी को पुलिन के सो है मंद मति ग्रस्ता नता को ग्रमंद मति ज्ञानवान जा हि देषि सब को चित
चकचौंधित है नायका कौं लगाइ पनीर सहोय किंवा सषी गन कों चित चकचौंधत है किंवा चंद्रमां को
भाग हू करा है ९५ ग्रलक वर्नने ग्रलक चिलक सों वनि पस्याम लग्र मल सुपास ग्रनि चें चल ग्रति
चारु ग्रति सूक्षम केसवदास ९६ ग्रलक वर्ननं ग्रलक रति चिलिक जन क वनि पास फासो सोषी
सूक्षम मेदी वास ९७ डोर जोर ज्यो डो विगुन नत मुनि पन मुनो जान छाया माया काम की काया कस
लव धान ९८ डोर रति ग्रलक डोरि सो ग्रो डारसी ग्रोडी विको जो गुन जासों डिगि जात है नेंही व हरति

168

रैनमंध्यकारकी स्त्री सी औ जमुनाजा नैं छाया सी कामकी माया सी मनीरजा कौ सुंदर ७१ केसँक
सा है किधौं अनंग को सुरंगभूमि लोचनकुरंगनिकी वाल हैं है कनि हैं पिय मन पासिवे कों पासी सीप
सारी किधौं उपमा कौ मेरी मति भव भट कनि हैं तरनि तनूजा बेलै नार्य नाय साथ किधौं हाथ परीन
म कीन रूनी मटकनि है सुनिलोल लोचनिन वल निधि नैंहंनि की अलकै कि अलक अलिकल
रकन है ७२ केसव रनि कसा चातुक अनंग को सुंदर भूमि रंग भूमि है कुसी कारिवे कौ ठौर काम
या मैं आरू कै मन कौं पकरि लानहै कि वा सुरंगभूमि है सुढार भूमि है चौकनी भूमि है या तैं लोचन नैं कु
रंग हैं विनता की चाल दौरि जात है चौकनी ठौर मैं चल्यौ न हीं जात है अथ यह नेत्र या ठौर मैं लगि।
रहत है उगाड़ी उगन यह लक्ष न लगै पा पा सिवे कौं फांसिवे कौं पासि फासि जाल उपमा है नैं कौं भव सैसा
र मैं भटकै है फिरै है तरनि सुधना की तनूजा वेटी औ जमुना जी सौ स्याम है ता रानाथ चंद्र है सो सुष ज्यो निए
किधौं चंद्रमा के हाथन मैं अंधकार नाकी स्त्री हाथ परी हाथ चढी है लोल लोचनि नसुनिन वलन वीन
नै नैं हनाकी किधौं निधि है किधौं तेरी अलक कहूटी है किधौं अलिकटी है लिलार ताप अलिकछो
टै भौराल टक नि है अलि कौं अर्थ भौंरा कौं अर्थ व्याकरन रीति सौं छोटा लीजिए ७२ मुष मंडल अम
ल मुकुर सौ वर्निए कोमल कमल समान अकलंकि न मुष वरनिए चाहु चंद परिमान ७३ मुष अम
लता अमल कहिए औ मुकुर दर्पन सौ औ चंद समान ७३ अहनि मैं की नैनो गोहसारनि मैं देखौ दह

जप्यौ

168A

सिव सौं कियौ सनेह जागेयौ जु गां चाह्यौ है तन पनि मैं तप्यौ तप जलनिधि मैं जप के सौ दास वपु मास
मास प्रति गाह्यौ है उ उगन ईस हि जईस ग्रौ षधी स भयौ जद पि जगत ईस सुधा सौं सुधा स्यौ है मु
निनंदनंद प्यारी तेरे मुष चंद सम चंद पेन भयौ कोटि कंद को निहास्यौ है ७४ प्रहूनि मैं श्रुति ग्रह
कौं सव सजनि देनां मैं तो छर किप सूज्य भप सम निकौं टेह दे करि दे ष्यो है वना ग्रम तपानें करत
है पा तें कला छीनि होति है चारि हूं जुग मैं नागारन कियौ यदुभीतपस्या है स्रयं चंद्र मां ग्रमावस।
कौं एक वौर रहत है तपन सूर्य नामें तपत पस्यात प्यौ है कस्यौ है किं वा तपन ग्रागि सिव के नेत्र
मैं है न होत पस्या के लिए तप्यौ ताप सह्यौ जलधि समुद्र न हो जप जप्यौ गाह्यौ है गलायौ है छीन
कियौ है तपस्या सो पतनी वजाई यो ईउ उगन नारा कौं ईस भयौ कोटि कंदतर करि हास्यौ ७४ के
सपास भौंर चौर सेवाल तम जमुना कौ जल मेह मोर पछ सम वरनिए के सव सौं है न सनेह ७५
केसपास भौंर इत्ति सनेह हनेल फूलेलना सौं चीकनौ ७५ कोमल अमल चल चीकनें चिकुर चारु
चितपनै चितचकचौंधियत के सौ दास सुनि हु छबीली राधा कुटे नें कुवैछू वानि कारे सट कारे है
सुभाव हैं सदा सुवास सुनि के प्रकास उपहास निसि वासर को कीनौ है सु के सौ वसुवास जाय
कै प्रकास यह्यु पियु नेक चंद्र मा सा षपष्ठि मोरत उजीन्यौ एक चंद्र मुषि रूष नेरे केसपास ७६ को
मल अति चल चंचल चिकुर केसपास छिपा फूली दिन राति को उपहास है सी प्रकास हुआ दिस

कवि
प्रि·
१६९

169

ननकैदिनरातिमैंलोगहंसीकरैसकेरी अपसरानाकेकेशअैसेनहींयातेंवसुवासरहेनोआका
समैस्वर्गमैकियोलाजमैंज्यौंभीमोरनिकेसाथमैअनेकचंद्रमाहेतोभीएकचंद्रमाजोहैतिहारो
मुषनाकेरूषपछ्मैकेमकोपासमम्हजीनो १६ वेनीअैसीवेनीवरनिएकेमोदामवनायअ
मिनिमिजमुनोधारअदिअलिअवलीस्तुषपाय ११ वेनीअैसीवेनीइनिप्रसितरवारिनिमारानि
अदिमर्पजामेंमुषपावैमोमुषदायक ११ चेदनचढायचारुकेकमलनायपीछेकियोंनिसि
नाथनिमिनेहमोंउराईहैकियौंवदीवेदनछिरकिछीरसांपनिसमीपसुधानिधिमुथासोधलैन
आईहै केसोदासमहामरसमिलिअनुरागमसरसमिंगाररसधारारैरआईहै मिलिमालतीकीमाल
लालडोरीगोभीमहैवेनीपिकवैनीकोत्रिवेनीसीवनाईहै १८ चेदनइतिमालतीचवेलीकीमाला
मेलिकैगाषिकैकेसनिमैंलालडोरीसोंगोरीसपीमरथहैवेनीचादीपिकवैनींकोकिलकेवीनाथि।
काकीसोत्रिवेनीसीसोमेहै चेदनसेनकुकमलालनिसानाथचेदमोमुषतामेनिसाचोहीस्यामनेह
प्रीतिसोंछपाईहैकियोंकाहूनेवेदीपजीहै वेदनरोरीसोअोछीरहूथसोंछीरकोहैअैसीसोपिनिहैचो
होसहमुथाचेवेलीकेफूलकोसमनादासरससोंमिलिकैअनुरागरूपजोरसजलहैतासोमिलिकैस
रसआकोजोसिंगाररसकोधारासोयपारथ्वीकीओरदौरीहै १८ वेंदीवेंदीवरनतसकलकविके
सवललितललिताभागम्हहारानरेसममरविसासिउदितउदार १४ वेंदीवेंदीइनितिनरेसराजाउ

१६९

सारवेहै ७९ सिरभूषनमांगफूलसिरफूलसबवेनीफूलबनाव रूपभूषणजगमगैजोतिजननसुरजप्रगट
प्रभाव ८० मांगइतिमांगफूलइत्यादितीनिभूषनहैरूपसोईहैभूषणराजानाकीजोतजगमगैहै हीयेहै
किंवाजनुकोग्रंथमानौंजगतमेंमानौंसूर्यकोप्रभावप्रगटैहै ८१ मोतिनिकीलरसीसपरसोभति
हैइहभांति चारुचंद्रमाकीचमूंढनमरालकीपांति ८२ मोतिनकोइनि चमूंसे तोकिंवाचंद्रमा
चमूतारागनसबनकिंवामेघनापरमरालहैस ८३ वेनीपिकवेनीकीत्रिवेनीसीवनायगुही कंचन
कुसुमरूचिलोचननिपोहिएकेसादासफैलिरहीफूलसीसफूलउनिफूल्योतनमनमेरोल्यायहै
सिकोहिएवेंदाजगमगातुजरायजरयोताकीजोतिमोत्योहैग्रंजीतउपमानग्रानहोहिएमानौंइनिपांवडे
निपांवधरैंग्राएहोऊसोहनसुहागसिरभागभालसोहिए ८४ सिरभूषनवेनीइतिकंचनसोपीन
कुसुमहैंकिंवाकंचनकेकुसुमहैंताकीरुचिलोचननिकौंपोहैंहैगूंथलेतिहैलगायलेतिहैय
हग्रर्थफूलसीसीसफूलकोउतिनायककीसषीकहतिहैमेरोहनिमापवाजवीमोहतहैवेंदानें
ग्रजीनकौंमोत्योहोहिएंछाजिएग्रानवेनीजाकौंवर्ननहै एजोवेनीसोईभएपांवडाविछौनाताप
निपांवधरिकेदायग्राएसोहागग्रोभागएसोहागतोसीसफूलरूपसिरबैसोहनहैग्रोभाललिला
रमेंभागरूपवेंदासोहतहैहै ८५ ग्रंगवाससहजसुवाससरीरकीग्राकरषनविधिजांनिग्रतिग्रह
ग एतितिदूतिकाइष्टदेवतामानि ८६ ग्रंगवाससहजसुनिग्राकर्षनषैचिवोनायककेमनकोता

कौ विधान क्रिया है अरु षिदै गति क्रिया ता कौ ऐसी हूती है कि वा इष्टदेवता सुवास ॥८३॥ कमलवदन
कर नयन चरन कुच परन कुरंग मद हू गति विलास है भ्रकुटी कुटिल कच मेचक सुगंध मय केदक
लिका मेंदंत चंदन को हास है कुंकम सरीर कुमकुमा को सेद नीर अंबर को केसो हास अंबर विकास
है मन कर घन विधि कियौ इष्टदेवता अरु इष्टा तिंतिका को सदन सुवास है ॥८४॥ कमल इति नयन
आदि पंच अंग कमल है कुरंगमद कस्तूरी ता सों पूरन लगाए जे है गात ता कौ जा कौं विलास है कटाक्ष
को चलावनो है कस्तूरी आधि में लगावति है रसिकप्रिया के सब मेदजवादि सों मांजि इतै पर आजे
मे अंजन है कहूं ऐसो पाव है कपूर कुरंगमद कटाक्ष विलास है सेन स्याम कटाक्ष को विलास है
ऐसों जानौ ए भ्रकुटी भौंह है टेढी है आ कच केस सो मेचक स्याम है सब सुगंधमय है चंदन कौ ता को हा
स विधाता ने बनायो है कुंकुम केसर ता को गंध सरीर में है कुमकुमा गुलाब को पानी ता को विधा
ता ने मंसीनों बनायो है अंबर समुद्र सों निकरै है सुगंध दोत दै ता को अंबर वस्त्र में विकास है ऐसी
तीनि प्रकार को अंग में सुवास है ॥८४॥ बसन सहेली सिद्धि सम काया माया भाव सोभा सुभग सु
हाग अति लाज लाज को आव ॥८५॥ बसन इति बसन बस्त्र ता कौं सहेली बनिए काया सरीर औ माया को
भाव क्रिया सुंदर सोभा बरनिए सोहाग कहिए अति लाज कहिए औ लाज को आउ आयुर्बलु कहिए
बस्त्र गए लाज नो होर है ॥८५॥ किधौं यद के सब सिंगार की है सिद्धि किधौं भाग को सहेली के सुहा

गकौसुहावहै जोवनकीजाणकिधौंमायामनमोहिवेकीकायाकिधोंलाजकीकिलाजहीकौ
ग्रावहै लाघलाघभांतनिकेपियहीकेअभिलाषपहिरेवनायकिधौंसोभाकोसुभावहै सारी
जमकसीजगमगातिसरीरकिधौंभूषनजरावहीकीजोतिकौजरावहै ८ किधोंइतिसुहागकौ
सुंदरहावविलासहैपियकेहियकोअभिलाषसोईमानौंवस्त्रकरिपहिरेहैसोभाकोसुंदरभा
वसुताविद्यमाननाहैमूर्त्तिथरेसोभाहीहैजोवनकीमायास्त्रीहैसारीकिधौंलाजकौआयुर्वे(?)
लहैजराउकेजेभूषनता।कीजोतिकीअंगमेंजराउकिएहैं ८६ सर्वांगवर्ननेरसिकप्रियाचंद
कौसोभागभालभ्रकुटीकमानएसीमैनकेसयेनेसरनेननिविलासहैनासिकासरोजगंधवाह
सेसुगंधवाहदासैसेदसनकेसोवीजरीसोहासहैभाएसीग्रीवभुजपानसोउदरअरूपकजेसे
पायगतिहैसकीसीजासहैदेषीहैगुपालएकगोपिकामैदेवतासीसोनेसोसरीरसबसोंधेकौ
सीवासहै ८७ सर्वांगवर्ननेरसिकप्रियाचंदकोसोउनिचंदमोकौभागहकसमानभाललि
लाभहैपैनेसानचढाएनैननविलासकटाक्षनासिकाकोजोवाहहैनासिकाकोजोपवनहैसोसरो
जजोकमलहैताकोजोगंधवाहपौननेसोसुगंधहैग्रीवाविधातानेकुंदपैभांइहैफिराईहैएसेई
भुजभुमाणहैमध्याकेउदाहरनहैइहांमध्यापढिवेकोप्रयोजननहीरसिकप्रियाकीटीकाकरैंगे
नामैंलिखेंगे ८८ विकीपाअनोटवाकेक्लूपरीजरायजरीजेहलकवीलीछुदवेटिकोकीजालि

या

कवि. प्रि. १७१

171

काम्रुदरीउदारपोंचीकेंकनन वैंउरीकेंठकेंठमालहारपहिंरेंगुपालिका वेनीफूलसीसफूलकर्न
फूलमांगफूलपोटिलातिलककनकमोती [illegible] सोहैवालिकाकेसो दामनीलवासजोतिनगम
गिरहीहेहथ्यरैंसोमसंगमानोदीपमालिका ८८ सर्वभूषनविछिआरतिअनोटअरू ठाकोभू
षनछुद्रघंटिकाकोचोभीकहतिहैंजालिकासमसदउदारसुंदरओपइचीओनवेयाकोई
करनभूषनहैषोरिलाकर्नभूषनवालिकावालानीलवस्त्रमेंजोतिअंगकीजगमगायरहीहै
औदीपमालाअमावसकीरातिनामेंजगमगातिहै ८८ अंगदीप्तिकेंचनकेसरिकेतकीचपला
चंपकचारुकमलकेसगोरोचनातियनन द्युति अवतार ८९ अंगकीदीप्तिकेंचनद्युतिकें
चनआदितियकेतनकीद्युतिअवतारसोवर्निपतनकीद्युतिसोवर्नियउपजैहै ८९ राधाकेअं
गगोराईसीऔरगोराईविचिवनावनिलीनीकेमनवहिविवेकसोएकअनेकविचारनिमें
हगहीनीवानिकतेसोवनीनवनावनकेसवप्रस्तुतहैगईहोनीलेनवकेसमैकेनकिकेंचनच
पककेदलदामिनिहोनी ९० राधाकेइतिश्रीराधिकाजूकेअंगकीगुराईसमाननिवेविब्रह्मा
नेंआनिगोराईवनाईवेकीक्रियालीनीग्रहनकरीबुद्धिऔविवेकज्ञानसोएकसवकरनकरिकेउ
पजायकेंहगकीगतिहीनीएसैंनलगाइएतोहगदीनेदषनिदर्पनसोंहगदीनेरसिकप्रियादे
नैंसोगोराईवनिजायअंसोवानिकवनावनंसोप्रस्तुतअवनावउहैवाकालमैंगोराईनहीभ

१७१

171A

ईविसोनहींवनीनववाहीसौंपतनेवनाए ४० गतिराजनहेसकलहंससमअतिगतिमंदविलास
महामतगजराजसौंवरनहूकेसोदास ४१ गतिराजनहेसअतिजाकोचरनओचेचुलालहोयऔरि
सरीरसवेदहोयसोराजनहेसकहावे ४२ किधौंगजराजनिकौंराजतिहेअंकससोचरनविलास
निकौंआरससजतिहैवनितअनंतगतिललितसिंगारवेलिफूलेफलहावभावफलनिफू
लिनहैंकिधौकलहंसनिकोसंकासककेसोदासकिधौंराजहंसिनीकीलाजसीलगतिहैकिधौं
नेहलाललोललोचनकोअंकुसलाकिनेरीलोललोचनिअलोलअंगगतिहै ४२ किधौंइति
सधीनायिकासौंकहतिहैहेलोललोचनिअलोलचंचलनाहिंजतेरीअतिगतिहैसवकी
गतिकौंनेरीगतिनेजीत्योहैयहअतिगतिकोअर्थकिधौंगजराजनिकोअंकुससमानहैयाहि
देषिहाथनिकौंआपनीगतिकोमदछुटिजातहैफेरिचरनकोजोवहाउ (अठाय) वोविलासऔरषि
वोताकोजोआलसताकौसाजेहेगतिकोरुपहाथहैवेगिचरनधीरयेनहीहेतिहैअनंतमोल
लिंमनासौंवल्लितयुक्ततेरीगतिहैकिधौंतेरीगतिसोसिंगारकीवेलिलताहैतामेंहावविला
ससमाईफूलफूलेहैंगतिसौंविलासउपजतहेभावजोमनकोविकासतासौंफलीहेजैसोमनमेंवि
कारउपजेअभिसारकहूंआदिमेंकहूंभयकहूंहरषइत्यादितहातेसोगतिहोतिहैकिधौंते
रीजोगतिहेसोकलहंसनिकीसंकासकप्रकासकहैतेरीगतिदेषिजानीजातहैकलहंसंसे

ललालि

धरवे

मै

चलेनहैं किधौंनैरीगतिदेषिकैराजहंसनिकौंलाजलागतिहैमैसोतैरीगतिसुंदरिहैतैसीहमा
रीगतिनहींसुंदरियहलाजअंग्रेषलासोकलीवोधिवेकी ५२ संपूर्नमूर्तिचंद्रकलाउदाहामिनी
कनककसताकालेषिदीपसिषाओषधिलनामालावालादेषि ५३ संपूर्नमूर्तिचंद्रकलाउति
उदुतारागनमलाकाछरीओषधीसीओलनासी ५३ नारासीकाछेनरायनसंगअचंद्रकला
निसिचंद्रकलासीदामिनिसीवनस्यामसमीपलगैतनस्यामनमालललनासी ओधिकीओष
धीसीकहिकेसवकामकेधाममैदीपसिषासीसीनेकीसीकसीटूभ एतैनलसेउरमैअदारप्रभा
सी ५४ तारासीउतिजोननारानलसचंद्रमाकेमंडलकेनजीकरहतिहैताहीतछत्रकौंचंद्रमाकहा
वतहैसवादोयनछत्रकोजवभोगकरैहैतवएकरासिकोभोगहोतहै नारायननामचंद्रमाको
नाराहैअयनमेवहमैंजामैंकिंवानारादै अयनमैपथमेजाकौंकाहूजोनारायननामचंद्रमाति
नकेसंगमैंतारासीसोभतिहैअचंद्रकलानिसीचंद्रकलासीनाहीहैचंद्रमाकीकलाजामेंऐसी
निसाजोअमावसकीमैचंद्रकलासीसोभतिहैकिधौंवनस्यामकेसमीपदामिनीहैवनस्यामसम
द्युभीतमालवृछसारीषोजोहैस्यामश्रीकृसनतिनकेतनसोललनासीलागतिहैओधिमनकोउष
कामसोभयोजोमनकोउपताकीओषधहैकिधौंकामकेघरमेदीपकीसिषाहैहरतैसोनाकी
सीकसीलसतिहैजवनायककेकाथेहाथराषिउरमैहैलटकैहैतवउरमेछातीमैहारसीसोभासो

सोहतिहै २४ कृष्णमहिमोहनमोहनीरूपमहिमाहविहरी मदनमंत्रकीसिद्धप्रेमकीपद्धतिग्र
री जीवनमूरविचित्रकिधौंजगजीवमित्रकीकिधौंचित्तकोहरिभरित्रअभिलाषचित्रकोकहि
केसवपरमानंदकीआनंदसक्तिकिधौंधरनिआधाररूपभवधरनकौराधाहरिवाधाहरन २५
कृष्णमहिमोहनइतिमहीपृथ्वीताकोमोहनवालाश्रीकृष्णलनाकीमोहिनीरूपहैइनकोवसक
रनवालीहैमहिमावडाईहरविकोतिनाहिकोरहूरीआछीहैप्रेमकीपूरनपद्धतिहैइनकोकृपासो
प्रेमलक्षनाभक्तिपावतहैपद्धतिराहजगकेजीवननंदकुमारसोहैमित्रप्रियमनाकीविचित्रजी
वनकीमूलहैकिधौंश्रीकृष्णकेचित्तकोहरिनिस्थितिरूपहैश्रीकृष्णकोचित्तइनहीमेंरहतहैओ
श्रीकृष्णकेचित्तकीअभिलाषचाहताकीभरितिपोषनजासोंहोतहैपरमानंदश्रीकृष्णलनाकोथलतो
मेंआनंदसक्तिहैकिधौंभवधरनश्रीकृष्णलनाकोआधाररूपहैऐसीजोहैराधासोहरिकोजोभईहै
वाधापीडातिनकेविरहसोंकिवाकामपीडाकोहरनवालीहै २५ इहिविधिवरनइसकलक
विअविरलकविअंगअंगकहेजथामतिवरनिकविकेसवपायप्रसंग २६ इतिश्रीकविप्रियां
यांनषसिषवर्णनेइहिविधिइतिअविरलनिरंतर २६ इतिश्रीकविप्रियायांनखसिखवर्णने
अथजमकअव्यपेतइतिजहांअंतरालनहींपरैऔरिपदसोंसोअव्यपेत २७ आदिजमकसज
नीसजनीरदनिरषिहरषिनचतिइतिमोरपीयपीयचातकररतचितम्बिनवहद्द दिकोवोरसज

कवि॰
प्रि॰
९७

173

नीसजनी इति नायकासौं सषी वचन है सजनी सजन मनहुं वरसिवे कौं नैं आरती हुद में हुना कों देषि
कै हरषि कै मोद भो है सो हुद या और नाचन है पद जहां फेरि कहै ग्रंथ और विहाय सो जमक पीउ पीउ
प्रिय जो नायक नाक्रौं तूं पीउ आदर सहित देषि यह वात वानक कहत है अैसे नीक दति होइ हरि की
और देषो ९८ मध्य जमक मान करन सषि कौन सों हमि तें हरि तें आहि मान भेद कौ मूल है ताहि
देषि चित चाहि ९९ मध्य जमक मान इति है सषी तूं कौन सौं मान करति है तैं ही हरि देह में तो में
भेद नहीं मिलि रही है प्राचीन दोहा राधा हरि विहरि राधिका या में कछु भेद नाहि गौर है तन होत है सो
मरूप परछांहि आहि जो है मान सों पीड़ा ताकौं तूं हरि हरि कि कारि आदि मन करै ताहि नायक कौं वि
नै सौं चाहि अभिलाष कै देषि ९९ तृतीय पद जमक सोभा सोभित अंगन हैं हय दसन सार [illegible] वा
रन वारन गंजरत विन हीनै संसार १०० तृतीय पद जमक सोभा इति आपनी सोभा सौं सोभित कहै
भूषित करै अैसी अंगनि कौं नायकनि कौं पूर्व जन्म में दिए विना नहीं पाइए है और हय सार तवेला मे
हय घोरा कौं ही सतन नहीं पाइए और वारन हाथी और वारन नाम दरवाजा न हीन गंजर [illegible] न हैं संसार है
१०० चतुर्थ पद राधा के सब कुंवर की वाधा हरन प्रवीन नैक सुनावहु करि कृपा सोभन वीन
नवीन १०१ चतुर्थ पद राधा इति सषी वचन है राधा सोभन सुंदर नवीन नई वीना वजाय कै नवी
न नवीन जमक १०२ आद्यंत जमक हरि के हरि के बल मन नाहि सुमिर हृषभान कुमारि गावहु को

हय

१७३

मलगीनहैसुषकरनाकरतार ९२ हरिकेश्रीहूलसकेकेवलएकमनकौंहरिकेग्रहनकरिकेगौर
निकैमैंहैसुषकेकरनाकरनवालेहैकरहाथताकोनारीहैकेहृथमेंतालवजायकैं १०२ हिप
दनमकअलिनोअलिनोरजनवेसेप्रतिनरवरनिविहंग हैमनमथमनमथनहरिवैसेराधिकासेग
१०३ अलिनोइति अलिनेभोगोअलिभोगसेनोरजकमलमेंवसतहैमनमथकोमताकेमन
कोमथनकरनवालोहाथकेहरिराधिकाकेसंगमेंवसनहै ९३ त्रिपदमारसमारसेनेनसुनिचंद्र
चंद्रमुषिदेषि तरमनोरमनीयनरनिननैंहरिसुषलेषि ९४ त्रिपदमारसइतिआरसआलस
नाहिंनसोसारसश्रेसैनेननसारसकमलसेहैंतेरेहैंचंद्रमुषिचंद्रमाकोदेषिरमनोहीविषैर
मनीयनरअतिसुंदरनाहिकाननेहरिनेदिमुषमुष्यप्रधानगननहैंकिंवाशुश्रेष्टकोश्रवाहिए
नातिनदरकोमुष्यलेषोजानो ९४ पादादिनपादादिआपमनावतिप्रेनापियमाननिमाननिहा
विपरमसुजानसुजानहरिअपनैंचित्तविचारि ९५ पादादिपादांत आपइतिमानिनीसेंासषी
वचनहैमानिनिमानआदरकौंतूंदेषितेहारिहरिपरमसुजानपरमप्रवीनहैतमानसुंदरीनद
मेंतूंजानजानौं ९६ जिनहरिजगकोमनहस्योवामवामहगचाहिंमनसावाचाकरमनाहरिवा।
नितावनितादि ९७ द्विपदजिनहरीइतिहेवामवामजोहैंसुंदरहगताप्रेमेंचाहिदेषिहरिसोव
नितान्हीवनिकैस्त्रीकेवेसवनायकैवसकरिहैंकिंवाताहिहरिकोंमेवनितास्त्रीवनिकोंग्रथी।

वनैौहोउ १८ उन्नाहेजमकग्रान्तछवीलीछविवनीछोडिछलनिकेसंग नहनितहनिकेतासि
लौकेसवकेसवग्रंग १७ उन्नाहेजमकग्रान्नइतिसषीवचनछवीलीसषीताकेसंगकौछोडिदे
हेतहनितरुवृछकेनरमिलौकसवकेग्रोहूसकेसवग्रंगसौंछवीलीछविनायिकाकीकिवाना
यककी १७ त्रिपादजमके देषिप्रवालप्रवालहरिमनमनमथरसभीनिषेलनियदसंदरिगईगि
रिसुंदरीदरीनि १८ तलीयचरनमैंनदीग्रोरसवमैंजमकदेषिइतिप्रवालनवपल्लवताकौंदेषि
उहीपनहैंयातैंप्रवालउत्तमजोनायिकासोहरिमनमथकोंमसैरसग्रनुरागसौलीनभईपहारकी
संदरीजोदरीकंदरातामैंदरीदरीजमक १८ परमानंदपरमानंदद्दिदेषतिवनरूपकेंठ यहग्रव
लाग्रवलागिहैमनहरिहरिकेकंठ १९ परमानंदइतिसषीसौंसषीवचनपरमउत्कृष्टग्रानंद
सौंपरकौंमानग्रादरकौंदेनवालोजोकृष्णतिनैंदेषतिहैवनकोरूपकंठतजोकयहजोग्रवला
स्त्रीसोग्रवयासमैंविषेलागिहैलागेगीनायककेमनकौंहरिकेहारिग्रोकृष्णतिनकेकंठसोदे
षतिरूपकंठयामैंजमकनांहीहैतोनिचरनमैंजमकहै १९ जूफिगयोसेग्रामनेसरजूसरजूदे
षिदिविरमनीरमनीयतजिमरतिरतिममलेषि ११ जूफिगयोइतिसंग्राममैंलराईमैंजूफि
गयोसुरसभटताकौंसुरधिहोदेषोसुयेहीभयोहेदिवस्वर्गताकीरमनीग्रपसराग्रमनीयसुंदरिता
कौनतिकैताकीरइतिरतिसमानलषोजूफिगयोयाचरनमैंजमकनहीतोनिचरनमैंजमकहै

विषेमनकरि

९८ चारिहूं चरनमैं जमक यथा नहीं उरवसीं मदनमदनवसभक सुरनरवरनैं नजैनेदनेद आ
मक ९९ चारिहू चरनमैं जमक न होइ तिनेदनेदनेद जो कौ जो आनंदनकौ रे ऐसो जो श्रीकृस्न चंद
तिनमैं जे आसकेदे अनस्मरत जे भक तिनके मनमें उरवसी जो अ[…]सो न होवसी औ मद
न जो काम ताकौ जो मद ताके वसमैं भक नहीं है सुरनर कल्पवृक्ष ताकौ नरवर वृक्ष ताकौ नर
वृक्षो उनहै वासौं कछु मांगत है नहीं ९९ अथ अव्यपेत जमक यथा अव्यपेत जमकनि सदाव
रन इहूं विध जो निकरो व्यपेत विकल्पनो जमकनिकौ सुषदानि १२ अथ अव्यपेत जम
क अथ सव्यपेत जमक अव्यपेत इति व्यपेत जमकनिकौ विकल्पनो विसेष करि रचना सुष
दायक करत नहीं १२ इति अव्यपेत जमक अथ सव्यपेत जमक माधव सो माधव राधिका पाव इ
का कृष्ण कुमार सुजो माधव नियम सौं गिरिजा को भरतार १३ माधव इति सषी वचन है राधि
का माधव लक्ष्मी को पति तिने सो जो है का कृष्ण कुमार ता कौं नृ मधव पति पावो जो माधव वैसाष
मैं नियम सौं सिव कं सुनो कहूं एरुनि इ माधव यह भी पाठ है थव थव को जमक आदि मैं सो पद
कौ व्यवधान है आदिमैं माधव है औ तीसरा चरन मैं माधव है बहुत पद के व्यवधान सो भी जम
क होत है १४ आदि अंत जमक सौ यथा स्वयंवर सांक जिनिव निन निदेषे राम तादिन तें उनस
विनिस बनन स्वयंवर धाम १४ आदि चरन मैं अंत चरन मैं जमक सौ यथा इति श्रीसीता जी ८

कवि. प्रि. १७५

175

केस्वयंवरमैं स्वयंआपुवरश्रेष्ठ्यामधुरकौंनजेनपद्माकरिवेलगीकिंवाआपनौंवरपतिश्रेआया
मधुरताकौंनजेस्वयंवरस्वयंवर ॥१४ निरंतरपापनसमनयोकहतहौरामचंद्रभ्रुवनीप नीपप्रफु
ल्लितदेषियौंविरहीविरहसमीप ॥१५ हूंसराचरनकौनकौंतनतौस्याचरनकौआदितासौंनिरंतर
पापनसमनइतिश्रीरामचंद्रभ्रुवनीपरानाकहतहैकेजोजातरहूपापनसहैतहैताहीनरहूनीपक
दंबकौफूल्यौदेषिकैस्योंनाहीनरहसौंविरहीजेनायकहैतेविरहसौंनसतहैभाजतहैनायकाकै
समीपजातहैकिंवासमीपविरहीनायिकासौंघोरीहरकोनफाउतहैताकोविरहज्योंजातहैताही
नरहसौंनायकजायमिलतहैनीपनीपऔरचरनहैयातैंअव्यपेतनहीं ॥१५ सौंनरपथ्यौजेसंकु
वेनचंद्रमाकमलाकरसविलासतैसेहीसवसाधुपरकमलाकरनउदास ॥१६ सौंनरजैसेइति
चंद्रमाजोहैविलाससहितप्रफुल्लितजोकमलाकोआकरसमूहताकौंनहीछुवतहैराचिमेंफू
लेकमलउर्लभदिनमैंचंद्रमंभहैतोकिरनहीनतैसेनाहीनरहउदासविरक्तजैसाधुहैतेवैकरति
सौंपरायाकीजोकमलालक्ष्मीताकौंनहींछुवतहैकमलाकर ॥१६ परमानवियौंसोभियतपरम

कमलाकर

४

ईसआराधेगकल्पलताजेसीलसैकल्पवृक्षकेसंग ॥१७ परमनविइतिपरमतत्वीकृशोभीपार्वर
तीशिवकेग्राधाअंगमैंप्रथमचरनहैतीयचरनकीआदिमैंपरमपरमअंसेंकल्पकल्प ॥१७ हां
नदेतयोसोभियतहीनजरनिकेहाथ ॥ दानसहितज्योंराजहींमतनगतुनिकेमाथ ॥१८ दानइति

१७५

175A

दानमदजलप्रथमसनीयवरनकौआदिमेंदोनदोन ॥११८ नरलोकहिराषनसदानरपतिश्री
रघुनाथ नरकनिवारननामजगनरवानरकौनाथ ॥११९ इतिसुषकरजमकनरइतिचारि
इनकौआदिमेंनरनरपदकोजमकसूचाअर्थकौएजमकनदोहायातेयहअर्थन
रनांमकषरकौताकौनरहलोगनिकौरिछाकरतहेकपरवइनजावतासौंराषिएहेनरना
मनारायनकौनाहिमारीषापतिपालकौहेकहूंनरवाहनकौनाथएसोभीपावहेतहांकुवे
रजानीए ॥११९ सुषकरदुषकरभेदहेसुषकरवरनेजांनजमकसुनौकविरायअवदुषक
रकहौंवषांन ॥१२० दुषकरजमकसुषकरइतिसुषकरवरनेंयावानजानौं ॥१२१ अथदु
षकरजमकमांनसरोवरआपनेमा।नसमानसचाहि मानसहरिकेमीनकौमानसवरने
नाहि ॥१२१ मानसइतिकोइसाधुजनकोइगर्वीपुरुषसोकहतहैनिर्धनजांनिवेसवकोअनाद
रमतिकरैहे कैसोहै मांनसरोवरहैमानगवेताकौसरोवरहैवहुतगर्वतौसहे यह अर्थआप
नैमानसआपलोमनविषेमानसयाकोअर्थमाकहियेलछमीताकोनसकहिएनासहैजा
कौलछमीनौकौनहिहेषिवमेंआवैहेयहसंपतिकौनहीराषतिहैनोभीनरुचाहि एसोपु
रुषकौतेअभिलाषाकरिएसैकौंसंगकरौतोभलाहैमानसहरिकेमीनकौमानसदासकौं

ताहीकोमनुष्यकरवरनतेहैमनुष्यनमैताहीकीस्तुतिहोतहै
मालक्ष्मीताकोनसकहीयेनास्तहैजाकोयाकिकथसोंला
ग्पोयान्तेडथकर

176

मेंसेहैहरिरामनिकेदासहौँ॥२१॥ वरनीवर
भोकहतनहैहरिकेमीनहरिकेभक्तताकेजेमानसरामहैहरिरामनिकेदासहैं॥२१॥ वरनीवर
नीजानिकोंमुनिथरनीकेईसरामदेवनरदेवमनिदेवदेवजगदीस॥२२॥ वरनीइतिश्रीराम
चंद्रजीजगपकियोहैतहोंब्राह्मननकीवरनीकरीहैसोहकोकनिकोईमुनिकोईराजासोंकह
तिहैहेथरनीकेईसतुयावातनेसुनिश्रीरामजीकीकरीजोब्राह्मननकीवरनीहैवड़नथनहै
कैवरनीकरीहैसोक्योंकरिवरनीनाथश्रीरामजीकेसोहैदेवमुनिनरदेवराजाजाताहैविषेम
निसारीयाजेप्रकासमानहैवडोराजाहैसोभाकेदेवकहिएस्तुतिकरनवालेहैफेरिकैसेहैं
देवकहिएदेवताताकोदेवग्रानेदहैजातफेरिजगतकेईसहैपसोंग्रथ्योंकिएदेवकेभिन्न
भिन्नग्रथंभएमोसुधाग्रंथकरिएतोदेवकोग्रथनहीफिरेजमककैपदकीपुनरुक्तिहोयग्रथ
भिन्नभिन्नहोयदेवकोग्रथंव्याकरनिरीतिसोंकीयोयातेजमकर॥२२॥ राजराजसेगराईसहि
जराजराजसनमानविषविषधरग्ररसुरसरीविषविषमनउरग्रान॥२३॥ राजराजश्रुतिकोई
काहूसोमहादेवकोंकहतहैईसमहादेवसोकेसोहैराजराजकुवेरतिनसोंजाकोसगाहै
ग्रलकापुरीमेंसदामहादेवकुवेररहतहैकुवेरमहादेवकोभक्तहैश्रोहिजराजचंद्रमासा
जाकेसंगमेंहैंफेरिराजाजाकोंसनमानकरतहैवाहनहैराजासवनपमाकरिसिवसोम

रथपूरनकरतहै औविषजाकेकंठमेंहै औविषधरसर्पजाकेकंठमेंहै औफरसरी औगंगाजीतिनकोविषजलजि १८

नौनकेसीसपैदेखनकोंतेविषमअसह्यमतिउरमेंमनतेंसंग्रानेंविषजलकोनामभाषामेंअप्रसिद्ध
यातेंउषकर १२२ छंदप्रमानिकाप्रमानमांग्रमानमानराचहौसमानपावहौविमानमानधाव
हौ नगस्वरूपिनीछंद प्रमानइति मानकहिएतालनाकेप्रमानराचतहै अमानकहिअमित
मानकहिएज्ञानअमितहैज्ञानजाकोंजोसंगीतसास्त्रपरैहै सोगावेहैराजीहोतहैजेसोनाचौहै
नाकेसमानवरोवरमानआदरपावेंहै आदरपाएसोंगर्वरूपजोविमानहैताएचढिकेदौरफि
रतहै वंतगर्वकरतहै मानकोअर्थज्ञानव्याकरनरीतिसोंकियोयातेंउष्कर १२४ दोहाकुम
निहारसेहारिदहवहिनहारिनीप्रहारिकहासिमानविहारवनहरिमनुहारिनिहारि १२५ कुम
निहारिइति सषीवचनमानिनीसोंनायककोऔरसोंआसकहैहमसोप्रीतिनहींएसीजोकुमनिना
कोंहारिहै हरिकरिमैंनायकपासनहींजाउगीएसोजोहैहवताकोंसहारिहववकोंमारोहरिक
रोयहअर्थहिनहारनीजेसषीहै नायकसोंतेरीप्रीतहैताकोंरूचीवानवनायकेजोसषीको१
जवनिहैताकोंतेप्रहारिमारोउनेंहरिकरोयहअर्थवनमेंविहारकरोहरिनायकताकीजोमनु
हारिनिहारताकोअौरनिहारोदेषोहरिनिहोराकरतहैएकहारपदकोंकहैविलगायविहार
कियोकहूंसेपदलगायसंहारकियोयातेंउष्कर १२७ चौपईसुरतरवरमेंरंभावनीसुरतरवरमेंरं
भावनी सुरतरंगिनीकरकिन्नरीसुरतरंगिनीकरकिन्नरी १२९ अवसेपरनचरनकोजमकचौप

कवि॰
प्रि॰
१७७

177

ई सुरइति सुरतरुवरकल्पवृक्ष मयवहुतहैं कल्पवृक्षनहांवसीरे भाकहिएकदलीताकीवनीक
हिएवनहैतहांसुरतकोजोरवशब्दभूषन औभूरिकोवाजिवोभूषनादिकोशब्दकरिकैं रेभा अप
रासोवनीवनीसारमैंहैं क्रीडाकरतिहै फेरि स्वरसप्तस्वरनिषाद आदितीनकोनरंगिनीनदीसारीषी
जामेंवहुतसप्तस्वरहतहैं वसीकरमैंहाथमैं किन्नरीकोईवाजाहै जाके फेरिसुरनसोंकोईथानकरै
अनुरागयुक्तकरैवसीनतहांकिन्नरीहैकिन्नरकीस्त्रीहै २९ दोहा श्रीकेवधुरैंवास्तुकिलसतसर्वमें
गलामोरि श्रीकेवधुरैंवासुकीलसतसर्वमंगलामार ३० श्रीकेवधूतिउरगसर्पजोहैवासुकि
ताकरिकैं श्रीकंवजोहै महादेवसोसोभतहै महादेवकेसोहैसवजोकल्यानमंगलताकोआमारहै
राशिहैलोकके कोमजाकोंनहीहैईस्वरफेरिहैयातैंफेमसर्वमंगलाभवानीकेसोहैमारकहिए
मालामारीषीहै फूलकीमालाकीउपमाहीकोंदेतहैनायककेकेरसीलागतिहैयातैंफेरिकै १
सोहै औसोभायुक्तजाकोंकेवहैउरगकोअर्थेउरछातीविषेगकोअर्थआसहोयवासुकिकहिए
फूलकीमालाउरविषेआसोद्तिहैजाको ३१ दूषनदूषनकेजसभूषनभूषनअपनिकेसव
सोहैतानसेंपूरनपूरनकेपरिपूरनभावनिपूरनसोहै औपरमानंदकोपरमापरमानंदकोपर
माकहिकोहैपातुरसीतलरसोमतिकोंअवदातरसीतलसीपानिमोहै ३२ दूषनइति अवदा
नरसीतलसीपतिमोहै अवदातसेतजोरससोनताकोरसीकहिए भक्तजनसोसवश्रीतलसी

ग

ग

जोकेपतिभगवानताकौंमोहतहैंआपनैंवसकरतहैंराजीकरतहैंपदग्रंथेभक्तकैसेहैंहृछनाए
छमताकेरूषनरुद्द श्रीरामचंद्रजौतिनकेजोजनमसोईहैंभूषनसोहैंश्रेरामुषतिमैंताकेपसोमा
भतहैंकेसवकविकहतहैंफेरिभक्तकेसेहैंसंपूर्नजोज्ञाननताकेपूरप्रवाहघनप्रवाहकरिकैं
त वर्द्धमानकरिकैंपरिपूर्नभरीएसोजोभावनाविचारताकरिकैंपूर्नयांतेसववेरभगवानकौं प
मोहतहैंदेषतहैंजलेविस्नुःथलेविस्नुःइत्यादिकिंवाब्रह्मरूपकरिकैं॥श्रीपरमानंदभगवाननि
नकौजोपरमासोभातोविषेपरकहिएतत्परजेहैंश्रीसक्तजेहैंतिनकौआनंददेतहैंमानआदर
रकरिकैंजाननहैं देतहैंएसेदानातिनकीजोपरमापरमश्रेष्टलक्ष्मीसंपतिसोकोहैतिनभक्त
निकौंकछुनाहींहैसंपतिकौंनहींचाहतहैंकिंवामालस्मीतिनकौनंदसमुद्रतिनकौजोपरमो
वडीसंपतिरत्नाकरकहावतहैसोताकौंकहाकछुनहीनइछकसारीजोपतिबुलकवनत्ताक
रेइत्यादिश्रीपरमानंदकोपरमापरपतनोंकोग्रंथेवसेहैंजानिएफेरितिनभक्तनिकीमतिकौं
पानरवेस्पाताकीसीकहिएश्रीसोभासोजाकौनरसीयहीलागतिहैआछोनहींलागतिहै १२८
अनुप्रासयथाजेतेसषिनकहैकछुचालहिलोहूंकहूंरकवानरसालहिलोकहूंदेउवनोवनमा
लहि सोकहूंतेमिलवैनंदलालहिं १२९ जवअनुप्रासकहिएदेजहांपदफेरिआवैसोजमक फेरि
जहांअक्षरफेरिफेरिआवैसोमायाकोईहोयसोअनुप्रासकहावैजोतेंसुनिहैसषिजोतेंकाहूं

सोनकटै औरु हांसो यह मारे संग कछु हरि चलै तौ तौ मैं मेघ करसी ली वानक है तौ कौं वनी वना
ई वनमाला रे रु जो मो कौं नंदलाल सौं मिलावै इहां हृति अवप्रासदे ।२४ जैसें रवि जय श्रीक
रवाल हि मो अलिनी नल जात रसाल हि जौं वरषा द्रष षविन काल हि तौ हग देषन चहत घ
पाल हि ७ जैसें रवि इति कल हंत विता ना पिका मयो सौं कहत हि अवनायक तौं नाहीं।
चाहत है हमारे हग या ते नद देषिवे कौं चाहत है जैसें नरवारि तौ नाही चाहति पेर निभय जय
श्री जीति की सोभा आयु ही सौं करवाल कौ रवै है प्रामहोति है जैसे अलिनी भ्रमरी विना बु।
लाई जल जात कौं और रसाल फल्यो जो आवना कौ प्रामिहोति है तौ मरीन कमेड लेभ कद।
ति है जैसें कोई विना समय चौ मासो विना वरषा कौ हरष करै वरषा होय तौ आछौ नव वरषा
कौं कहा पावै तैसें अवनायक कहां देषिवे मैं आवै ५ स्पंदन हा कतहोनउषी दिन हरिक
रे सब के उषरु दनछेदनि जानी नहीं जिनकी गतिनाम कहावत है नेदनेदन फंदनि पड़ के
फूतनि मति काटि करै मोहि मोहि निकंदन चेदन वेषी कौ अंग चढावति देव अदेव कहैं जे।
गवंदन १३ स्पंदन इति स्पंदन रथ अर्जुन कौ ता कौ हाकन कैउ षी होति है छंद वेदने जा की
गति कियान हीं जानी जिन के मति पांडु के सुत युधिष्टिर आदि तिन के फंद मैं पे च मैं परी।
यी कव ही हनकै षोकवही सारथी कौ षोमहोभ मिनामे मोह कौ काटि कै निकंदकै

की

178A

नमिवाकी नहीं राधे चेरी कुंवरी रहो ॥ छे काउ प्रासदै वहुत पोथी मैं जो तुं सषि इत्यादि दोय दोहा
सेंदन इत्यादि एक कवित्त कुमोंतिहारि इत्यादि दोहा के आगे है सो अजमकहै ॥ ३१ ॥ इहविधि श्री
रङ्गजाति गउंपकरजमक अनेक वरनित चित्र कवित्त अवसुनि श्रोसहित विवेक ॥ ३२ ॥ इ
ति कविप्रियायां पंचदशप्रभावः ॥ १५ ॥ इहे विधि इति उपकरजमक अनेक भांति कहे ॥ ३२ ॥ इति ॥
श्रीहरिचरणदासकृतायां कविप्रियाभरणाख्यायां कविप्रियटीकायां पंचदशभावः ॥ १५ ॥
अथ चित्रालंकारके सब चित्र समुद्र मैं बूड उन पर मति विचित्रता के बूंद कके कनै वरनन हों सुनि मि
त्र ॥ १ ॥ अथ चित्रालंकार चित्र जो है सो काव्य को स्फोटक है चित्र नाम अद्भुत को है इहां रचना सों अ
द्भुत होत है या ह्र अर्थ सों नहीं चित्र मैं ध्वनि का रिपुतो ध्वनि निकरै पैवका को तात्पर्य ध्वनि मैं न
हीं याते उत्तम मध्यम नहीं के सबइ तिज्ञा के हूंदके किवाकनि का किंवा हूंदको कनिका ॥ १ ॥
अथ उरथ विन विंदुच्युत जति रसहीन अपार वधिर अंध गनि अगन कों गनि यत अपान्त विचार
॥ २ ॥ अथ रीति अरथ विंदु विसर्गी उरथा विंदु अनुस्वार विसर्ग आगें देत है अनुस्वार को अपेक्षा सो अ
थ विंदु लीजियत नाहिं विना होय किंवा अनुस्वार विसर्ग जमक होय के सकी बोर कुसभी परीय के
सभी परीयाचित्रभंग न दीहोय पुनः पुनः कीबोर पुन पुन भीप बाय सो कह्यौ है ना ह स्वार ॥
विसर्गों उचित्रभंग रायसंमतो केरि जतकरि के हीन होय और सक रिह्रीन होय तो दोषन हीं

औवधिरदोषनहीं औ अगनिकौं आदिमें रगनसगनइत्यादि आवें औगनकौ जो विचारजोयनेहूं
तो सरापभावमैंमित्रतें उदासगन औ मित्रतें सत्रुगनइत्यादि याकौ आषिलारोहामें अदोषवहपव
नहैकहूं अंगगनविचारपसोपाठहै इनसबकौं चित्रकाव्यके अंगनिकौं गनियतहै चित्रकाव्य
केअंगहै २ केसवचित्रसमद्रमेइनके दोषनदेषअक्षरमोटेपातरेवपवजगुराकेलेष
३ केसवइनिमोटेसेंधीगीउगुरुपातरेलघुवकारऔवकारजकौ औयकारपतनोएकजा
नौइनतें चित्रभंगनहीं ३ अतिरतिगतिमतिएककरिवहुविवेकजुतचित्रज्यौं नदोषकेम
भंगज्यौं वरनौं चित्रकवित्र ४ अतिइतिअतिरतिअतिप्रीतिऔमतिकौगनिबुद्धिऔरठौर
नजायनाकौंएककरिकैनिरोष्ठमैं औरवर्गकौ अक्षरनआवै औ गोमूत्रिकाआदिमें अ
क्षरकोक्रमनहीजाय ४ निरोष्ठपरतनलागेअधरसौं अधरवरनन्योमेंउ औरवर्नवरतो
मेवेउपवर्गद्विकौंछोडि ५ निरोष्ठलक्षनपरतइतिअधरनाममनीचेकेओठकोहैतोभीभा॰
षामैंदोउओठकौंकहेहैं सुंदरसिंगारअधरानिहीमेंमुसक्यानिकौ यातेंनौ गोरसलैरसलैअध
रानिकौंवरनअक्षरपरतकेअधरसौं अधरउठसौंउठनलागैयातेंचित्रअहुनभयौएअक्षर
लिषैउवर्नऔपवर्गयौंकौंछाडिकै ५ लोकलीकनिकीलाजलीलनसेनेदलालललोचन॰
ललितलोललीलाकेनिकेतहैसोदनिकोसोचनसंकोचलोकालोकनिकौदेतसुषना

कौंसषिहूनोंउघदेतहैकेसोदासकाङ्करकनेरहीकेकोरकसेअंगरंगभएनेरंगअंगनअतिसेन
हैहैषिदेषिदूरिकौंहरिननाहूरिननैनोदेषनहींदेषौनहींहूयाद्दरिलेतिहै ८ लोकनितें
नायिकावचनसषीसोंलोकसंसारनाकीजोमर्यादाताकीजोलाजमधुहद्दवानलोकनहींकरत
हैएसोकामकीपलोगहूसेगप्रीतिकोनहींनिवाहिवोउन्मादिताकीजोलाजनाकोलीलन
सलकूनासोछंडतहैनेहलालजाकेलोचनलीलाविलासकेनिकेनहैलोकमैंलोगनिमैंअ
लोककलेकनाकौंसोचननहींदेषविजोसुषदेतहैताकोहूषदेनहैएकतोमिलैनहींहूसरै
मिलैतोपास्त्रीकेसंभोगकेविरूसोंपुरुषमिलैकेनेरफूलस्रवमैकेनेरफलकहतहैंकाङ्कृता
के [illegible] कोरककलीसारीषैहैजाकेअंगरंगीनहैंजाकेअंगनरभीनरअगनिसेनरंगहैंदोयरंगके
हैंभीनरिअंगमिअंगोपा[illegible]रअंगरयहअर्थहैहूमैननैनीसषिनेंहरिकौंदूरननामनकौहरनवातुम
हैषौदेषनहींमनकौंनहींहूमिलेलेतिहैकाकस्वरसोंहरिलेतिहैजानौंदेषनकैचोरीनहींहोयस
कैयटदेषनकेचोरनहैयहहूहरननाहूनोंउघदेतहैयाकीठौरअतिषेददेतहैएसोपैअंगोठन ८
हीलागे ९ मात्रारहितएकैस्वरजहांवरनियेअद्भुतरूपअवनेकहिएमात्रारहितसोमित्रचित्र
आभर्ण १ मात्रारहितइतिएकअवर्नेस्वरसहितअछरसाषेअवर्नेचित्रकोभूषनहैयहजानौज
गजगमगतनभगतजनमरवसमवभयदरकरकरतअचलचर कनकवसनतनअसनअन

कवि॰
प्रि॰
१८०

लवङ्ग्वरीलवमनमजलथलथलकर अजरअमरअजवरदचरनधरपरमँगानवरनसरन
पर अमलकमलवरवदनमदनजमदहरनमदनमदमदनकदनहर ८ जगत्तिजिनभ
गवानकेरसअनुरागताकेवमअनुरागमैंश्रासमकपदत्रयथेभगवानजनविस्मपरायनसोज
गतमैंजगमगानहैप्रकासमानहोतहैसोभनतहैयहभावार्थः किंवारसवमभगवानजनकौं
जेगतमैंभगवानजगमगानहैभासतहैसवमेंभगवानकौंदेषतहैंपसोभगवानहैफेरि
भवसंसारतासैंजोभयताकोहरकहिएदरतेताकौंकरैहैकरनवालोहैकहूंपावहैभवह
रसहकरभवसंसारताकोहरनवालोमहादेवसोजाकोसहकरसहकारीफेरिकेसेहैंचिरँनी
वमांअनेकजोनिमैंफिरैहैफेरिस्वर्गजानहैनरकजानहैताकौमुक्तिदेइकरिअचलकरनहै
दासध्रुवकौंअचलपदवीरामकोदरवानऐसोनेरोभजनकोपरवानफेरिकनकसोना
सोपीतकिंवासोनायुक्तजाकोवसनहैनसरीरमैंपीतोवरहैफेरिवडोजोअनलदावाग्नि
ताकोजिननैंअसनभोजनकियोहैवरअछेवटताकेदलपत्रमैंप्रलेकालमैंजाकोवसन
वासहैफेरिजाकोपसोसामर्थ्यहैसजलथलसदाजामैंजलहैपसोजोथलवेकानोसमुद्र
ताकोंचाहैतोथलकरिडारैअभोधिस्थलतास्थलजलधिताभित्यादिफेरिकेसोहैअजर
जोकवहीवृद्धनहीहोयश्रोअमरवेगिमरैनहीऐसोजोब्रह्माश्रोरकौंवरकोंदेनवालोसो

त्र

र

१८०

180A

ताकौचरनकौधरनवालोहै श्रीवामनजीकोचरनहाथमेंलेकेधोयोहैकहूंवचनथरयहभी
पावहै वचनजाकीआज्ञाताकौधारनकरतहै परमश्रेष्ठजोधर्मताकोजोगनसमर्थहैताकौप
सेजवनेब्राह्मनआदितकौसरनदेनेकौपरतत्परहै किंवाश्रेष्ठहै किंवापरमश्रेष्ठआप्राकृतिश
रसरीरहैतामेंमगनसानंदरहतहै और विषेआसक्तनहींआत्मारामहैवरनकीश्रेष्ठनिरंद्रा
दिकनिकौसरनरक्षातामेंपरहै आछादेफेरिअमलजोकमलताभोवसश्रेष्ठहैवैनमुषजा
कौआज्ञसकेसदनघरहै फेरिहरि नमदनमदमदनजोकामताकौसुंदरजोहैमदगर्वता
कौआपनीसुंदरताकरिकेहरनवालेहै फेरिमदनकोभयोजोकदनताससिवनेवराधो
ताकेहरनवालेहै फेरिकामकौउपजायो ८ अथएकाक्षरएकआदिदेवरनवढवरनोशाहूव
नायअपनेंअपनेंबुद्धिवलसमर्थोसवकविराय ९ अथएकअरथकेशाहूदोयअक्षरके
शाहूतीनिअक्षरकेशाहूचारिअक्षरकेशाहूपांचअक्षरकेशाहूएसोकहतहैएकआदिदेषु
तिएकअक्षरआदिदेकैएकअक्षरदोयअक्षरतीनिअक्षरएसेवढतवरनजेशाहूसोवनायके
वरनौ ९ एकाक्षरशाहूयथागेंगागंगोगौअआश्रीधीह्रीभीभानभर्विवस्वज्याधेहिहानौ
नासंभेमानुएकाक्षरशाहूगोगोइतिकोईकाहूसोकहतहै अकारकोअर्थभगवानयहका
ग्रंथमेंआहैलोभाएसोभीबोलतहै आवातमेंनेकहिआकहिएयहजोएकाक्षरकोनाम

२

।कवि.
प्रि-
१८१

181

है सो अ कहिए भगवान है अकारो वासुदेवः स्यात् ए कातर कोष है औ गीता में है गिरा मसो कम
दारं वानी में एक अक्षर है म है भगवान की विभूति गो कहिए दस दिसा औ गो कहिए गऊ अमात्र किं।
वा औ गो कहिए वज्र सो वज्र के सौ गको अर्थ वलन वाला जो इंद्र के शत्रुनि पै चलै है इंद्र चलावै है
किंवा गंगा जी को भी नाम कहत है औ गो कहिए जल औ गो कहिए वानी औ श्री लक्ष्मी थी वु।
द्धि कीला ज औ भी भय औ भा प्रकास औ नु को अर्थ विन कै फेरि म सब्द भी कहिए विकदिए पक्षी
ख अ काम स्व धन आध नुष को गुन यों स्वर्गादि को अर्थ निरूप दा को अर्थ दुष नो का अर्थ नाव
औ ना का अर्थ पुरुष औ मे सुष औ भता पका अक्षर को षमे मा ना म म स्तु को भी है औ नु को अर्थ प्र
स्तुत को ई प्रसंग एक अक्षर सा ह लिष्यो है ना ते ग्रंथ मे जो रिप किंवा मातु यह दोय अक्षर को नाम
है पावान कौं मानौं एक अक्षर में क्रिया को दोस नहीं औ गिला दोहा में वाकी पद आयो है वा पद एक अक्ष
र को जु दोहे दोय अक्षर के नाम मे ९ दो अक्षर सा ह र मा उ मा वानी सदा हरि हर विधि संग वाम अ
मांद्या सीता सती वा को राम भाम ॥ अथ द्व्यक्षर रमा इति रमा जो लक्ष्मी जी सो हरि के संग में रहति है औ
वानी सरस्वती सदा विधि के संग में औ वांमा संकरहि जो अमाद्या उमा सीता जी सती पतिव्रता है वा को
वा को अर्थ वा कौं कौ को अर्थ कीनौ राम ने वा कौं रामा स्त्री कीकरी कहे कीनौ रामा रामयह भी पाठ
है ॥ अक्षर श्रीधर भूधर के सिहा के सवजगानप्रमान माथ वराह वकै सिद्ध प्रन पुरुष पुरान

९ अक्षर श्रीधर इति ॥ श्री सोभाके धरनहार हैं श्रीपूर्न पुरुष हैं पुरान सुनि कैं जगत प्रमान करै
नहीं कैं वा जिन विषैं जगत प्रमान है सत्य है भगवान मैं संसार है ५ चतुरक्षर सीतानाथ सेतुनाथ
सत्यनाथ रघुनाथ जदुनाथ ब्रजनाथ दीनानाथ देवगति देवदेव पद्मदेव विश्वदेव वासुदेव
वसुदेव दिव्यदेव दक्षदेव दीनरति रनवीर रघुवीर जदुवीर ब्रजवीर बलवीर वीरवीर रामचंद्र
चारुमति राजपति रामापति रमापति राधापति रसपति रामपति रसापति रामपति १२ चतु
रक्षर सीतानाथ इति देवननिकी गति हैं आठ जे वसु सो जाके देव हैं स्तुतिके करनवाले हैं
जो स्वर्ग मैं होय सो दिव्य कहावै इंद्रताको देव जीतनवाले हैं देवदेव यह अर्थ दीनदुषीनमें
जाकी रति प्रीति दीनदयाल है रसा पृथ्वी को प्रतिपालक १२ अथ षोडशाक्षरादि एकादशा
नेवर्णन म अक्षर षट्हिं शा ति सवैभाषा वर्निवनाव एक एक घटि एक लगि कै सव दास स्व
नाव १४ अब आरि कहत हैं अक्षर इति छवीस अक्षर सो लैकै एक एक आक्षर को उन जाय
एक आषर रहै १४ चोरी माषन हूं थर्यो हूं दन हूं व गोपाल डरोन जल थल भटकि फि रि फरा
रन छवि सैं लाल १५ चोरी इति कोई ब्रजदेवी को वचन नायक सैं चोरी सहे गोपाल फेरि न
म जल थल मैं भटकि कै फिरि कै डरेंगे नाहीं हो फे मिछवी लीन रहे सों श्रृंगार तैं हो इ हों तो नि आ
षर कवर्ग के ककार गकार खकार इ चादि चवर्ग के च छ ज फ ध तवर्ग के चारि ट ठ ड ढ थ त

ष

पै

वर्गके ५ तथदधन ५ पवर्गकेपांचपफबभम ५ रेफलकारसकारहकार ५ छवीसग्रा
षर ५ ग्रापएकग्राषरदोयवारतीनिवारग्रावैताकीगिनतीनही १५ चेरीचंदनहाथकेरीकि
चढायोगातविहूलछितिपरडिंभसिषफलेवपुषनमात १८ चेरीऊतिचेरीकुवजाताकेहाथ
केचंदनकौंडिंभसिसुजोहैश्रीकृष्णचंद्रतिननेग्रापनेगातपैरीकिकैचढायोडिंभकहिएक
पटिकतिसिसुवालकभएहैवालकनहींहैपरमेसरहैछितिधरजोकंससोविकलविकलभ
योहैहमभौपक्रूसमसुदेयादेषिग्रीकृष्णफूलेहैंग्रापनेवपुसरीरमैंनहींसमानहैकवर्गके
क
गकारगकारघकारडचवर्गकेचकारजकारञटवर्गकेटकारडकारढकारणतवर्गकेपांचौंग्राष
रपवर्गकेपांचौंग्राषर ५ ग्रौयकाररेफलकारविकलहदोहकारमैलकारकोग्रागिलोग्राष
रवकारहैग्रौशषहशिशुकोहूनोतातलवमकारहैभाषामेंदेषलिषतहै १९ ग्रथवकसकट
प्रलंवहतिमासोगजचानूरथनृषभंजितहटदैत्यरिपुनिकंसमथमदमर २० चौवीसग्राषरतिग्रा
षासुरवकासुरसकटासुरप्रलंवासुरगजकुवलयापीडचाडूरमल्लहटजोहैधनुषताकोता
रिकैकंसकेसोहमरकोमररमलहैग्रकारसुरहैताकीगतिनांही ८ रसथीयसुमतिनंदसुन

न

भौरगोकुलनाथमाषनचोरीरूद्ध्वपहैवनकेसाथ ९ तेइसग्राषरसथीइतिनंदजीभीभो
रैहैकवर्गकेककारगकाररचवर्गकेचकारफकाररटवर्गकेटकारटकाररतवर्गपांच ५

के

क

पवर्गके चारि ४ पुनि कीवौरफु निहैय ऊमानि इहोयकार है ओशकारनालव्यजानियेफलका
रवकारसकारषकारहकारसोनिय १७ हरिहटहवलगोविंदविभुमायकसीतानाथ लोकपवि
कलसेषधरगरूडध्वजरघुनाथ १८ वाईसआषरहरिइतिमायिकजाकेसमैमायारहेविट्ठलभी
नामभगवानकोहे कोइकहतनहेविकलइनकेगुरुहेताकोभगवानकरिकह्योपैसेआरभीजा
निलेहुगे १९ जैसेंतुमसवजगरचेदिपकालकेहाथनेसेंअवडपकारवलिकरमफंदहटना
थ २० एकईसआषरजेसेंइतिहैनाथजैसेंतुमसवजगतकौरचिकेकालजमनाकेहाथदिए
तैसेंतुमसवउषकौंकाटोहेवलिकर्मकेफंदवंधनकोकाटौ २१ याकेजगतसमफायसवनिप
टगुसानपुकारी मेरेमन वेगुभिरहेमधुमर्दनमुरहारी २२ वीसएकेइतिकोईव्रजदेवीकोव
चनपुरानकौंपुकारिकसिकाहिकरिपरपतिसोंप्रीतिकरनीपुरानविहदहेमुरदैत्यकेहवनवा
लेमारनवालेचुभिरहेगडरहे २३ कौजानैकोकहिगयोराधासोंयहवानकरीतुमाधनचोरिवलि
उवतवडेपरमानरर २४ ओनईसकोजानैइतिहेवलिवडेपरमानउवनकेतुमारेघ्रारस्रीकृसमाधन
चोरीकरी २५ जनननमायोनेहतरुफलततनंदकुमारषेउतकसकतजानअवकपटकवोरकु
वार २६ अठारहआषरजनननइतिकोईव्रजदेवीकोवचननायकसौंहेनंदकुमारतुमजननसों
हमारेहृदयमैंनेहकोवृक्षउपजायोसोफलतहैताहिसमैंकपटहोइकैवोरकुवारकुलहाओ

व

नासौं अवधि उन दौ काट नहीं सो ज्ञान नोहि जीवनाकौं अवकस कतहै २३ बालापन गौरस हरे बडे
भए जिमि चित्र तिमि के सब हरि दे दह जो न मिलो तुम मित्र २४ सनरह आषर बालापन नाथि
का सौं सषी वचन के सब ने बालापन मैं गोरस चोरे वडे भए चित्र चोरे तिमि ता हीन रह देह कौं दह्यो
जौ न तुम मित्र सौं न नहीं मिलो २४ तुम हरि रथ रमंडरा तन अति बलि भुक सैं नंदलाल जा को मति तुम
ही लगो कहा कैं रे वह बाल २५ सो रह आषर तुम सुनि है बलि तुम भुक नाम भोक्ता सो परायाकी व
स्तु पर तुम वा के भोक्ता से सिंहरा न हो किंवा बलिभुक है बनासे तुमै को ई देषि न हीं सके बलिभुक
काक को अर्थ करें ही नो पमा दोष है याके सब की नूषनता आवै २५ जो काहू ने वह सुनै है डुनडो लतसा
फनौ सगरौ ब्रज हडि है वाके आसन्नि मोक्ष २६ पंदरह आषर जो काहू इतिसषी वचन सषी सो सो
फस मैं औरि नाथ का कौं हू डुन षोजन न फिरन दै २७ हूकारा की दिन करौ द काद की अहरै न या मैं के स
व कौं न सषहे हकरै पिकवैनि २७ चौदह आषर हूकारु तिनायिका वचन किंवा सषी वचन नाथ
क सौं हू कि कै क पिके देषन दो दिन मैं औरैनरा तिमिं दकाद की लगावति हो पिकवैनी नायिका हेरू
चौबाव करति है २७ कह्यो परायो मैं सुन्यो मन दीनो हरि हा यवा दिन नै बन बन फिरै को जानैं किदि
साय २८ तेरह आषर कह्यो रति परायाको कह्यो मैं ने सुन्यो औ रिनैं निंदा करी मैं सदा वादिन नै वनि
कै बनाव करी के वनि वन के मैं फिरै है किं वा वन मैं फिरै है २८ काहू वैरनि के कहें नीज्यु रिगयो

183A

नाकेभूषनकौनायकतानाकेचिन्नकौमैचालगनिनाकौंचारिलेतिहैं औरिनायकनिपासचिन्ननहींजायस
कतहैं किंवाचालिहूं नायकपासहैंनरहनीसषीकहतिहैंनमोरपोनकौहचिनेरैंराषीहै ५८ रसनोजीभ
रसनोकोमलवर्निपेंकोविदग्रमलग्रलोल केसवदेवीरसनिकौरसहिग्रवनमंडलबोल ५७ रसनाजीभ
रसनाइतिकोविदपंडितप्रवीननजानिपेंग्रोरसमधुरग्रादिछैकिंवाघ्रंगारग्रादिनाकीदेवीहैवनाहैग्रो
ज्ञाकोकोमलवचनमेंरसकौग्रवैहै ५७ देषनहींग्राथपलवाथीजातिवाघासवराथान्नकौसनो

माची

सरूपकीसीरानीहैंग्रौछौवाननिकीजननीजगमगातिरमनिकीदेवीकिधौंयचियदिचानीहैकेसो
दासकलसवासकीसीसेजकिथौंमकलमजाननाकीसषीसुषदानीहै किथौंमुषपंकजमेंसक्ति
कैनोसेवैहिजसविताकौछविताकीकविताविधानीहै ५८ देषनहीइति सवनरहकीनावाथापो
उामेवाथीजातिहैराकीजातिहैउपनहींरहैदेषनकेसुषउपजनहैवाधावाथीजातियाचमनकारनहो
ग्रउग्रासकेलिएलेग्रायजननीउपजावनवालीरसनिकीदेवनाहैसोमचिकेग्रमसोंपिछानीहैसुजा
ननाप्रवीननाकीसषीहैकिथौंमुषकमलमेंकोईसक्तिदेवीकिकिंवाभगवानकीसक्तिग्रौलक्ष्मीना
कौहिजदांनसोईहिजग्राह्मनहैताकौसेवनहैदानकेसेहैसविनासूर्यकीछविहैकांतिहैनाकोनाहि
दांननिकौनोभकैसीहैकविताकीनिधानहैनिधिमौजमेसेपत्रिउपजतिहैनेसंजीभसोंकविताम
क्तिउपजतिहै ५९ वानीवानीवीनावेनग्रलिसुकपिककिन्नरगानसोभनसुमवडग्रर्थमयकेस

कवि.
प्रि.
१९४ त

183b

वराभवषान ४९ वानीवानीवृति वीनाकेसहसीमधुरवनिएकैनु वोसुरीअलिभोराओकिन्नरकौ
गानसोओयोरीवानमैंवहुतग्रंथनिकरै ४९ कामकोइदाईकेसहाईसषीमाधुरीकोइंदिराकौमंदि
रमैंफाईउपजेहै सुरनिकोसुरीकिधौंमोदहूकोसोदरीकिचातुरीकोमानाऐसीवाननिसतनिहैं राग
राजथानीअनुरागिनिकोवडुरानीमोदैदधिदोनीकेसोकोकिलालन्नतिहैं एरीमेरीव्रजरानीनेरीवन
वानीकिधौंवानीहीकोवीनसुषमुषमैंवजतिहैं ५ कामकोउतियाकीवानकामकीदोदाईहैकाम
रानाताकोदोदाईकोइमदिनहीसकेसोवडुनायकसोकहतिहैंसोमाननिहैंकिधौंमाधुरीसोमधुरता
हैताकोसषीसोसोहाईहै अर्थीउपमामाधुरीसीहैइंदिरालछीतिनकोमंदिरकमलनामेंफाईप्रति
ध्वनिसोउपजेहैप्रगटैहैइंदिराकेवचनकीप्रतिध्वनियाकीवानीहैसातस्वरहैनिषादआदिताकोसु
रीहैवलाहैकिंवानाकीसुरीहैमोदजोआनंदताकोसोदरीवहनिहैचातुरीकोमानाहैऐसीवाननिकौसाजे
हैसुवारहैराजथानीराजस्थानदधिदोनीकूसवानीसरस्वतीकोनोवीनाताकेसोसुषरूपमुषमेंवाजतिहै
५० कपोलमुकुरमधूकककपोलसमकेसवदासप्रमान तिलप्रसूननत्नीरसममुकनासिकावषान ५१
कपोलमुकुरइतिमुकुरदर्पनमधूकमहूआसोंपीतहैकिंवासमवरोवरउंचानोचानोहिनासिकातिलको
प्रसूनफूलसमतत्नीरतनरकसओसुकसूआसो ५१ किधौंहरिमनोरथरथकीसुपचम्र्सिमीनरथमतहू
कीगतिनमकतिहुँकिधौंरूपपतिकीआसनरूचिंमिलीमृगलोचनमरीचिकामरीचिहै किधौंश्रुतिके

१९३

५२ रुचि

सनेहनोभैतेंहूटैनहीं कहाकरैअवलेइ २९ वासैंकाहूंअंत सषीसोंनायिकाकोवचनसषीनैंपहिलैं
मनोवनकियोहैतैंप्रीतिमतकरौजीवमैंनेहन्तुरिगयोलागिगयोसषीवचनअवलेइ विरहकोउ
पभोगकरो २९ वेसवसोहैकालिकीविसरीगोकुलराज मुषदेषौलेमुकरकरकरीकलेवाला(
ज ३० हारहवेसवइतिहै गोकुलराज गोकुलमेंसोभ नहोकाल्हिकीवेसोहेंसपथ्यसबनुमेंवि
सरीहोयमेमुकरदर्पनलेकेआपनोमुषदेषोरतिकेचिह्नलागेहैलाजकौन्नमकलेवाकरीविहा
नहीकेपहरषोयगए ३० लेवाकोमनमानिकहिकनकाहूंपैजात जवकोउजियत्रानिहैनवकै
हेकोउवात ३१ दसआषरलेवाकेइतिवानायिकाकोमनसोमुहमानिकनाकोलैकैकनक्यौंन
वकैनासमैंकोकौनवातकहिवेकोहेक्याकहैतुमारोदोषकवैसोकहोसषीकहतिहैइहोमानि
कोनाकारहवर्गकोहै नाकौलैकेदस ३१ चिंतुनिहुगेअंगारगनजाकोकरजियजोर सोउजो
जारैजियकैसेजिए चकोर ३२ नोआषरचेंहुइतिअंगारकोगनसमूहनाकोंचेंहुसोंतुगेहैजि
तिनचांदमाकोकरकिरननाकोजोरजीवमैंराषिकेचंद्रमांकेकरमेंअमृतहैयातेंसोउचंद्रमाजीव
कौजारैइकारसहितनवआषर ३२ नैननिनैंवहुतेकह्येकमलनैननवनाथ वालनिकेमन
मोहिलैवैंचैंमनमथहाथ ३३ आठआषरनैनइतिहैनवीनहैनाथथोरेभीनैननिकौंनिनैंव(
हुनींचकरौलाजकरौयहअर्थवालनिकेमनमोहिलेकेकामकेहाथवच्योचोराघकहिवेवि

वेकीलाज ११ रामकाम वसमिव करै विबुध काम सव साधि राम काम वर वस करे के सव श्री आ
राधि १४ सातआघरा रामरति श्री रामजी नें काम को आमदा देव कों वस किये विबुध देवतानाके
कार्य सिद्ध करिकें देवननि के कार्य साधें सिव राजा भए यह ग्रंथ काम सों सुंदर जो श्री रामजी ता
कों वल सें वस करें श्री सीताजी नें आराधन करिकें सेवा करिकें कहू पाव है राम काम सव सिव
करै श्री रामजी नें सिव कहिए कल्यान सो कल्यान युक्त सव काम कीए १४ कामना दिनै काम
के सव मोहन के काम वस कीनो मन सवनि को कावामा कावाम १४ छोआधरकामरतिका
मके यह कोम का अैन हीं है यह सव मोहन श्री कुल के कामें है वो मनो म सुंदर कों अोज रूप कौ सव कों
वस किए १५ कमलनैन के नैन सों नैन नि कों नें काम कौन कौन सों नेम कै मिले न स्याम स कामे
१८ पोंच आधर कमलरति सखी कें मिलायो चाहति है ता सों नायिका वचन कमल नैन जो नायक ।
तिनके नैन सों तिन को सुख देखिवे कों यह भावार्थ हमारे नैननि कों कोनों काम है कोई कों मनहीं
यह अर्थ स काम जो है स्याम सों कौन कौन सों नियम करि प्रतिज्ञा करिकें वा नायिका सों मैं अवस्य
मिलोंगी असी प्रतिज्ञा ता सों नहीं मिलै मिलें यह अर्थ किंवा नियम करिकें हमारे आगें प्रतिज्ञा
करिके हम न महा सों मिलेगे आरि सों नाही एसी प्रतिज्ञा करिकें कौन कौन नायिका सों न मिले
अनेक नायिकन सों मिले याते उन कों वचन को विस्वास नहीं १६ वनमाली वन में मिले वनी

ललिनिवनमालनेननमिलीमनमननमिलीवैननमिलीनवाल १७ चारिआषरवनमालीइनिस
षीसौंसषीकोवचनवनमालीश्रीकृष्णजोहैसोवानायिकाकौवनमेंमिलेभेटभयोजाकोनलि
नकमलनाकीमालाऔवनकाफूलकीमालावनीहैफबीहैआपनामनकरिनायककेमन
सौंमिलीदोऊराजीभएऔरमोदेषिवेमैआपवैननिकरिवचनकरिकेवालानहीमिली १७ लगा
लगीलौपौंगलीलगलागलेलाल गैलगायगोपालगैयालागोंगोपाल १८ तीनिआषरल
गालगीइतिसषीकोवचनसषीसौंनायकनेजासौंहमसौंइनसौंलगालगीहैहमारीइनकोल
गनिलागीहैलकारेफएकहैलोषाघाकोऔषेरापौरापौयाकोगलीमेंविलबायराषोएसौ
लागमनमैलेकैलालकहिएलाभलारनोमसंगकोहैवाललेकेसंगलगहैवयागनेगोपगोपी
गैललगेभोरभइंतवनायिकानेकह्योहैगोपालहमारोप्रनामहैअवमिलवोनहींवनेकैवा।
कौंईवहिंसंगसषीसंगमैंहैतासौंनायिकाकहतिहैसोयावातऔरिसषीसौंऔरसषीकहति
हैतोमैभाजोंतोनाइकपकमिलेइगोयातेलगालगीकरिकेवेहमारेसंगलगेजवमैंसरकिजा
नहोंतववेफिरिनजोकआयलागतिहैहूरवमैहाथाकोपीकहतहैयागलीकौमैलापौला
वौंलालहमारेसंगलागसौंचाहसौंपीकेहमारेलगेनवमैंकह्योहैगोपालमैपायलागनिहौं
यहभइंवानसषीसोंकहतिहैकहूपावहैलगालगीलोसौलगीलगैलागलेलाल लोगनि।

कौंलगालगीलगीहै एकवेएकदृमैंप्रोनायककोमिलनदेष्योचाहनहै ३८ हरिहोरारोहोद
स्योहैविरहीहीहारिहुमैंहोंहाहारोरांहरैंहरैंरहिगौरि ३९ दोयअाषरहोंविहोराईनिहरिचंद्रमा
मोहैहोरानाकोंराहोहस्योराहुहोनैंदस्योलीन्योहेविरहीहीहारियाकोअर्थचंद्रमाकेसोहैदी
हारिहोकहिएहृदयजोमननाकोहारीहरनवालोहैचंद्रमाहेषिकैमनराजीहोतहैमनोद
हैनाकोमैंहेविरहीराहुयाकोंकवछोडेगोकिनहींछोडेगोहरिहरिहोंहाहारोंमषीसोंकह
निहेहरिहरि३धमोहोमैंहरैंहरैंअानेअानेहाहायहायरोंहोंहोंरहोंहोंजासमैंचंद्रमाहै
राहुसोंरामिलगाईरहीकिंवानायिकावचनमषीसोंराहीजोहैहरिराहमैंचल्योजानजोहेह
विनानैंहोएकहिएहियरा हृदयमननाकोंहस्योचोस्योहीकहिएहृदयमननाकोंमेघोन्निवहो
हेविरहीहमारोमनकहांगयोनवहोविवेकीनवमेंजान्योश्रीकृसहोलियोहेहरिहेहरिमैंतम
सोंहाहारोंहोंकरोहोहमारोमनदेहृयहअर्थहरैंहरैंअानेअानेहमैंउनेराषिकरराषारमको
रह्योयोकहैनमहहमारोमनहस्योमैंकह्योनमहहमारोमनहस्यो ३९ नोनीनोनीनोनैनैनोनेनो
नेनैन नानाननानानाननैननुनूनैनूनैन ४॰ एकाछरनोनीश्रुतिनोनोनोनीसुंदरोसुंदरोजे
नायिकाहैतेसवनोनिनैनप्रनानेलिएनाकेनोनेनोनेसुंदरसुंदरनेमहै नाना ननयाकोअर्थ
निनकेनानाप्रकारकेनननोंहोनोंहीकरनोहैसोनानाननेयाकोअर्थहैनाएकपरनायक

185A

परआननएकपदकेईकाहूंसोकहतहैदेनादेपुरुषननोंहीकरनोसोआननमुषविषैहैननुको
अर्थमोलकरनहोंनिअयनहौहैमुषसोंनांहीकरतहैस्त्रीकोसुभावहैमनमेंचाहहैयहअर्थनन
आगेंआनसंधिहोतहैकिवानानानैयाकोअर्थनानानाहींनांहीकरनोहैसोननैसोनैनीतिनहीं
हैंकाकुस्वरसोकहाउनकीपहनीतिहैस्त्रीकोनांहीकरनीयहनीतिविहारीकीआवसिएकोनिव
होयनीतिनेहपुरनोंहिहमराअर्थमेनेहपुरमेनांहीकरनोसोईनीतिहै ४· अथाएकाकुस्वथाके
कीकेकाकीककाकोककीककाकोकलोललालिलोलेललीलालालोलालोल ४१ अथाव
काकुरकेकीअंतविरहनीकोउकिसषीसेंओरनिकोविहारकरनोदेषिजेसोहमेंउषहोतहैनेसो
उदउहीपनसोनहीलकारओउकारओरकारएकहैलोलनामचंचलकोओलोलनामचाहभरेको ४
होयताकोकेकीआदिउदीपनविभावहैसोविरहीकोउषदायकहैसंयोगीकोसुषदायकहैहेम
मेकोकनामचकवाकोओहाउरकोभीहैकेकीजोमोरताकीजोकेकावानीताकोजोकीकथ
निकोलाहलसोकाहेकछुनहीवहतउषदायकनहीयहअर्थकोकुनामचकईताकीकोक ४
कोलाहलसोकाहेकछुनहींवहतउषदेनहीसकैकहैकोकोएसोपाउहेनहीचकवानानिये
कोकहाउरताकोजोकीककोलाहलसोकोनहैउषदैनेकोअसमर्थहैएसेंकोदेषिकेहमेंदु
षहोतहैलोलकहिएचाहभरीलालकहिएलालसंगमेंलालैहैउलेहैफिरैहैएसोजोललीता

यिकानाकेमेरामैंणमोजोलालाल्लाड़िलोनायकनाकीजोलिलाविलासकिंवाक्रियासोहमैंलो
लवेचलकरतिहैंहोरिहोरिग्रायनायककोगेलदेषतिहैंकिंवानायकसोंमिलवेकीचाहभ
रीकरतिहैं ४ गोगोगोगोगोगागराजनीजैजीजेझोहिहूहूरेहूरेरेहरगिहाहाहूहूदोहितीनिच
रनकेग्रंतमेंणकणकग्रकेरग्रोज्ञोचोथाचरनकेग्रंतमेंग्रारिग्रावदेश्तोछंदजाय गोगोर
गोइतिरागजग्राहलरतिदैनहोकोइजगमेंकहतेहैं हूहूनामगंधर्वदेवलमुनिकेसरापसोग्राह
भयोथोपारसीमेंगोशाहकोअर्थकहेहैराजगोकोहिपजलमेंगोगजेहैगोविंदगोगकोग्रो
गोविंदकोएकअर्थहैनामैंगोगोयाकोअर्थमैंगोकहिएगायहोएसीगीकहिएवाणीनार
कोंगोकहेप्रथमगोकोअर्थकहीनेरीसहायकरेगोवचनहैगोब्राह्मणाहिनायचजोजैजो
या
नेजीवचाहेजीजीकोअर्थजीवकेजीवसजीवकेजीवनमूलजोभगवाननाकोंनहूजोहिहृदयमें
हेघोहूरेहूरेरेहरगिग्राह कोगेरहूचरनपूरनकेलिएरेगजहूरेभलेनेदेताहिसवनेहूरेभलेएसे
जोभगवाननाहिहूरीटेवारवभकहोकहूरमैणसोपावदेरगोरटोपुकारेहाहापाइभगवानसों
यहग्राहनदीहैहूहूगंधर्वहोहिकोअर्थहैहूहूहेपदलाचरनकेग्रंतमेंणकग्राघरग्रोरिजकार
देहसराकेग्रंतमेंहकारतोसराकेग्रंतमेंटकारचोथाकेग्रंतहकार ४५ वहिलीपिकाग्रंतली
पिका उत्तरवरनजेवाहिलीपिकाहोयग्रंतरग्रंतरलापिकायहजोनैसबकोय ४३ वहिली

बाहिरे १

186A

षिका ॥ अंतर्लापिका उत्तर ॥ निजनदों उत्तर को चरन कविता के बाहिर दोय ॥ अंतर कवित के बीच
मैं होय ॥ नहा होउ क्रमसौं जानियै ॥ ४३ ॥ बहिर्लापिका अक्षर कौन विकल्प को उत्तर बनि बसति कि
हि ॥ अंग ॥ बलिराजा कौने छल्यो सुरपति के परसंग ॥ ४४ ॥ बहिर्लापिका अक्षर इति ॥ विकल्प
को अक्षर वा यह है त्रिवली कौन अंग ॥ गामें रहति है वामा हित मकार लीयो वाम भाग में वा को ॥
को दिली जिय ते मन में बसति हैं ॥ बलि कौन नै छल्यो उत्तर बाहिर सौं दियो वामन ॥ ४४ ॥ अंत
र्लापिका कौन जाति सीता सती दई कौन कहत नात कौन ग्रंथ वरनी है रामायन अवदात
॥ ४४ ॥ अंतर्लापिका कौन इति रामायन उत्तर सीता सती कौन जाति है रामा स्त्री है ता नजनक
जी ने कौन कौं दीनी रामा य राम को कौन ग्रंथ मैं सीता हरन वरन्यो है रामायन मैं अवदात शुद्ध
उज्वल ॥ ४५ ॥ प्रथम गूढोत्तर उत्तर राजा को प्रति [illegible] दीजे केसोदास गूढोत्तर नाम सो कहत नवरतन
बुद्धि विलास ॥ ४६ ॥ गूढोत्तर उत्तर इति गूढ [illegible] है उत्तर राजा को ॥ ४६ ॥ नषते सिष लों सुष दे कै
सिंगार सिंगारन के सब एक वधू पहराय मनोहर हार हिये पिय गान समूह सुगंध सचोय द
रसाय [illegible] सिरी कर दर्पन लै कपि केजर ज्यौं वड़ नाचन चौ मसषि पान षिआवन ही कि हिकारन
को पपियाप [illegible] नारि रच्यो ॥ ४७ ॥ नषते इति [illegible] देरानी करकै सिंगारे पिय जो वा को नायक ता ने
सुगंध सचौ अंग [illegible] बोल गायो यह अर्थ को पपिया परनायक रै पर क्यौं नारि नैं रच्यो ॥ ४८ ॥

उत्तरपरनारिमैंरच्यौहैअनुरक्तहैपांनषिआवतमैयाहिआयोनाहिननायककेपलकपरपान
कौपीकलगीमुषदिएसौपाहिलैंनहौननरिमैंअयोकिंवाभूलिगईकैजरदापीकौलेषोआगें
नाऔचानैंकिंवापानकौनाभारवेलहैवहवेलीलनासीकोमलजोनायिकाहैनाकौंनारारना
यकहैकिंवावेलीयाकौनामहैताकौंनाभारहै ५७ हासविलासनिवाससुकेसवकेलिविधा
ननिधानहुनीमैंदेवरजेउपिनासुनसोदरदैसुधहौजिनवातसुनीमै भाजनभोजनभूषन १
भौनभरेजसपावनदेवधुनीमै कौंसबजोमिनीरोवनिकोंमिनिकेतकरैंसुभगानगुनीमैं
५८ हासइनिकौईसषीसुछनिहैसषीसौंडनियामैंसारमैंजेतनेंकेलकेविधान क्रियानाकी १
निधानहैप्रवीनहैभाजनतुनिजाकेभौनमैंघरमैभरेहैभाजनअनुप्रामकेलिएपावनपवित्र
निहारदिनजसवामैंभरेहैजेसेगंगाजीमैंअनेकजनसदैकंनजाकौसुभआंछौगानवषान
गुनीजेसन्यीनामैंकरतहैउत्तरमैंसुभगासुदर्शीनदीयहवातमैनेंगुनीहैविचारीहै ५८ नाह १
नवोनितनेहनवोपरिनारिनैकेसौकहूंनहिजोवे रूपअनूपसमभ्रपराभ्रपसौआनंदरूपन १
हींगुनगावैभौनभरीसबसंपतिदेपतिश्रीपतिमैंरांसुषसिंधुमैंसोवै देवसोदेवसमानसोह
नसुकौनरसोसुदनीजिनिहिसौवै ५९ नाहिनवोइनितनहींवाकौगुनकोईगावैहैकृपावैहैव
हपसोभलोहैजाकैसबजसकरतहैकिंवागुनजोयाकौअर्थगुनकोकहनवालोवहनायक

आपनापुषकोकहनवालोनहींहै एसोभारीहैआपनीनारीफआपनहींकरनहै एसोसेदरहैदोतनमा
कोसोसदनोउत्तरनेदसासदनोरहतिहै दोनचहापरहतिहैदोनदिएरहतिहैलरनिरहतिहै ४९
एकहिउत्तरमैनदोउत्तरएकअनेकउत्तरएकानेकयदवरननसहितविवेक ५० एकउत्तरमैंअनेक
उत्तरएकहिइतिगरुगुप्त ५० उत्तरएकसमस्तकोसमस्तअनेकनिमानिजोरिअनेकेवनेसोकमही
वनेवषोनि ५१ उत्तरइतिसमस्तमिल्योरहैसमस्तनदा ५१ कहाजनसज्जनबुवतकहासुनिगापीमो
हन कहादासकोनामकविनमहिकहियनकोहितकोप्यारोजनगमोहिकहाकहनलागेआवन
कोवासरकौंकहनकहासंसारहिभावनकहिकादिदेषिकायरकेपनआदिअनेनकोहेसरनइह
उत्तरकेसवदासदियसवेजगतसोभाधरन ५२ कहाइतिउत्तरसवेजगतसोभाधरनअनेकोअ
करनकारहैतासोआदिकेअक्षरएकमिलाइएफेरिछोडिएहसरोल्लिजिएसोजोनिपसनवैनतास
रीजनधनगानमगानआदितनसरीरछनयावलोगेसोनहथिरआवेहैमानरूपयेघनओरनआ
दिमेंअनेनकालमेंकौनसरनहै सवजगतमेंनीतिहूलोकमैंकिवानीनिहूलोकसोभाकेजोधार
नकरनवालाश्रीहरूलसोसरनरछकहेसमस्तकोअक्षरकादिकेउत्तरदोप ५२ मिलेआदिकेव
रनसोकेसवकविउचारउत्तरव्यस्तसमस्तसोसोकरकेअनुहार ५३ मिलेइतिआदिकेवनेसोउ
चारनकरोसोव्यस्तसमस्तसोकरिकोनरह ५३ कोसुभअक्षरकौनजवनिजाधनवसकोनीभ
विजयसिंहिसंग्रामरामकहकौनेदीनोकेसराजजइवसवसनकेसेकेसवगुरवदसोकोहिय

कवि·
प्रि·
१८८

188

कह्यानामग्यानडूअपनेउरकहिकौनजननीजगजगतकीकमलनयनसूछमवरनसुनिवेद
पुरानननिमेंकहीसनकादिकसंकरतरुनि ५४ कोसुभअंतिशंकरनरुनियहुउत्तरदेसुभआ
षरकौनदैसुषवाचकहैकौनजुवतीस्त्रीताकौंजोथाजेहेसुरनानेवसकरीहेशंकसंकार
स्त्रीलिंगहैयातेंयुवतीकहीरामपरसुराममेंकरमहादेवकेसवपुरमथुरानामेंकंसकेराजमें
जदुवंसीकेसेवसेयेसंकरजेंगासगुनकवरहछकोनामसंकरनरुनसूछमथोराकरिकेहमसों
वरनोंजगतमेंजगतकोजननीकौनदैकमलसेजाकेनैनहैपसी संकरकौनरुनीपार्वतीस
नकादिकननेंवेदपुराननिमेंकहीहै ५५ कोलकोहैयरीयरिथोरजधरमहितमारेकिहिसु
नवलदेवजोरजवंसींजाचेकहाजगजगदीसप हिकेसोदासगायोकोनेरामपदगीनसुभ
रवसोंजसअंगग्रवदानजातस्वनाननिसोंकहीकौनकुंतीमानवाननेहनवसोवामग्रामहरि
करिदेवकामहरिकरिमोहेरामकौनसोंसंग्रामकुसलवसों ५५ कोलइनिकुसलवसोयहउ
त्तरहैपरमहितधर्मकेलियेधीरजधर्मकोलसकररूपभगवानकोकोहैकृष्णबलदेवजी
जोरकेजववेगसोंसनपौराणिककोकौनअसूसोनेमैषारण्यमेमासोकुसचलायकेसेसा
रजोसोजगदीसभगवानसोंकहांमांगतहैकुसलकल्यानसुभवरवडेसुभसोंरामायनकेप
दकेगीतकौननेंगायोरामायनगीतयहभीपावहै जगमेंआयकुसलवनेगायोजसक
रिकेंश्रवदानश्रुहश्रंगहैवनकोंपंउवानिकोंजानकेकुंतीनेकौनवातकहीकुसलवसोंकु

जाके

188A वाम जी

सलमैंवासकरौरामश्रीसिताकौंनाकौंग्रामग्रजोध्यानहांसौंवनवासकराईसंग्रामैंश्री म
रामजीकौंनसौंमोहेआश्चर्यमांन्योकुसलवसौ ५५ एकएकतनिवरनकौंजुगजुगव
रनविचारि उत्तरव्यसनगतागतिनिएकसमसनिहावि ५६ एकएकरतनिएकएकग्राष
रकौंखोउतजायहसरासौंमिलावतौजायजुदाजुदाउत्तरनिकरैसोव्यसनगतग्रागतवा
हीनरहपीछेंकोफिरैंसंगुणीसोंउत्तरसोसमसन ५७ कैहैरसकैमैलईलंककाहेपीनपट
हानकेसोदासकौनसोभिएसभामैंजनमोगनिकोभोगवनकौनैगनैभागवनजीनेको
जनीनिकौंनहेप्रनामकेवरनकौंनैंकरीसभाकौनजुवतीग्रजीनिजरागावेकहागुनी
कहाभरेहैभुजंगगनकोहेमोहेपशुकहाकरैनपीनपरेद्रजीतजीवसनकहानवरेग।
रायमन ५८ कैहैरसइतिउत्तरनवरंगरायमनकेकेतनेरसहैनवलंकाश्रीरघुनाथ
जीनेंकैसंलीनीनकारकौंछाडोवकारकौंग्रागिलारेफसोंमिलायोवरवलसौंलीनी
पहवसनजुदाजुदाहैश्रीगतागतनएकपीछिलाग्रक्षरगयोग्रागिलोग्रक्षरग्रायोकाहे।
सौंकपएपीनहानहैरंगसौंसभामैंकौनसोभैहैगमायगहवोपुरुषजछनहीसोभैभोगनि
कौंसुषनिकौंकौनभोगहैरायसरदारभागवतश्रीभगवानकेभक्तकौंनकौंगनतहै

धमधममरूहैननतिजोगातिनकोनकोजीतेमनकोप्रनामकरवेकेवरनअछरको
नहैनमनमस्कारयुधिष्टिरकी सभाकोननैवनाईअसनआगातपीछेकोफिरीयानैमयवि
श्वकर्माकोपुत्रअसुरहैजगाबुलाईरागगावतहैभुजंगगसर्पकेगनकहाभरैहैगरविषभरैहैं
वटकोनहैजोपशुहरनओसर्पनाकोमोहितकरतहैरवसहूतपसीनपसाक
हाकरतहैवनमेंइंद्रजीनकहांवसतहैसमसतसोंउत्तरनवरंगरायमननवरंग
रायकेमनमें ५७ केसवदासविचारोकोभिन्नपदारथआनउत्तरअसमसमस्तको
डुवोगतागनिजान ५८ केसवश्रुतिपदकोअर्थभिन्नहोयदोयवारअसमस्तउत्तरला
गैदोयवारसमस्तउत्तरलागैताकोउदाहरनपहिलें ५८ दासमनिसोपरसोपरमो
नकीवातसौवातकहाकहिएनयभूपनिसोंउपदेसकहाकहिरूपभलेकहिनी
तितजेभयआपविषैनिसोंक्योंकहिएविनुकाहिमएछितिपालनिकेछयम्पा
यकैवोल्योकहाजमकेसवकेआहिमधकरयोजनमेजय ५९ दासश्रुतिउत्त
रजनमेजयउहोयकारजकारएकहैयासोंचित्रभंगनहींदासकसोंकहाकहि
एजनपरसत्रुसोंकहांकाहिएनमेंनमनमत्रभएअवनोंवरावरी

२

भिन्न १

189A

नहीं करो गे परमानन्द की वात सैं। सो यह नीति राजा नाई वात भई पनि सैं उपदेस जय करैं। नीति करो यह सुधी वा
ल्ला गयो अवकल है। वस्तु कहि कहा कहे सों रूप भलो लागत है यह जकहिए दान ता सैं। भर्तृहरि तिनि श्रा
शा भंते गलित विभवाश्चार्थि सुजनना अर्थ ज्ञा चक कैं दान देत सं पत्ति गई है जा की एसे जे नर से सो भत
हैं जो नीति कैं। तजैं तौ कहि कौ अर्थ कहा कौन सैं। भय उपजे जन्म मैं जन्म सैं। आपने विषय के लोग है स्त्री
पुत्र भाई बंधु ताभैं। क्यों करि कहिए वोलिए मैं नमें नमें भम सो होय कैं। नरम होय कैं कहना वनि है प
ल्ला नामे मदि लहै कौन वात भए विना छितिपालन कौ नास होत है न यह नीति विना जनन कारन कैं।
मैं कार पद होए सं जय के जकार कौं पापी कौ न्याव करि कैं जन्म कहा वोल्यो तुं जनमे जय है जन लोग ता
कौं तं कंपावत है। इर पावत है। दुख देत है। किं वा दुष्ट दिये यह अर्थ एक वार समस्त लग्यो दूसरे फेरि
समस्त लग्यो कै कौ अर्थ कौन नैं अदि मेध जज्ञ कियो सर्पनि कौ होम सों उत्तर जनमे जय राजा परि छि
तिके पुत्र ७४ के ग्रह स्यौं मधु हसो प्रेम कहि पल्लहत प्रभु मन कहा कमलकौ गेह स्नत मोहत किहि म
गान कहा वसत मनुष सिद्ध कविन कौं तक कि दिवर्नन कि हिं से पिपतु मात कहा कवि के सव सर वन
८० के ग्रह इति इहां अंत की और सों उत्तर पत ता वीच पहिले कहैं तैसैं। उत्तर न वक्यों करि कै मधु देस कौं भ
गवान नें मा ह्यो वरक हिए वल सौं प्रभु के मन में प्रेम किहि वात सौ पल्लहत है पल्लवित होय उपजे रस
अनुराग सैं अव स्नधा कमल कौ घर कौन है सरस सरोवर मन गाह हरिन के गान सम्मुह कहा सुनि तके।

य

ने यहि स्नधो समस्त लग्यो

केज

वि

क॰ प्रि॰
१५०
190

मोहितहोतहैरवप्राह्मणायकैवसकरतहैसुषसौंसिद्धकहांकौंनठौरमेंवसतहैवनवनमैंकविन
कौतुकहोतहैकौंनकोंवरनतहैसमस्तनवूरसवरनतकैकौंननैपितामाताकोसेवनकियोफेरि
समस्तसरवनताकोदसरथजीनेमारयोतानें ८० सोरठा कंठवसतकोसातकोकहावहुविधि
कहैकोकहिएसुरतातकोकामीहितसुरतरस ८१ सोरठा कंठवसतइति उत्तरसुरतरसुकं
ठमैसातकौंनवसैहै उत्तरसुरनिषादआदिआदिसौंवाचैतोसुरनिकरैअंतसौवाचौतोसुर
निकरैएसेजानिएकोकसासवहतरहसौंकहाकहतहैसुरतिऔसुरतातसुरदेवतानिके।
तातदयायातेंजानिएरवहूतदयाकीजिएहैममैकस्योहैजानिएरवहूतदयाकीजिएसो[illegible]
निकैतातकहावैसुरतकहिएकलपवृछदेवताकलपवृछपैवहूतदयाकरतहैकिंवासुरतातसु
रदेवतानिकेतातपिताकस्यपतिनेकहाकहिएसुरतरयाकोअर्थसुरश्रेष्ठकामीकोहितको
नहैसुरतरस ८१ उत्तरव्यस्तसमस्तकोइवोगतागतिजानिएकहिअर्थसमर्थमतिकेसवदा
सवषानि ८२ उत्तरइति इहांउत्तरव्यस्तसौंसमस्तसौंइसोवेरिगतागतसुथाउलटाआदिसौं।
जोवाचिएतोकहीअर्थनिकरैअंतसौंवाचिएतोवहीअर्थनिकरै ८२ सासनोउत्तरतीनितीनि
सासनिकोएकहिउत्तरजानि सासनउत्तरकहततहैवुधजनताहिवषानि ८३ तीनितीनिइति
तीनितीनिआज्ञाकोएकएकउत्तरहोइसोसासनोत्तर ८३ चौकचारुकविरूपहाहचरियारि

वांधि वस्त्र द्विमोलक विषता बोलि सिंचिदि नि चोलवर यदकु दावदे सुरकु दावगुनगाव
रंककोजानुभावसिवधामधावधनल्यावलंकको इकक दतमधुकुं सादिकदसद्योसकलदीवा
नदवितवउन्नकेसवदासदियचरीनयान्योजानकवि ८४ चोकइति उन्नरघरीनयान्योजान
कविचारु संदरविवाहादिकेलिए चोककोनहीएहेयोउन्नरघरीनेंच्यावहीसुभघरीनहीहै कूप
मैंपानीदारोरहट चलावतहैतामेंमाटीकीघरीलागीरहतिहैसोनहीहैओघरमेंघरियारवांधे
राषोघरीकरोरीजोपानीमेंचुडैहैसोनहीयहतीनिसासनकोजवावएकहीएघरीनहीफेरिमाती
कोंमोलककेरोउन्नरपान्योनहीमोतीमेंपानीचमकनहीहै षगतरवारकोषोलोमानतेनिका
रोपान्योनिपनहीहै क्याबोलेकिंवायानुनामजोरकोभींहमेंघाउपेंपगकादोमोमेंपानियजो
रनहीहैपेरिवरश्रेष्ठसंवोधनकिंवावस्त्रश्रेष्टजोहैनिचोलव सजुताकोंसीयोंपाणीस्योपानीन
हीहैतीनिभएफेरिदूजोहैद्योरातकोंकुदायोजानजाचनहीहैमेरेनहीकिंवाद्योराकोपांव
लगरोहैफेरिकुकहेभूमिमेंआपनोदावदेषोतेसोसुरदेहुतेसोवोलोयहअर्थकिंवासुरकु
याकोअर्थसुरकंठकोसुरकुकोंसुरकोदावदगादेहुसत्रुकोंवाकेहितकीतुरहरातिमेंवोलेस
त्रुजचनजीकआवैतवदावदगाकरोदावदगाकोभीनामहैफलानादाक्करिगयोजैसेंमारीने
श्रीलछमणजीसोंसुरकोदगाकियोश्रीरामजीकीतरहवोस्योउन्नरजाननहीसेंप्रवीननही

र

पा

च

अर्थीको

क॰ प्रि॰
१९१
191

मोमें एतनैा प्रवीनता नहीं गुन गाव रंककैां याको अर्थ है मरंक रूप एण मल्लयें यां रंक नामरूप
एणकैां श्री मल्लकैां रंक जो मल्लूप दल्लवान ताको जो गुनक्रिया मो सों कोई कुल्लो दूरे ताकैां पच्छा
विडारें एसे गुनको गावैा कहो ज्ञान नहीं ज्ञान नाम जोरको जोरनाम जीवको भी है हमारे
वोऊ उठावबेको जीवन ही है ज्ञान नहीं जोर नहीं यह अर्थ तीनि भए पकेरिभावते तौ सस
चारी आठ सातिकू ताकैां तूं ज्ञान उत्तर में कविन ही भाव ज्ञानिवे को कवीस्वर को कामदे
पिवके धाम घरकैां धावस्तंभ करो मंदिर बनावे है तब मंदिरको संस्कार करे है तब प्रतिमा
घापै है कविन ही है मम में कविना म विचच्छन को है जो सब बात में प्रवीन सो विचच्छन में मंदि
रके संस्कार करिवे में कविन ही विचच्छन ही तूं लंकाको धनल्याव ककविन ही कविश्रुकको
नाम है सो अक्षरके गुर है उने अक्षर धन देत है एककाहू मधुकरसाह है सो प्रश्न कि यो तव
सकल जो टीवान सभा सोर विस्यो किंवा सकल संपूर्न सभा ज्ञानिए ५३ प्रश्नोत्तर जो ई
आखर प्रश्न के तेई उत्तर जानि इहिं विधि प्रश्नोत्तर सदा कहे हु विधि विधान ५४ प्रश्नोत्तर जे ई
इति विद्दी प्रश्न वा ही सो उत्तर ५४ कोदंड ग्राही सुभट को कुमार रतिवंत को कहिए सस्मितेउषी
कोमल मन को संत ५५ कोदंड रति को कौन सुभट दंड ग्राही है जो लोगनि सों दंड लेत है जो स
भटको दंड धनुष कौं राषत है को कुमार रतिवंत कैां न कुमार सुंदर पुरुष रतिवंत है स्त्री विषय

न

ध
को

१९१

191A

कुप्रीतिपुञ्जहैकोककशास्त्रग्रौरविकामइनविषयकजाकोरतिहैप्रीतिहैकोकौनकौससितेंउ
पीकहिएहैहेमित्रकोकदिचकवाकौंससितेंउपीकहिएहैहेसंतकोग्रमलमनकौकौनहैउन
रकोग्रमलमनकौकृपालुमनकोसंतसाधुजनहै ६६ कालिकाहिएजेग्रलीकोकिलकंठ
हिनीककोकहिएकामीसदाकालीकाहैलीक ६७ कालिइतिहैग्रलीकालितंकाहिकौं
नकोएजैकालिकाजोभवानीहैताहिकौकौनकिलनिश्चयकंठहीकरिकैनीकग्रछ्याहैउन
रकंठकरिकैकोकिलनीकग्रछ्याहैरूपकरिकैनीकनहीहैसदाकामीकोकौनकौंकहिए।
हेमित्रकोकचकवाकौंकामीकहिएसदाजोडारहतहैकालीस्यामलीकनीसानीकीहैकाली
लीककलंकहै ६७ गतागतयथासुधोउलटोवांचिएग्रौरहिग्रर्थएकसवैयामेंसुकविप्र
गटतदोयसमर्थ ६८ गतागतलछ्छनसुधेइतिएकहीग्रर्थनिकरे ६८ सुधेउलटोवांचिएए
कहिग्रर्थप्रमान कहतगतागतनाहिकविकेसवदाससुजान ६९ सुधोउलटोइतिसुधोवांचे
ग्रौरिग्रर्थउलटोवांचेग्रौरग्रर्थ ६९ मासममसोहससजैवनवीननवीनवजैससहसोमसममामारल
तानिवनावतिसारसिसातवनावनितालरमामामानवहीवहिमोरदमोदमोदरमोहिरहीवन
मामालवनीवलिकेसवदाससदावसकेलिवनीवलमा ७० मासइतिनायककेपछ्छकीसखीको
वचननायिकासौंतमालह्मीसमसोभतिहैफेरिसजैहैसोतिनसौंजीतिउत्कर्षपायोहैताहिस

कौरह

हतहैवनसैंवीनानवीनरीतिसौंवजैवजायकैएसीतरहतेरीसोतिकोईनहीवजायसकैजैसोते
रोहाथसौंवजैहैयहउत्कर्षकिंवाहेवनवनोदुलहीनवीनरीतिकीवीनावजायकैतेंआपनो
वियकौंसजैकरैहैउत्कर्षसहितकरतहैनायककहतहैहमारीसीनायिकाओरिकैंनहीयह।
उत्कर्षसदसोसमसमायाकोअर्थसहसोजोरावरीसौंलागतोहिउमापार्वतीकीसमावरीव।
तिकीकहतहैंतेअधिकहैयहअर्थपार्वतीकोवीनावजाइवोप्रसिद्धनहींतेंवीनावजावैहै।
यातैंकिंवाउमाकोउमछंदकेलिएजैसेंवालाकोवालसदकोअर्थविद्यमानभीहैसहक।
हिएविद्यमानसोमचंद्रमांहैअसनहीभयोतेंसमांहैएकाक्षरकोसमेमानामबुद्धिकोभीहै
मदिरामेंयथासेनावेलयोरपिइत्यपतेमाश्राहमदिराविषेबुद्धिविषेजानियेंचांदिनीकोस
मयोहैतेंबुद्धिमानहैसमझतिहैतोहिविनातेरोनायकव्याकुलहैतेंचलिमिलिजायकेय
हधुनिमारललतानिवनावतियाकोअर्थपारसीमेंमारनामसांपकोहैताकीलतापाननाग
वल्लीकहतहैताकौंतूंवनावतिहैवेठीवीरीलगावतिहैकिंवापानकौंतूंवनावतिहैसोभा
देतिहैजवतूंपानषातिहैतवतेरीसुंदरतासौंपानसोभायावतहै विहारीमनोगलूंवदला
लकोलाललालदुतिलीककिंवामारलयाकोअर्थएसीतूंनानकोवनावतिहैतेरीता
नजोहैसोमारजोकामताकौंलेकोअर्थग्रहनकरतिहैपकरिलेतिहैसुनिकेकंमभीचलि

192A

नहीं सकति है वस है होत है किंवा सारका भेसो जाकें रहै सो सारला ही भाषा है लख सारलकरि क
हत है जैसें बाला कों बालक कहत है वा सा कों वामक कहत हैं हे सारल है कामिनि तें तान कों वनावति
है हो अर्थग्या करन रीति सो जानिए इहां अप्रयुक्त निहतार्थ दोष नहीं जानिए किंवा सारले की
ठौर में सारल है सम्मुख वा स्कौं मारिले ति है वस करले ति है लखनों सो जानिए सारि रिसातवना
वनिया को अर्थ री सखी तूं सात जे है सा रि सारि का बीना की छोडी बीनां मैं लागति है सो सारिका
कहावति है कोई गुटिका कहत है ताकी तूं वनावनिहारि है तें अच्छा वनावति है तालरमा याको
अर्थ वनावनि पद को अन्वय है नें ठौर वनावनि कहिए वनावनें रचनां सारि कौ वनावन॰
और रमाताल की वनावनि तो हि आछी आवति है रमाताल में तूं आछी नाचत है आछी गाव
ति है अठारह ताल की ताल है बहुत कठिन है श्रीताल लक्ष्मीताल या कों कहति है किंवा हे सखी
तें सारि लतानि कौं वनावति है औ सारि वनावति है रिसात वनावन ताल रमा या कौ अर्थ जव
ता सो कोई रमाल्ल की वनावनि रचनां करिवे कों कहत हैं तव तूं रिसाति है कोप करति है हमा
रे आगें ताल का कठिन है औरनि कों कठिन है हमें कठिन नहीं है किंवा कठिन है तासों रिसा
ति है नायक के पक्ष की सखी कहति है सो रक हिए हमारो जो दमोदर श्रीकृष्ण सो कैसो है मा
नव ही रहै मानव मनुष्यनि विषै हीरा है हीरा है रत्न है किंवा ही रासा री षा दुर्लभ है दमोद

ब

ता

याकोअर्थनाहिमानवहीरहैमानवहीताकैांतेमोरदयाकोंअर्पमोदआनंदकोदेइसोमोदकहा
वेश्रीकृस्नकोंतूवलिकेमोरदैआनंददायकहौकिंवादकोअर्थदैचित्रकेलिएएकारनहीपढ़ो
औछंदकेलिएभीनहीपढतहैविहारीउनदोहीआंपिआकैकैकैएसोचाहिएताहिदमोदरकों
तूचलिमोदहैपेविदमोदरश्रीकृस्नकोतूमोदिरहीहैवनमावनमहीकिंवाहेमेमवनतोंम।
वरकोंभीदेतूकैसीहैवनकहिएचरताकीमालत्मीसीहैकिंवातूवनकीमालत्मीसाभासी
हैकेसवदासकविहैवलतेरेमालवनीहैसोभेहैतेरोवलमानायकतेरेवसहैतासैांतेरीकेलि
क्रीडासदावनीहैआछीलागतिहै किंवाहैवलिकेसवकोवनाईजोमालादैसोतेरेगरमेंअव
हीवनीहैकुमिलानीनहीहैऔवलमातेरोदाससारीषोवसहैतासैांतेरीकेलिसदावनीहै ७·
अनुलोमसैननिमाधवऔंासरकेसवरेषसुदेससुवेससवैनेनक्कीतवजीतहनीहषिचीरस
वैनिमिकालफलैतेनसुनीजसभीरिभरीचेरिधीरवरीतिसुकोनवदैसेनमनीगृहचालिचलै
सुभसोवनमेंसरसीवलसे ४१ सेननइतिनायिकाहठिआईहैताकोंनायककेपछकीसषी·
नायकसोंमिलायोचाहतहैहेसुवेदेसषिसविवनमैसषीकोहैतोहिविनामाधवजोदैसोऔ
रनायिकनिकेसैननइसारानिकोंसरसोजानतहैऔरिनायिकाउनकोंईसारकरतिहैसोई
सारमाधवकोजैसाजैसेंसरवानलागैतैसेलागतहैआछोनहीलागतहैयहअर्थहेममेरेषा।

193A

नामघोराकोभीहैश्रोकपूरकोभीहैरेषकहिएथोरीसूदेससंदरिहैतेवहुतसंदरिहैजोभी
सूवेषहैश्राछ्याबेषवनाउहैश्राछ्याभूषनवसनपहिरिश्राईहैवेनायकतोहीसोंश्रासक्तहै।
किंवाहैसवैहैसषीश्रोरिनायिकामाधवकोंसेनकरिइसारोकरिसैनतिवहुवचनहैतासोंक
टाछश्रादिजानिएश्रोजातरहैसरहोइजोश्रोजायश्रापनोंवसहोयएसोकियोचाहतिहैय
हश्रर्थसोंश्राछेपकीजिएकैसीहैश्रागेंवहीश्रर्थश्रोरतरुनीनेंविरहसोंकामसोंकिंवाजी
वमेंतचिकेनसूहायकैचीरवसनसमानमाधवकीहचिकांतिनेनतिकोंकीकोश्रर्थकरीहैव
कारचरनपूरनार्थश्रवकीठोरहैजैसेंवसनश्रंगसोंलागेपारहतहैतैसेंमाधवकीहविनेंनतिसो
लागीरहतिहैवहनायिकासवकालकहिएस्यामश्रीकृस्नतिनकोंनीमिकाफलहैनीविको
फलजैसेंश्रछोनहीलागतहैतैसेंवहश्राछीनहीलागतिहैस्यामकहिकालकहिएमेचक
कहिएस्यामलकहिएकृस्नकहिएसषीनायिकासोंकहतिहैतैसहीनहीहैनायिकाकोदेषि
वेकोंजसकोश्रर्थजैसीभीरभरीथीनायकनिकीधीरजकोंपरिकैरीतिजोहैकुलवधूकुल
कीरीतिछोडिदेतिहैएसोमनोहरहैवश्रवपादपूरनार्थफेरिकैसोहैमैनकामताकोमनिहै
प्रकासकहैप्रकासकरनोमनिकोधर्मलिएवाहिदेषेंकामकोंप्रकासहोतहैफेरिकैसोहैगुरु
वरोलोगतोकीजोसभश्राछीचालरीतितामेंचलेहैसोनायकवनमेंसरकहिएसरोवरता

२

निकीताकोकोनवहेको
ननिवाहेनायककेसौंदर्य
सोंकुलवध

जी२

क·प्रि·
१९४
194

कीजहांसीवसीमाततरतहांलसैहैसोभैहैतूं उहांचलिएकांतहैमिलिजायकैयहनिर्जनदेससो
धुनि ७१ सेलवसीरसमैंनवसोभसहलैचलिचाहगुनीमननमेहैवनकोरहतिरीवरधीरय
रीभरभीसजनीसुननतैलैफलकामिनिवेसरचींचिहतीहततजैचितकीनैनैवेसमवेसस
देसघरेवसकेरसजोधवसानननसे ७२ सेलवसीइतिनायिकासोंसषीकोंउपदेसवचन
पोलपर्वतजोगोवर्द्धनतहांतूवसीहैरातिमेरहीहैरसमैंवडेसुषमेंचमत्कारीजोसुषसो
रसकहावतहैतवसोभसलैयाकोअर्थनवपा जोहैनायकनईजवानीताकीभईहैसो।
भाजाकोंताकोंआछीतरहसोलेकरिकेअवतूघरकोंचलिचलोकाकुस्वरसोंकहतिहै
यावातकोंतूआपनेमननमैंचाहआछीगुनीहैविचारीहैसोआछीनहींहैतूपरकीयाहैया
तैंकिंवाहैनकरिवेगईथीतहांतूवसीरातिरहगईदूसरीलक्षतिवियाकोअर्थतिकोअर्थ
स्त्रीरीसंवोधनरीतिहैस्त्रीहैनायिकाइहांसोवनजोघरसोंकोसहैहेममेंवननामघरकोभीहै
हैसजनीतूयावातकोंतैंसुननसुनेतोभीकहिएभयताकोजोभरकहिएभारसोतोयपह्योहै
वहुतउरपह्योहैयातैंवरआछोअचलजोधीरधैर्यताकोंतूपरिधारनकरौउरोमतिकिंवाहै
सजनीतैंमेरीवातसुननसुनेतोइहांसोंवनघरकोसहैभरकहीएअसावधानीरातितूपहां
रमैंवसिरहीयहनहींजान्योमैंपरकीयाहैअभिसारकरिआईहैमोहिघरजानैहैपरकी

व
भ

याअभिसारकाकोलाहलनहैकंपवुद्धिवल निपुनताअसावधानीसोंजेउपजीहैभीकहि
एभयर्यूवरुवडोजोधीरधीरजताताकौंधरिकेतिरिपारजाहुभयकौंलायोंभयकोंछोडोय
हअर्थजेसेंकहतहैविपत्तिकोंतिरोंतीभरीतकहेकामिनितूवेसकहिएवयुसज्जवातासेंा
तैरचीहैअनुरक्तभईहैचिरवहुतकालसोंताकौफलजोहैसंभोगसुखताकोंतूलैएसीठै
रमेंफललेहुनीहतजीयाकोअर्थजहांकोईजीवकौहतशाहूनीकोअर्थनहींहोयएकांतठै
रमेंविहारकरोतूपरकीयाहैजोजीवकीहोयजीवकीप्यारीमनकीहोयमनमैंतूहोयएसीस
खीकोंतूवनमेंनेकोअर्थयहुचावसंगमेंलेजाहुजीवकीएसीप्यारीकोंकहिएहैंजीजेरीजी
वकी [illegible] नाकहैहूनेचोथीतकतूवेसिज्ञआतिहैएरवमेंज्ञआतिकोंवेसकहतिहैफेरितूं
सवेसहैवेसभूषनओसंदरवसताहिसहतहैफेरिसहैसतेरोओनायककोसमानहैसहैएक
हैसहैएकगांवमेरहतिहैकवहीवियोगनहींहोयफेरिसयकहिएसयकरामानंदनआदरन
सोंधवज्ञातारोयातेंसोवरेअतिरसकेवसमेंज्योंज्ञातरहहोयसोकरोयहअर्थ ७२ इंद्रजीत
संगीतलैकिएरामरसलीनछंदगीतसंगीतलैभएकामवसदीन ७३ इंद्रजीतइतिअर्थ

> न
> चितकीवननैयाकोअर्थ जै
> सी तेरेचित्तकीवेनावनाव
> नोंयेंवनितहैतैसेफलको
> तूंलै किवानीकृतकोअर्थ
> तूवोलेमतकहिनावतहै॥

इं	द्र	जी	त	सं	गी	त	लै	कि	ए	रा	म	र	स	ली	न	गोमूत्रिका
छं	द्र	गी	त	सं	गी	त	लै	भ	ए	का	म	व	स	दी	न	

	इं	द्र	जी	सं	त	कि	ए	र	ली
चरनगुप्त	द्र	त	गी	लै	रा	म	स	न	
	छं	गी	सं	ते	भ	का	व	दी	

सप्ट है यह दोहा कपाट बंध गोमूत्रिका अश्वगति चरण गुप्त एते नाच क्र में चलत है २४ राका
राजन राकारा मासमास मा राधा मीतत मीधारा सालसी हसुसील सा २५ राका इति श्रीकृ
सकोवचन विष्टमें हूमारी जोराधा मीत है ताकों राकाजो पौनमासी को जो राजा चंद्र है सो ज
रकोआकार स्वरूप सो लागत है मास मास में
मदीनां मदीनामें आसमाना मवरष को है व
रषवरष में आतमी जो रात है धारा [illegible] त
रवार आदि की धार ताको जो साल सालिवो
सो सबको अर्थ अछौ तरह होति है श्री राधिका जी केसी
है साको अर्थ सो जो राधा हसील संदर जाको चरित्र
है चारि अक्षर फेरि कें पढ़ै तब कपरी होति है राका राज
फेरिय हैं जराका रभंएए सो जानिए २५ विपरीत राम

इ	द्र
जी	त
सं	गी
त	ले
कि	ए
रा	म
र	स
ली	न

द्र	छ
त	गी
गी	सं
ले	त
ए	भ
म	कों
स	व
न	टी

इ	द्र	जी	त	सं	गी	त	ले
कि	ए	रा	म	र	स	ली	न
छु	द्र	गी	त	सं	गी	त	ले
भ	ए	कों	म	व	स	टी	न

रा	का	रा	ज
मा	स	मा	स
रा	धा	मी	त
सा	ल	सी	ह

देवनरदेव गति पर सुधर नमद धारि वाम देव गुरु देव गति पर कुधरन हद धारि २६ रा
मदेव इति यह विपरीत है तीनि हूं पंगति के चरन में एक एक अक्षर छोड़ि कें लिषे आदि पंगति
के अक्षरनि सों मिलाय के पढ़ै ऐसें अंत की पंगति के अक्षर की चौथी पंगति सों मिलाय

195A

है

कैंपहैरामदेवश्रीरामचंद्रजीकैसेहैंतोपरब्रह्मपैनरदेवराजाकीगतिनरहलिएहैफेरि
कैसेहैंवेपरस्त्रधरनपरस्त्ररामजीजिनकेआगेंमदंगावतिनकेधरनवालेनहीभएपर
स्त्रधरकैसेहैंवामदेवजोमहादेवसोजाकेअस्त्रविद्याकेगुरुहैफेरिपरस्त्ररामजीकैसे
हैंदेवतनिविषैंगतिहैजाकीदेवतनिमैंजानतहैफेरिकैसेहैंभूभ्रतकुधरनराजाकौंक
हिएपरसत्रुजेरएसीताकेधरनवालेराजासवताकौंहृदमर्जादाताकेधरावनवालेहै
किंवाश्रीरामजीकैसेहैंपर[illegible]कुधरनहृदधारिऐसैंजानिये ७९ राजतअंगरसविरस

कु

रामवनदेवनि
वस्त्रधनधा

राम	नर	देव	तिय	स्त्रध	नम	धा	राम	नर	गति	स्त्रध	मद	रा	दे	न	दे	ग	य	स्त्र	र	म	धा
दे	व	ग	र	र	द	रि	देव	देव	पर	रन	धारि	म	व	र	व	ति	र	ध	न	द	रि
वाम	गुरु	देव	तिय	कुध	नहृ	धा	वाम	गुरु	गति	कुध	हृद	वा	दे	गु	दे	ग	य	कु	र	हृ	धा

अतिसरससरससरसभेवपगापगाप्रतिद्युतिवद्युतिअतिवयनवमनमतिदेव ७७ राजत
द्युतिनवरंगरायकेअंगरसमेंप्रीतिमैंविरसमेंमानमैंअतिराजतहैफेरिनवरंगरायकेसी
हैसरसवेसजेनाचनवालीस्त्रीहैजिनतेंसरसहैअधिककहैऔररसकेजेभेवभेदताकौंजा
नेंहैऔपगापगाप्रतिजेतनीवारपगाधरतिहैनाचतमेंकिंवाचलतमेंअतिद्युतिवाहत

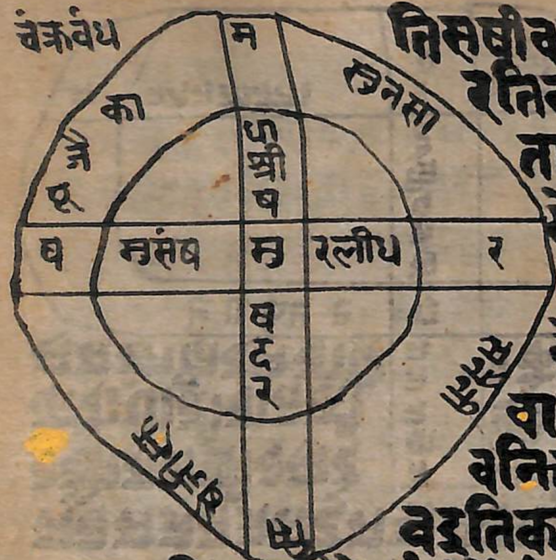
गा	ज्ञ	न	ओ	गा	र	स	वि	र
स	अ	लि	स	र	स	स	र	स
र	स	भे	व	प	गा	प	गा	प्र
ति	उ	ति	व	ह	ति	अ	ति	व
य	न	व	म	न	म	ति	दे	व
सु	व	र	न	व	र	न	सु	सु
व	र	न	ति	र	चि	त	रु	वि
र	रु	वि	ली	न॥	न	न	म	न
प्र	गा	ट	न	वी	न	म	ति	न

हैफेरिनवज्ञाकौवपउभिरहैजाकौमनओमतिदेव
तामैंहैओरगुरुदेवताकोपूजनकरनोपद्मिनीकोहै
पद्मिनीयहअर्थसुवरनवरनसुसुवरननिरचित
रुचिरहविलीन तनमनप्रगटप्रवीनमतिनवरं१
गरायप्रवीन ७८ सुवरनइतिसुवरननवरनसु१
याकोअर्थसुवरनकेवर्नरंगासैंयाकोवर्नरंगसुकौ
अर्थसुंदरहैफेरिसुवरनसैंरचितजेभूषनओज्ञ
रीकेवस्तुताकीजोरुचिरसुंदरजोरुचिकांतिताहिवि
षैलीनमिल्योहैतनजाकोक्रियाजाकेतनकीरुचिर
रुचिभूषनवासुसौंमिलोहैफेरिजाकेमनमेंनवीनमतिनईबुद्धिप्रगटतिहैएसीनव
रंगरायप्रवीनहैएकासीकोगामेंनवनवकीपंगतिकरिदोउदोहालिषेनवरंगरायप्र
वीनचहूफेरमेंनिकरेहैएभीचरनगुप्तकौभेदहै १८ मुरलीधरमुषदरसिमुष
समुषमुषश्रीधामसुनिसारसनैनीक्षिपेजीमुषएजेकाम ७९ मुरलीधरद

चक्रबंध

चक्रबंध

196A



तिसषीवचननायिकासैंातेरेमुखकेसंमुषसांम्हनेठाढेजेदेमुरलीप
रतिनकेमुषकैंातूदरसिदेषोदरसनकरोकेसोहैमुषश्रीसोभा
ताकोमुषकहिएश्रेष्ठधामघरहैहेसारसनैनीकमलनैनीतूं
मेरीसिवसिद्धानीकैसुनैंातेरेजीवमेंजोमइच्छाहैसोपूजैगी
किंवाजीवमेंसुषहोयकामनापूजैहैमनमेंनाममुषकोउपाय
कोप्रारंभकोकहतहैश्रेष्ठकोकहतहै ७९ कामदेववित्तजाहि
रामदेवमतिदाहरामदेवचित्तचाहिधामदे
वनित्तताहि ८० इतिसर्वतोभद्रचक्रं कामदे
वइतिकामदेवकरिकेतूविष्यातहैलोगतोहिव
हुतकामीकहतहैइहांमैंातूंजाहिजानैरहोकिंवाजाहिकामदेवकोता
कोंवित्तसंपतिहैताकोंबहुतकामहैताकामदेवकोंतूंवामदेवमहादेवको
मित्रकरिकेप्रसन्नकरिकैंहाहिवारिदेगुरुशिष्यकोंकहतिहैधामदेवश्रीरामजीकोंचित्तमेंचा
हादेषोताहिश्रीरामजीकोंदेषेदेवतानिकेधाममेंतूनित्यहोश्रमरहोसोलहदलकेचक्रमेंलि
षैनामसर्वतोभद्रजहांमैंापढेतहांसोंतकांनमिले ८० परमधरमहरिहेरहीकेसवसुनैपु



का० ४

चक्रबंधश्रीवर्तनबे
धयाकोकहतहै

क॰ प्रि॰
१२८
197

०नमनमनजानैनाव है जियजसरउनतनआन ८१ परमइतिवैसोदासकहतहै याकीवातकों
सुनैंकपटीलोगजेहैसोलोगनिकेदेषाइवेकेलिएपुरानमैंहरिभगवानकोपरमउत्कृष्टधरम
कोंकहेरतहैमनमनमेंहोयनारनारिस्वकीयापरकीयायाहीकोजानतहैएहीदोयपदार्थहैश्रो
रनहींकिंवापरकीयाश्रोसामान्यास्वकीयाकोत्यागकरतहैइनहीकेजसकोंगनैहैविचारैहै
श्रानश्रोरितनहींविचारै ८१ रामरामरमछेमछमसमदमजमश्रमधामदामकामक्रमप्रे
मवमजमजमदमश्रमवाम ८२ रामरामइतिकोईकाहूसोंउपदेसकरतहैरामश्रीरामव

हुश्रोरामश्रीवल्लदे
करोयाहीवातको
समसातिदमवाहि

वजीतामैंतुमरमोंतिनकेरूपकोध्यानकरोगुन
ज्ञोडाकरोकैसेहैछेमकल्यानदेनेमेंछमसमस
रकेइंद्रियनिकेरोकिवाजमनियमएजेतनैजो
निक्रियाहैसोसवश्रमभेदनति
केधामघरहैदामजोपैसातिनकी
मकाममनाताकोजोक्रमजोसोभयोतोवसलवंधइहु
जारहो[illegible]यहजारहोयतोलाषहोययहजोक्रमहै
ताहिविषैजोप्रेमताकोंतंवमउगिलदैमननेंमतिराषै



गात
थीहै
मिा
ना।
जोका

नश्रीततनगहिजमयजिहिहै
९ ५ ६९ ९
म नमनज्ञानैना रय मप मेंहरि
होहीकेसमव

जमुजमक हिए सदा वामा स्त्री विषै सुष मानत हैं भूलि कै ताहि भ्रम कों तें दमद मनकरी उपसं
तकरो दूरकरो यह अर्थ किंवा जम नाम संजम को भी है संयम कर विषै कों अति भोग वा मक।
हिए संदर जो आछौ तरह जकेलों दम पान रहैं तव ताई तें वमन कर फिर तो फिरती थ्यति मैं।
यह फलितार्थ यह यनुष बंध मैं लगता है औ बीच मैं एक मकार नहीं लिषक मल बंध मै तो।
भी पहैरो जाय ८२ सीता सीनन सीता सीतार मार र मार ता सीमा कलीली कमा सीनरली नु
नलीरन ८३ सीतासी द्युति को ईकाहू सों एछति है सीता जैसी स्त्री है तासी ता दि सीताज्ञी सारी
बी औ रस्त्री है ई उत्तर देत है नननदी है नदी है तारा सुग्रीव की स्त्री सो भी एसी नही है मास्कदि
एमाला ताको भी उपमा स्त्री कों देत है सो भी एसी सुंदर नहीं लगे किंवा तारतारागन ताकी।
भी उपमा स्त्री कों देत है ताकी जो मारक हिए माला समद है सो भी एसी नुहीं अनेक एजाइन पै।

सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
न	र	ली	न	न	ली	र	न
न	र	ली	न	न	ली	र	न
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	ता	सी	भ	न	सी	ता	सी

वारिए सो मालक्ष्मी सो भी एसी न हीं और रतार ति काम की स्त्री
सो भी एसी न हीं चित्रभंग के लिए रति कों रता पढो सीमाक
ली याको अर्थ कक हिए सुष आनंद ताकी सीमा मर्जादा जा
नैली को अर्थ लीनी है सीताजी सारी बी स्त्री बी किंवा सुषदा
यक और न हीं फेरि लीकमासीनरलीन याकों अर्थ फेरि औ

लिये औ और ठौर मैं मकार

को

अनेक ताराइन पै वा
नीये

सीताजीकेसीहैमालक्ष्मीकीसीजाकेवक्षस्थलमैंरेषाहैकोईभ्रगुलताकहतहैएसोजो
नरहूपधारीश्रीरामचंद्रजीतिनसौंलीनरहतिहैकिंवाआसक्तरहतहैश्रीरामचंद्रजी।
कैसेहैरनविषैंनलीहैलंकाकोलराईमैंनलसंगामैंरहैनलनीलवानरहैनलजाको
रहैसोनलीकिंवानावककेतीरराषतिहैतावककोतीरनलमैंहोयकेचलतहैपरस
वेतोभद्रचौसठिकोठामेंलषोउलटौलिषोजातहै ८३ यामध्यरागेलतोहितचो
रटीकामममनोहरहैअभया। मीतअमीततिकोंलषदेतदयालकहावतहीनदयास
त्यकहाकहाकूठमेंपावतदेषोवेईजिनेरेषीकिया। जामध्यगोलसमीतसवे
ससवैसतमीमतगेयमया ८४ यामध्यइतिकोईकाहूसौउपदेस
करतहैतमनजाहिनायकामयहोयकेरागोअनुरक्त
भयोआठौपहरवाहीनायिकाकेस्मरनकरै
छेयातेंनायिकामयकहैकिंवा

ला
म
प

रा गे स्ह
तो हि त चो र
टी का म म मो हू र
हू अ भ या मी त अ मी त
नि कीं म ष द त द या ल क हा
व त ही न द या स स क हो क हू रू
ठ मे आ व ते दे षा वे ई जि नि र षी कि या
स

जाहिनायिकासौंतमममयकहिएमदिरातावकेवसहोयकेरागेअनुरक्तभयेसोना
यिकातौतेरेहितकीचोरटीहैतेरीकियोजोप्रेमताकोंजाहिरनाहीकरतिहैउनहम
सौंकाप्याराकियोएसेंकहतहैतमसौंवहहूषीरहतिहैयातेंनायिकासौंआसक्तआ

हीनदीञ्जोकामझैजेसोमनोहरहैमनकोंहरैहैकाहूसोडरैनहीजोकोईकाहूकीवस्तहरै
हैसोवासोंडरतहैयहतोअभयहैफेरिकामकैसोहैमीतजोकामीसदाकामकोंसेवैहै।
अमीतजोजोगीताकोंदुषदेतहैकामीकोविरहमेंदुषदेतहैकामकोअर्थजोसवकोंचा
हैयातेंआपुदयालकहावतहैऔरदयाकरिकैनहीकिंवाजोदयालकहावतहैताकोंभी
दुषदेतहैऔरदयाकरिकैहीनहैताकोंभीदुषदेतहैयातेंअविवेकीहैतमहमसोंसत्यकहो
यहजोकुठपटाथ्यहीतासोंकामकोव्यवहारमैंकहापावतहोवेदभगवानकोंदेषोजिननें
कायासरीरराषीहै३रहीहैवनाईहैहेमीततुमजाहिनायिकाकेसंगमेंसपदकीठौरसकार
हैविचरसनाथ्यसवजामपहरमेंतमजागेहोवहनायिकातुम्हारीसवेसहैसमानउमिरिकी
हैऔरतमीधातिमैजागेहोकिंवातुमतमीकोंनेहाहग्लानिकोंनहीमनमैंआनोजिनिभगवा।
नकीमयाकहिएदयागेयहैगानकरिवेकोंजोगपूहैतारीफकरिवेकोंयोग्यहैप्रह्लादपैगजंचे
दयाकरीहैसोईमन्नहैदरष्टहैऔरअनिष्टहैयहअर्थकोईयाकोछत्रबंधकहतहैकोईपट्टाबंध
कहतहै ८४ कामअरैततुलाजमरेकवमानिलिएरतिमानगहैसुषवामवैरगनसाजकरैअ
वकानिकिएपतिप्रानदहैडुषधामधरैपुनराजहरैतैयानिलिएमतिदानलहैदुषरामररे
मनकाजसरैरसवहानिहिएअतिआनकहैमष ८५ कामअरैइतिकोउकाहूकोंउपदेसकर

तहैजोतेंआपनोंमनसोंरामकोनामरटैरटैतौतेरोसवकाजसरैसिद्धहोयआनकौंतोंम।
नुषसोंकहैतेंहृदयमेंप्रतिहानिलुकसानजानौकामजोहैसोतनकौंअरैदृठेलागोकव
हूकोंरतिमानिलिएकाहूसोंरतिकिएतवलोगजेहैंतेगानकोप्रसिद्धकथनकौंवरैअंगी
कास्कूरेफेरिवाकोसाजभूषनवस्त्रताकोकरैफेरिलोगजानिजायअवतवस्त्रीकेकूल
कानिकेकिएजोआपनीस्त्रीकुलकानिकोकरैमेंकुलवधूहोआतिकेपासकौंकतिजा
उतववाकोपतिजारसोंआपनोप्रानकोंरूपसोंदेहवरावेफेरिधाममेंघरमेंजोधनको
परेराषेतवधनकौराजाहूरैहैमतिदानवुद्धिकेदातातूमेंओतिनकोवुद्धकेदातादेवेत
विएयाकोअर्थवीएककहिएदूसरीवातिसोंदूसरीतरहैसोरामभजनविनाकाकुस्वरसों
जानिएतेंसुषकौंलहैपावेनहींपावेयहअर्थसूरदासभगवंतभजनविषैतितिलोक

रा	म	क	हो	न	र	जा	नि	हि	ए	सू	त	ला	ज	स	वे	घ	र	मो	न	ज	ना	व	त
ना	म	रा	हो	उ	र	मा	नि	कि	ए	सू	त	का	ज	त	वे	क	रि	सो	न	व	ना	व	त
का	म	ट	हो	ह	रि	आ	नि	हि	ए	रू	त	रा	ज	ज	वे	भ	रि	भो	न	अ	ना	व	त
ना	म	व	हो	व	र	पा	नि	पि	ए	सू	त	आ	ज	स	वे	ह	रि	कौं	न	म	ना	व	त

॥ रूपतौंरगहितहैयाने परस्त्रीसोंरतकनीहैत वतरूनकेलाजसोंमरे हैं गननामहेमंमेंप्रथम कोभीहै पहिलैतौवामा स्त्रीको।

नरू

नहींकामसैंऔरसैंऔननसैंआलाजसैा चारिहूतकमैंनहांसैंपढैनहाईतकांतमिलैच
क्रोकारभीलिषतहैसर्वमुषहै ८४ हरिहरिरतिटोरिडुरिफिरिफिरिकरिकरिआरि ।
मरिमरिजरिजरिहरिपरिपरिहरिअरितरितारि ८६ हरिहरिरतिकोउकाहूसैा उपदे
सकरतहैहरिकहिएचारहरिजोहैविषयकीचाहताकोंतू ताहताकोंतू हरिकरिओ
हरिजोभगवानताकोंतू रटिरटिफेरिफेरिआरहू वकरिकरिटेरतभगवानकेहरिजे
तीर्थहैतहांकोंघरकेलोगनहींजानैदेहितोभीहठिकरिजाइमरीमरिवहूतश्रमकरि
करिकिंवाजन्मांतरलेकरिएकजन्ममेंसिद्धनहींहोतिहै जरिजरितपस्यामेंजरिजरि
कैकिंवामरीजोमस्तुताकोंतू मरिकैस्वर्गमारिगुरुलघुगुरुहोतहैनिजइच्छाअनुसा
रआमस्तुकीजोजरिहैविकर्मताकोंतू जारिफेरिहारिभएवोतीर्थकरतपाकिजाहुवो
अरिजेतेरेहैकामक्रोधलोभमोहवाकोंतू परहरिछोडिदेओतू तरिओरिहूंभीउपदेस
देकरितारोरामरामरमयहदोहाएकहै औरपीछेंकाहूनेंबनायकेलिषदेकेतने श्लोक
भीलोगनिनेंराषेहैं ८६ रामकहोनरजोनिहिएमस्तलाजसवैधरिमौनजेनावतिनाम
गाहोउरमानिकिएकृतकाजतवैकरितौनवनावतकामदहोहरआनिहिएवतराजज
वैभरिभौनअना[illegible]वतजामवहोवरपानिपिए ध. तआजसवैहरिकोनमनावत ८७

क॰प्रि॰
२००
200
लाजधर

रामकहौ इति कोई काहूकौं उपदेस करत है हे नर रामकहौ आपनो जीवमैं सत्त कहिए स
त्तु जानिकै एकदिन मरेंगे तब कौनके लोक जांहिगे यातैं किंवा अकारकौ लोप चित्रके लि
एमृतकी ठौर अमृत जानिए जैसैं अबकी ठौर बकार कहिए है रामकौ नाम अमृत है य
हं अर्थ सब जो विषय है तासौं तैं लाज राषी आपुकौ मौन जनावत लोग जानैं यह मौनी
है यह विषयसौं तिरपत्त है यह फलितार्थ जो तमस्त कहिए करनी या पापकी किए हो
ताकौं उर मैं मन मैं मानिकै मोहि भगवान बिना सरन और नहीं यातें भगवतके नामकौग
हौंतब पीछें औरि काजकौं करौ और भगवानकौं तो न कहिए स बन स्तुति ताकौं बनावत
कौं करत कैं और हर जे महादेव तिनकेहूँ तबात कौं मकौं सिव नेवा ह्यौ है ताकौ हृदय मैं आनि
केकामकौं दहौ बरावौ राजकौं भरि भरनपोषन करौ जब तौ उभौ कहिए जमराजसौं उ
रतनहीं मन मैं अनावत है ल्यावत है जाम जो पहर ताकौं बहौ बिताबो एरौ करौ किंवा भर
घलागै तौ बरसौं बलसौं पानीकौं पिए पानी पीकै प्रानकौ धतधारन करौ आज अब गा
सबमें मेहरिकौं कौं नहीं मनावत है राजी करत है टोके तनने चित्र औरि लोग तिनें बनायकै
धरे है प्रमानिक पोथिन मैं नहीं है इंद्रजीत संगीत लैया टोहाकी तरह जानो ८७ न
रसरव श्री सदा तत नमनस रस सुरव सिकरन नरक सविरस सकल सुषदुषहीन

र

जीवनमरनेनर मनजी नहीनिरदयसदयमतिमनदूरननरहतमतिमयजगतकेसव
दासश्रीवरसन ९८ इतिश्रीकेशवविरचिताकविप्रियासंपूर्णा॥श्रीः नरइतिकोईकाहूसैंउ
पदेसकरतहैहेमसेनरनाममनुष्यकोश्रीभगवानकोआराधनकोनरजोभगवांसो
कैसोहैसरवसंपूर्णजोश्रीसोभाज्ञाकेसदातनमैंरहतिहैमनज्ञाकोसरसउत्तमहैएसो
सोभाहैओसुरदेवनाकोवसकरनवालोहैतिनसौंआसक्तहोओरिविषयनिकोत्यागक
रोयहअर्थकिंवाहरकहिएकंठकोहारसोज्ञाकोवसकरनवालोहैभगवानविनाओरि
जेराज्यआदिसुषहैताकौंतूनरककोमितिविरहेराज्ञानेंसुषमैंनरककोवासहैसुषमैंरा
योओनरकमैंमिलेसुषराज्यादिकदुषकरिकैहीनभासतहैयेजीवनिकोमरनवामैंजा
नौराज्यकेलाभमैंमारयोजातहैओभ्यारोजमदंडदेतहैहेनरतिरदयसदयमनहैजीवनहै
जीवतोशुद्धपरमात्माहैअवकोठौरवकारपाटपरनार्थमनकेसोहैमतिजेबुद्धिताको
जेमतइष्टताकोहरनवालोहैबुद्धितोभगवानमैंलागैमनवहकायकेविषयमैंडारिदेत
हैमनकोवसकरोयहअर्थहेनरजगतसंसारहतमतिमयहैपापकीमारीबुद्धिमयहैकेस
वदासकहतहैश्रीभगवानकोसरनकरौ ९८ इतिचित्रकाव्यअथकविकीस्थिति राजनस
वेविहारमैंहैसारनसिरकारसालग्रामीसुरसरितसरजन्नताभग्गावार १ सालग्रामीसर

न
जा

क॰ प्रि॰
२०१

201

नेनेर मिलीनु गासोज्ञाय अंतरालमैं देससोहरिकविकोस १ सोायरपेरगन्नागो ओनतहांगांव
वैनपुरनामगागासो उत्तरतरफतहांहरिकविकोधामरसरजूपारी द्विजसरसवासदेवश्री
माननताकोसुतश्रीरामचनताकोसुतहरिजानधनवापारमैंग्रामहै [illegible] बुंदयाअभिजनता
सविश्वसेनकुलभूपवरकबतराजेरविभास ५ मारवाड़मैंकुसगढतहांनितसुकविनिवा
सभूपवहादुरराजहैविरदसिंहजुवराज ६ राधातलसीहरिचरनहरिकोविचित्रलगायत
हंकविश्रामरतनयहटीकाकरीवनाय ७
सअष्टसोहासठिमहीकविकोजन्मविचा
रिकठिनग्रंथसुधोकीयोलैहैसुकवि
तिहारि ८ पानदानललितालिएवंदा
लिएसुवासराजतजमुनातीरमैंमोह
नराधापास ९ तेमसेवनतेपाइएरा।
धाश्रीघनस्यामदहैश्रमंगलसंतकोम
धुमंगलतवनाम १० वानीजाकेमुष
वसैलक्ष्मीउरकेमांहिंगगाज्ञाकेचर

ध | ज ग त के स व | दा
द स य ह र नि | त न म न स र
मनिमनतहर
रसरव श्रीस
ने
तजीवनमर
रकसवरास
ही | ष र ष स ल क | स

२०२